

११ सरस्वती-साहित्य-सदन का २ सरा पुष्प ११

माधव-माधुरी

रचयिता—

स्वर्गीय पं० रामसेवक चौवे

प्रकाशक—

सरस्वतीप्रसाद सिंह रघुवंशी

सरस्वती-साहित्य-सदन,

भोजूबीर, बनारस कैंट ।



[प्रथमावृत्ति १०००]

मुद्रक—भारकरडेय सिंह,
भारत प्रिंटिंग प्रेस, भोजपीर, बनारस कैंट ।

समर्पण

सुप्रसिद्ध विद्याप्रेमी, उदारमना, सहृदय, सज्जन
श्रीमान् राजा वीरेन्द्रविक्रम सिंह जू देव
एम० एल्ल० सो०, पयागपुराधोश

के

कर कमलों में

यह ग्रन्थ

माधव-माधुरी

सादर समर्पित है।

बिीत—

सरस्वतीप्रसाद सिंह रघुवंशी

॥ ॐ ३म् ॥

प्राक्कथन

मानव हृदय भागों की निवास-भूमि है। जिस प्रकार मिनेमा के चित्र-पट्टपर नाना प्रकार के चित्र आते और विलीन होते रहते हैं, उसी प्रकार मनुष्य के हृदय में भी रग-त्रिरगे भाव आविर्भूत और तिरोभूत होते रहते हैं। इन भागों की गणना असंख्य है, परन्तु फिर भी हम इन्हें स्थूलतः दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। वे हैं—प्रेम और घृणा। विश्व के जितने जीव अथवा पदार्थ हैं, उनमें से प्रत्येक के प्रति मनुष्य के येही—प्रेम और घृणा—दो प्रकार के भाव हो सकते हैं। जिसकी ओर उसका प्रेम होगा, उसे वह अपना देने की चेष्टा करेगा और जिससे वह घृणा करेगा, उससे वह दूर रहने का प्रयत्न करेगा। दूसरे शब्दों में, पहले की ओर उसकी प्रवृत्ति होगी और दूसरे की ओर निवृत्ति। मनुष्य के इन्हीं प्रवृत्ति और निवृत्ति-मूलक भागों का सृष्टि के साथ सम्बन्ध जोड़ कर उनकी जो कल्पनामय आदर्श-प्रधान व्यञ्जना की जाता है, वही कविता है। कविता जगत् की वस्तु होते हुए भी कल्पनिक है। यथार्थवाद के रथ पर चढ़ी हुई भी यह सदैव आदर्श-वाद के गगन में विचरण करती है। आत्म विस्मृति की रज्जु के सहारे टिके हुए भाव-दोल पर लेटी कविता कल्पना के मधुर भोंको से मन्द मन्द झूनती है। कभी-कभी तो यह आँसू खोल अपने चतुर्दिक् फैले विभु का विलास देख लेती है, परन्तु प्रायः यह आँसू धन्द किए अतीन्द्रिय

जगत् का स्वप्न ही देखा करती है। कविता अपनी इसी मस्ती में आदर्श विधान करती है। सचसुच आदर्श निरूपण ही कविता का प्रमुख ध्येय है।

हिन्दी की कविता प्रायः इसी आदर्श-वाद को लेकर चलती है। ससार के कुटिल वात्याचक्र में सूखे तृण की तरह उड़ने की इसकी इच्छा नहीं। यह जीवन के कठोर एवं नग्न सत्य से मुँह मोड़ लेती है और अपने लिए एक नया लोक बनाती है। हिन्दी-कविता 'ऐसा है' के पचड़े में कभी नहीं पड़ती, प्रत्युत 'ऐसा हो' का ही राग अलापा करती है। यह इसी दृष्टि-कोण का फल है कि हिन्दी-साहित्य में हम सत्य, सुन्दर और कल्याण का उच्चतम आदर्श पाते हैं। इन तीनों में भी 'सुन्दर' का तो जैसा भव्य और अलौकिक निरूपण हिन्दी-साहित्य में हुआ है, वैसा संस्कृत को छोड़ शायद ही किसी अन्य साहित्य में हुआ हो। इस आदर्श-सौन्दर्य के प्रतीक हैं कृष्ण और इसका निरूपण है कृष्ण काव्य। कृष्ण की सुन्दरता अनुपम और भुवन-व्यापिनो है, जिस पर मानव हृदय ही मुग्ध नहीं होता, अपितु पशु पक्षी लताद्रुमादि तथा सर-सरिताएँ, सभी लाटपोट होती पाई गई हैं।

ऐसे कृष्ण के सौन्दर्य-वर्णन की सौम्य परिपाटी ललित 'गीत गोविन्द' के रचयिता की कोमल-कान्त पदावलियों से चली और मैथिल-कोकिल से होते हुए सूर-प्रभृति वल्लभी कवियों द्वारा पुष्ट हो अपने चरम विकास को पहुँची। सूर प्रमुख अष्ट-धाप के कवियों ने कृष्ण के सौन्दर्य का तथा उनके स्वरूप और प्रभाव का बड़ा ही क्रमिक, विस्तृत और मादक वर्णन किया है। लेकिन इतना ध्यान रहे कि इन परम भागवत कवियों की सौन्दर्य-प्रशंसा में इतित लिप्सा और पैशाचिक कुवृत्ति की प्रचार प्रेरणा

नहीं। यदि है तो पूजा की सरस वृत्ति है और भक्ति की भव्य भावना। हिन्दी के समस्त कृष्ण-काव्य को पढ जाइये, आप को शृंगार का अविरल रस-स्रोत सर्वत्र बड़े बग से कलकल करता और चहता हुआ मिलेगा। परन्तु यदि तनिक भी आप ध्यान से देखेंगे और थोडा-बहुत भी सूक्ष्म दृष्टि से काम लेंगे, तो आप को इस सतह पर की कल्लोलमयी धारा के नीचे भक्ति की एक गभीर अन्तर्धारा मिलेगी, जिसमें शीतलता है और अपार शान्ति है। शृंगार और भक्ति की यही गगा-जमुनी कृष्ण-काव्य का सर्वस्व और सुरसिक भक्तों का प्राण है। यह ताप-तप्त ससृति के लिए शीतल छाया और सुखद विभ्राम है। इसके सम्पर्क में आने से व्यथित जीव अपना दुःख-द्वन्द्व भूल-सा जाता है—वह काव्यानन्द के साथ-साथ ब्रह्मानन्द का अनुभव-सा करने लगता है।

प्रस्तुत पुस्तक 'माधव-माधुरी' इसी कोटि का ग्रन्थ है। इसमें भी कृष्ण-काव्य की उसी पुरानी परिपाटी का अवलम्बन किया गया है। परम्परानुसार इसमें भी कृष्ण जीवन का वही अश विशेष रूप से चित्रित किया गया है, जो प्रधानतः सौन्दर्य-युद्धि को ही तृप्त करता है। इसके कृष्ण योगेश्वर कृष्ण नहीं, महाभारत का घोर युद्ध कराने वाले कूटनीतिज्ञ कृष्ण नहीं। इसके कृष्ण तो सूरसागर के कृष्ण की भाँति पहले सुन्दरता की रानि हैं, तो पीछे और कुछ हैं। यह लीला-धाम हैं, 'ठुमुक-ठुमुक पैजनियों' बजाने वाले मनमोहन हैं, और ब्रज के घर-घर घूम मोरस की तलाश करने वाले मायनचोर हैं। यह नटवर वेप धारण कर बन-बन घेनु चराने वाले हैं और 'वृन्दावन की कुञ्ज-गलिन' में 'वशीवट तर' त्रिभगी मूर्ति बनाए घरी बजाने वाले और रास-लीला करने वाले हैं। वस्तुतः

‘माधव माधुरी’ एक मधुशाला है, जिसमें माधव के मञ्जुल रूप और लीला की मधुर पेया के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं। इसका प्रत्येक पद मानो मधु-पात्र है, जिसमें यह हाला लबालब भरी है।

इसके पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध दो भाग हैं। पूर्वार्द्ध में कृष्ण की बाल-लीला, रूप, मुरली और रास तथा गोपी विरह का माधुर्य पूर्ण वर्णन हुआ है। उत्तरार्द्ध में हम कृष्ण के जीवन का वह अंश पाते हैं, जिसे उन्होंने मथुरा और द्वारका में प्रियाया। उत्तरार्द्ध बहुत थोड़े में है। इसे देखने से ऐसा ज्ञात होता है, मानो कवि ने कृष्ण के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण चित्र उपस्थित करने के मन्तव्य से यह एक परिशिष्ट जोड़ दिया है। ‘माधव-माधुरी’ मुक्तक काव्य है। भावों की लपेट में लिखे गये पद पाठक के हृदय तक सीधे पहुँच जाते हैं। इनमें भाव-प्रणयता है और पूरी स्वाभाविकता है। पारिडित्य प्रदर्शन का तो कहीं गन्व भी नहीं। गत्येक प्रकार के भाव अपने निसर्ग सिद्ध रूप में यथावसर प्रसंग-प्रश इस तरह आते गये हैं, मानो कवि ने उनके लिए बिल्कुल प्रयास ही न किया हो; शुद्ध हृदय का ऐसा ही मनोरम उद्गार, विमल वाणी का ऐसा ही निर्मल संदेश जीवन को प्रभावित करता है। भक्त हृदय की ऐसी ही पुनीत भाव-दशा समाज का स्रोत बदलने में समर्थ होती है। शृंगार के स्थायी भाव के अतिरिक्त विविध सचारी भावों का भी उन्मेष यत्र-तत्र बड़ा ही सुन्दर हुआ है, जो कवि की सहृदयता और सूक्ष्म-दर्शिता का परिचय देता है। पुस्तक में सर्वत्र भावुकता की गहरी ध्याप है। ऐसा प्रतीत होता है मानो कवि भाव भक्ति की तरंग में आत्म-निस्मृत हो गया है और इसी लोकोत्तर नशा में उसके दिमाग में जो कुछ उठा है, उसे वह कहता गया है।

रीति, छन्द, अलंकार आदि काव्य-नक्षत्रों पर उसने तनिक भी ध्यान नहीं दिया है। वस्तुतः माधव माधुरी के सभी भाग स्वतः-प्रसूत हैं।

‘माधुरी’ गीति-काव्य है। इसमें राग रागिनियों का सफल प्रयोग हुआ है। सभी पद गेय हैं, जो वाद्य-यन्त्रों के सहयोग में गाए जा सकते हैं। यह प्रायः सभी जानते होंगे कि सगीत और काव्य का चोली-नामन का साथ है। साथ ही नहीं, इनमें एक दूसरे की पुष्टि भी होती है। इन दोनों का मनोरम सहयोग कला के उत्कर्ष-साधन के लिए अपेक्षणीय है। मधुर वरुण-लहरी से निस्तृत माधुरी-सिक्त पद ऐसे सुन्दर होते हैं, मानो वे रग-भरी पिचकारी से निकले हुए शीतल और सुगन्धित फुहारों हों। ऐसे ही भावुक पद सगीत के बल पर रसिकों के हृदय में दूनी दृढ़ता से घर कर लेते हैं। यदि सभी नहीं, तो ‘माधुरी’ के अधिकांश पद ऐसे ही हैं।

‘माधुरी’ शृंगार-प्रधान है। इसमें शृंगार रस के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का विशद और मार्मिक वर्णन हुआ है। इसका रंग लोला-प्रकरण बड़ा ही मादक और मनोरञ्जक है। इसमें जीवन का कल नाद स्पष्ट सुनाई पड़ता है। गोपियों कृष्ण के प्रेम में मतवाली हैं। वे घर की सुध-पुध भूल सी गई हैं। पति पुत्र उनके प्रेम मार्ग के बाधक नहीं, लोक लज्जा और कुल की कानि उनके मार्ग में अडचन नहीं डाल सकतीं, वे दीयानी हैं। कृष्ण भी सुन्दरता की मूर्ति हैं। गोपियों को रिक्ताने में वे कोई कोर-कसर नहीं रखते। उनकी मोहिनी वशिका में जादू है, जिसके एक-एक स्वर पर विश्व लोट-पोट हो जाता है। प्रेमोन्मत्त गोपिया मनमोहन पर निसार हैं और ‘बाँसुरी वाले श्याम’ भी प्रमदा गोपियों के यौवन सर में निमग्न-से हो रहे हैं।

इतना ही नहीं, सारी प्रकृति भी साथ-साथ उन्मादिनी हो गई है। देखिए, ऋषि ने ध्वन्यात्मक शब्दों के सहारे मतवाली प्रकृति का कैसा मादक चित्र र्पिंचा है —

रिमझिम रिमझिम देव धरसत री ।

हरि त्रिनु निसि जीव तरसत री ॥

उगड़ि घुमड़ि चहुँ चलत वदरगा गन गन गन घन गरजत री ॥

सननन सननन चलत पपनवा तन तन तन तन तरजत री ॥

इन्द्र-वनुप सर-बूँद अधिक चलु भमभम भमभम भमकत री ॥

चपला इत उत चहुँ निशि धावति चमचम चमचम चमकत री ॥

अँग अँग गध सुगध पुष्प बहु गमगम गमगम गमकत री ॥

आइ गई निसि केलि कीन्ह हरि गोपिन के भय धरजत री ॥

सुरप्रद रामसेवक चहुँ युग हरि अँग अँग कर सिंग परसत री ॥

अहा ! इसके वर्णों में कैसी आनुप्रासिकता है, इसके शब्दों में कैसी सरस सुस्वरता है, इसके चरणों में कितनी अबाध गति है और इस पूरे पद में कितनी तन्मयता, विह्वलता और उल्लास भरा हुआ है ।

यह बात ठीक है कि प्रस्तुत काव्य में शृंगार रस का प्राधान्य है, परन्तु साथ ही यह भी ठीक है यह शृंगार वर्णन अश्लील और विकारोत्पादक नहीं। यह शुद्ध है और धार्मिक भावों से ओत-प्रोत है। कृष्ण-राव्य के अन्य ग्रन्थों की भाँति 'माधुरा' की भी यही विशेषता है कि इसमें भक्ति और शृंगार का सुरावह सम्मिश्रण है। इसमें जहाँ कहीं भी शृंगार का वर्णन हुआ है, वहाँ अवश्य भक्ति का गहरा पुट दिया गया है। बड़ी तपस्वता से सर्वत्र इसका ध्यान रखा गया है कि कहीं भी मानसिक शैथिल्य न आने पावे, प्रत्युत भगवद्भक्ति की दृढता का उत्तरोत्तर

विकास हो। गोपी और कृष्ण का वर्णित सयोग इन्द्रिय-लोलुप वित्तासियों का घृणित मिलन नहीं, इसमें नैतिक पतन की ओर सकेत मात्र भी नहीं। यह तो आत्मा और परमात्मा के आध्यात्मिक किन्तु मधुर मिलन की ओर सूक्ष्म निर्देश करता है। जो हो, इतना तो अवश्य है कि कृष्ण और गोपियों की यह केलि-लीला हमारे अध्ययन और परिशीलन की वस्तु है।

शृंगार रम के अतिरिक्त भक्ति-रस का भी—जैसा ऊपर कहा जा चुका है—इस ग्रन्थ में बड़ा ही सुन्दर प्रस्फुटन हुआ है। स्वर्गीय कवि भक्त हृदय है, उसमें भक्तों की-सी दीनता है और वह सदैव अपने का नगण्य और दोषी समझता है। परन्तु उसे अपने प्रभु—श्री कृष्ण पर अपार भरोसा है। उसे स्वामी क दया दाक्षिण्य पर, उनकी चारु चरितावली और सौम्य त्रिरुदावली पर पूरा विश्वास है। उसे इस बात का दृढ निश्चय है कि भगवान् कृष्ण भाव के भूरे हैं और वे मेरी विनय पर अवश्य ध्यान देंगे। इसी लिये कवि की विनयावलियों में अनूठे भावों का कोप छिपा हुआ है, जिसमें दैन्य है, निश्छलता (sincerity) है, प्रीति और प्रतीति है, तथा अविचल अनन्यता है। 'माधुरी' के 'कल्याण' राग वाले प्रायः अधिकांश पद विनय के हैं, जिसमें सस्कृत के स्तोत्रों अथवा गोस्वामी तुलसीदासजी को 'विनय-पत्रिका' के स्तोत्रों का-सा स्वाद मिलता है।

अपने दोषों और त्रुटियों के बारे में कवि, देखिए, कितनी सचाई से कहता है —

तोहिं कवनि जतन सो गिम्ताओं रे हरी ॥

कनही न जस देव, गावो रे सरी ॥

दान नहि ज्ञान-भक्ति नहि कोइ पुण्य शक्ति
जोग नहिं जग्य व्रत तप न चरी ॥
पूजा नहिं देवी-देवा नहिं द्विज सन्त-सेवा
धर्म-गति-हीन तीर्थ एको न करी ॥
नहिं मतसग करु हरि जस सुनि धरु
मतगुरु वाक्य वर उर न धरी ॥

परन्तु फिर भी उसे प्रभु की भक्त-पत्सलता पर पूरा विश्वास है —

‘ राम सेवक दाम बोलि कीन्ह पावन ’
अथवा—‘ धारि मनुज रूप रामसेवक पालन ’

इस प्रकार पुस्तक में सर्वत्र कवि का ‘ आत्म-निवेदन ’ का भाव और उसका विश्वास स्पष्ट दीप्त पड़ते हैं ।

हाँ, एक बात और । कुछ लोग काव्य की बाहरी रूप-रेखा का विशेष ध्यान रखते हैं । भाषा की सफाई, अलंकारों की विलक्षण योजना तथा छन्दों का सूक्ष्म निर्वाह आदि बातों पर ही किसी कृति की सफलता और असफलता को नाप-जोख करते हैं । वे कलाग्राजी पर अधिक ध्यान देते हैं, कलात्मकता पर नहीं । भाव चाहे साधारण ही क्या न हो, लेकिन अगर बाहरी तडक-भडक है, तो वे उस रचना की दिल खोल कर प्रशंसा करेंगे । यदि इस दृष्टि निन्दु से, ‘ माधव माधुरी ’ का अवलोचन किया जाय, तो यह अवश्य सक्षेप मिलेगी, क्योंकि इसमें न तो भाषा की म्वच्छता है और न कला का आडम्बर-पूर्ण निदर्शन ही । इसकी भाषा मुख्यतः ब्रज भाषा है, पर पूरी असयत और उग्र-सायड । इसमें शब्दों का अनिश्चित प्रयोग हुआ है । व्याकरण की अशुद्धियाँ भी मिलती हैं । छन्दोभंग दोष भा सरलता से मिल

जायेंगे। इसमें कल्पना की भी ऊँची उड़ान नहीं और न तो अनोखी लालचणिक मूर्तिमत्ता ही है। परन्तु केवल इन्हीं कारणों से यह पुस्तक नगण्य नहीं कही जा सकती। जैसा ऊपर कहा जा चुका है काव्य का प्राण तो भाव है। भावों से ही काव्य की परख होनी चाहिए और कविता में भाव के आगे कला को सदैव गौण स्थान देना चाहिए। यदि भाव के सामने कला का स्थान अप्रधान है, तो फिर कलाबाजी का तो कोई कहना ही नहीं, सच पूछिए तो काव्य के मूल्य निर्धारण में इसका तो कोई स्थान ही नहीं होना चाहिए। और, यदि इस कसौटी पर कस कर इस पुस्तक की परीक्षा की जाय, तो यह अपना विशेष स्थान रखती है। बाहरी सजधज के न होने पर भी इसका अपना निराला आकर्षण है। भाषा की रूढ़ता होते हुए भी इसमें आन्तरिक स्निग्धता है। छन्दाभंग दीप रहत हुए भी इसके पदों में अविरल गति है। चामत्कारिक अलंकारों का अभाव होते हुए भी इसमें आह्लाद-कारिणी शक्ति है। इसमें विगताढम्बर का सौन्दर्य, सारल्य की मधुरिमा और सद्भाव की पवित्रता है। यह 'माधुरी' पीयूष-माधुरी है, जिसमें अपूर्व सर्जीवनी शक्ति भरी पड़ी है।

उपयुक्त सक्षिप्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि 'माधव-माधुरी' शृंगार-प्रधान भक्ति-काव्य है, जिसमें मधुर-मूर्ति माधव की माधुर्य-पूर्ण माधुरी का सरस वर्णन हुआ है। सुरसिक पाठक गण इसमें अपनी वृत्ति को रमावें, देखें इसमें उन्हें कितना सुर, कितना स्वाद और कितना सन्तोष मिलता है। हाँ, एक घात आवश्यक है—उन्हे मधु-वृत्ति रखनी होगी। यदि ऐसा किया जायगा तो पाठक भ्रमरों के हृदय-रोप में वह मधु तैयार होगी, जो भव रुज के लिये अमोघ ओषधि सिद्ध होगी,

रामराण का काम करेगी । वस, इससे अधिक मैं इसके विषय में नहीं कहना चाहता ।

अन्त में, मैं इसके स्वर्गीय रचयिता के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए ईश्वर से प्रार्थी हूँ कि वह इस भक्त हृदय का स्वर्ग में शाश्वत शान्ति प्रदान करें । यह प्रत्येक धर्म प्राण हिन्दू जनता का कण्ठ-हार और भावुक सज्जना की प्यारी सम्पत्ति होगी— यह मेरा पूरा विश्वास है ।

उदयप्रताप कालेज,
काशी ।
नागपञ्चमी, स० १९९२ वि० ।

मार्कण्डेय सिंह एम ए



दो शब्द



परमेश्वर की असीम अनुकम्पा से 'सदन' का दूसरा पुष्प पाठको के समस्त उपस्थित करने में मुझे हार्दिक उल्लास है। 'माधव-माधुरी' के रचयिता स्वर्गीय प० रामसेवक चौबे तालुका डोभी, जिला जौनपुर के सुप्रसिद्ध ग्राम हरिहर पुर के निवासी थे। आप का जन्म सम्वत् १८३७ के लगभग हुआ था। बाल-ब्रह्मचारी थे। पके शैव होते हुए भी विष्णु के भक्त थे, जैसी कि प्राचीन काल के भक्तजनों में कम प्रवृत्ति पाई जाती है। आप की शिक्षा-दीक्षा ग्राम में हुई थी, सम्भवत कुछ समय तक काशी में भी संस्कृत का अध्ययन आप ने किया था। स्वर्गीय चौबे जी को लोग महाराज जी के नाम से स्मरण करते हैं और इनके सम्बन्ध में अलौकिक कथार्ये भी प्रसिद्ध हैं। इन्होंने पैदल ही चारों धाम की यात्रा की थी। खूब हष्ट-पुष्ट थे। उनके साथ चलने वालों दुलकी दौड़ना पड़ता था। महाराज जी ने ब्रज-भाषा में कई काव्य-ग्रन्थ रचे थे और मेरे घर पर असाधधानी से रखे रहने के कारण दोमरु तथा भोगुर द्वारा उनका सर्वनाश कर दिया गया। आज भी 'भक्त माल' के १०" X १०" के लम्बे-चौड़े आकार के पृष्ठों की धुँधली स्मृति हृदय में हूक उत्पन्न किये देती है। आप के लिखे दो एरु काव्य-ग्रन्थ मेरे पास अब भी हैं। मेरे स्वर्गीय पितामह श्रीयुत ठाकुर देवकी नन्दन सिंह जी, महाराज जी के अनन्य भक्तों में से थे। महाराज जी की भी उनपर कृपा रहती थी और वह हमेशा मेरे पूज्य

पितामह जी के यहाँ ही रहत थे। पूज्य चौबे जी द्वारा स्थापित शिव जी की मूर्ति अब भी मेरे यहाँ आतान को पवित्र कर रही है। आप का ध्यान वाग और कुओं की ओर बहुत था। अपने जन्म स्थान हरिहर पुर में बड़ा सुन्दर राम-शाग और सीता-रूप निर्माण कराया था, किन्तु आये दिन वे अन्धरी हालत में रहा है। बनारस आजमगढ़ वाली सड़क पर डोभी स्टेशन से कुछ ही दूर आगे श्रमिता पथिकों की तृपा बुझाने वाला पक्का कुआँ महाराज जी की ही धवल कीर्ति है। यह कुआँ सुदवाया ही जा रहा था कि आप अस्वस्थ हुये और जन हालत बहुत खराब मालूम हुई तो पुण्यधाम काशी में लाये गये, किन्तु उन्होंने प्रथम ही कह दिया था कि जब तक कुएँ में पानी निकलने का समाचार न मिलेगा, मेरी मृत्यु न होगी। अस्तु, हुआ भी ऐसा ही। आप का स्वर्गास सम्बन्ध १९३५ में हुआ। जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूँ, स्वर्गीय महाराज जी ने आमरण ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्णतः पालन किया, उनके भाइयों की सतान में श्रियुक्त ५० शिवनायक चौबे और ५० जगन्नाथ चौबे की पर्याप्त प्रतिष्ठा है।

‘मावव-माधुरी’ के प्रकाशन में सुहृत्वर श्रीमान् ठाकुर तालुबेदार सिंह साहब, पयागपुर ने जो अमूल्य सहायता दी है उसके लिये मैं आप का विशेष आभारी हूँ। आप की ही कृपा का फल है कि पुस्तक इस रूप में प्रकाशित हो सकी है। उदय प्रताप कालेज काशी के सुयोग्य हिन्दी प्राफेसर श्रियुक्त ठाकुर मार्कण्डेय सिंह एम० ए० को सुन्दर एवं विद्वत्तापूर्ण भूमिका लिखने के लिये मैं धन्यवाद देता हूँ।

प्रकाशक

माधव-माधुरी

अर्थान

श्रीकृष्ण भक्तावली



दोहा

श्री गणपति पद कमल रज वदत दोउ कर जोरि ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य देइ करहु विशद बुद्धि मोरि ॥ १ ॥
श्री गुरु कमल पुनीत रज मुभिरि सुभिरि मनलाय ।
दिव्य चक्षु उर विशद लहि कहव चरित पदुराय ॥ २ ॥
शभु शिवा पद वदि शुभ भक्ति पाय गुरु ज्ञान ।
कृष्ण चरित कछु कहव अब लहु जेहि कलि कल्याण ॥ ३ ॥
ग्रह जुत योगिनि पद कमल वदत मन चित लाय ।
लोकपाल त्रिगपाल पद वदत बहु शिर नाय ॥ ४ ॥
विघ्न कोइ नहि निकट रहु भक्ति ज्ञान धिर होय ।
सैम सारदा कहत बुध मति निमल होय मोय ॥ ५ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश पद उन्त बारहिं वार ।
उद्वव धिति लय करत प्रभु त्रयगुण के अनुमार ॥ ६ ॥
अवस्था त्रयगुण सकल पचकोश नहि होय ।
जीवेश्वर तजि देइ त्रय देव तीनि नहि कोय ॥ ७ ॥
तुरिया शुद्ध सरूप प्रभु करत जगत व्यवहार ।
ब्रह्मा विष्णु महेश मिलि करहु मोहि भवपार ॥ ८ ॥

ब्रह्माणी पद कमल रज रमा उमा पद धरि ।
 वदत वारहिं वार शुचि कर मम अघ दुख, दूरि ॥९॥
 पुरा सुसप्त समाज जुत देव पितर समुत्पय ।
 गगादि मिलि तिरथ मत्र कर मम मदा सहाय ॥१०॥
 भैरव अष्ट अधार जग करता भरता लोक ।
 गंगा दड कर धारि प्रभु हर मम अघ उर शोक ॥११॥
 शक्ति न जुत पदकमल रज वदत सुर मुनि भारि ।
 ज्ञान भक्ति वैराग्य सख देहु सर्व अघ टारि ॥१२॥
 नव जोशी परधान शुक् नारद मुनि सनमादि ।
 तत्व विचार मो निपुन अति लखत जगत सब बादि ॥१३॥
 तत्व विचारि न पदकमल वदत द्वौ कर जोरि ।
 तत्व ज्ञान मोहि देहु प्रभु बाल बुद्धि लखि मोरि ॥१४॥
 पंच देव को भक्त जोड भूत भव्य ब्रतमान ।
 माँगतैसु कर जोरि कर तखि दानी परधान ॥१५॥
 विप्रय विराजिन तें कहत हाथ जोरि शिर नाय ।
 विप्रय मुक्त करि भक्ति धरि देहु ज्ञान हरपाय ॥१६॥
 कविता जोड जुग चारि वर प्रथ कीन्ह वहु मोय ।
 तेहिते माँगत छंद गति भूत भव्य होय कोय ॥१७॥
 श्रुति पुराण कविता परम सेम महेश विनेश ।
 विप्रि बानी हनुमान कवि भृगु पुरु चद्र गणेश ॥१८॥
 बालमीक मृकंदु-सुत व्यास कीह बहु प्रथ ।
 सतजुग त्रेता द्वापरहि कवि जन हित कर पथ ॥१९॥
 कलि मेंह कविता अमित वर प्रथ विविधि विधि कीन्ह ।
 सुगम पथ नर नारि हित अगम सुलभ सुख दीन्ह ॥२०॥
 वन्दत पन् जदेव कवि रमिक कृष्ण पन् लीन ।
 चमरनिं कविगान अह हरि रम ताहि तन पीन ॥२१॥

तुलसी सूर कवीर कवि नानिक पद धरु माथ ।
 कृपा करहु तुण भक्ति त्रिरि मम शिर अब धरु हाथ ॥२२॥
 सकल करिनि सत्र भक्त पद ज्ञानिन पद शिर नाथ ।
 प्रथ क्रि हम भक्तावली रहन कृपा मोड पाय ॥२३॥
 ग्राम सुखर मूर्च्छल महित राग ज्ञान जेहि होय ।
 करहु कृपा कनि मन सकल देन भक्त सत्र कोय ॥२४॥
 प्रथ कृष्ण 'भक्तावली' नाम धरन 'हरनाथ' ।
 नाम लेत जेहि प्रथ वर कृपा करहि यदुराथ ॥२५॥
 हन्दु मत दोन दयाल अति लीन बधु 'सियराम' ।
 'ज्ञान' भक्ति वैराय देइ 'पूर्ण' करहि मन काम ॥२६॥
 मत बश द्विज प्रश पद प्रत बारहि बार ।
 प्रथ शोधि देइ भक्ति वर कर मोहि भव निधि पार ॥२७॥
 सारद जिह्वा कठ सुचि प्रसत कहत जुध वेत् ।
 मन भावे तम प्रथ 'कुरु' करिनि लोहत कोड गेद ॥२८॥
 'कलि' मह नाम प्रधान 'हरि' गावत वेद पुरान ।
 'राम' सबक उर धरु हरि नाम करिहि 'कल्याण' ॥२९॥

राग बेलावल

श्रीसतगुरु अथ होहु सहाई । कलि कल्मष जेहि थापु नसाई ॥ टेंका
 कृपा पाय गुरु मन ठहराई ॥ राम कृष्ण कलु जम कहु गाई ॥
 हरि अखड नहि खड जनाई । रोक चगेवर मोहि समाई ॥
 रूप परम गुरु देत देखाई । हरि जुत हरि जम उर रहु छाई ॥
 राम सेवन सरनागत आई । कृष्ण अंगित गुरु देहु बताई ॥ १ ॥

श्री गणपति पञ्चमता नमामी । प्रथम पुज्य त्रय पुर उर गामी ॥ टेक ॥

एक दंत लमोदर नामी ।

वारण बदन सर्व उर जामी ॥

सकल सिद्धि प्रद सध जग स्वामी ।

तव जस मुर मुनि मफल घण्णी ॥

समन्तानी वृत्त दक्षिण वामी ।

अनघ अशेष सकुच सकुचामी ॥

राम सेवक लोभी अति कामी ।

मौंगत भक्ति जो त्रिभुवन धामी ॥ २ ॥

बदौ मारुत-सुत जग वन्दन ।

ज्ञान भक्ति प्रद मुर अभिनदन ॥ टेक ॥

दीन दयाल शत द्विज रजन ।

राम बसत उर खल दल गजन ॥

राम उमा बंदत पद सारद ।

शुक सनकादिं भक्त मुनि नारद ॥

दीन-बंधु जन पाल अमानी ।

भक्त सकल मुनि शशु भवानी ॥

राम सेवक उर लखि वरगानी ॥

मौंगत भक्ति सकल सुख रानी ॥ ३ ॥

बदत निर्गुण ब्रह्म बुलारी ।

जो तिहुँ काल एक गति सारी ॥ टेक ॥

अलख निरजन कहु श्रुति चारी ।

परिपूरण वरणत मुनि क्कारी ॥

शुद्ध अकाश समान सुरगारी ।

अज अनवय जानु अधिकारी ॥

मगुण सोई वपु जन हित धारी ।

चरित अमित करि जग विस्तारी ॥

राम सेवक मोह सरन सवारी ।

भव निधि ते प्रभु मोहि उतारी ॥ ४ ॥

राग श्री

हरि अमित रूप भुवि धारी ।

हारि सकल भुवि भार महा रुज कर नर नारि सुखारी ॥ टेक ॥

मन्यव्रत हित रूप मीन वर ब्रह्म रात्रि भय टारी ।

मदर पृष्टि धरन हित कच्छप अमृत दीन्ह सुर भारी ॥

पृथ्वी हेतु तन सूकर धरि हरि हिरण्याक्ष कहँ मारी ।

नर हरि रूप कनककश्यप हित निज जनजस विस्तारी ॥

बलि हित बामन रूप महा प्रभु दीन्ह इन्द्र सुखारी ॥

सत्रिय इष्टवधन हित भृगु पति करु द्विज भुवि अधिकारी ॥

शवणवध हित राम रूप धर वेद वचन अनुसारी ।

कृष्ण कस वध हेतु धारु तन सुख लहु ब्रज नर नारी ॥

धौव सरूप वेद निदा हित जेहि सुख सुर मुनि भारी ।

कत्रि मरुपमलिछन वध हित धरि कलिकल्मष जारी ॥

दस अवतार चरित अति पावन जिमि गंगा सरिवारी ।

कहत सुनत उर निर्मल करु जन अघ करि मिह विदारी ॥

कपिलादिक अवतार अपर जित चरित सकल भ्रमहारी ।

सेस महेश दिनेश कहत बुध दूरि महत अध डारी ॥

अधम उधारन नाम रूप हरि चरित कहत श्रुति चारी ।

अमित पतित कहँ दीन्ह कृष्ण गति गम मेवक अब पारी ॥ ५ ॥

गो लोक शोक भ्रमहारी ।

जहँ हरि रूप अनूप साहावन प्रति विस्तरपुर भारी ॥ टंक ॥
 ब्रह्मादिक सुख रोजत चहुँ जुग दरशन लहु त्रिपुरारी ।
 सुगम नहीं कोइ काल अगम अति कहु युध जन श्रुति चारी ॥
 एक लाख हजार अधिक बर राम अनूप सवारी ।
 राम बिलास हुलास करत हरि रात्रि दिनस मुखसारी ॥
 चित्रित अति गो लोक महा छत्रि त्रय पुर शोभा डारी ।
 सकल सुदृढ फल लहतताहि पुर कृष्ण भक्त अधिकारी ॥
 निगमागम पौराण कहत सन सेसादिक कवि भारी ।
 महिमा गोपुर् की अति भारी पार न लहु उर धारी ॥
 अति उदार गोलोक शोक हर पालत सम नरनारी ।
 सरनागत अर राम सेवक प्रभु भवनिधि पार उतारी ॥ ६ ॥

गो लोक सकल सुख रासी ।

महा प्रलय भो नाश नाहि कोइ महिमा वेद प्रगामी ॥ टंक ॥
 राम बिलास करत प्रति जुग हरि रात्रि दिनस बहुधा मी ।
 कौटिन कामदेव रति निलमत रवि शत तेज प्रभा सी ॥
 अग अग प्रति भूपन राजत वसन पीत सुखमा सी ।
 श्याम गौर तन क्रीडित गोपुर शोभा परम हुतासी ॥
 भूपन वसन तडित इय त्रियगन हरि तन मेघ घटा सी ॥
 गान सुराग अमृत सम वरसत पियत नास हरि दासी ॥
 सकल लोक हर शोक लोक यह कृष्ण जनित दुख नासी ।
 ध्यान करत कोई जल थल महँ बसि होत सोइपुरवासी ॥
 ललचत मन सुनि जोग भोग वर लहु सुख प्रेम पिआसी ।
 अचल अगम सुख राम नेरुलहि प्रमुदित कृष्ण आसी ॥ ७ ॥

हरि धाम अमित बुध गाई ।
 तजि भुवितल प्रभु आई ॥ टेक ॥
 क्षीर सिंधु सतान लोक कोइ कोइ वैकुण्ठ बताई ।
 सत्य लोक कोइ सैत लोक कहु कोइ सरवर जनाई ॥
 कोइ कहत गोलोक रास बहु कृष्ण रूप अधिकाई ।
 एक रास जन हित प्रमुदित अति ब्रज भुवि हरि प्रगटाई ॥
 सोई हरि चरित सेस बुध परनै श्रुति कहि पार न पाई ।
 लोक परम हरि आस निरखि कवि गोपुर मति न समाई ॥
 नर नारायण देव धारि तन ब्रज भुवि प्रगट देखाई ।
 अनत शिर केश कहत कोइ कृष्ण राम दोउ भाई ॥
 देवकिसन प्रभु आपु आत्म गति जन्म तीनि दरसाई ।
 सोइ अत्र राम सेनेक उर गहि धुन कछु जस कजयदुराई ॥८॥

१ हरिचरित सकन सुख कारी ।

बधि खल भुवि रुज टारी ॥ टेक ॥

११ जन्म लीन्ह वसुदेव देवकि गृह रूप अनूप सवारी ।

नद जसोदा भक्ति निरखि वर गोकुल तुरित सिधारी ॥

१२ भारि पूतना प्रथम मख लीला श्रीधर विप्र दुलारी ।

उलाटि शकट शकटासुर बधि हरि अघा बकासुर मारी ॥

१३ बत्स सुरधेनुका परलगा बध करि हरि सुख सारी ।

बत्सनाल ब्रज रूप अमित धरि विधाता भ्रमहारी ॥

१४ कालि नाग कहँ खण दीप करि करु यमुना शुभ वारी ।

गोवर्द्धन शिर धारि छत्र इव मद्र हरि हरि जल जारी ॥

१५ नल कृषर कहँ दीन्ह विविध गति जमलार्जुन भुवि डारी ।

शख चूड बध करि केशी बधि भात खाय द्विज नारी ॥

१६ अक्रान्ति लेइ चलेउ कृष्ण कहँ सुनि गोपी गन गारी ।

विगह विगह हरि त्याग सहत नहिं हरि धरि करि पुर धारी ॥

अक्ररणि निज जान देड जल रज कहि मारु पधारी ।
 वस्त्र पहिनि माला गल धरि सत्र कुत्ररिहिं कीन्ह सुखारी ॥
 धनुष भग करि रत्नक बधि मोड हस्ति प हस्ति विदारी ।
 मुष्टिक आदि चाँणूर वीर त्रवि कच गहि कस प्रचारी ॥
 नर्गह शङ्ख भेजु गोकुल हरि चलेउ नयन जल डारी ।
 देवकि अरु वसुदेव अनदित हरि कहु पितु मँनारी ॥
 रत्न वन करि मुरनर मुनि मुख थरि हरेउ भार भुविभारी ।
 अमित तित गति दीन्ह कृष्ण भुवि रामसेवक अथपारी ॥

दोहा

एक लाख एकईम सहस गोपुर हरि धर रास ।
 रात्रि दिवस सुरा करन मन कर हरि राम विलास ॥ १ ॥
 छगम रूप जस शभु कहँ विधि कहँ अति अवगाह ।
 सेस वेद नहिं पार लहु अपर लहै किमि थाह ॥ २ ॥
 एक रास ब्रज आउ सोइ करन जगत उपकार ।
 तामु चरित मिलि सकल कवि कहत लहत नहिं पार ॥ ३ ॥
 जेहि जल बूडत मदर गज कहँ अति अवगाह ।
 राम सेवक मत पिपिलिका लैन चला शठ थाह ॥ ४ ॥
 व्यास कहनि कहँ सूर मत अपर कविन मतपारि ।
 कृष्ण चरित निज मति सरिस कहु कहु पथ सोइ धारि ॥ ५ ॥

राग ओ

भुवि भार अधिग गन्वाई ।
 सनि मन्त न उर अकुलाई ॥ टेक ॥
 वन परवन जल भारि नहिं फाई गज रथ तुरँग बडाई ।

नर पशु अपर चरात धरनी पर गृह पपान बहु छाई ॥
 मख हित खात करत, नर बहु निधि जल हित खात सोठाई ॥
 उठत चलत बैठत सोयत नर धायत दुख न जनाई ॥
 सत वश द्विज वश धरत पद भुवि उर पुर सुख पाई ॥
 भक्त कोइ सोपचादि धरत पद सुख लहु भुवि अधिकारि ॥
 परगण पर द्रोह निरत जोइ श्रयकृत जन समुदाई ॥
 कोइ विधि चरन धरत धरनी तल शिर धुनि भुवि पछताई ॥
 कसादिक रल भार अधिक लहि नहिं भुवि उर सहि जाई ॥
 विकलता भुवि राम सेवक हरु दीन-बधु बदुराई ॥१०॥

गो रूप धरणि वरधारी ।

लखि कसादिक अथ भारी ॥ टेक ॥

सहि नहिं सकेउ भार धरणी उर मुनि गन जाइ पुकारी ।
 बोध न लहु मुनि गन जुत पुनि भुवि देवन सकल दुलारी ॥
 देवन सो नहिं हानि दुख कोइ को भुवि भार उतारी ।
 सकल देव मुनि धेनु सहित पुनि गो विधि भवन विचारी ॥
 धेनु रोय निज दुख विधि सन कहु करु विधि तोपि सुपारी ।
 सुर मुनि मिलि विधि क्षीरसिधु चलु सग धेनु त्रिपुरारी ॥
 सिधु तीर धरि धीर देव सय धेनु सहित मुनि मारी ।
 एक टक निरखत राम सेवक सब विधि श्रस्तुति अनुसारी ॥११॥

राग कल्याण

जयति जयति जय मुकुंद जयति द्वंद भजन ।

त्रितै ताप पाप शाप अत्र समस्त गजन ॥ टेक ॥

जैति चरन सरन पाल सुर मुनि लखि महि विहाल -

लीजय पनाव सदा भक्त रजन ॥

भ्रमरत सफल एक साथ सुर मुनि महि जोरि हाथ
 मातु प्रातु त्राहि पाहि बलुप मनी ॥
 जयति श्याम कमल गात मृदुल चरन चिन्त घात
 मुनि गा मन भृग पाग परत वदन ।
 सेनोपरि शयन नाथ करत धरत सकल माथ
 शोक मोह टारि उगति सुन्द चदन ॥
 जयति रमा गदि पाद उरसि लाय मृदुल वाद
 जनन हेतु करत शोच देव वदन ।
 देवमुनि ममाज नाथ दुरित धरत चरन माथ
 वरहु अत्र मनाथ साथ धरणि मडन ।
 जयति श्रीर सिंधु वास करत चरन सकल आस
 रहत नाहि डर प्यास शोच मोचने ॥
 सुर नर मुनि करत ध्यान चहुँ जुग जन होत त्रान
 सीदत अत्र देखु देव कमल लोचन ।
 जयति नाथ अति उदार धरणि भार हरणि हार
 अमित रूप धारि दुष्ट सकल घातन ॥
 मनुज रूप नाथ धारि कस आदि दुष्ट मारि
 हारि धरणि भार रामसेवक पालन ॥१०॥
 नौमि अज अनादि ब्रह्म सकल लोक आयत ।
 एक त्व अनेक रूप करत उदधि सायन ॥ टेक ॥
 उल्लव स्थिति लय त्वमेकमद्भुत चर्य
 त्रिराटमिधर विभु प्रभु समस्त नायक ।
 अज अप्रद निर्गुण घृत सरूप सगुण
 चरित पावन स्वभक्त ज्ञान दायक ॥
 मञ्ज कञ्ज शोड तनु गृते वृसिंह वामन
 परशुगम रूप चरित सर्व लोक लायक ॥

धृत अनूप रूप त्व पवित्र वश भानुज
 वध कृत दशानन मुवारि धनुष सायक ।
 मत कृत म्नुति श्रुत धृत अनेक विग्रह
 प्रसीद त्व नमामि देव शोच मोचन ॥
 सीदति न महति न गेति न विलापन
 तवाग्नि प्राथित सदा विलोकुकमल लोचन ।
 श्रुत स्तव कृत अह्न समस्त लायक नज
 प्रमन्नानन कृत स्वरूप भावत ॥
 समस्त दुख भजा कृत सुधेनु रजन
 राममेवक दास वोति क्रीन्ह प्रावन ॥१३॥

राग धनश्री

त्रिधि विनय कीन्ह अति भारी ।

हाथ जोरि शिर-मोहि पुलक तन पर हित ध्यान गुहारी ॥टेका॥
 अस्तुति सुनि विधि पर हित धृत सम ऋद्ध इन्द्रिय विचारी ।
 द्वेष काल अवसर निज लगि सब धरणि नार अधिनारी ॥
 विनु शरीर बानी नभ सन भइ विधि उर प्रविसि दुलारी ।
 अण क्रीन्ह विधि ध्यान कगत उर हरि वर रूप निहारी ॥
 अस्तुति कर विधि रूप निरसि हरि कर उर वचन मवारी ।
 सुग मुनि धेनु न सुनु हरि बानी रूप न लग गिपुरारी ॥
 विधि देवन सन कहु हरि बानी मज मुनि चन जुन नारी ।
 हरि तन धरि मज मुनि क्रोडहि अत्र गोप गोपिन भिलि नारी ॥
 करि लीला नर भार हरु मुनि वसगदिठ रिपु नारी ।
 अस वदि भवन मवन निज करु विधि रामरेवक मुग सारी ॥१४॥

मुनि बचन धात्रि सुख पाई ।

सुर गन महि मुनि समुदाई ॥ टेक ॥

महि विर होय हरि पद आश्रित रहु मुनि गन ध्यान रागाई ।
 देव सकल प्रमुदित मन त्रिय जुत नर तन धरु ब्रज आई ॥
 सकल लोक सपत्ति उत्तम जुत ब्रज भुवि आइ समाई ।
 गोप गोपिन की वृद्धि भई बहु गोधन भूति भलाई ॥
 चित्रित नगर डगर चित्रित सब शोभा वरनि न जाई ।
 हरि आगवन उछाह अधिक उर वाजत अनद बधाई ॥
 नद भवन त्रय लोक सम्पदा आइ सकल सुख छाई ॥
 राजित ब्रज सब जीव गुल्म तर नद घरनि अधिकाई ।
 वसुदेव मन मुदित रात्रि दिन यदुकुल प्रीति जनाई ॥
 उर पुर रामसेवक निति निरखत श्याम रूप यदुराई ॥१५॥

दोहा

प्रभु अज्ञा मुनि कान विधि देवन सकल बुझाय ।
 त्रियन सहित सब देव गन ब्रज नर तन धरु आय ॥ १ ॥
 हरि कौ जन्म विचारि ब्रज हर्षित बहु त्रय लोक ।
 उत्सव सकल सकेलि ब्रज प्रमुदित रहु गत शोक ॥ २ ॥
 जन्म भूमि का कहत अर जेहि थल हरि अवतार ॥
 प्रीति विरोध जनाइ रल जिमि उतरा भुवि भार ॥ ३ ॥

राग श्री

उग्रसेन राज सुग्य नारी ।

जेहि हरपित रहु नर नारी ॥टेक॥

चंद्र-चश-श्रवतश जजाती तासु तनय सुग्य सारी ।

यदु अरु पूर भ्रातृ जग जानत बहु पुगाणु श्रुति चारी ॥

यदुबशी वसुदेव राज नहि कौकुन एह जग भारी ।
 प्रूर वंश उमसेन राज करु रहु ब्रज सकल सुखारी ॥
 देवक को कन्या देवकी वर तेहि जा सकल दुलारी ।
 कंस छोह करु लसि मगिनी लघु नृप कहँ अति उर प्यारी ॥
 कृष्ण वास थल अगम सुगम लसि छत्रि शोभा तनगारी ।
 देव सम त्रय पुरन नारि कौड ध्यान करत जन भगारी ॥
 सुता त्रिवाह योग्य वर निरपत उर पुर थिर करि थारी ।
 हरि प्रेरित वसुदेव भाउ मन रामसेवक गुनधारी ॥१६॥

दोहा

शुक सुता गुरु सुता मन वाद कारि गिरु कृप ।
 आखेटक मौं जाय ढिग कर गहि काढेउ भूष ॥ १ ॥
 करु त्रिवाह भृगु ताहि सन नहुरि साप तेहि नीन्ह ।
 जीर्ण जानि नृप सुता दुख सापानुग्रह कीन्ह ॥ २ ॥
 जुवा अपर तन बदलि नृप कर तुम भोग विलास ।
 देव जानी मम सुता वर तजत न तन पद पास ॥ ३ ॥
 ज्येष्ठ सुत यदु नृपति को तन जाँच्यो नहि दीन्ह ।
 पर दीन्ह तन हर्ष जुत पितु अज्ञा जस लीन्ह ॥ ४ ॥
 अमित काल करि विषय मुख तन देखे दीन्ह स्वराज ।
 उमसेन प्रूरु कुल कर सुख राज समाज ॥ ५ ॥

राग टोडी

उमसेन नृप निज उरमि विचारि के ।
 कन्या जोग भोग वसुदेव को निहारि के ॥ टोका ॥
 सुनि पुर नर नारी सदल सुमत्री चारी ।
 सुत परिवार घर बचन सवारि के ।

मडप नमारि पुर गृह उर सुख सारी
 चित्रित अटारी मणि दीप बहु वारि के ॥
 नत गान् अप्रिकार गृह गृह शुभ चार
 देवकी विवाह सुग्य गृह नर नारि के ।
 वजत वधाड मुख तिहुँ पुर रहु छार्ड
 कम हरपाइ बहु भगिनी दुतारि के ॥
 वगुनेत्र साज साजी न्याह हित रथ राजी
 आये द्वार नृप पट पीत वर धारि के ।
 पूजि पट हरखाई दान देइ मुख छाड
 त्रिलगाई दुख शुभ थल बैठारि के ॥
 देवक सहित रानी कुश जल कन्या पानी
 वसुदेव कर दीन्ह आगतो उत्तारि के ।
 भोजन कराइ वारि उचित मुनाड गारी
 वेद विधि कर द्विज वास्य अनुमारि के ॥
 ठाईज अनित दीन्ह वसुदेव सत्र लीन्ह
 उचित सुरग इत उत अग डारि के ।
 पट वसुदेव रामसेवक सरुल सत्र
 उमसेन कस प्रीति रीति विर वारि के ॥१७॥
 चतु वसुदेव पुर वाजन वजाई के ।
 पाइ नर नारि शुभ रथ बैठाई के ॥१८॥
 हिलि मिलि पुरजन दान देइ द्विज गन
 उमसेन देवक चरन शिर नाई के ।
 मगल निम्मान गान नत जुत हित ग्रान
 हरप प्रवाह इत उत रहु छार्ड के ॥
 भगिनी मोह घस कम उर छोह अस
 तजि पुरनत सग चहु पुनाई के ।

रज्जु रथ गहि कर कस चलु ताहि बर
 देवकी प्रीति रीति लसि सुख पाई के ॥
 अशरीर बानी नभ अमृत विषय सानी
 कंस तैं अबुध कस चलु हरखाई के ।
 प्रीति करु अस जेहि काल तव जाय येहि
 अष्टम सुगर्म बाल भरु तोहि धाई के ॥
 सुनत अकाश बानी कस छाडि रथ पानी
 कच गहि कर असि शिर भरमाई के ।
 देवकी को कप गात बसुदेव पछतात
 कस त्रास बस छन रहु ठकठाई के ॥
 साम भेद कहि कहि रिसि त्रास सहि सहि
 बसुदेव नीति शास्त्र ज्ञान सो बुझाई के ।
 मृत्यु नहीं होय एही नभ बानी कहु जेहि
 सोइ सुत देव एहि तजु लेइ बडाई के ॥
 घचन त्रिचारी बारी बसुदेव सत्य सारी
 कस गृह गत केसु तजि सकुचाई के ।
 चडि रथ दपती मगन लेइ सपती
 गृह सुख लहु रामसेवक स्व झाई के ॥१८॥

श्री राग

बसुदेव देवकी रानी ।
 बसु भवन मानि रजधानी ॥टेक॥
 भोग विलास करत उर मुग्ध लहि हित अनहित पहिचानी ।
 प्रथम पुत्र कृतिमत भयो बर छवि शोभा की रानी ॥
 लेइ पुत्र बसुदेव चलेउ बर अनृत न होय मम धानी ।
 मतन कहँ त अदेय छोइ जग सुत धन धान न प्रानी ॥

कम देखि सुत गोत्र शुभ गनर सत्य सराहि को मानी ।
 होइ जाहु सुत फेरि भवन अथ एहि सन मम नहिं हानी ॥
 चत यमुदेव हरप नहिं रत्न तगि सुत हित करत गलानी ।
 घटुरि यस सुत बोलि न बध कर होइ न कोइ तन तानी ॥
 नारद आइ चुम्माइ कम कह कम तुम भो अज्ञानी ।
 काल पाइ गृहसन किमि फेरत अष्टम कोका जानी ॥
 ताहि तजि प्रज मुर नारि पुरुष जत मव की बुद्धि सयानी ।
 रिपु ऋण रिचक रागु नहिं कोइ अस सुनि मति अरगानी ॥
 अस कहि मुनि त्रिधि भवन गवन कर त्रिप अमृत रससानी ।
 कस बोलि वसुदेव प्रथम सुत मारेसि उर फरि कानी ॥
 पाप बढै रत्न माप छुटै शिशु बध कर जेहि निज पानी ।
 सुर नर मुनि हित राम सेवक बहु नारद मुनि जिव दानी ॥१९॥
 सुनि नारद बचन रिमाई ।
 करि कोप स्ववर्ग जोलाई ॥टेका॥
 कस महा पापी अभिमानी सुर वैरी दुखदाई ।
 काल नेभि अवतार महारत्न पूर्व बयर उर आई ॥
 देव जानि ब्रजनारि मकल नर दुख दोन्हेउ अधिकारी ।
 देस त्यागि बहु गयउ अपर पुर कोइ दुख सहि रहु भाई ॥
 देवकि अर वसुदेव वारि कर शृणुल पद पहिराई ।
 शत्रु महा तेहि मानि कम रत्न गृह भीतर वैठाई ॥
 पितु वर राज छीनि राजा वनु फेरैमि आप दोहाई ।
 दड पिदड जथा रचि कर शठ नीति शास्त्र विलगाई ॥
 मरु वर स्राद्ध कोइ नहिं द्विज कर वार वार पछताई ।
 शृणु कृपालहिं रामसेवक सुर ब्रजन बहु उर पाई ॥२०॥
 हरि निज अवतार जनाई ।
 सुवि भार अधिक गरुनाई ॥टेका॥

जेहि त्रिधि धर्म कर्म श्रुति हानि पाप होय अधिकाई ।
 तत्र होय मनुज दनुज कुल मारव मुख त्रय पुर रहु छाई ॥
 हरि की मन नारद श्रुति गावत तेहिते खलहिं बुझाई ।
 नारद वचन सत्य सत्र मानत सुर नर मुनि समुदाई ॥
 इत उत नारद भ्रमत फिरत जग हरि इच्छा सम गाई ।
 पट मुत मुनि मरीच कर सापित देवकी गर्भ सोइ आई ॥
 कस हाथ वध साप छुटै सोइ पुनि आपनि गति पाई ।
 नारद पर उपकार करत फिर हरि इच्छा गहि धाई ॥
 नारद नाम नर जन्य ज्ञान हरि भगवत धर्म धराई ।
 सग सुरामसेनक करवावत ज्ञान भक्ति दरनाई ॥२१॥
 हरि इच्छा जग त्रिस्तारी ।

पाप पुन्य अनुमारी ॥२२॥

कस जोहत प्रतिहार रागि गृह जहँ वसुदेव दुरवारी ।
 सुनत कान भयो पुत्र शुभरा राधि मारु वालि परचारी ॥
 प्रति सत्रत एक एक मुत जनमत हरि इच्छा गृह भारी ।
 देवकी गर्भसन पट मुत सुदर भयेउ सोइ रल मारी ॥
 साप छुटी मरीच सुतन की पाप कम अधिकारी ।
 देवकी कर दुख लगि मुख रिपु कर मीनत त्रय पुर भारी ॥
 हरि निचारि निज रूप सेस वर देवकी गर्भ थिर थारी ।
 सप्तम गर्भ उन्ति लखि उर बहु कीन्ह रगवारी ॥
 चहुँ दिशि भट गृह द्वार घेरि वसु कर यह असु सुधारी ।
 मुख त्रय पुर लेहु रामसेनक उर गर्भ की तारि ओजियारी ॥२२॥

राग टोडी

हरि अज्ञा कीन्ह जोग माया के बोलाई के ।

चल सुरकार करु नर गृह जाई के ॥२३॥

सुर नर पुनि हित प्रसा मम धरि नित
 हर भुवि भार देवि ता प्रगटाई के ।
 भुवि ता बहु नाम छोई तन प्रण पाम
 धाम यहु ग्राम जा कर दरसाई के ॥
 भद्रमानो महाबली अविष्टे अमानकातो
 तुमुपेति चडी नाम रहु भुवि छाई के ।
 दुग्गा नगणी मकरा घर पाडनी
 न जापु नित नाम यहु पुतकाई के ॥
 दोगुगे परेशरी सरल लोफ ईश्वरी
 नाम तन लेव अथ भापु सदुचाई के ।
 दिध्य अद्रि वामिनी मकरा गत त्रामिनी
 कलि घर धाम नाम जगत जनार्ण के ॥
 भक्ति ज्ञान सुख खानी होहु कलि जीव दानी
 नर तोहि पुनि भुवि रहु सुख पाई के ।
 पृजु नर तारी भारी आश्रम परण चारी
 अर्थ धर्म काम मोक्ष लहु जम गाई के ॥
 देवकी गरभ धाम जोइ सेस नामक
 रयी रोहिणी उर धरु अथ धाई के ।
 अज्ञा शिर धरि रामसेवक सकल करि
 जोग माया हरि निज तन दरसाई के ॥२३॥
 आई जोग माया हरि अज्ञा शिर धरि के ।
 रोहिणी की गर्भ करु हरिहि निहारि के ॥टेका॥
 देवकी गरभ जोइ मत्तम सो गयो खोइ
 सोर पुर भयो सुख दुख नर नारि के ।
 देवकी सोचत धारि नयन मोचत धारि
 । कम त्राम आम सुख रहु मन मारि के ।

कस अचरज तहि भट सो बोलि कहि
 गर्भ किमि पात रिपु लखहु विचारि के ॥
 अरु शस्त्र कर धारि घेरि रहु; चहुँ द्वारि
 अरु आई काल मम भारु हहकारि के ।
 हरि लरि जन प्यास देवको गरभ वास
 कीन्ह अश धारि निच सकल सवारि के ॥
 गर्भ तेज चलत प्रचड अति दड देत
 खल उर ताप साधु गन सुख सारि के ।
 अष्टम गरभ बाल कस लखु निज काल
 त्रास वस रात्रि दिवस रहत सँभारि के ॥
 जन्म हरि मुनि कान कस उर कप मान
 छन नहि थिर मन रहत बिडारि के ।
 जोग माया करि कार इत उत शुभ चार
 यशोमति उर गत रहु थिर धारि के ॥
 देव मुनि सुख साज सकल सुकृत राज
 कृष्ण उर वसु रामसेवक दुलारि के ॥२५॥

दोहा

नद मखा वसुदेव कर जानत सकल जहान ।
 देवकि छोर न पिवहिं प्रभु लखि के कै वरदान ॥ १ ॥
 यशुमति चिरहिं पान हित बाल केलि सुख छाया ।
 दपति तप फल प्रगट हित पुत्र कहाइव जाय ॥ २ ॥
 पत्नी वर वसुदेव की रोहिणि नंद के धाम ।
 आकरखनते गर्भ करु ज्येष्ठ होहिं जेहि राम ॥ ३ ॥
 कौशल्या अवतार वर रोहिणि कर हरि कीन्ह ।
 हरि माया हरि केलि लखि हरि इच्छा रचि दीन्ह ॥ ४ ॥

राग कल्याण

जयति जयति जयति ताथ जय श्रितोऽय नायक ।
सृष्टि मिति नाश ताथ मिद्धि सशत नायक ॥टेका॥
सत्य सध सय वरत पाल श्रिपुत्र एव चरत
उद्वय करि भगत धारि अमित प्रिप्रह ।
निर्गुण गुण हीन रागि पूर्ण यपुष रक्ति छीन
सुर मुनि नर तंतु कोन मनु मप्रह ॥
सकल देव शरण पादि भरण लार प्रादि प्रादि
रक्ष रक्ष रक्ष देव वरत धन ।
पाप ताप जीव जगत पाठ जुग तुम एव भरत
पातु प्रातु अरतु सुखत उगमि चन ॥
एक आयन परम विनोद वारण एव
युगल फल अनृप सुखद दुखत गायत ।
सत रज तन वृक्ष मूत नायक जा अमित सूल
अर्थ धर्म काम मोक्ष रम रमायत ।
पच प्राण वायु कथ उर्भि पट वृक्ष वध
मम धातु त्वचा अष्टग परायत ॥
चतुराणि द्विद्र अरु पवन पत्र म्म निसरु
अचल अस अनादि वृक्ष जगत आयन ।
साक्षि भूत वृक्ष रहत पक्षी दुइ निय चरत
ईश्वर अरु जीव भिन्न देह पावन ॥
सुर समूह नमत साथ पद सरोज धारि माथ
रामसेवक पालु सकल भूत भावन ॥२५॥
नौमि निर्गुण अज अखंड खड वजित ।
सगस्त पाप तापह ममन्त लोक चर्चित ॥टेका॥

त्वद प्रिमूलजं धृत विविक्त सेवन कृत
 भवार्णव तर तिते स्वरूप दर्शितवर ।
 महत सुपध्वज कृत पदान्ज त्वो मनोवृत
 सुशाति सकुल शुभ लभन्ति सर्व शकर ॥
 मच्च कच्च क्रोड त्व धृत नृसिंह धामन
 परशुराम राम त्व धृत चरित्र पावन ॥
 अनेक विग्रह धृत चरित्र पावन कृत
 प्रभु विभु निरजन जोगिन्द्र जोग भावन ॥
 श्रुणति जे कथामृत गृणति जे समादृत
 लभति ते पर पद पतति नो भवार्णव ।
 त्वदग्नि ध्यान ज धृत पवित्र मानस कृत
 नमति वार वार त्व भुवि पद सुवार्णव ॥
 भुवि सुचिन्हित पत् सदेवो लोकन शर्
 नमामि भक्त वत्सल कृपाल त्व जनार्दन ।
 जनानि कार्य कारण समस्त ताप हारण
 सदा भुभार टारण दैत्य मारन ॥
 कौमल पद विभु सुवाल मगल प्रभु
 विलोकि धरणि भार ताप लोक नाशन ।
 शिशु सुध्यान मगल चलति ग्राम जगल
 हरति पाप साप कारि दुष्ट शासन ॥
 धदन समस्त देव करत नाथ चरन सेव
 यदुकुल धरि मनुज रूप दनु गजन ।
 गजन महि भार सार रंजन सुर द्विज अचार
 लीला थघहार काम क्रोध भजन ॥
 देवकी अत्र निर्भय होहु देखहु शुभ तनय सोहु
 भविताप यदुपाल दुष्ट कम गहन ।

विप्रिय विनय देव कीन्ह देवकी कहँ बोध दीन्ह
 प्रगट हेतु कृष्ण लोक सकल मडन ॥
 अस्तुति करि देव धाम गयो सकत पाइ काम
 देवकी लहु र्प्य पुत्र शत्रु पालन ।
 कृष्ण कमल लोचन दयालु शोच मोचन
 धारि मनुज रूप रामसेवक पालन ॥२६॥

दोहा

गर्भास्तुति मुर कीन्ह बहु धीरज देवकि दीन्ह ।
 देव गवन निज भवन करु हरि मुर अज्ञा कीन्ह ॥ १ ॥

राग धनाश्री

हरि चरित जगत सुखकारी ।
 मुनि विनय देव उर धारी ॥टेक॥
 जन्म काल निज जोग लगन प्रह रात्रि निशीथ विचारी ।
 अगम रूप जेहि होइ सुगम जस तिहुँ पुर मो विस्तारी ॥
 कलि प्रभाव कलिजुग उद्धव लखि रूग राग सुखसारी ।
 हिल मिलि काढा करव गोकुल महँ मोहि सकल त्रज नारी ॥
 मम लीला मुनि कान गान करि उतरहिं भव निधि वारी ।
 कलि कल्मष कलि दोष नहां रहु कलि जन होंहि सुखारी ॥
 एह विचारि निज काल निरखु प्रभु कलिजुग सग सवारी ।
 कृष्ण जन्म निज समय विलोकत रामसेवक अथ हारी ॥२७॥

श्री कृष्ण प्रगट भुवि आये ।

देवकी गर्भ वास सुर वरणात अद्भुत रूप धनाये ॥टेक॥
भाद्र कृष्ण अष्टिमी बुध वासर तिथि चर नरगत योताये ।
जोग लगन अनकूल सकल मह चद्रोदय मन भाये ॥
रात्रि निशीथ शीथिल जल थत चर निद्रा वस अन्नसाये ।
मृतक समान कारि कसाटिक रक्तक सकल सोवाये ॥
बोलन हित वसुदेव देवकि सन हरि सोइ रथन जगाये ।
अस वर काल कारि माया निज देवकी गृह प्रगटाये ॥
शर चक्र गण पदुम चारि भुज भूपन वसन सोहाये ।
देवकी अरु वसुदेव देखि हरि कस प्राप्त निस्तराये ॥
मन संकल्प सहस वस करु गौ दपति उर हरसाये ।
कृष्ण रूप छवि वाम त्रिलोकत राममेवक सुग्य पाये ॥२८॥

राग कल्याण

जयति जय कृपा अगार हरण सकल धरणि भार
ब्रह्म अज अनादि अखिल नर सरूप धारी ।
प्रथम भुजा धारि चारि भक्तन विश्वास कारि
अमित रूप अमित बार अमित दुष्ट मारी ॥टेक॥
देखत वसुदेव रूप श्याम काम शत अनूप
भुजा अख सहिव चारि शोभा छविहारी ।
भूपन वर वसन अंग निरखत मन उर उमङ्ग
ब्रह्म जन्म जानि भवन अस्तुति अनुसारी ॥
जोरि हाथ मोरि शीश कहत सुनत जगत ईश
त्रिभुवन तिहुँ काल एक माया विस्तारी ।

उद्धव स्थिति नाश हाथ अपर नाहि कोपि साथ
त्रय गुण त्रय रूप धरि करत जेलि भारि ॥
शुद्ध ब्रह्म एक भास पूर्ण सर्व सम अकास
निर्मल निरलेप अनु गायत श्रुति चारी ।
कारण मय लोक नाथ कारज जग जीव हाथ
माया गहि सूत्र स्वयंश राखत जन झारी ॥
ज्ञान भक्ति जोग हेतु करण शास्त्र वेद सेतु
सगुण रूप ग्रमित वारि पालत नरनारी ।
प्रसित मोह जाल न्याल ग्रमित देखि कस काल
त्राहि त्राहि नाहि सरग राखु अर मुरारी ॥
पिता बोध कृष्ण कीन्ह ज्ञान भक्ति दरस दीन्ह
नद भयन त्रास रहित कर दुलागी ।
ज्ञान भक्ति अचल पाय कस घात कृष्ण गाय
राममेवक कृष्ण तात आत्म गति सवारी ॥२९॥
देखत तन कृष्ण श्याम शोभा शत छोटि काम
सुतिका घर भयन गयन कीन्ह जय मुरारी ।
शय चक्र गदा राज कंज चारि भुजा ध्राज
शीश मुकुट केस देखि नयन अति सुखारी ॥३०॥
भूपन घर बसन ध्राज नयशिख शोभा विराज
दपति गत त्रास पास वीरज घर भारी ।
देवकी कर जुगल जोरिवत्न निरगि शीश मोरि
नयन नीर चलत प्रेम अस्तुति अनुसारी ॥
निर्गुण गुण रहित नाथ उद्धव स्थिति नाश हाथ
माया गहि साथ त्रिगुण रूप बहु सवारी ।
कारण करतृत्व काज सकल भास एक राज
लोक तीनि छन बनाय महिमा प्रिलारी ॥

कोटिन घट देखु भास जलसमीप रधि अकास
 नीर रहित एक रूप निरखत जन मारी ।
 माया प्रपच ओट लखि न परत ब्रह्म मोट
 । व्यापक ब्रह्माण्ड एक देखत अधिकारी ॥
 दुष्टकस त्रास मोहि वार वार कहत तोहि,
 पापी खट तनय मोर रिपु बरानि मारी ।
 मुन्त कस आई धाय मारिहि तोहि रिपुनाय
 देवकी कहु अग्य होय रूप चरनिहारी ॥
 कृष्ण मातु तोप कीन्ह तीनि जन्म ज्ञान दीन्ह
 वृष्णी अद्विती बताय गर्भ भवति धारी ।
 शुद्ध हृदय मातु जानि वास करत भक्त मानि
 रामसेवक जन्म कृष्ण कहत वेद चारी ॥३०॥

राग टोडी

। कृष्ण जन्म हेतु कह्य कहत युमाइ के ।
 कल्प भेद बहु रुचि मन ठहराइ के ॥टेक॥
 देवकी यशोदा प्रीति कह्य कह्य वेद रीति
 मथुरा ते गोकुल गयन हरि गाइ के ।
 हित स्नाप ध्यान पुष्प गरभ ज्ञान व्याज
 कर कलश सुधारि चहु धाइ के ॥
 सर तट वृक्ष वट खिर भई धरि घट
 । रोदन करत घटु विधि तिलगाइ के ।
 यशोमति दिग आय प्रश्न करु मित्र पाय
 सुत घात सथ गाय गरभ बताइ के ॥
 कन्या निन देन कहि यशोमती घोषु तेहि
 जन्म एक काल सुत सुता दरसाइ के ।

कंस निज दूत पेरि बोलि लिन्हो भट घेरि
 पत्त वेंगि डारि गृह रागु वैठाइ के ॥
 निज रूप त्याग करि हरि शिशु रूप धरि
 थरि निज माया सन दडत मो आइ के ।
 लखि जन्म काल बाल पति सन कहु हाल
 नैवकी यशोदा गर्भ कन्या सु जनाइ के ॥
 सुत निज तोइ जाइ कन्या सोइ लेइ आइ
 गृह पेरि सहि सुग्न लहव छपाइ के ।
 सुनि वसुदेव राममेवक अचल भेन
 हरि सुत मानि उर पुर पुलकाइ के ॥३१॥
 चलु वसुदेव सुत उर तपटाय के ।
 कस वर ग्राम तन गवन छपाय के ॥टिका॥
 सोइ गये ररवार कंस वर सहकार
 वेरि पद भागि गइ आपु सनवाय के ।
 हरि इच्छा बल पाइ रवि लखि तम जाइ
 बृहत कपाट द्वार द्वार अलगाय के ॥
 यमुना नदी प्रवाह मिलत न कोइ याह
 भय वन चलु सुत काँधे वैठाय के ।
 कटि जल घर पाइ भट गल मुख जाइ
 तजत न सुत पत्त रहत लोभाय के ॥
 कर से उठाइ शिर सुत गहि नाहिं धिर
 को लेउ को लेउ बाल कहु बहु गोहराय के ।
 कोल वर ग्राम नाम अजहुँ कहत वाम
 मध्य सरी नर गारी रहु गृह छाया के ॥
 पिता को विकल देखि यमुना को प्रेम पेरि
 चरन छुआयो हरि मरुत वढाय के ।

जल थल सम भयो वसुदेव गृह गया
 नद रानी सुता दीन्ह बहु हरनाय के ॥
 वसुदेव सुता लेइ गृह आउ सुत देइ
 शृंगल कपाट जम तम भयो आय के ।
 जानि वसुदेव रामसेवक करत सेव
 सुता लेइ सुत देइ गृह पुलकाय के ॥३८॥

दोहा

कल्प भेद हरि चरित बहु बहु पुराण युध वेद ।
 श्रवण मनन निदिध्यास करि कोइ न लहत उर खेद ॥ १ ॥
 देवकि यशुमति कल्प कोइ सवत सर तट कीन्ह ।
 देवकि सुत लेइ सुता निज वचन सत्य हित दीन्ह ॥ २ ॥
 देवकि गर्भ कन्या जनम कस सुना जन कान ।
 धाइ गोड सन छोरि शठ हरन हेतु सोइ प्रान ॥ ३ ॥
 कोल नाम जोइ रजक रत्न पट सुत प्रथम सो मारु ।
 कन्या दीन्हैउ तासु कर भटित भुजा द्वौ धारु ॥ ४ ॥
 पटकन लागे शयल पर हरि माया बलवान ।
 भुजा उपारि आकास गत बोली वचन प्रमान ॥ ५ ॥
 गोकुल महुँ भयो बधिक तव न भवन सुरा छाया ।
 कल्प एक एहि भाव सन हरि माया कहु गाय ॥ ६ ॥
 अपर कल्प की हाल कहु कहत हरिहि गिर नाय ।
 कहि वसुदेव ते जन्म निज गोकुल जिमि हरि आय ॥ ७ ॥

राग केदारा

हरि वर रूप धरि भुवि आय ।
 हरण हित महिभार गल धर करण हित प्रगटाय ॥टेक॥

चारि भुज वर अस्त्र गहि निज भूपन वसन बनाय ।
 देवकी वसुदेव की वर भक्ति जानि लखाय ॥
 विनय मुनि पितु की वर प्रेम लहिस चुपाय ।
 नद गृह निज चलन हित प्रभु पितहि राह बताय ॥
 जोग माया नद गृह मम गर्भ यशुमति जाय ।
 देइ मोहिं लेइ आउ कन्या करिहि वचन सहाय ॥
 पत्नि जोड तत्र नद गृह गत रोहिणी सुख छाया ।
 अश मम जोइ गर्भ देवकी सेम सप्त गाय ॥
 जोग माया लेइ रोहिणी गर्भ सुख पवढाय ।
 जम लीन्ह सोइ मग हित अथ चल चक्री दुब भाय ॥
 यस आदि खल बधव तत्र हित दिवस कहुक गवाय ।
 भार वरणी हरण हित मर कीन्ह विनय अधाय ॥
 भक्ति तव लगि देव, भुनि हित सत द्विज सुखलाय ।
 अजन जन्म जग मूल कारण मकल तोहिं रमाय ॥
 मातु की वर विनय मुनि प्रभु पितहिं ऋ ममुक्ताय ।
 भयो शिशु हित रामसेनक नायक सुख ममुत्ताय ॥३३॥
 एरि वर गाल रूप मरारी ।

दपति दुग्ग टारी ॥टेक॥

अग अग अनग राजित कोटि सुखमा सारि ।
 लहेउ सुग! वसुदेव देवकी तनय वन्दन निहारि ॥
 गोन तीन्ह वसुदेव शिशु जन कीन्ह जतन मुरारि ।
 मृतर सम गयो मोय तनय अस्त्र सत्र भुनि टारि ॥
 देवकी वसुदेव पत्र वर घेरि दीन्ह उत्तारि ॥
 बृहत अति कपाट द्वारन सफल दीन्ह उचारि ।
 हाय नहि निज देखि पर धल रात्रि कर अति कारि ॥
 भाद्र तहि कोइ फारा रजनी भड अम अभियागि ।

मठ मठ धुनि मेघ गरजत भीन बुँद जल भारि ।।
 सेम निज फणि छोह करि चलु छत्र जिमि करधारि
 सिंधु रामहि दीन्ह पथ जिमि उतर तिमि मरि गारि ।।
 उतरि यमुना पुलक तन अति गयो नद गृह द्वारि ।
 नन घग्नि शिथिल तन लखि गोद सुत निज गारि ।।
 लेइ कन्या आउ गृह पुनि जानु नहि नद नारि ।
 पूर्ववन सब भयो जल थल बेरि पद परु भारि ।।
 दपती सुरा रामसेवक सुता नह प्रव मारि ।।२६॥

राग श्री

हरि चरित अगम श्रुति गाई ।
 कहि पार न कोइ करि पाई ।।टेका।
 सुत देइ गृह वसुदेव आउ जय कन्या यशोमति ल्याई ।
 कन्या रोदन कीन्ह बाल सम हरि माया पुलकाई ।।
 रक्तक कस गर्भ अष्टम लखि निद्रा बस अलसाई ।
 रोदन वाग सम शब्द कान सुनि उठि बैठेउ अकुलाई ।।
 अख शख गहि सजग भयो सब कोइ आइ बस जनाई ।
 सुनत कस निज काल काल कहि खड्ग लेइ खल धाई ।।
 मारु मारु बध करहु धरहु कहु काल न जाइ पराई ।
 विकल कस एहि भाति पुकारत देवकी गृह घेरवाई ।।
 चहुँ दिशि वीर घेरि देवकी गृह खोजत काल लडाई ।
 प्रमुदित रामसेवक हरि माया निरखत दल समुदाई ।।३५।।
 खल कस वीर ललकारी ।
 करि जतन दिशा वर चारी ।।टेका।
 भागै नहि सोइ राह काल मम मारेहु मिलि पछारी ।
 अस कहि कस आपु सुतिका गृह गयेउ स्वम्यङ्ग सुधारी ।।

देवकी लखि भ्राता निज आवत उर पुर भयेउ दुखारी ।
 कन्या गोद लगाइ रोदत बहु भ्राता जनि एहि मारी ॥
 पट तनय मम अति सुख बहु सप्तम गर्भ नवारी ।
 अत्र मम गर्भ कोइ नहि होइहि एह अत्यम सुख सारी ॥
 तुम दानी करता भरता जग देहु सुता एहि पारी ।
 तव रिपु नहिं एहि तात रूप लखु पुरुष नही एह नारी ॥
 देवकी अनीन दीन इय बोलत जानत पुत्र मुरारी ।
 कस गोद सन छानि सुता लियो रामसेवक देइ गारी ॥३६॥

राग विहाग

कहत युध हरि निज जन भव तारी ।
 प्रथम दाम कहँ दत अभित दुख पुनि बहु भाति दुखारी ॥टिका॥
 कृष्ण मातु देवकी कहँ कहु बुध बहु पुराण श्रुति चारी ।
 सोपि लहेउ दुख अपर कौ निमि प्रह्लाद गति भारी ॥
 कुररी इव देवकी निति रोदत सुनि सुत गर्भ मुरारी ।
 बेरो सहु पट सुत तहि कारण कस अधम सत्र मारी ॥
 कन्या अत्यम हित तहि बहु विधि कस विनय अनुमारी ।
 तुम दानी दाता सब लायक देहु सुता एहि पारी ॥
 भ्राता तुम मम होहु रिघाता कन्या दान सवारी ।
 पट सुत रिपु लखि मारु प्रथम मम पुरुष रहेउ एह नारी ॥
 करि बिलाप देवकी बहु रोदत कन्या एहि उर धारी ।
 रामसेवक शठ कस न मानत हरि इच्छा कोइ टारी ॥३७॥
 दुखित अति देवकी हरि महतारी ।
 निज कृत कर्म भोग सुख दुख करु काह पुरुष का नारी ॥टिका॥
 देवकिनन्दन नाम कृष्ण वर कहत सेस श्रुति चारी ।
 हरि सखत्र सुनत देवन सब कीन्ह न तुगित गोहारी ॥

मगल मूल मूल हर सुखप्रद अस वर नाम मुरारी ।
 देवकि अरु नसुरेव सहत दुख नाम म्व हृत्य पुकारा ॥
 निज कृत कर्म अचल नहि डोलत हरि इच्छा बल भारी ।
 गृह भीतर करु कर्म सुनि रिपु हरि वानी अनुसारी ॥
 चहुँ दिशि घोर घेरि गृह राखत शृंगल दोड पट डारी ।
 कुररी इव निशि बासर रादत नयन करत बहु वारी ॥
 समुक्ति समुक्ति पट सुत सुंदर वध कन्या गहि उर धारी ।
 रामसेवक देवकि अस भाखत भ्रता जनि एह मारी ॥२८॥

राग श्री

हरि कौतुक कोड न जनाई ।

निगम अगम सारद मति सकुचत त्रिभिदु की न ति रसा ॥२९॥
 हरि ईश्रा मारी बश त्रय पुर गावत लोग लोग ॥
 हानि ताभ सुत मातु पितृ वदि पति धन धाम ला गई ॥
 हरि माया देवकी गृह गत जय कंस सुनत गयो धाई ।
 देखत त्राम भइ देवकी उर कन्या गोद छपाई ॥
 रोदत बदत पट सुत वध कहि कहि भ्राता होतु महांई ।
 चर्म प्रजा अत्र देहु दान मोहि अस कहि गहि उर लाई ।
 कस छोरि कन्या भट कर गहि रज कहि दीन्ह देग्राई ।
 रजक लेड पटकन जब लायो गई नभ करनि गुटाई ॥
 चमरु भट जोटिन दामिनि भम नहु माया गोहगई ।
 मद कस किमि बाल मारु पट पक्षिण गोर व्रज प्राई ॥
 कन्या पुत्र भई नभ ऊपर कसहि भेद बना
 अचरज लहि गृह गवन फल कर रामभयक ममु आई ॥३०॥
 हरि माया की गति भारी ।
 कहि सकत न बुध श्रुति चारी ॥टेका॥

करनि मुद्राइ रजक सन नभ गत भुजा अष्ट वर धारी ।
 शरप चक्र गदा कज चर्म असि सूल धनुष मर मारी ॥
 श्रग चन्दन चचित रति शत तन भूपन वसन सगारी ।
 कृष्ण जन्म व्रज भाखि फस मन सुर मुनि नीन्ह सुखारी ॥
 भय लहु सकल असुर गन देखत जव रिपु भुजा उपारी ।
 सुर मुनि पुष्य घृष्टि करि प्रमुदित जय कहि मातु पुकारी ॥
 बहुत नाम बहु धाम ग्राम कहि महिमा जग विस्तारी ।
 नद गोप कन्या धन्या कहु हरि अनुजा दुख टारी ॥
 विंध्याद्रि वासिनि रल त्रासिनि कहि सुग लहु नर नारी ।
 अष्ट भुजी कहि परम वैष्णवी राममेवक रिपु मारी ॥४०॥

राग सारंग

जय जय जग जननि देवि चरन सकल लोक सेवि
 महिमा अपार विश्व आदि कारिणी ।
 जगत करणि जगत भरणि जगत हरणि म्वाभिनी
 गामिनी समस्त लोक लोक सकल तारिणी ॥टेक॥
 भुजा अष्ट वर सवारि अस्त्र शस्त्र अष्ट धारि
 दुष्ट उधन हेतु धरणि भार हारिणी
 सुर नर मुनि गन दुलारि ज्ञान भक्ति दान सारि
 तोष पोष कारि भूति विमल सारिणी ॥
 नद गोप गृह स्वजाय यशोमति उर सभनाय
 देवनी दिग आय कस त्रास टारिणी ।
 देवकी वसुदेव सरणि सकल त्रास मोह हरणि
 सुगम अगम करणि रजक भुज उरारिणी ॥
 देवन हित लाय मातु सकल लोक एक पातु
 मुक्ति मुक्ति रिद्धि वृद्धि भार भारिणी ।

सत फज ह्म भरणि दुग् दरिद शोक दरणि
 हरणि सय अरिष्ट दैत्य वंश मारिणी ॥
 अद्भुत तत्र रूप देखि छरत असुर फाल लेखि
 मात गल सघ शीश उर विदारिणी ।
 मुर नर मुनि साधु पेशि प्रेम मगन एक रेगि
 जानत सुग देइ भव बुनारि वारिणी ॥
 नेव सकल विनय वीन्ह माया हरि अभय वीन्ह
 भूपण घर बसन संत हित मवारिणी ।
 धार धार विनय करत चरन कमल शीश धरत
 रामसेवक उरमि अष्ट भुजा धारिणी ॥४१॥
 जय जय जय जगत जोति भूपण घर बसन मोति
 भुजा अष्ट अस्त्र धारि जग प्रगासिनी ।
 आजा उर विष्णु धारि इत उत भुवि फार फारि
 पत्नी बसुदेव दोउ छर हुलासिनी ॥टेक॥
 नट भवन गगन आस यशोमति उर करि सुथास
 देवकी गृह प्रगटि आय भाव भासिनी ।
 रजक भुज उषारि मारि देवकी बसुदेव वारि
 गगन करि अकास कस घास त्रासिनी ॥
 पूर्ण सर्वलोक करत भरत बहुरि सोपि चरत
 घाम तत्र समल लोक घर अकासिनी ॥
 सगन सफल देव देखि सुर नर मुनि अमुर सेवि
 पालत समान दास घर उपासिनी ।
 दुष्ट घर अरिष्ट घात नाम करत पाप पात
 भूत प्रह पिशाच प्रेत सकल नासिनी ॥
 सेवत अघ दूरि जात भूरि शत्रु होत पात
 महिमा अपार जानु दास टासिनी ।

नाम धाम गुन अपार करि न सकत कोपि सार
 । नेक कहत सुनत समत ग्राम सासिनी ॥
 अर्थ धर्म सहित काम मोक्ष परम देत नाम
 । एक बार फहत कृष्ण अनुजा सुख धासिनी ।
 अस्तुति करि सुर समाज भवन गवन कीन्ह राज
 । पूजत नर नारि सकल माम मासिनी ॥
 पूजत एक धाम नाम पावन मन सकल काम
 । रामसेवक उरसि बसहु विन्ध्यबासिनी ॥४२॥

राग टोडी

हरि गुण भूरि कट्टु कहत जनाय के ।
 मम मति थोरी कोइ कवि नहि कहु खोरी
 कलि लहि भोरी उरपुर सकुचाय के ॥टेका॥
 वसुदेव सुत देइ यशोमति सुता लेइ
 बेरि पद लहु पुनि निज गृह आय के ।
 कृष्ण जन्म ब्रज भाई हरि माया दिनि जाई
 उत उत सुख दुख बहु दरसाय के ॥
 यशोमति नहि जानी निद्रा बश अलसानी
 सुत चिन्ह सुता भुवि रह मुरुभाय के ।
 नदरानी सुख रानी लहि हरि भई ज्ञानी
 निद्रा हानी सुत जानी उबु हर साय के ॥
 वन निहारी मारी अग पद दुख हारी
 जह सुख लहु तन सुधि तिसराय के ।
 लहि गुरु ज्ञान ध्यान शिशु हरि पहिचान
 यशोमति भाग्यकिमि नहु कवि गाय के ॥

जन्म सुत सुनि कान नद उर लहु ज्ञान ।
 ब्रह्म सुख लहि गृह द्विजन बोलाय के ।
 नदी सुख श्राद्ध करि जात करम सारि
 वेनु बहु दीन्ह दान रतन लुटाय के ॥
 नृत्त गान होन लाग गोकुल सुकृत जाग
 दान देत नद बहु वजन बजाय के ।
 बजत बघाइ शिशु रूप बर गाड गाई
 सुख रामसेवक रहेउ उर छाय के ॥४३॥
 महा मन नद दान देत हरराय के ।
 नृत्त गान जुत बहु वजन बजाय के ॥टिक॥
 सुनि पुर नर नारी लहि सुख अधिकारी ।
 गोपी गन गोप देह सुधि निसराय के ।
 आरती सवारि थारी मगल सुवस्तु धारी
 चहुँ दिशि होय आइ नद गृह धाय के ॥
 मगल सुगान कारी प्रविशत नद द्वारी
 सुकृत निचारि बाल देखु पुलकाय के ।
 सुख उर पुर लहि ब्रह्म शिशु कहि कहि
 आरती करत भुवि जन्म फल पाय के ॥
 देखि देखि शिशु तन बान मुदित मन
 गोपी नृत्त गान करु उर मो बसाय के ।
 करत निनोद नेवछावरी सुकरि करि
 तन धन मन शिशु पद मो लगाय के ॥
 नद रानी महारानी गुणरानी गुरबानी ।
 सुत उपजाई तिहुँ पुर सुख छाय के ।
 कहु ब्रज नारी सारी सुकृत सराहि वारी
 यशोमति फल चारी दियो ब्रज आय के ॥

भूपन वसन, साजी दीन्ह नद मन राजी
 ,, ,, सुर लहु तिहुँ पुर जन्म सुधि पाय के ।
 कृष्ण तन देखि रामसेवक मुदित मन
 , नद नन्रानी बहु रतन लुटाय के ॥४४॥

राग असावरी, कृष्ण जन्म मंगल

भाद्र कृष्ण तिथि आठ वार बुध नागर ये ॥ललना॥
 नरत रोहिणी सौभाग्य जोग सुर सागर ये ॥टेक॥
 सिंह राशि गत सूर्य चद्र वृष रासि गये ॥ल०॥
 अपर कृष्ण मुनि देव निकट स्वउपासि गये ।
 जुगम लग्न अनकूल लहर सब जग ये ॥ल०॥
 ग्रह ऊँचे शुभ चारि अपर चलु श्रुति भग ये ।
 अर्द्ध रात्रि भरि पूर दूरि ग्रह निरस्त ये ॥ल०॥
 मद मद धुनि मेघ मीन बुद वरस्त ये ।
 चद्रोदय ओजिआर काल सुर दायक ये ॥ल०॥
 अभिजित श्रेष्ठ मूर्हत प्रीति हरि लायक ये ।
 सोइ गयो रसवार शिथिल सब जल थल ये ॥ल०॥
 शुभग जन्म हरि काल दायक सब जन फल ये ।
 जानि परम निज काल जगतपति प्रगट ठये ॥ल०॥
 हरस्त लहेउ त्रयलोक कस उर डरु शठ ये ।
 चारि भुजा जुत अस्त्र रूप अद्भुत अति ये ॥ल०॥
 मेघ वरण तन श्याम दायक शुभ जन गति ये ।
 वच स्थल भृगु चरण रेत वर राजत ये ॥ल०॥
 गल वैजति को माल सकल छत्रि साजत ये ।
 नाशा शुभग फपोल दत छत्रि छाजत ये ॥ल०॥

शीश मुकुट कच केश कुण्डल श्रुति भ्राजत ये ।
 भाल विशाल सुतिलक काम शत विलसत ये ॥ल०॥
 चरन कमल कर कज भक्त गिर परसत ये ।
 भूपन अग सुदेस पीत शुचि वरट ये ॥ल०॥
 देखु देवकी वसुदेव गोचर जोइ सब घट ये ।
 सुर उर हरख अपार गयो सब भुवि दुख ये ॥ल०॥
 रामसेवक वसुदेव देवकी लहु घर सुख ये ॥४५॥

भक्त हेतु भुज चारी अत्र सब कर धरु ये ॥ल०॥
 देवकी सहित वसुदेव विनय करु सब त्रिधि ये ॥टेका॥
 गोकुल की हाल पिता सन कहु सब ये ॥ला०॥
 सुनि देवकी विनय प्राकृत शिशु वनु तव ये ।
 श्रृंगल गयो पद निकरि सोइ गयो दानत्र ये ॥ल०॥
 खुलि गयो सकल कपाट सिथिल थल मानत्र ये ।
 लेइ सुत चलु वसुदेव गोकुल प्रमुदित मन ये ॥ल०॥
 सेना हित सब देव प्रफुलित मुनि जन ये ।
 अस्तुति करु करि पुष्प निरसि वर बालक ये ॥ल०॥
 सेस महेश दिनेश कहत सुर पालक ये ।
 मद मद सुख रूप मेघ सुर गरजत ये ॥ल०॥
 मीन मीन शुचि बुद सुरसद प्रद वरसत ये ।
 चद्र उदय सुख रास भास नभ भ्राजित ये ॥ल०॥
 सेस कीन्ह फणि छाहँ छत्र इव राजित ये ।
 यमुना उतरु वसुदेव सेतु सम सागर ये ॥ल०॥
 कन्या लीन्ह नद घरनी देइ सुत नागर ये ।
 गृह आये वसुदेव सुता लेइ धरु जव ये ॥ल०॥
 कन्या लेइ खल वस रजक कर करु तव ये ।

कन्या नभ तल जाइ अमृत जस गावत ये ॥ल०॥
रामसेनक बसुदेव देवकी सुख पावत ये ॥४६॥

यशोमति तिद्रा वितित जानु सुत जागत ये ॥ल०॥
शिशु वर रूप निहारि चरन अनुरागत ये ॥टेका॥

जिमि जोगी करि जोग ब्रह्म सुख पावत ये ॥ल०॥
तिमि यशोमति सुख पाइ स्वहृदय वसावत ये ।
नद श्रवन सुत करत हरसि उठि धावत ये ॥ल०॥
लहि सुख ब्रह्म अनूप द्वार निज आवत ये ।
नद अनाद शुभाव ते द्विज न बोलावत ये ॥ल०॥
स्वस्ति पठत द्विज ग्राइ सुखल वजावत ये ।
करि नदी सुख श्राद्ध कम जातक करु ये ॥ल०॥
धेनु वसन मणि अमित नद द्विज कर धरये ।
बोलि लीन्ह भट्ट वगरी निहरि शिशु चीन्हत ये ॥ल०॥
निरपगत बाल अनूप नार नहिं छीनत ये ।
हित बेलन करि ठनगन धन बहु मागत ये ॥ल०॥
निरसि निरसि शिशु रूप पाप उर भागत ये ।
नद महा मन दीन्ह जोइ सोइ भावत ये ॥ल०॥
नार छीनि शिशु ध्यान करत चलु गावत ये ।
नहिं कोइ नार वेवहार न शिशु दरसावत ये ॥ल०॥
हरि दपति हित प्रेम सकल करवावत ये ।
न भवन उत्साह लोक तिहुं छावत ये ॥ल०॥
हरस विनोद अपार कल्प सधुचावत ये ।
एक प्रविसत, एक निकसत जन बहु धावत ये ॥ल०॥
रामसेनक न मुडित सुख तन लुटावत ये ॥४७॥

सुनत नद सुत जन्म सकल सुख 'पावत ये ॥ल०॥
 गौप गोपी गन सकल प्रफुलित धावत ये ॥टेक॥
 सजि आरति भरि धारे भूपन भूषित अंग ये ॥ल०॥
 गावत अत्रिसत द्वार गोपी सब एक सँ गये ।
 जाइ लखेउ शिशु धाइ मरूप मनोहर ये ॥ल०॥
 उर पुर वाता बसाइ गान करु मोहर ये ।
 नृत गान सुनि ब्याध गयो तिहुँ पा दुख ये ॥ल०॥
 ब्रह्म सगुण रस रूप लहेउ मय जन सुख ये ।
 दधि घृत क्षीर मिलाइ हरदि जुत त्रिरकत ये ॥ल०॥
 मनहु मोर गन नाच चहुँ दिशि फिरकत ये ।
 इत उत रग अंग डारि बहुरि तन करसत ये ॥ल०॥
 चहुँ निशि होय जनु मेघ मुँकि जल बरसत ये ।
 दधि घृत क्षीर अपार चहुँ जनु मरि चहु ये ॥ल०॥
 घृत दधि हरनी मिलाउ सु इत उत मुख मलुये ।
 भूपन बसन विचित्र नद पदिरावत ये ॥ल०॥
 भूपन बसन सँवारि रग तन डारत ये ।
 जाचक सकल अजाचक दरश शिशु जाँचत ये ॥ल०॥
 विप्र पाइ धन भूरि स्वस्ति शिशु वाँचत ये ।
 लुटत सोपि लुटाउ मोद मन भावत ये ॥ल०॥
 रामसेवक धन बहुरि स्तनद लुटावत ये ॥४८॥

राग सोरठी

बहु नद भवन सुख छैया ।

बाजत अनद धैया ॥ टेक ॥

यशोमति सुत सुनि सकल गोपिन धाइ धाइ सय ऐया ।
 देखि देखि शिशु चरन कमलवर निरसत वदन लोभैया ॥

करु नवछायरि प्रारति करि करि वार वार वलिजैया ।
 गोपी गन नर शिख शिशुनिगत उर पुर बहु पुलकैया ॥
 जन्म महोत्सव करत वेद त्रिधि हिलि मिलि भगल गैया ।
 जेन मृदग कारि परतल धुनि नाचत ताता थैया ॥
 म्वन्ति पठत द्विज शर शर करि देव पुष्प मारि लैया ।
 दधि घृत क्षीर मिलाइ हरदि रग इत उत अग बहैया ॥
 दधि काँदव ब्रज मकल ग्राम पुर नद भवन बरिसैया ।
 बाल रूप हरि निरखि निरखि सब रामसेवक सुर पैया ॥४९॥

बजै नद भवन सुवघाई ।
 सुनि सुनि त्रिय आई ॥ टेक ॥
 दधि घृत क्षीर हरीद्रा मिश्रित छिरकत रग बनाई ॥
 इत उत रग परसपर डारत लहत मोद समुदाई ॥
 नद भवन मानहु परत वर चलु मरि त्रिधि सोदाई ।
 पीत सेत धूसर रग जल चलु शोभा घरणि न जाई ॥
 अस वर वृष्टि भई न कोइ जुग दधि घृत छिर अधिकारी ॥
 कृष्ण जन्म उत्सव सुर गावत करि बहु नद बडाई ।
 दधि काँदव नर नारि धरत पद रग सकल तन छाई ॥
 हरखि हरखि पुर नारि देखि शिशुहिं हिलि मिलि भगल गाई ।
 भूपन रसन विचित्र जथोचित नद मुदित पहिराई ॥
 सकल सुकृत फल रामसेवक लहु दपति वर सुर पाई ॥५०॥

रागिनी दास्या डुमरी

नद भवन शुभ दधि कर कीच ।
 परसत सुर सुनि नहिं जन नीच ॥टेका॥

दधि घृत क्षीर हरीद्रा घोरि घोरि
 प्रेम विरस कर गहि सिर सींच ।
 भवन ते इत उत चलु बहु बहि बहि
 दधि काँदव विधिनिन त्रिच बीच ॥
 वजत वधाइसुनि त्रिय हरखाइ गाइ
 अरुम्माइ अग रग कर गहि घींच ।
 कर गहि लपटाइ अग सन दरसाइ
 बसन सुरग एक एक गहि फाँच ॥
 एक रस भाव गहि दधि क्षीर घृत महि
 हरदी मिलाइ सम करि नहि भीच ।
 त्रय दिसि दधि घृत क्षीर बहि सरि गत
 दूरि बहुत वही दिसा चढीच ॥
 गोपी गन तन धन हरि अरपन करु
 मोहन जिमि बैरोचन दधीच ।
 जीवन मुक्त रामसेवक सकल त्रिय
 जिमि सनकादि मुनि नारद मरोच ॥५१॥
 नद के भवन दधि क्षीर सम पाथरी ।
 बहत प्रवाह सुनु बहुत थता थरी ॥टेका॥
 हरर प्रवाह नद भवन बहत अति
 यशोमति सुत भयो जनु मुरनाथ री ।
 सुनि गोपी गन उठि धायेउ पुलकि मन
 चहुँ दिसि गान करि बहु जुथ जाथ री ॥
 गलिन सकल बीच जहँ तहँ दधि कीच
 पद धँसि जात एक एक धिंचु हाथ री ।
 वजत वधाई नृत्त करि करि त्रिय गाइ
 डगत न ताल चाल बोल एक साथ री ॥

पुताकि पुताकि नधि क्षीर घृत ग्क करि
 धीरकत इत उत धरि वर आथरी ।
 यशोमति सुत सुगप्रद सुर वर ताति
 गोपी गन शिशु पद धर सत्र माथ री ॥
 विनु हरि पत् प्रेम कोइ न उपाट टेम
 जिमि पुरी फल चूना पान विनु काथ री ।
 निरसि निरसि रामसेवक वदन हरि
 गोपी गन बार बार कहु शिशु गाथ री ॥५२॥
 देयो सति शिशु एह सुगप्रद रूप ।
 यशोमति सुत नहिं सुर वर भूप ॥टेका॥
 अचरज बहु जोइ अलख निरजन
 प्राकृत शिशु होय परु सोइ सूप ।
 चतात न तन भुवि तजत न मन छन
 देखि देखि शिशु वदन अनूप ॥
 गाइ वजाइ के आरति करु सब
 प्रेम विवस प्रथमहिं देइ धूप ।
 निरगि निरसि नहिं बोलत डोलत
 गोपी गन सुख लहि भइ चूप ॥
 सिथिल अग रस ध्यान मगन मन
 जिमि जोगी निरखत उर गूप ।
 अम शिशु गति लसि ध्यान न करु जोइ
 सोइ नर नारि परत भय धूप ॥
 कृष्ण जन्म उत्सव सुनि धरु उर
 सोइ नर नारि जगत मजबूत ।
 ध्यान करत जोइ बाल रूप हरि
 रामसेवक तेहि डर यमदूत ॥५३॥

नद क भवन बर वजत वधाई ।

धुनि सुनि त्रयपुर मुख लहु आई ॥टेका॥

बालक अनूप देखि जन्म सुफल लेखि ।

रोकि पट नयन न पिनत अघाई ।

चरन मृदु बदन विलोकत

मधुकर सम मन संकटा तोभाई ॥

गज रथ तुरग अपार अन्न वन

देत नट बहु मन हरसाई ।

वेनु वसन भुवि दान देत गृह

मणि गण रत्न सु भिनिध लुटाई ॥

जोइ छूटत सोइ थलहि लुटानत

हर्ष बिबश तन सुधि बिसराई ।

ऋषि घृत चीर हरीद्रा घोरि घोरि

झीरकत अग एरु एक पुलकाई ॥

हरत बिनोद सुख लहि पुर नर नारी

गृह सुधि गत हरि रूप मुताई ।

उत्त गान करि रायसेवक सुकृत सरि

ब्रज नारि कर यशोमति की उडाई ॥५४॥

राग श्री

नि जन्म कृष्ण हरसाई ।

गोप गृह आई मुदित मन धन बहु भाति लुटाई ॥टेका॥

ते सुत कहि कहि गोपी गन सभ्रम सुनि उठि आई ।

कल सुत नट भाखि बहु न भवत आयो धाई ॥

गान बहु वाद्य बजावत निरखि बाल सुरसाई ।

उत्त चीर हरीद्रा भिन्नि त इत उत अग लगाई ॥

कचुक उष्णक धौत वस्त्र धर उपरणा सुखदाई ।
 भूपन सकल अंग । कुडल जुत नद गोपन पहिराई ॥
 भूपन वसन दीन्ह गोपिन कहँ चित्र विचित्र बनाई ।
 गोवत्सन रँग जुत भूपित करु लहु तिहुँ लोक भलाई ॥
 कृष्ण जन्म उत्साह कहत कवि सारद मति सकुचाई ।
 कलिमल लहि लघु रामसेवक मति किमि उत्सव बर गाई ॥५॥

सुनि जन्म कान अत्रिनासी ।

हररित त्रय पुर वासी ॥६॥

जो अज अगुण असह निरजन सकल लोक परभासी ।

पूरण ब्रह्म अनादि सनातन एक अलख सुख रासी ॥

भक्त प्रेम रुचि ध्यान करन हित रूप धरत बहुधासी ।

नद भवन मोइ जन्म कान सुनि पुलकित कृष्ण उपासी ॥

धाइ धाइ सत्र आय नद गृह अमित दास हरि दासी ।

नद महामन दान मान करु सुत हित हृदयें हुलासी ॥

पत्नी जोइ बसुदेव की रोहिणी प्रति जुग हरि पद आसी ।

भूपन वसन विचित्र दीन्ह तेहि उर पुर कोइ न पियासी ॥

नृत्त गान हिलि मिलि त्रयपुर करुनिरसि बाल सुखमासी ।

कृष्ण जन्म उत्सव कहि सुनि नर रामसेवक पुलकासी ॥६॥

सुनि कस गिरा सुभ बानी ।

बधिक तोरं ब्रज भुवि जन्मैउ शठ करु उर अब कछु कानी ॥६॥

सत्य गिरा ध्रुव मानु सुता की असत पूर्व नभ बानी ।

देवकी अरु बसुदेव निकट गयो करि उर अमित गलानी ॥

शृंगल पत्र कर भटित छोरि दियो लरि निज हित सुग्य मानी ।

दोउ कर जोरि शीश दोउ पद धरि मृदुल वचन सु बरानी ॥

स्वसा भाम अपराध छमहु मम तव बुद्धि परम सयानी ॥
 देव अनृत नम बचन सत्य गहि अनृत न उर पहिचानी ॥
 निज जीवन हित मोह परम गहि पट सुत तव करु हानी ॥
 पाप कीन्ह अति घोर थोर नहि अस न करी कोइ प्रानी ॥
 यमपुर का गति होइ स्वसा मम का एहि पुर नहिजानी ॥
 दीन बचन सुनि रामसेवक ध्रुव दपति सम विज्ञानी ॥५७॥

कहु कस शीश पद नाई ।

बहु भाम स्वसा समुझाई ॥टेक॥

तुम ज्ञानी हरि भक्त परम शुचि सम दुख सुख लखु भाई ॥
 हरि माया परपच सकल जग मोर तोर कहि गाई ॥
 पुत्र पिता नहि मातु बधु कोइ निज कृत कर्म सहाई ॥
 सुख दुख जनन मरन निज कृत लखु पाप पुन्य बल पाई ॥
 प्रथम मोर बध कीन्ह रहे पट कीर्षी अवहिं प्रथमाई ॥
 जन्मातर निज वैर लेत सब ताकहँ का पछताई ॥
 छमा करहु अस जानी जगत गति सोच मोह विसराई ॥
 देवकी अरु वसुदेव छमा करु क्रोध मोह सकुचाई ॥
 कस भासि अस गनन भजन करु गयो सन ज्ञान भुलाई ॥
 देवकी अरु वसुदेव ज्ञान थिर रामसेवक अधिकाई ॥५८॥

नृप कम मभा थल जाई ।

निज मत्री धरग बोलाई ॥टेक॥

कन्या जोइ कहु गत अकास जय सोइ निज वर्ग सुनाई ॥
 शत्रु मोर ब्रज भुवि कोइ जन्मेउ अब का करिय उपाई ॥
 कस बचन सुनि सदल मत्रिगन सग बोलु हरखाई ॥
 भय न कोइ तोहि रिपु कर राजन् हम सब करय सहाई ॥

बरगु कुपेर पवन रवि मसि गन अपि सदल जत भाई ।
 दूत सदल यमराज धीर धर तन सन्मुख नहि आई ॥
 अरुप बीर्ज मुर पति तन आगे सो किमि करहि लडाई ।
 तन धन्या के शत्रु मुक्त सुर जीव तोड चलत पराई ॥
 हरि एकात रिपु करत बनहि तप अज की का प्रमुताई ।
 हरि इन्द्रा मोइ रामसेनक कहु क्रम बर्ग समुताई ॥१॥
 कहु कस बर्ग सब भारी ।
 हरि इन्द्रा उर धारी ॥देका॥

जद्यपि तोहि रिपु भय नहि राजन् तपि नीति अनुसारी ।
 रिपु ऋण नेरु न जानी छोड अहित न रज लघु न दुलारी ॥
 चिकित्सा करि रुज तन जारत देइ ऋण तपु अहिमारी ।
 निर्भय रहु दिन रयन मुदित मन रिपु लघु मूल उरारी ॥
 पुष्ट रहत सुर जग्य धूम लेइ पितर श्राद्ध लेइ भारी ।
 सग कर मूल वेनु द्विज सज्जन करु एन्दकी रखवारी ॥
 पुन्य न कोड भुनि होन पाड अत्र एह रिपु पगम विचारो ।
 मास भीतर जोइ जन्म बाल ब्रज मारहु कोइ नर नारी ॥
 बाल घात हित,मानु कस निज जेहि बधु शीघ्र मुरारी ।
 कस दूत इत उत पठयेउ बहु रामसेनक हरि तारी ॥६०॥

राग सोरठो

दास्या तस्या किरुरी अति प्राकृति भापा कहँरवा
 चहु देरि आँ नद के दुवरवाँ कवैया लहि बधैया वाजै री ।
 सवि अस उत्सव घर होत जहाँ तिहुँ पुर गाजै री ॥१॥
 दधि घृत हीर अगीर हरदि मेलि मुग्न माजै री ।
 इत उत घोरि घोरि खिरकत पुनि अग रग राजै री ॥

सखि भूपन बसन नद वेत लेत जन सुख साजै री । -
 निरखि निरखि जन भूरि दरि दुग सुख गाजै री ॥
 शिशु वर देखि देखि रूप काम शत लाजै री ।
 नद भवन उत्साह सकल उर पुर भ्राजै री ॥
 निरखि निरखि शुभ बाल सुमगल सत्र गावै री ।
 रामसेवक फल चारि देखत शिशु मन पावै री ॥६१॥

सखि नद के भवन में अनद सुख इत उत सरि वरै री ।
 चलु देखि आउँ यशोमति सुत एह सरि वर साच कहै री ॥टेका॥
 इत उत बहु लोक मिमित नंद गृह आवै री ।
 करि सत्र सकल सिंगार सुमगल गावै री ॥ -
 सखि भूपन बसन शुचि पान सकल जन भुरि पावै री ।
 इत उत अग रग बोरि वेत तन छपि छावै री ॥ .
 उमगि उमगि अनुराग प्रेम रस उपजावै री ।
 हिलि मिलि तोरि तोरि तान वाँह गहि उर लावै री ॥ .
 देखि देखि शिशु बदन नारि नर पुलकावै री ।
 रामसेवक, मन मुदित कृष्ण जस बरसावै री ॥६२॥

नद के भवन सुत जन्म सकल सुनि जन धाइ री । -
 निरखि सुभग वर बाल सुमगल सत्र गाइ री ॥टेका॥
 चिटुकी बजाइ चमकाइ कर घुनि लाइ
 नाचत मुदित मन जन, समुदाइ री ।
 दधि घृत नीर तेहि रजनी मलाइ घोरि
 इत उत सिर डारि अग लपटाइ री ॥
 मोदक रियाइ, शुभ जल, सु पियाइ
 सखि भूपन बसन वर नद पहिराइ री ।

तजत्र न नद सुत यशोमति गृह कोइ
शिशु गोद लाय रहु रयन सुताइ री ।
प्रेम बस नर नारि इत उत रग डारि
नृत्य गान करु शिशु जनम सोहाइ री ।
कर गहि गल तिर छन नहि कोइ थिर
हिलि मिलि मुकि अग अग उर लाइ री ॥
पुलकि पुलकि शिशु वदन विलोकि त्रिय
मृदुल चरन मन रहत लोभाइ री ।
लरि घर प्रेम रामसेवक सकल जन
ज्ञान रस सुख दरि रूप दरसाइ री ॥६३॥
नद के भवन शुभ वजत बधाइ री ।
तिहुँ पुर नर नारि रहत लोभाइ री ॥टेका॥
यशोमति सुत भयो तिहुँ पुर दुख गयो
भुनि भार नाश भय रिपु न जनाइ री ।
निरखत श्याम गात मृदुल चरन व्रात
नख जाति चिन्ह मोति रहु ललचाइ री ॥
देखत वदन सुकपोल सुललित भाल
नाक कान केस कर रहत लोभाइ री ।
दधि-काँदव अस नहि भई नहि होय कोइ
अस उत्सव तिहुँ पुर न समाइ री ॥
नृत्य करि नर नारि वजन वजाइ शुभ
चमकाइ इत उत मगल सुगाइ री ।
दान सनमान करि पोष तोष लोग भरि
भूपन बसन मणि नद जु लुटाइ री ॥
निरति निरति शिशु वदन कोमल गात
मन अम भाम राति दिव उर लाइ री ।

देवि न सुत रामसेवक अनद उर
अर्थ धर्म काम मोक्ष सन जन पाइ री ॥६४॥

रागिनो सोरठी तस्या दास्या ठोमरी

मुलोने लोने नयन सुख दरसाई री ।
मृदुल चरन मुरुपोल छवि छाई री ॥६५॥
श्यामता गात परनि नहि जाइ कोड
मधि सधि स्मर प्रसु आई री ॥
अरत नासिका चिनुक अरर शुचि
उभ्रत भाल न चरनि सिराई री ।
कतु मीन कच केस मधुप छवि
भुज म्कथ की परम तोनाई री ॥
बचस्थल उन्नत छवि धारत
उदर रेख मन सकल लोभाई री ।
जघन जानु कटि गुल्फ जोति नरत
निररत मनभिन मन मकुचाई री ॥
अरुण पाणि नख कग्ज मनोहर
अभय करत जन सब सुखदाई री ।
यगन कज भ्रकुटी अति सुखि
चितरनि सुख सुख उपजाई री ॥
अस बालक नहि सुना न दिसा
चाहत मन निशि दिन उर लाई री ।
अस बालक मग नयन धारि उर
हलराइन अग अग लपटाई री ॥
लाल चकरु शिशु रामसेवक मर
यशोमति भाग्य न सुख बहु गाई री ॥६६॥

सुलोने वर रूप धरेउ ब्रज आई री ।
देखि नारि नर सकल लोभाई री ॥टेका॥
हरि अवतार अमित श्रुति गावत
कृष्ण सरिस नहि शिशु पुन गाई री ।
अति अद्भुत शिशु रूप कृष्ण वर
जहँ सुखपति अज गयेउ भुलाई री ॥
जन्म काल वसुदेव देवकि लखु
कन्या गइ दिवि रूप छपाई री ।
सुर मुनि मुख कसादिक रल दुख
सोइ छन लहु भुवि भार गवाई री ॥
नट भवन सोइ रूप परम शिशु
यशोमति कहँ बहु देत वजाई री ।
मोर ग्रीव सम छत्रि तन राजत
कृष्ण रूप शिशु बहु दरसाई री ॥
दधि-बाँदव ब्रज गोप गोपी कर
नाचि गाइ घट्टु वजन वजाई री ।
निरखि निरखि शिशु रूप धरत उर
नद मुक्ति मन रतन लुटाई री ॥
नद जु अनद लहु यशोमति जु तनहु
रोहिणी सुत धलदेव सुखदाई री ।
देखि देखि बाँउ शिशु मुदर निज
रामसेवक उर पुर पुलकाई री ॥६६॥

रागिनी सोरठी

गोपी अन्त भई देखि देखि शिशु की लोनेया ।
तजि सुत पित गृह मानु पिता पतिन तनैपन मनचिव लैया ॥टेका॥

नाचत नर वर ताल बजावत

हिलि मिलि राग सुमगल गैया ।

विरा पान सकल वायन लहु

मृदुल चरन शिशु लखि हरसैया ॥

नेवछापारि करि आरति करु निति

वार वार मुख चुमि बलि जैया ।

नंद भवन आनंद महोत्सव

तिहुँ पुर सुख यशोमति गृह छैया ॥

इत उत धन नद मुदित लुटावत

निशि दिन बाजत अनद बधैया ।

नद सकल सुख यशोमति रानी

तहु गोपी गन सुख अधिकैया ॥

नद भवन मुख रामसेवक छनि

हरि हलधर गोपिन दरसैया ॥६७॥

गोपी मगन भई देगि देरि नद सुत वारी ।

आइ आइ निति मगल गावत यशोमति दिग शिशु नदन निहारी ॥टेक॥

कोमल चरन सरन जन दायक

निरखत सुख दरसत नर नारी ।

नाचि गाइ बहु बाजन बजावत

कर गहि एक एक सुख सारी ॥

बजत बधाइ तिहुँ पुर मो सौहाइ

भल गोपी उर पुर सुख थिर थारी ।

नद यशोमति उर सुख लहु बहु

प्रेम पात्र गोपी अधिकारी ॥

श्यामल तन शिशु रूप मोहावन

मुकि मुकि निरखत तिहुँ पुर मारी ।

वय छठी टोड दिवस माम दिव
 उत्सव अगि देखय शिशु धारी ॥
 नद मगत गन भूरि लुटाइ धा
 सुत तोड गोट जन मरत दुतारी ।
 गोद ला रचि सय उर पुर वसु
 रामसेवक हरि कीन्ह सुगारी ॥६८॥

रागिनी असावरी मगल

छठी दिवस सुग्य मूत सुनत जन धावत ये ॥ल०॥
 करि खोडस सिंगार सुमगल गावत ये ।
 प्रथिसत नद दुवार भवन चलि आवत ये ॥ल०॥
 करि नेवझावरि भूरि जन्म फल पावत ये ।
 यशोदा मन मुदित शिशुहिं अन्हवावत ये ॥ल०॥
 निज कुल जत व्यवहार सो सगइ करावत ये ।
 नृत्त गान अधिकार वाजन बहु वाजत ये ॥ल०॥
 भूपन वसन विचित्र नारि नर माजत ये ।
 गोवन्स वृष सहित भूपित अति राजत ये ॥ल०॥
 लखि छठी घर दिवस जीव सत्र गाजत ये ।
 छठी दिवस वर जानि सु नद मुदित मन ये ॥ल०॥
 दान देइ बहु धेनु लुटावत गणि गन ये ।
 जाप्रत करि भरि रात्रि सु छठी पुजावत ये ॥ल०॥
 देव पितर कुल इष्ट देत जोइ भावत ये ।
 देखि देखि शिशु रूप सकल सिर नात्त ये ॥ल०॥
 राममेवक तजि कपट चरन मा तावत ये ॥६९॥

हरखित रहु नर नारि नद सुत जात ये ॥ल०॥
 सुर मुनि सिध्य सुजान रूप हरि मानत ये ।
 द्वादस दिवस बिचारि तिहुँ पुरजन सत्र ये ॥ल०॥
 नद भवन ऋट आइ शिशुहिँ देखव कब ये ।
 लालच अस मव करत मुमगल गात्रत ये ॥ल०॥
 देग्वि शीघ्र शिशु रूप मीस पद नावत ये ।
 करि नेवछावरि भूरि सुकृत फल पावत ये ॥ल०॥
 नृत्त गान शुभ शोग मु वजन बजावत ये ।
 भूपन बसन पिचित्र नंद पहिरावत ये ॥ल०॥
 गज रथ तुरग सु धेनु सु रत्न लुटावत ये ।
 नद भवन उत्साह लोक सुर्य छावत ये ॥ल०॥
 जाचक सकल अजाच लहत मन भावत ये ।
 एक प्रविमत एक निवसत जनबहु यावत ये ॥ल०॥
 दरसि बाल ताहि पुन्य पाप सकुचावत ये ।
 दिन द्वादस लरि प्रेम सु नद बढावत ये ॥ल०॥
 रामसेवक हरि रूप सवाल देखावत ये ॥७०॥

राग श्री

हरि जन्म कस सुनि पाई ।
 पुतनहिँ बेगि बोलाई ॥टेक॥
 बाल घातिनी परम श्रेष्ठ तुम मम रिपु अथ वधु जाई ।
 यज्ञ दान व्रत नेम श्राद्ध विधि रोकेसि पुतना पठाई ॥
 ब्रज बालक मारत रिपु हेरत नद भवन जत्र आई ।
 लेइ बालक पय पान करावत हरि कर गहि लपटाई ॥
 मुच मुच कहि बेगि पूतना कस भवन आइ धाई ।
 तजि बिगोध हरि भक्ति धारि उर शिशु कहँ ब्रह्म जनाई ॥

उद्धव स्थिति जग नास हाथ शिशु न कोइ कर भाई ।
 चर अर अचर वस्य एन्ह की कस दाम नाक पशु लाई ॥
 सुनत कस चिंता उर व्यापी कोइ न करत प्रभुताई ।
 प्रथम पूतना रामसेवक अस कम ते हरि पुण गाई ॥७१॥
 सुनि कस पूतना वानी ।

श्रीवर द्विज गृह आनी ॥देवा॥

नद भवन पठेउ रिपु वध हित चलु द्विज खल अज्ञानी ।
 आइ गयो द्विज नद भवन जब दरगत यहु नदरानी ॥
 भागि आपनी सराहि धोइ पद बैठायेउ उहु मानी ।
 गृह जुत मम बालक रचा कर जात लेन सर पानी ॥
 दधि भोजन द्विज हेतु नीर कह यशोमति गई हित जानी ।
 श्रीवर चलु शिशु बधन हरखि उर कृष्ण कपट पहिचानी ॥
 दधि जुत भाड थीर द्विज मुख कर जिन्हा पद पलटानी ॥
 अस करि हरि शिशु होइ सवन कर हरि द्विज बुद्धि सयानी ।
 यशोमति शीघ्र नीर लेइ आइ द्विज कह देखि रिसानी ॥
 विक् धिक् द्विज तोहि चोरी कीन्ह किमि

निकसहु नहिं अर हानी ।

लखर वचन कहत सब कर सन साची नहिं कोइ प्रानी ॥
 कर गहि गृह ते निकारु यशोदा कृष्ण सदा द्विज आनी ।
 जिह्वा पद लहि भागु शीघ्र द्विज आये कस रजधानी ॥
 कम ते कहु तव वध धुन कर हरि

अस कहि सुजम वगानी ।

कस सुनत काकासुर भेजेउ कृष्ण वधेउ करि वानी ॥
 कृष्ण देगत तन घात असुर भयो सुनि कर कस गलानी ।
 कस निकत प्रह्वता होइ बोलत बुद्धि इत उत हरितानी ॥
 कृष्ण वधत रिपु रामसेवर धुन द्विज कुल रिपु जियदानी ॥७२॥

५ दोहा

कल्प भेद हरि चरित बहु कहि न सकत कोड पार ।
 जन्म कृष्ण भगवान कर रामसेवक सुखसार ॥ १ ॥
 पुतनहि प्रथमहिं फेरु प्रभु द्विज कहँ देइ जिवदान ।
 द्विज रिपु अस नहिं मारु हरि करु श्रीधर कल्याण ॥ २ ॥
 बाल चरित चर कीन्ह प्रभु घोलत नहिं मुख बात ।
 काक असुर अति प्रबल राल निरखतहीं करु घात ॥ ३ ॥
 बका शकट धेनुक असुर वत्स असुर बध कीन्ह ।
 पुतना उध तत्र कीन्ह प्रभु मातु सरिम गति दीन्ह ॥ ४ ॥
 पुतना बधि नाबेउ नाग कहँ कल्प एक असराय ।
 अपर कल्प की कहत कछु कृष्ण चरन सिर नाय ॥ ५ ॥

राग श्री

सुनि कस वचन उर धारी ।
 चली पुतना राल अघकारी ॥टेका॥
 नद सदता सोइ समय भेट लेइ मथुरा चलेउ सुखारी ।
 पुत्र जन्म उत्सव करि बहु बिधि कस मिलन हित सारी ॥
 बाल घातिनी त्रज शिशु बध करि गोकुल करु पेठारी ।
 नद भवन पुनि गवन कीन्ह मूढ रूप अनूप सवारी ॥
 यशोमति आदि सकल त्रिय मोहेउ लक्ष्मी रूप त्रिचाखी ।
 चक्रित सकल त्रिय सोइ मुख देखत पुतना शिशुहिनिहारी ॥
 अनादित जिमि अग्नि धूम रहु लख तन पद धरु जारै ।
 सोअत अहि लखि दाम धरत कर काटत तन छन छारै ॥
 तिमि पुतना निज काल लखत नहि चाहत एहि शिशु मारी ।
 लखि अस्त्रेह सुराममेवक सोइ शुभ गति दीन्ह मुरारी ॥७३॥

हरि रूप अनूप निहारी ।

पुतना न लग्नु गृह मारी ॥टेका॥

गोपो गन गल रूप परम लखि लक्ष्मी जानि दुतारी ।

शिशु कहँ पुतना लेइ शीघ्र कर निज उर हरखित धारी ॥

निज अस्थन महँ लेप कौन् रहु शुचि जल मोत्रिपि डारी ।

गल प्राइ पय पान करावत मारन हेतु मुरारी ॥

कर मुख मन गहि कृष्ण मुदित मन पिवत सो प्राण निकारी ।

मुच मुच कहि गिरी पूतना उलटि स्वनयन उधारी ॥

निज तन भुत्रि कियो प्रगट पूतना कर पः केस सारी ।

तेहि उपर हरि शिशु होय सोवत देखत सत्र पुर नारी ॥

राक्षसि लखि त्रिय विकल गई दिग रोदत हरि महँतारी ।

निर्भय शिशु गति देइ पूतनहिँ रामसेवक सुख वारी ॥७४॥

हरि चरित सकल सुखकारी ।

शिशु वर रूप लखत न कोइ हरि पाल केलि रस भारी ॥टेका॥

एतनहि मार सोवत तेहि ऊपर गति सोइ परम सवारी ।

शिशु लखि नारि सकल पुर धावत रोदत यहु महँतारी ॥

कर गहि लीन्ह उठाइ पुत्र कहँ देखि वदन उर धारी ।

कहाँ वर रूप धारि आइ गृह लखि परु गल अधिकारी ॥

मृत्यु काल मुख बाल बच्येउ मम कोइ ईश्वर एहि मारी ।

लीन्ह घसेटि अभित मिलि पूतनहि पुर बाहर दियो डारी ॥

पष्ट कोस पथ रोकु पूतना भुज पर अवनि पसारी ।

काष्ट लेइ पुरजन बहु हिलि मिलि अग्नि लाइ दियो जारी ॥

सौरभ धूम लखत अचरज लहु सुर मुनि नर नज नारी ।

हरि महिमा वर रामसेवा सुख निज निज गतसि तिचारी ॥७५॥

शिशु प्रेम करत नर नारी ।

व्रज जन रहु मफल सुग्वारी ॥टेका॥

पुतना सन लियो छोरि जबहिं शिशु मनहु प्रान गत धारी ।

दान मान रक्षा सुत हित करु यशोमति घहुत दुलारी ॥

गोपी गन उर पुर पुलकित अति शिशु वर बदन निहारी ।

संस्ति पठत द्विज आसिप देइ देइ यशोमति सुख लहु भारी ॥

वार वार द्विज चरन माथ घरु कृष्ण की जोइ महुँतारी ।

अस अरिष्ट करहीं न होय गृह सोइ कछु जतन विचारी ॥

वान धेनु पुनि लेइ अपर धन द्विज घोलेउ सब भारी ।

अत्रेन अरिष्ट आउ कोइ सुत दिग द्विज आसिप सुख सारी ॥

देव पितर रक्षा निशि दिन करु छन छन हरि त्रिपुरारी ।

द्विज आसिप सुनि राममेवक धुव सब त्रिय सुख उर चारी ॥७६॥

रागिनी रामकली

कहि जात न प्रीति को रीति मोहिं जोइ सग छुटत लहु दुख भारी ।

पशु पक्षी की प्रीति छुटत दुख काह कहौं वर नर नारी ॥टेका॥

प्रीति कबहिं न करी कोइ सन पशु पक्षी गत नर भारी ।

तदपि साधु मन प्रीति करि नहिं छुटत संग दुख अधिकारी ॥

नद कस कहै देइ भेंट पर मिनि वसुदेव ते अनुमारी ।

मोहिं सोहिं प्रीति दीन्ह विधि वर अति बहुरि छोरि इत उत डारी ॥

कस अधम तोहि दीन्ह अमित दुख सुनन कान सहि नहिं टारी ।

पट सुत देवकी कर अति सुदर सुनेउ तात कर धरि मारी ॥

गर्भ एक स्रय गयेउ सुनेउ सोइ कन्या लघु गइ विधि वारी ।

निज कृत कर्म सहत दुख सुख नर कहत सत बुध श्रुति चारी ॥

नद कहत विलखाय मित्र सन हिलि मिलि गल भुज कर धारी ।

कीन्ह बोध वसुदेव मित्र कर - राममेवक गति मुरारी ॥७७॥

हरि प्रीति की रीति न जात कही
 जोइ कहत सुनत दुख अघ नासी ।
 कुदत भदा - अज्ञान सुरति गृह
 । - ज्ञान भक्ति उर पुर भासी ॥टेका॥
 नंद कहत विलसाइ मित्र सन
 । सुत सुख दोउ उर पुलकासी ।
 कृपा मित्र तव एक पुन लहु
 । सोइ सुख महँ भित अरु भासी ॥
 सुनि यसुदेव सुरति निज सुत करि
 । उर पुर सुख लहु बहुधासी ॥
 नंद ते कहु यसुदेव जानि सुत
 । एक व्याज दोउ शिशु आसी ॥
 निज सुत सम मम सुत गहि ध्रुव पालेउ
 । रोहिणी गर्भ जोइ सुत जासी ॥
 माहि-पिता तुम दोउ सुत कर
 । अथ कहि सुनि हृदये हुलासी ॥
 त्रिकालज्ञ यसुदेव कहत पुनि
 । दोउ हरि चरन उपाय पासी ॥
 नाहु भवन उत्पात होत फलु
 । देखहु सुत दोउ सुख रासी ॥
 तुम देखेउ मोहि मैं देखेउ तोहि
 । - - - - - रहु जनि प्रेम उरसि पियासी । -
 नंद भवनी चहु रामसेवक सुनि
 । मित्र वचन धुन पुर खासी ॥७८॥ -

राग श्री

हरि प्रीति परसपर गाई । निज निज तनय बनाई ॥टिका॥
 नद मित्र वसुदेव सत्य दृढ जानत जन समुदाई ॥
 निज क्रीड़ा हित हरि कल्पित करु हेतु दोउ सन लाई ॥
 देवकी यशोमति प्रीति एक रस हरि इच्छा उपजाई ॥
 सुनि गोकुल उतपात मित्र मुख नद बलेउ गृह धाई ॥
 बचन सत्य वसुदेव को गावत नद गोकुल नियराई ॥
 पुतना देह मृतक पथ देखत अवरज बहु उर आई ॥
 फरसन अग कटाइ सुपथ करि भवन गये सुधि पाई ॥
 बोलि पुत्र लियो गोद नद मठ प्रेम नयन जल छाई ॥
 सुनि पुतना शिशु सहित हाल सब यज्ञ दान करवाई ॥
 रत्ना हित शिशु रामसेवक बहु नद जु रत्न लुटाई ॥७९॥
 शिशु नाम धरन द्विज आयो ।
 वसुदेव जु शीघ्र पठायो ॥टिका॥
 गार्गाचार्य यदुर्वश पुरोहित शास्त्र जोतिष भले भार्यो ॥
 नद देखि पद धोइ सीस धरि भाग्य अमित निज गायो ॥
 धरहु नाम शिशु लेइ गोव कहु सुनि द्विज उर हरखायो ॥
 हौं उपरोहित यदुकुल कै धुन रोहिणी सुत प्रगटायो ॥
 तव सुत जन्म समय कोइ मथुरा देवकी गर्भ सुनु जायो ।
 नद कहेउ अब धरहु नाम शिशु बचन तासु विसरायो ॥
 तव सुत कर बहु नाम कहत अति तिहुँ पुर जस सुर छायी ।
 रत्ना करु ब्रज जन कर मय हरि कृष्ण कहत पुलकायो ॥
 सकर खन धलदेव राम कहु हलधर नाम क्तायो ।
 गवत कीन्ह गृह रामसेवक द्विजनेग विविध विधि पायो ॥८०॥

रागिनी-सोरठी

कव जामी दतुलिया प्यारी ।

हिलि मिलि कहु ब्रज नारी ॥टेक॥

गोपी-गन हरि-मुख कर गहि गहि मुकि मुकि नयन निहारी ।

गोद लेइ हलरावत चूमत शिशु बर के सवारी ॥

गोइ पलना पवढावत इत उत पुनि गहि गोद दुलारी ।

घारे वार शिशु बदन तिहारति चितवनि लहि सुख सारी ॥

निरखि निरखि जन श्याम काम छवि

छन छन लहु सुख भारी ।

घेरि घेरि शिशु नाचत गावत बजावत कर तारी ॥

यशोमति भाग्य न कहि सकु कोइ कवि

सोवत शिशु उर धारी ।

लहत परम सुगन रामसेवक ब्रज जो सुख लहु अधिकारी ॥८१॥

मुख नहीं दतुलिया आई ।

हिलि मिलि ब्रज त्रिय गई ॥टेक॥

कहु सखि कन जामी मुख दतुली शोभा भल दरसाई ।

श्याम गात मुख श्याम मेघ छवि दामिनि-सम मलकाई ॥

सरकत मणि रधि मणि के निकट बसि

शशि मणि जिमि छवि पाई ।

पद्मराग मणि मध्य वास करि भक्ता मणि छवि छाई ॥

श्याम अरुण विच सेत देत छवि तिमि दतुली भल भाई ।

मास उदय दतुली न सुनी कोइ गोप उर पछताई ॥

अस अल्हाद करत दतुली हित लखि शिशु बदन लानाई ।

हरि शिशु रूप देखि ब्रज जन सय रामसेवक हरखाई ॥८२॥

राग श्रो.

सुत हित यशोमति हरखाई ।

गोपिन भवन बोलाई ॥टेका॥

करु सतकार त्रिविध त्रिधि सुतहित सो विधि धरनि न जाई ।

खान पान बीरा लहु बर पाति पाति बँटवाई ॥

पुनि कुल देव पितर पूजन हित विविध भाति बैठाई ।

इष्ट देव पूजत हिलि मिलि सब नखत अधोस जनाई ॥

घुँ विसि होय त्रिय पूजत गावत कुल व्यवहार सोहाई ।

मासि मासि शिशु जन्म नखत लहि उत्सव करु अधिकाई ॥

भूपन वसन विचित्र ललित शुचि गोपिन कहँ पहिराई ।

अन्न दान द्विज घेनु लहत बहु जचकन रत्न लुटाई ॥

अस उत्सव लहि नखत रोहिणी करत यशोमति माई ।

मगल मूल विलेकि पुत्र तन रामसेवक सुख पाई ॥८३॥

करु चरित अगम मुरारी ।

शिशु घनि नर अनुहारी ॥टेका॥

यशोमति कोइ दिन मासि नखत लखि पूजन चलु सुख सारी ।

शकट अमित गोरस घृत भरि भरि सग सकल अन्न सारी ॥

घाल बृद देखन हित चलु मग्य निज सुत शकट सुधारी ।

पुत्र सुताइ शकट पर यशोमति पूजत इष्ट सवारी ॥

रोन्त पात्र सन शकट उलटु हरि लखत आठ त्रिय मारी ।

एह अचरज लखि कर मीजत त्रिय शिशु गति नाहि विचारी ॥

शकट उलटि शकटासुर बधि हरि सोवत नारि निकारी ।

घाल सकल कहु एह शिशु रोदत शकट उलटि पद्म टारी ॥

नहि विश्वास बचन शिशु मानत शकट भार लखि भारी ।

दीन्हेउ दान कृष्णमत बध लखि रामसेवक द्विज वारी ॥८४॥

रागिनी सोरठी

कव चलहि पगन दोउ मैया ।

निशि दिन कहु दोउ मैया ॥टेका॥

यशोमति मुख चुर्मि गोद लगावत रोहिणी लेत चलैया ।
 छन उछग छन पलना मुनावत बार बार बलि जैया ॥
 मुख सराज पं कमल ।रलोकत चितवनि लसि पुलकैया ।
 श्यामल गाता सरोरुह लोचन वदन कज छधि छैया ।
 भाल निशाल निहारत मुँकि मुँकि केस श्याम सुखदैया ॥
 अधर अरुण मुख चूमत पुनि पुनि बहु उर एहि सोदैया ।
 देव बधू निरपत मुख चूमत चूम नहि त ललचैया ॥
 अस मुख रामभवक नलहत कोइ राहिणी यशोमति पैया ॥टिका॥
 भुवि जानु पानि कव चलिहैं ।

कर छिर कवहि निगिनिहैं ॥टिका॥

दोउ भाय अगनैया गृह गृह एक सग कव चरिहैं ।

किलकि किलकि इत उत घुमि घुमि

फिरि हिलि मिलि कर कव धरिहैं ॥

हंसि हंसि इत उत चपरि चलहि

भुवि आपन पर कस करिहैं ।

। जब गुरु ज्ञान लहहि इत उत

। सुनि जननी वचन अनुसरिहैं ॥

। श्याम गौर दोउ भाइ संग मिलि

। गृह आँगन जब डोलिहैं ।

शोभा अमित प्रिय लागु अधिक उर

। तोतरि वचन कर बोलिहैं ॥

अस अल्हाद करत दोउ माता

हरि शिर कव दरमैहैं ।

सुकृत सनेह शब्दत फल रस अस

रामसेवक

घर वैहँ ॥८६॥

राग धनाश्री

हरि प्रीति रीति अधिकारी ।

करु जननो मोह शिशु भारी ॥८६॥

शिशु लीला करि हरत भार भुवि अज हरि नर धनुहारी ।

गाति पिता डर बढइ छोड जेहि सोइ हरि करत बिचारी ॥ १ ॥

अति प्रचड करि पवन असुर कोइ कोन्ह अधिक अंधारी । ३

गर्द घृष्टि करि नयन मूनु सन, सुम्नु न हाथ पसारी । ५

गगन लेइ गयो कटित कृष्ण कहँ हरि सोइ गल कर धारी ॥

ऊपर आपु असुर नीचे करि भुवितल वेगि पडारी ।

पुतना कहँ जिमि मारु उरसि सोइ तृणावर्त्त तिमि मारो ॥

पिता मातु करु छहो मोह जन हरि भुवि भार उतारी ।

देव दिनय जुत पुष्प घृष्टि करु अचरज लहु अज नारी ॥

अस लीला करि रामसेवक हरि अज जन करत सुखारी ॥८७॥

हरि चरित पुनीत सोहाई ।

निगमागम बुध गाई ॥८६॥

असुर ऊपर शिशु सयन देखि त्रिय धाइ धाइ दिग आई ।

गोद शोभ लेइ देखि असुर बर बार बार पछताई ॥

न्यास ध्यान करि आत्म अग शिशु गोरज सन अन्हवाई ।

रक्षा करु शिशु सीस परसि कर धेनु पाछि भर माई ॥

दान दीन्ह द्विज कहँ बहु विधि सन आसिप रर नेहि पाई ।

सकल अरिष्ट गवाह दान देइ कुशल तनय उर लाई ॥

न्ह यशोमति अति पुलकित यहु विधि रर लुटाई ।

बेसि कृष्ण कहँ लहेउ महत-सुख गोपी गोप समुदाई ॥

अस लीला करि हरत भार भुवि पुरिजन प्रीति बँदाई ।
कृष्ण चरित सुख रामसेवक लहु पुरिजन नंद बढाई ॥८८॥

रागिनी असवारी

दतुली दर बर मुख दरसाई ।

शीभा रँहु तिहँ पुर छवि छाई ॥टेका॥

जिमि वृण तरु कोइ अन्न बीज बर मलमत भुवि लपटाई ।
तिमि थल दसन की पक्ति दंतुलि दुइ अकुर ललकत राई ॥
सीपी महँ मोती जिमि धिलसत उद्धन श्रंकुर आई ।
दतरधं तिमि दतुली चमकत शोभा बरनि न जाई ॥
वृण तरु अन्न मोती अकुर बर निरखत जन समुदाई ।
कव अकुर ऊपर ललकी भल फल हित सब ललचाई ॥
ब्रज वासी नर नारि अधिक उर लालच दंतुली धाई ।
दतुली दल लखि रामसेवक बर ब्रज वासी हरखाई ॥८९॥

दतुली सरूप देखि मन भायो ।

ब्रज नारी मिलि मगल गायो ॥टेका॥

मुँकि मुँकि मुख कर गहि गहि निरखत दतुली थल छवि छायो ।
सीपी महँ मोती दुइ मलकत जिमि परगट दरसायो ॥
कमल मध्य मुक्ता मणि दुइ दल शोभा तिमि बर पायो ।
मरकत मणि रनि मणि त्रिच सोहत शशि दुइ मणि प्रगटायो ॥
रोहिणी यशोमति शिशु मुख निरखि दतुली लखि पुलकायो ।
नंद मगन मन दतुली देखत गोपन अधिक सोहायो ॥
दान धेनु मणि वसन दीन्ह बहु विप्र चरन सिर नायो ।
दान त्रिलोकत रामसेवक हरि शिशु पद मन चित लायो ॥९०॥

रंगिनी सोरठी

देखो देखो दंतुलिया आई ।

मोती सम मलकाई ॥टेका॥

गोपी गन सब गोप आय मिलि सुनत दंतुलिया धाई ।

हिलि मिलि मुंकि सब बदन निहारत साच मानि हरलाई ॥

पटतर देत सकल मिलि हरखित दाडिम कहि सकुन्धायै ।

शशि मणि कहि मुक्तामणि कहि कहि पटतर देत लजाई ॥

सकल भयो उपमेय लोक त्रय दतुली उपमा गाई ।

देइ देइ पटतर निरखत दतुली उपमा नहिं कोइ पाई ॥

यशोमति सुत सम नहिं दतुली कोइ अस कहि देखि लोभाई ।

देखि बदन रद रामसेवक शिशु टरत न रहु मन लाई ॥९१॥

देखो चलत अंगन दोउ भैया ।

जानु पानि अति घैया ॥टेका॥

खन घुसुकते खन चलत जानु कर फिरि फिरि पहुँ अंगनैया ।

गोपी गन सुनि सुनि सब आई देखत शिशु सुख पैया ॥

बाल विनोद करत अंगना हरि गोपिन प्रीति बढैया ।

रहसि निरसि बितवत इतउत कोइ कोइ छन दोउ लपटैया ॥

जननी प्रीति हित क्रीडत बहु विधि चार बार किलकैया ।

अति आनद हेतु जननी उर हिलि मिलि दोउ मचलैया ॥

रोहिणी यशोमति भदित गोत्र लेइ स्थन पान करैया ।

निरसि निरसि मुख लहु उर पुर बर मुख चूमत बलिजैया ॥

जानु पानि चलि दान्ह महत सुख कहु दिन एहि सोहैया ।

भक्त वश्य हरि रामसेवक ध्रुव पालत लोग लोगैया ॥९२॥

हरि देवल धरि मयो ठाढे ।

ब्रज आनद अति घाढे ॥टेका॥

घाइ घाइ ब्रज त्रिय सब आई देखत शिशु दुइ पाढे ।

सरकि परत भुवि उठत बहुरि हरि हाथ देवल पर काढे ॥
 इत उत कर फेरत देवल पर जुड छुड निज निज दाढे ।
 बाल केलि हरि करत सघन अति जिमि वृण बंदु लहि डाढे ॥
 चलत मधुर पद धरत धरणि तल त्रिभुवन गति नहि नाढे ।
 जननि हेतु अस चरित करत हरि होइ नद जु के लाढे ।।
 प्राकृत नर शिशु होइ केलि करु शिव अज ते जोस चाढे ।
 अति क्रीडा कर रामसेवक हरि नटवत कला सो गाढे ॥१३॥
 अति आनद लहु दोउ मैया ।

बाल चरित नित गैया ॥टेक॥

जानु पानि धरणी अब चलु शिशु शोभा धरनि न जैया ।
 देवल धरि भुवि ठाढ भयो सुत छवि अति लहु दोउ मैया ॥
 पलना मुलावत शिशु जस गावत इत उत कर पँवढैया ।
 खन पलना खन गोदहि लावत गृह कृत सब विसरैया ॥
 शिशु बर रूप केलि डर भावत चरित न अपर सोहैया ।
 कोइ छन तेल फुलेल लगावत शिशु पद राहि मुख लैया ॥
 चुमि चुमि मुख पय पान करावत कर ते कर पलढैया ।
 कृष्ण चरित शिशु रात्रि दिवस कहि रामसेवक सुख पैया ॥१४॥

रग गौरी

यशोमति शिशु गहि गोद लगाई ।

रात्रि दिवस मन लाई ॥टेक॥

मुख चूमत हलरावत इत उत उदर बाल लपटाई ।
 खन पलना हलरावत निज कर दृष्टि अनत नहि जाई ॥
 मुख निरखत पुलकित जस गावत स्थन पान कराई ।
 सकल अग शिशु निज कर फेरत पुनि पलना पँवढाई ॥
 पुनि ललना कहि लेइ पलना कर गोद लाइ सुर पारि ।

चलत सोवत बैठत उर गहि शिशु एह यशोमति निपुनाई ॥
जिमि अहि मणि गहि रहत कुशल निति

तिमि यशोमति सुख छाई ।

देव सकल मुनि रामसेवक बुध करु

यशोमति केरि मढाई ॥९५॥

कहत सुर यशोमति सम नहि नारी ।

जो त्रिभुवन पति मातु पिता जग तासु पिता महँतारी ॥टेका॥

नद की भाग्य कहत सकुचत सुर सारद बुध श्रुति चारी ।

यशोमति भाग्य सराहत सब कवि नद ते सुख अधिकारी ॥

प्रात उठाड लाड उर बिलसत मुख चूमत यदुवारी ।

पलना मुलाइ पियाइ पयोधर कहि कहि ललना दुलारी ॥

सोवत पुनि उर लाय मुदित मन शिशु अँग अँग कर धारी ।

दिवस चरित शिशु रयन गान कर रयन दिवस अनुसारी ॥

स्वप्ना महँ शिशु रूप बिलोकत सुपुत्रि गति न्यारी ।

ध्यान करत शिशु रामसेवक लेखु जग मय एक मुरारी ॥९६॥

रागिनी सोरठी

भुवि चलन चाल सुसिरैया ।

पुलकि पुलकि दोड मैया ॥टेका॥

कर अगुली गहि इत उत फेरत मणि मय रुचि अँगनैया ।

जननी प्रीति लखि ठुमुकि ठुमुकि चलु श्याम गौर दोड मैया ॥

रन कर तजि जननी हँसि बोलत आउ आउ धरु धैया ।

कर बढाय अगुली देखरावत धरि लेउ धरि लेउ मैया ॥

गिरि गिरि भुवि पुनि पुनि उठि उठि

हँसि गहि अँगुली किलकैया ।

अस आनद कद घरसावत बाल केलि सुख छैया ॥

रुचि जननी उर करत बाल हरि प्रीति हेतु मचलैया ।
 गहि उर शिशु सुख रामसेवक लहू प्रमुदित क्षीर पियैया ॥९७॥
 हरि धरि अंगुली भुवि धाई ।
 सुनत गोपी गन आई ॥टेका॥
 लेइ गोद हलराइ चूमि मुख पलना बहुरि फुलाई ।
 पुनि करि गोद धारु भुरि शिशु पुनिकर अंगुली धरवाई ॥
 इत उत अँगनैया शिशु फेरत शोभा बरनि न जाई ।
 जानु बहु रती मध्य एक असमर बिलसत छनि रहु छाई ॥
 अँगनैया स्फटिक मई शुभ नद भवन सुखदाई ।
 मरकत मणि घन तरु तमाल शिशु अतसी सुमन मलकाई ॥
 पृथक पृथक गोपी गन प्रमुदित निज निज स्वच द्वराई ।
 कर अँगुली गहि ठुमुकि ठुमुकि चलि
 शिशु सुख हरि दरमाई ॥
 निरखि घदन भुवि धरत पाव गतिनज जन सकल लोभाई ।
 नद यशोमति भाग्य सकल सुर रामसेवक श्रुति गाई ॥९८॥

राग श्री

हरि जननी जनक सुखकारी ।
 जेहि बहु प्रीति बढै शिशु ऊपर सोइ सोइ हरि अनुसारी ॥टेका॥
 नयन मूदि मचलाइ क्षीर तजि बदन मलीन सवारी ।
 हाथ पाव इत उत बहु पटकत रोदत मनहु दुखारी ॥
 यशोमति शिशु गति देखि निकल अति हाहाकार करु भारी ।
 कोइ की कुट्टि परी सुत ऊपर रत्ता करु त्रिपुरारी ॥
 मारन हित बहु गुनीय घोलावत भरबावत सिर धारी ।
 ओंछि ओंछि पूजन हित मुर कुल
 मधि गन धरु शुभ भारी ॥

दान विप्र कहँ देत विविधि विधि देत जो शिशु सिर मारी ।
 देखि बिकल जननी प्रेमाकुल शिशु हँसि नेत्र उचारी ॥
 यशोदा सुत विरुज गोद लेइ चुमि चुमि बदन दुलारी ।
 सुनि सुर लहु उर रामसेवक बहु ब्रज बासी नर नारी ॥९९॥
 हरि जन हित भुवि प्रगटाई ।

भुवि पालत लोग लुगाई ॥टेक॥

प्राकृत नर इव शिशु लीला करि जननिहिँ सुर दरसाई ।

सुर दुख नर शिशु अग सग रहु कर्म सूत्र अरुभाई ॥

कृष्ण ब्रह्म चिन्मय अथिनासी नर इव भाव देसाई ।

छन रोदत छन हँसै मगन मन ब्रज जन उर सुरदाई ॥

कोइ छन कोइ दिन रात्रि कोइ घरी कृष्ण बहुत मचलाई ।

यशोमति गुनीय बोलाइ लीन्ह शुचिसुत सुर ताहि सुनाई ॥

कर कुरा लेइ द्विज मारु पुत्र मम दृष्टि परी कोइ धाई ।

छुअत कूश कर धारि सीस शिशु गइ जनु दृष्टि पराई ॥

हरि कहँ दृष्टि परै न कन्हिँ कोइ द्विज कहँ दीन्ह बढाई ।

यशोमति सुत लहिँ रामसेवक ध्रुव ब्रह्म सुखद रस पाई ॥१००॥

हरि बाल चरित सुरदाई ।

उर यशोमति अधिक सोहाई ॥टेक॥

यशोमति उर बहु प्रीति बदन हित छन छन हरि मचलाई ।

देखि यशोमति बिकल होत अति परी दृष्टि कोइ आई ॥

शिशुहिँ छपाइ कहँ अब राखत निरखत बदन लोनाई ।

झटित दृष्टि कोइ परत दुष्ट की मुख शिशु गयो मुरुभाई ॥

घोलि विप्र कहु यशोमति सुत हित करु द्विज शीघ्र उपाई ।

सदा रहै आरोग्य तनय मम दृष्टि परै नहिँ धाई ॥

उटक नाटक चेटक चाटक टोटक अमित बताई ॥

यत्र मत्र मथि सूत्र तात्र बिधि करि शिशु गल पहिराई ॥

द्विज गवनेउ गृह लेइ दक्षिणा बहु शिशु बैठेउ किलकाई ।
पालत निज जन रामसेवक हरि बहु जस श्रुति बुध गाई ॥१०१॥

गृह नद सु बजत बधाई ।

शिशु अन्न चटावनि आई ॥टेका॥

शुभ दिन शुभ तिथि मास पक्ष शुभ नक्षत्र लगन सुरदाई ।
लेइ दक्षिणा बहु गनक शोधि दिन नद सो दीन्ह बताई ॥
व्यंजन चारि प्रकार प्रगट जग पटरस श्रुति बुध गाई ।
एक एक रस भाति अमित करि बहु पकवान बनाई ॥
नृत्त गान शुभ मंगल सोहर बाजन बहु बजवाई ।
दान देइ विप्रन कहँ बहु विधि अन्न धन बहुत लुटाई ॥
नद मुदित मन बैठि पीठ पर बाल गौद बैठाई ।
सूपोदन दधि घृत मिश्रित रस पच वार हरखाई ॥
सुत मुख मेलि जाति अगि नित लेइ खायेउ सकल मिलाई ।
जूठन लहु शुचि रामसेवक सब जेहि सुर मुनि ललचाई ॥१०२॥

राग टोडी

आये एक जोगी सिर जटा सु बनाय के ।

बैल सुसंग सिर गग अरघग नारि

इत उत फिरु कर डमरू बजाय के ॥टेका॥

शशि शुचि सोहु भाल शिर वर फणि व्याल

। गल मुड भाल अहि वर लपेटाय के ।

करण कुडल अहि मुजन भुजग वही

। ककन सुभग कर नाग दरसाय के ॥

गौर सुअग राज छाल भृग पट भ्राज

नगन फिरत जोगी सुगति बदाय के ।

चरन कमल शुचि नयन विशाल रुचि
 कर पद नख जोति मोती ललचाय के ॥
 देखत कुसाज साज लखि परु देव राज
 दत दुति तन छवि रासत छपाय के ।
 कर गहि तीरशूल दुख करु निरमूल
 शिशु पर-अनकूल भारत व्यास के ॥
 देखि देखि सब चली सग संग फिर गली
 ब्रज नर नारी शिशु हित पुलकाय के ।
 कृष्ण को दरस बर फिरत भगन हर
 भूरो काध धरि अग विभुती रमाय के ॥
 सुनि सुनि यशोमति जोगी बर मति गति
 सुतहित आनु गृह बेगि सौं बोलाय के ।
 यत्र मत्र तत्र कार शिव करि शुभ चार
 रहु बाल देखि रामसेवक लोभाय के ॥१०३॥
 आयो एक जोगी बर गुदरी सवारि के ।
 नदरानी लेहु बोलि बेगि सो दुलारि के ॥टेका॥
 खरिया सुगल धारि विमल विभुति बारि
 देह बाल त्राण हित तोपु नर नारि के ।
 यत्र मत्र तत्र लेइ गढा सुविभुति देह
 रक्षा शिशु करु भल हाथ सिर धारि के ॥
 भूत प्रेत प्रह जाल सकल अरिष्ट काल
 चितवत जोगी दुरत दुरि करु डारि के ।
 जोगी सम नहिं क्षानी देखु कोइ जीव दानी
 रूप न विशाल अस सुनु त्रिपुरारि के ॥
 यशोमति अस सुनि जोगी बोलि लीन्ह
 गुनी शिव नदद्वार गयो शृंगी नाद कारि के ।

चशोमति जोरि हाथ सुत करु शिव साय
 सकल अरिष्ट हरु सगुन विचारि के ॥
 शिव नख शिख देखि ब्रह्म अज इष्ट पेखि
 । । प्रेमवस मुक भयो बदन निहारि के ।
 धरि उर शिव ध्यान लहि निज धर ज्ञान
 मुरु छल सिर फेरु मातु भय टारि के ॥
 अज्ञा शिशु धर पाइ चलु पद सिर नाइ
 हेतु भहंतारी रस दीन्ह कछु गारि के ।
 कृष्ण रूप रामसेवक पुरन काम गोप
 गोपी गन हित रहु सुख सारि के ॥१०४॥

रागिनी सोरठी

हरि लग्यो बोलन तुतुराई ।
 सुनि मातुहिं पितहिं सोहाई ॥टेका॥
 सुनि गोपी गन बोल तोतरी तजि गृह कृत आई धाई ।
 बोलन हित शिशु इत उत फेरत गोपी बहु हरखाई ॥
 तोतरि बचन धोलु प्राकृत इव भावन कोइ अलगाई ।
 सरवर बचन कहत इत उत चलु चितवत बहु मुसुकाई ॥
 गोपी सुनि धर बोल तोतरी विहंसब लखि सुरत पाई ।
 चितवनि धारु बिलोकि रोकि त्रिय स्मर रहु उर छाई ॥
 कृष्ण रूप नहिं त्याग बोल करु रहु गोपी ठरुठाई ।
 प्रेम फेलि रस रामसेवक बर गोपिन हरि दरसाई ॥१०५॥
 हरि तोतरि बचन सवारी ।
 धोलु मातु पिता सुलकारी ॥टेका॥
 ठुमुकि ठुमुकि पद धरत धरणि पर जननी अँगुली धारी ।
 अँगुली तजि गिरु धरणि बहुरि उठि पुनि गद्दु भुजा पसारी ॥

तोतरि बचन बोलत प्रिय तागत पुलकित उर महँतारी ।
 तोतरि बचन बोलि सुवि डोलत जननी तागु सुख भारी ॥
 गोपी गन करताल बजावत बोलन हित मन भारी ।
 सुकृत सनेह प्रेम अभि अतर हरि निज ओर बिचारी ॥
 बोलु मधुर रस खानि डोलु महि चितयेउ नयन उघारी ।
 बोत मधुर रस रामसेवक सुनि सुग तह ब्रज नर नारी ॥१०६॥

रागिनी असावरी मगल कर्णबेध चूडा कर्म

नद सुदिन हित मुदित बोलि तियो गनक नये ॥१०७॥

गृह आँगन द्विज प्रथम पाटि दियो कनकन ये ।

कर्णबेध जुत छौर जुनरीय तताबहु ये ॥१०८॥

मन भावत धन धाम ग्राम बहु पात्रहु ये ।

धिप्र सोवि वर लग्न त्विस एक दोठ बहु ये ॥१०९॥

सुनत नद नदरानी प्रेमरस सुख लहु ये ।

एक दिप्रस सुनि सुनि लहेउ मन व्यापित ये ॥११०॥

बोलेउ बेगि सोनार निपुन अति नापित ये ।

सुनि गोपी गन गोप सुप्रेम बढायत ये ॥१११॥

धाइ आइ नद भवन सुमगल गावत ये ।

गायक नत्तक भूरि दूरि सन आयत ये ॥११२॥

गावत नाचत प्रथिसत बजन बजावत ये ।

अति उत्तम गृह द्वार परसपर भावत ये ॥११३॥

देइ विरा पकवान सुरग उडावत ये ।

पाँवढ चित्र विचित्र डासि बैठावत ये ॥११४॥

रामसेवक हरि रूप निरगि सुख पावत ये ॥११५॥

नद भवन उत्साह सकल सुख छावत ये ॥
 स्वस्ति पठत द्विज भूरि लहत मन भावत ये ।
 नापित सहित सोनार सुठन गन कर बहु ये ॥
 देरसन हित शिशु रूप नेग धन बहु कहु ये ।
 नद दीन्ह धन भूरि नेग जत भाखत ये ॥
 सोढ लहि हर्ष लुटाउ एक नहिं राप्रत ये ।
 पृथक पृथक नेवड़ावरि गोपी गोप करु ये ॥
 नापित सहित सोनार पात्र निज निज धरु ये ।
 शिशु कहँ मोदक दीन्ह हरस्य हित दोउ कर ये ॥
 नापित मुह न कीन्ह वेध पश्य सोहर ये ।
 कर्णवेध जब कीन्ह केस कियो मुडित ये ॥
 छवि कहि लहु नहिं पार सेम श्रुति पडित ये ।
 सूचिकार लेइ बख सूत्र सोन शिल्पित ये ॥
 मोती लगी चहुँ ओर सुमणि गन कल्पित ये ।
 स्नान करवाइ सुभाल तिलक करि ये ॥
 माला पुष्प पहिगाइ सुदरपन कर धरि ये ।
 नेग लेइ वर बख भूपन पहिरावत ये ॥
 धूप दीप नैवेद्य सशय बजावत ये ।
 शिशु कहँ मोदक लिआइ सकल वैटवावत ये ॥
 दान देइ बहु धेनु सुरन्न लुटावत ये ।
 निरखि निरखि शिशु रूप सुमगल गावत ये ॥
 रामसेवक नर नारि चारि फल पावत ये ॥१०

राग कल्याण

निरसत शिशु रूप श्याम शोभा शत कोटि काम
 मोहत नर नारि नैखि बदन की लोनाई ।

मुडित सिर ललित लाल शोभित अति तिलक भालः
नधुनी बर कान नाक बेसरि छवि छाई ॥टेका॥
कचुक गल पुष्प माल मोती चहुँ कोर जाल
शिल्पित बर कनक सूत्र निरखि जन लोभाई ।
कुलही सिर मीन भ्राज कनक सूत्र सग राज
शिल्पकारनि अम हीरा दरसाई ॥
नापित सग सोनकार करत अपर सुभग चार
मूचीकार पुष्पकार सहित निकट जाई ।
आरति चहुँ ओर करत ओछि ओछि अम धरत
निज निज सब नेग लेत करत शिशु बड़ाई ॥
स्वस्ति स्वस्ति द्विज पुकार करत सकल वेद चार
गोपी गन गोप देव देखत समुदाई ॥
मुडन आनद कद कर्णनेध कृष्ण चद्र
उत्सव अपार तिहुँ लोक न समाई ॥
बाजन बहु बजत द्वार निर्र्त गान अति अपार
आपन पर लखत नाहि लोगन लोमाई ।
दान धेनु अमित दीन्ह आभिरु द्विज मुरन लीन्ह
। नद अति अनद अपर हेतु धन लुटाई ॥
कुलाचार सकल कीन्ह भोजन पक्वान दीन्ह
भूपन बर वसन गोप गोपिन पहिराई ।
देव पितर मुनि सुजान करत बाल कृष्ण ध्यान
रामसेवक भक्त राम राखु उर छपाई ॥१०९॥
राजित शिशु रूप श्याम शोभा बपु कोटिकाम
नयन पुट करत पान लोक सकल मारी ।
मुडित मिर देखि देखि कर्णनेध पेखि पेखि
। चितवनि चकोर उदन चद्र शिशु निहारी ॥टेका॥

कचुक गता भुजा भ्राज कुलही सिर अतिविराज
 नथुनी नर कान नाक ग्ही दिवस धारी ।
 वाताक अस भासि भासि रूप उरसि रासि रासि
 विचरत चहुँ थोर देवि मगन भीरि भारी ॥
 देव मुनि समाज गान देसि चरन कमल भ्राज
 निरखत नर जोति मोति सरिम लसि सुखारी ।
 गोपी गन कृष्ण देवि स्मर शिशु रूप लेसि
 चाहत द्यन त्याग नाहि उरमि गहि दुलारी ॥
 करत अपर ध्यान जोग निरग्रत जन गोप लोग
 रात्रि दिनस उरसि प्यास नयन शिशु विचारी ।
 रोहिणी बलदेव मानु नैन सन कहत त्रात
 शोभा सुख दहु शिशुन दुख अरिष्ट टारी ॥
 यशोमति कहु बार बार शिशुन हेतु सुभग चार
 कुशात रहु अरोग्य बाल देव दानवारी ।
 नद अति अनर करत उरमि नाहि नेक डरत
 दान विविधि देत मित्र वाक्य न विसारी ॥
 निरखत शिशु कृष्ण रूप काम कोटि छवि अनूप
 निज निज रुचि उरसि पाड पुलकित नर नारी ॥
 दरमि परसि कृष्ण रूप ब्रह्म सुख सो लहु अनूप
 रामसेवक नयन बागि सकल उरसि धारी ॥११०॥

रागिनी सोरठी

नाचत बलदेव कृष्ण नाजत पेजनिच्यो ।
 श्याम गौर अंग सग शोभा रमसनिच्यो ॥टेका॥
 उठत गिरत चलत धाय बहुरि पलटि कर बढाय
 गिरयत प्रतिविद्य चारा उलटि गहत पणियो ।

ठुमुकि ठुमुकि धरत पाँव छाँह गहत लहत दाव
 घरनत नर नारि मधुरि तोतरि किलकनियों ॥
 किंकिनि कटि रजत ताल नूपुर धुनि गति रमाल
 मोहत नर नारि बहुरि चमकनि करधनियों ।
 छत्रि को साथ काम चरित मनहु मेघ सग तडित
 पलटत सुरत लहत भूरि निरगत चपलनियों ॥
 किलकि किलकि धरत हाथ नाचत हिलि मिलि सुसाथ
 गोपी गन गोप देखि हररित पलटनियों ।
 चरन कमल नख सुरग निरगत सुरग छवि उमग
 कुलही सिर तिलक भाल मानहु नग फनियों ॥
 हाँस अति विलास देत सफल लोक मोल लेत
 स्थिर तन करत कान नाक काँ नथुनियों ।
 गोण लीन्ह नरानि चूमत मुख फेरि पानि
 रामसेनक मन सुथीर निरगत चितनियों ॥१११॥
 बजय बजय कृष्ण धुनुधुनियों ।
 खेल खेलत दुनुमुनियों ॥टेका॥

ठुमुकि ठुमुकि पद धरत धरणि पर नाचत जनु धर गुनियों ।
 दूत उत तान तोरत चट पट दोड असन बाल कोइ दुनियों ॥
 निज निज तन प्रतिबिंब देखि शिशु बोलत तोतरी बचनियों ।
 कर गहि चलत छाँह नहि पावत मानत अपर नचनियों ॥
 नृत्तक छाँह सदृश शिशु डोलत मुनि न परत सोइ वनियों ।
 किलकिलाइ सोइ छाँह धरन चलु गहि न जात निज पनियों ॥
 हरि मचलाइ डारु धुनुधुनियों धाइ धरेड नदरनियों ।
 अस अद्भुत शिशु चरित करत हरि रामसेनक सुरत रनियों ॥११२॥

राग केदारा

यशोमति भाग्य किमि कहु गाय ।

मो मति नाहीं समाय ॥टेका॥

जनक जग जोइ अखिल जग कर तनय भयो सोइ आय ।

ब्रह्म अज अद्वैत अनभव गम्य नहिं दरसाय ॥

देव मुनि नहिं ध्यान लहु कोइ तासु हित प्रगटाय ।

केलि करु हित हेतु यशोमति बाल इव मचलाय ॥

गोद लेइ हलराय चूमि मुख क्षीर पान कराय ।

लाल कहि पलना भुलावत केलि अधिक सोहाय ॥

सोवत कर मुख पृष्टि फेरत लाय उर पुलकाय ।

उठत पुनि शिशु वदन निरखत वार वार बलि जाय ॥

कमल पद तन श्याम देखत राखु मनहिं लोभाय ।

रात्रि दिव सुख रामसेवक नद लहु सुत पाय ॥११३॥

कहु कोइ नद-नंदन गाय ।

चारि फल दरसाय ॥टेका॥

तनय यशोमति कहत शुचि मन प्रेम उर पुलकाय ।

रूप कोइ धरि जानि कलिजुग कृष्ण प्रगटत आय ॥

नद यशोमति भाग्य किमि कहु जासु भक्ति धर पाय ।

ब्रह्म अज अत्रय लोक्य पुरण तनय होय प्रगटाय ॥

दान देत सुत भापि आपन द्विजन पद सिर नाय ।

रह्य सुत कल्याण निशि दिन होहु विप्र सहाय ॥

हाय शिशु करु केलि नर इव पितृ लसि निज माय ।

चूमत मुख कहि लाल लाइत भाग्य घरवस छाय ॥

नद यशोमति प्रीति बाढत जनहिं शिशु मचलाय ।

गोद गहि हरि रामसेवक ब्रह्म सुख ठहराय ॥११४॥

रागिनी सुहा

निरखु मुख पंकज नंद नदवरनी ।

भागि तासु कवि केहि विधि घरनी ॥टेका॥

लेइ लेइ शिशु गोद खेलावत नद यशोमति करि शुभ करनी ।

मुख चूमत गहि पलना मुखावत मन भावत सुतधरु तन धरनी ॥

जासु चरन रज शिव अज चाहत

भक्तन कहँ दायक सुर सरनी ।

दडक बन जोइ रज करु पावन

मुनि-धरनी की साप अघहरनी ॥

काम क्रोध मद लोभ मोह बल मत्सर आदि चोर दस भरनी ।

पाप ताप तृण तुल राशि धर हरि पद रज पावक सम जरनी ॥

काल ब्याल भक्तक त्रयपुर जन सुमिरत रजदारक सम भरनी ।

ज्ञान भक्ति दायक रज जस हरि

रामसेवक पावक जिमि अरनी ॥११५॥

छुअत पङ्क पंकज निति नदरवनी ।

भाग्य परम कवि कहु विधि कवनी ॥टेका॥

सुर नर मुनि करि ध्यान लहत कोइ

यशोमति कर गहि फिरु अरवनी ।

जोइ हर हृदय कमल सहँ रहु पद

सोइ यशोमति आँगन पलटवनी ॥

चरन कमल नख नीश्रित गगा द्वारि

सकल अघ शोक नसवनी ।

हरि पद रज त्रय पुर पावन करु

सुमिरत पाप पुज सकुचवनी ॥

रज पुनीत अति चाहत सुर मुनि

भक्त सुधन शिव अज मन भवनी ।

अहोभाग्य परमत अग सत्र शुचि
यशोमति कृष्ण चरन अघदवनी ॥
सकल लोक श्रुति सेस सारना
महिमा कहि चाहत रज जवनी ।
सकल लोक सुर देह शोक हरि
रामसेवक चाहत रज तवनी ॥११६॥

रागिनी सोरठी गति चचरीरु

जय जय बलनेव कृष्ण सतन सुरदाई ।
श्याम गौर अति अनप नेरि जन लोभाई ॥टेक॥
जाकर नहिं आदि मध्य पावत कोपि
नहिं अत बेद बहु पुरान सेस सत कहत गाई ।
लीला तन धारि बारि यशोमति हित उर सुधारि
नाचत प्रतिबिंब देरि रूप निज गनाई ॥
महिमा अपार सेस बेद नाहि लहत पार
कहत श्रुति पुरान भेद नेरु न जनाई ।
अचरज जन भूरि करत लीला गहि उरसि धरत
पाप पुज दरि जात निरसत सुर छाई ॥
ठुमुकि ठुमुकि पाव धरत सकल भार धरणि हरत
स्ववश लोक करत रूप मोहनि दरसाई ।
मुलत सुर मुनि सुजान मानुप गन रहित ज्ञान
तोरत जब तान गान करत लरिकाई ॥
भूपन वर वसन अग छाया तन डोलु सग
धरन हेतु धामत प्रतिबिंब चलु पराई ।
मातु पिता प्रीति हेतु भव समुद्र करन सेतु
गहि न जात छाई गिरत घरणि मचलाई ॥

चरित बाल सुख रसाल हरत सकल कल्पुष जाल
कहत सुनत उरसि धरत कृष्ण धाम जाई ।
अद्भुत हरि चरित मार कहत सुनत जगत पार
रामसेवक ज्ञान भक्ति हरि सरूप पाई ॥११७॥
नाचत बलदेव कृष्ण छौंह तन निहारी ।
ब्रह्म अज अनादि अखिल रूप निज विसारी ॥टेका॥
प्राकृत शिशु रूप धारि शोभा शत काम वारि
श्याम गौर तन अनूप मोहत नर नारी ।
देखत प्रतिनिब्र लोल निज सरूप सदृश डोल
डोल न सुनात नाच देखत मन वारी ॥
धरत छौंह कर पसारि धरि न जात मृगा वारि
नृत्तत पुनि सघन धरन हेतु जनु दुखारी ।
किलकिलाय गिरत धरणि शोभा शत मेघ तरणि
शीघ्र अति उठाइ गोद लावत महँतारी ॥
जीर निज कराय पान बाल चरित करि सुगान
यशोमति मुख चूमि लाल भाखि बहु दुलारी ।
पलना मुलाय गाय बहुरि गोद लाय माय
ललना कहि कर सरोज मकल अग भारी ॥
अद्भुत अस चरित करत जननी सुख रस स्वभरत
सकल भार धरणि ठरत नर सरूप धारी ।
महिमा अपार कार करत जगत रस विहार कहत
सुनत हँसत नाहिं परत जगत वारी ॥
कलिमल कलि धर्म व्याल कृष्ण चरित गरूड पाल
चलत नर कुचाल तूल अनल मुजस जारी ।
देखत कलिकाल चाल रामसेवक जन विहाल
त्राहि त्रसित देखि कृष्ण जानि मोरि पारी ॥११८॥

राग गौरी

यशोमति शिशु की करत बडाई ।

निशि दिन सुत जस गाई ॥टेक॥

आजु सग बलदेव निरु कर हँसि हँसि धहु दोउ भाई ।
 श्याम गौर मण्णिमय अँगनइया शोभा वरनि न जाई ॥
 निज प्रतिबिंब देखि देखि नाचत धरत स्वहाथ बडाई ।
 गहि न जाय प्रतिबिंब कोइ कर वरन हेतु मचलाई ॥
 पलना झुलत रहु गोद मुदित मन चीर पिवत हररगई ।
 कर धुनुधुनियो नजावत त्रिहँसत कचुक लहि मुसुकाई ॥
 चीर पान नहिं करन आजु शिशु मृष्टि परी कोइ आई ।
 विकल होय द्विज गुनिय बोलावत गावत शिशु मुरझाई ॥
 दान मान सुत हित कहि कहि करु प्रतिदिन सुजस सोहाई ।
 बाल चरित निति राममेवक हरि कहि जननी सुख पाई ॥११९॥

जननी को बाल बिनोद सोहाई ।

हिलि मिलि ब्रज त्रिय गाई ॥टेक॥

निति नूतन कहु चरित यशोमति बार बार पुलकाई ।

आजु चरित अस कीन्ह मुदित मन

विधि सन सकल बताई ॥

माझ समय हरि चरित त्रिस कहु प्रात सुरयन सुनाई ।

आरति करि दोउ काल मुदित मन

शिशु जम कहि हररगई ॥

अपर चरित नहिं अपर कार कर तरस अपर नहिं भाई ।

कृष्ण दरम प्रिय चरित सुगठ हिय चीरपियाय रिआई ॥

मुस चूमत हलराय गोद करि पलना घालि झुलाई ।

तेल फुलेल अग सन लारत ललना कहि गोहराई ॥

यशोमति मम न अपर कोइ लहु सुख करु बुध बेंद बडाई ।
 कृष्ण ध्यान करि रामसेवक छन भक्त सकल सुख पाई ॥१२०॥

राग सोरठ

कहत कत्रि कृष्ण प्रीति म्चि भारी ।

यशोमति सम न अपर कोइ सुख लहु तिहुँ पुर पुरुष न नारी ॥टेका॥
 दिवस चरित हरि देखत गावत रयन न नेक बिसारी ।
 जागत सुमित हरि गुन गन दिव सोत्रत शिशु उर वारी ॥
 स्वप्ना महुँ शिशु केलि मिलोकत जाप्रत सरिस दुलारी ।
 फेहात बहु कृष्ण कृष्ण कहि उठि पुनि बदन निहारी ॥
 मखि गण दीप पलंग दिग गृह नहु यशोमति सुत हित वारी ।
 निहारत शिशु बदन सोय उठि बाति नही कर दागी ॥
 रात्रि दिवस मन सोत्रत जागत शिशु वर सुरति विचागी ।
 सुत पठ प्रीति करत नहिं हरि लखु

यशोमति गति अपिचार्ये ॥

मुनि जन ध्यान लहत कोइ छन हनि उन्नी समेटि म्पारो ।
 यशोमति सत्र छन रामसेवक लखु अमर भक्ति मुरारो ॥१२१॥
 कहत बुध रीति प्रीति पहिचानी ।

सेस महेश दिनेस कहत विप्रि नान् देव यवानी ॥टेका॥

भक्त भयो बहु लोक लोक नर एह न्ह मुनि डानी ।
 जोग जज्ञ व्रत दान करत बहु मुनि नर दर ध्यानी ॥
 रात्रि दिवस अस सुख नहिं लहु काट जन न्ह न नदगनी ।
 दिवस बेरि निरखत जस गावत शिशु नदि अपर न जानी ॥
 रात्रि गोद लेड मोड भरत उर न्हि कोड अपर नान्ति ।
 मखि गन दीप धारि गृह मोर गोननि उर पुनकानी ॥
 लाड गोद पय पान कृष्ण न्ह अग परि पा

मुम्य चुमि चुमि शिशु बदन निहारत कहि जीवन धन प्राणी ।
 छन निररत नहिं शिशु तन परसत मानत निज तन हानी ॥
 प्रमुदित रामसेवक निशिवासर लहि सुत हरि सुखदानो ॥१२२॥

राग विहाग

यशोमति कृष्ण तनय वर पाई ।
 रात्रि दिवस सुग्य छाई ॥टेका॥
 श्याम गात कर कज विलोकत मृदुल चरन चित लाई ।
 दत्त पक्ति शुभ चिबुक अधर शुचि कल कपोल सुखदाई ॥
 श्रवण सुभग नासा सुखदायक कच त्रिलोकि हरखाई ।
 भुज प्रलय नख करज मनोहर पद नख निररि अघाई ॥
 भाल विशाल नयन चितप्रनि वर निररत बदन लोनाई ।
 किंचित हाँस मधुरि बोलनि रुचि मन तन लेत चोराई ॥
 गोद लेइ पय पान करावत रुचि तासि अन्न प्रियाई ।
 पलना मुलाइ लगाइ गोद पुनि मुख चूमत बलि जाई ॥
 रात्रि दिवस अभ्यास करत सुत उर नहिं अपर सोहाई ।
 ब्रह्म तनय लहि रामसेवक सुग्य रस वर रूप लोभाई ॥१२३॥
 कहत सुर यशोमति भाग्य सवारी ।
 तासु तनय अज ब्रह्म निरजन
 किमि कहु सुख सोइ भारी ॥टेका॥
 रात्रि दिवस शिशु बदन त्रिलोकत हरि न लखत महँतारी ।
 देत परम सुख मानि जननि तेहि हरि निज रूप विसारी ॥
 सकल जगत पितु मातु जोइ हरि माता कहत दुलारी ।
 इम देवता अधिकार सतोगुन भक्ति नहीं हरि धारी ॥
 अस सुख नहीं सुर लहत स्वयं
 कोइ जस सुख लहु नद नारी ।

बाल केलि रस लहत ब्रह्म सुख भक्ति नात अधिकारी ॥
 सुर दुर्लभ सुख लहत भक्ति करि कहत सेस श्रुति चारी ।
 यशोमति भक्ति सराहत सुर मुनि जेहि घस तनय मुरारी ॥
 करत परमपर देव मुदित सुमन मन वृष्टि नभ मागी ।
 सुख लहु रामसेवक सुर मुनि उर हरिशिशु बदन निहारी ॥१२४॥

राग भैरव

कृष्ण कृष्ण कहि कृष्ण रूप लहि प्रमुदित सध ब्रज वासी ।
 रग मृग कृष्ण कृष्ण कहि बोलत डोलत हृदयें हुलासी ॥टेका॥
 ब्रजवासी नर नारि अनन्ति कृष्ण नाम उर भासी ।
 कृष्ण कृष्ण कहु जीह दिवस निशि रूप सुनयन पियासी ॥
 कृष्ण कृष्ण कहु नद यशोमति कहत दास सोइ दासी ।
 कृष्ण कृष्ण कहि कृष्ण रूप लहि भयो सत्र हरि पद आसी ॥
 लता रिटप लघु जोहति जीव जत भयो जनु कृष्ण उपासी ।
 पुत्र यशोमति भाव कृष्ण कहि भयेउ सकल सुख रासी ॥
 होत प्रभात कृष्ण कहि उठन वैठि कृष्ण बहुधासी ।
 कृष्ण नाम जपि प्रथम निरतर सुत वर लहु अविनासी ।
 यशोमति भाग्य अथाह थाह नहि गति ढायक सम कामी ।
 कृष्ण कृष्ण कहु रामसेवक नाम सकल भरतासी ॥१२५॥

कृष्ण कृष्ण कहि दरसि परसि कर सुख लहु बहु ब्रज नर नारी ।
 महिमा नहि कोइ सेस वेद कहु यशोमति सुख गति भोरी ॥टेका॥
 कृष्ण कृष्ण कहि क्षीर पिआवत कहि कहि कृष्ण दुलारी ।
 उठत कृष्ण कहु वैठि कृष्ण कहु चलत कृष्ण अनुसारी ॥
 सोवत कृष्ण कृष्ण कहि टोवत कृष्ण कृष्ण उर धारी ।
 कृष्ण कृष्ण कहि कृष्ण जगावत प्रातिहिं कृष्ण पुकारी ॥
 कृष्ण कृष्ण कर गहि उर लावत उठनहि कृष्ण निहारी ।

कृष्ण कृष्ण कहि देत मिठाइ कहि कर केम मरारी ॥
 चकई देत धुनुधुना कृष्ण कहि कहैड कृष्ण मरारी ।
 वोतावत मुन कृष्ण कृष्ण कहि कहि कृष्ण मुग्गारी ॥
 भाग्य यशोमति कहै केहि त्रिधि कवि जासु तनय मुग्गारी ।
 कृष्ण कृष्ण कहि राममेवक नर परत न कोई भव मरारी ॥२६॥

रागिनी भैरवी

होत प्रात यशोमति प्रतिनि उठि कृष्णहि प्रहृत दुतारी ।
 उठहु ताल पयपान करहु अत्र ताकहु नयन उधारी ॥टेक ॥
 कृष्ण कृष्ण कहि कर अग फेरत यत्र सुभग तन टारी ।
 कृष्ण उठहु बलि जाऊँ तात अत्र कहि त्रिधि बहुत पुकारी ॥
 बहुरि वक्ष कहि लाल कृष्ण कहि कर सिर केस सबारी ।
 वार वार कहि कृष्ण कृष्ण सुत कर गहि वदन निहारी ॥
 मुग्ग चूमत मुकि मुकि मुग्ग निरगत हँस शिशु वदन पसारी ।
 जागि कृष्ण मचलात जानि हित नर इत्र जस भिस्तारी ॥
 चकई लेइ धुनुधुना दीन्ह कर कृष्ण लेइ मुग्गिटारी ।
 पुनि मेरा पकवान त्रिनिधि त्रिधि दीन्ह न लीन्ह मुरारी ॥
 स्थन दीन्ह लागु सोइ पिवन यशोमति गोन मुधारी ।
 यशोमति सुख लहु राममेवक बहु कहत सेस श्रुति चारी ॥२७॥
 कृष्ण कृष्ण कहि प्रात जगावत यशोमति उर पुकारै ।
 उठहु लाल कहि कहि मुख चूमत धार धार बलि जाई ॥टेक॥
 मेवा बहु पकवान मिठाइ कचन थार वराई ।
 माखन मिश्री पृथक थार धरि हरि आगे दरसाई ॥
 पृथक पृथक दधि चीर गुड घृत चर्षण अमित बनाई ।
 चकई अरु धुनुधुना वेत वर अगिनित खेल रेसाई ॥
 कर गहि गोन लगाइ कृष्ण कहि जननी नेत्र खोलाई ।

निज कर शिष्टु मुग्र परि -

निज स्थन निज कर गारि पियाई ॥
भक्त-बस भगवान् अहैं अस सुर नर मुनि सुखदाई ।
काँन्ह अधिक तप पूर्ण यशोमति तप अस लहत बडाई ॥
कृष्ण नाम कलिकाल का मधुक् कहत सत बुध गाई ।
कृष्ण कृष्ण अन रामसेवक कहु कृष्ण ध्यान जेहिपाई ॥१२८॥

रागिनी भैरवी तस्या दास्या नाम प्रभावती

कृष्ण कृष्ण कहि रटत लोग हो ।

ब्रजवासी मुग्र वरत भोग ॥टेका॥

कलि कल्मष नहि रहु कुरोग ।

सजम एहि मिथि बनई जोग ॥

यशोमति कहु गहू तनय मोर ।

रात्रि दिवस नहि परत भोर हो ॥

गोपी गन नहि कहत थोर ।

कृष्ण मोर एह जगत सोर ॥

कृष्ण गनत नहि अधम चोर ।

प्रीति गहत नहि कहत सोर ॥

रामसेवक कति देखि घोर ।

देहु मरन हरि करु निहोर ॥१२९॥

कृष्ण कृष्ण कहि रहु लोभाय ।

प्रात यशोमति गुन सो गाय ॥टेका॥

उठहु तात बलि जाय माय ।

पुनि सोनहु कछु लेउ राय ॥

घोर पियहु धुनधुना बजाय ।

।। मन भावै सोइ कहु बुझाय ॥

कृष्ण कृष्ण कहि उरसि लाय ।
 यशोमति हितहरिहरस्यधाय ॥
 पिवत क्षीर हरि कर बढाय ।
 दरसावत मुख बाइ वाय ॥
 रामसेवक मुख लहु अधाय ।
 यशोमति हरि वर तनय पाय ॥१३०॥

रागिनी सोरठी

सोहै सोहै कृष्ण सिर धीरा ।
 भाल तिलक वर हीरा ॥टेका॥
 कटि किंकिनि घुनि मधुर सोहावनिपन्पैजनियोन थीरा ।
 कर चकई गेंदुवा अति राजित रव घुनुघुनियो गभीरा ॥
 कनक छड़ी कोइ छन कर धरि
 चलु लरि परु जनु वरवीरा ।
 सिर चौतनि इत उत बहु डोलत जनु छदल हत समीरा ॥
 कुडल अवन नाक नकवेसरि चलत मनहु सरि नीरा ।
 कुचित केस देश के हिडोलत जनु अहि इत उत फीरा ॥
 अँगनैया स्फटिक काँच गच निरतत जनु सरि तीरा ।
 रूप परम लरि रामसेवक हरि मोहत मुनि मन धीरा ॥१३१॥
 देखो देखो बाल मुख कारी ।
 यशोमति रूप सवागी ॥

गोप बाल अत्र हिलिमिलि नाचत
 यशोमति सकल दुलारी ।

मम शिशु हित प्रतिदिन अत्र आयहु
 खेलहु शिशु मिलि भारी ॥

सुनत यशोमति बचन बाल सब हर्ष लहेउ उर भारी ।
 कृष्ण मग नाचत अंगना गृह यजावत फरतारी ॥
 बाल बृह यलदेव कृष्ण मिलि नाचत सुख ब्रज सारी ।
 उडगन महँ जनु चद्र महा छत्रि घन सग सबित तमारी ॥
 काम कलभ सग अमित मनहु छत्रि ।

नाचत कर कर धारी ।

सुग कर अमित यजावत वाजन
 सकल गुनिन अनुहारी ॥

बाल चरित निरखत परियत शिशु हरखित बहु नर नारी ।
 बाल चरित सुग रामसेवक लहु लखि धर रूप मुरारी ॥१३२॥

राग श्री

हरि केलि निरखि नर नारी ।

शिशु सग न तजत सुखारी ॥टेका॥

कब शिशु मिलि गृह द्वार आउ हरि

एह उर पुरजन म्हारी ।

पुरजन मन रुचि भाव जानि हरि

पेरेउ रुचि महँतारी ॥

नद यशोमति दोलि जोविपी ।

नेग धारु भरि धारी ।

सुदिन कहहु द्विज द्वार चलन की

जेहि शिशु लहु सुख भारी ॥

सुदिन मोधि मणिगन द्विज लहु बहु

स्वस्ति सुयचन उचारी ।

शस नाद करि गान सुमगल

शिशु कहँ द्वार निकारौ ॥

भूपत वसन सवारि केम सिर
 जननी बहुत दुतारी ।
 मुरली वेनु मुचग सेतवना
 अमित पृथक कर धारो ॥
 एक छडी चित्रित कर धरि वर
 चरित अमित अनुसारो ।
 प्रमुदित रामसेवक गोपी गन
 लखि वर रूप मुरारो ॥१३३॥

हरि द्वार निरखि जन धाई ।

नद द्वार चलि आई ॥टेक॥

भूपत वसन कृष्ण तन राजित निरखत लोग लोगाई ।

बहु पकवान शिशु कर बाँटत नद जु रत्न लुटाई ॥

पृथक पृथक बाजन बजवावत नाचत शिशु समुदाई ।

अति आनद नद लहु पुरिजन यशुमति सुख अधिकाई ॥

प्रथम दिवस सुत द्वार निरखि निज

यशुमति उर हरग्याई ।

दान दीन्ह द्विज कर बहु त्रिधि सन

बाजन अमित बजाई ॥

श्याम गात शिशु बदन कुन वर

निरखत नयन लोनाई ।

सकल गोप गोपी, गन प्रमुदित

एक टक रहेउ लोभाई ।

शिशु लीला करि हरि नर इव बहु

जन उर प्रीति बढाई ॥

अप पुर सुख लहु रामसेवक बहु

गोपि अधिक उर पाई ॥१३४॥

राग केदारा

खेलत कृष्ण डिंभन सग ।

देखि जन मन दग ॥टेका॥

श्याम तन धन चमक टामिनि फेम लटक भुजग ।

उदय गिरि पर मुकुट ललकत मनहु बाल पतग ॥

चरन कज नग्न जोति राजित जाहि निश्चित गग ।

भूपन उदगत चद्र मुग्ध छवि वसन सोहु सुरग ॥

गोप बालक सग खेतात करत नहि मन भग ।

क्रीडत हिलिमिति निर्त्त करि बहु बढत प्रेम उमग ॥

वढन हित मन प्रेम जन उर लपटि धरु शिशु अग ।

किलकि मुरली शब्द करु वर बहुरि शब्द मुचग ॥

अग अग छवि कोटि राजित वदन अमित अनग ।

देखि सुख लहि रामसेवक लीन्ह मातु उदग ॥१३५॥

खेलत सग शिशुवन धाय ।

नद सुत कहवाय ॥टेका॥

ब्रह्म अज अद्वैत अनभव गम्य मुनि कोइ पाय ।

नद यशोमति हेतु सोइ प्रभु चरित बाल देखाय ॥

गोप शिशु मिलि करत क्रीडा रग बहु वरसाय ।

वेणु मुरली शब्द करु कोइ बाल मिति समुदाय ॥

निर्त्त करु मुरुचग मुख कर शब्द सुभग सुनाय ।

बोली लेत दिग गोप गोपिन काम धुनि प्रगटाय ॥

प्रीति बाढत गोपि गन उर परस हित ललचाय ।

काम रस उर वान लागत जात शिशु नियराय ॥

देखि यशोमति बाल क्रीडा प्रीति पुत्र सोहाय ।

ध्यान करि मुनि रामसेवक उरसि गद्द पुलकाय ॥१३६॥

टोहा

गृह आँगन परि चरित प्रभुयशुदहिं यहु सुख दीन्ह ।
 नद द्वार जन सकल हित चरित अमित हरि कीन्ह ॥१॥
 गोपी गन उर भाव लरि गृह गृह चरित जनाय ।
 असुरन बध अय करव भुव हरि एह उर ठहराय ॥२॥
 निज अयतार विचारि करु हरन हेतु भुवि भार ।
 सुगम अगम कहि चरित नर रामसक भव पार ॥३॥

राग टोडी

यह हरि चरित गोपिन गृह जाय के ।
 बाल, यद संग लेइ इत उत धाय के ।।टंका।।
 गोपी गन हरखानी देखि शिशु सुखदानी
 गृह गृह निज लेइ चलु कर लाय के ।
 भवन देखाइ वारी दधि घृत भाँड थारी
 बैठी क्षीर थल सिक सहित देखाय के ॥
 कृष्ण रूप देखि देखि जनम सफल लेखि
 नयन पुटप पान करत अघाय के ।
 सुकृत सनेह जाग मन चित अनुराग
 ललित लवँग पाग उर पुलकाय के ॥
 शिशु मिलि निर्र्त गान करि हरि मुमुकान
 गोपी गन करि ध्यान उरसि वसाय के ।
 ताल सुर शीप देत कर गहि गहि लेत
 गोपी गन प्रमुदित शिशु न बत्ताय के ॥
 प्रथम दिवस चार गोपी करु सतपार
 दधि क्षीर व्यवहार कर सुख पाय के ।

कृष्ण गृह चलु जय शिशु सग चलु तथ

गोपी फिरि गृह आइ शिशु पहुँचाय के ॥

कृष्ण खेल सन कहु यशोमति सुख लहु

गोद लेइ मुख चूमि क्षीर स्व पित्राय के ।

हरि गुन गान रामसेवक करत पान

लहु सुख भ्ररि दुख दूरि दिसराय के ॥१३७॥

हरि वर केलि सुगप्रद नर नारि के ।

गोपी गृह जात शिशु लेइ बहु वारि के ॥टेक॥

गोपिन के गृह जाइ मुरली बजाइ

रूप दरसाइ रसखानि सो पुकारि के ।

गोपी गन सुनि धाइ कृष्ण ढिग चलिआइ

प्रेम बस भई हरि वदन निहारि के ॥

निर्त्त गान देखि देखि गोपी निज निज पैरि

शिशु बोलि बोलि लेत गृह स्व दुलारि के ॥

शिखवत केलि करु मम वाक्य उर धरु

गृह आव निति एहि जुनिय बिचारि के ।

निज निज भाव गाइ गोपी गन पुलकाइ

हेतु प्रीति करु शिशु कर वर धारि के ॥

गपन स्व गृह कीन्ह कृष्ण गोपी चित दीन्ह

इत उत भाव वरु उर मुख सारि के ।

यशुमति पुलकानी शिशु लखि हरखानी

गोद राखि मुख मेलि क्षीर देति गारि के ॥

खेल शिशु सुनि लेत अपर बताइ देत

कृष्ण सन जानु वाक्य मानु महँतारि के ।

गोपी गन हितकार हरि केलि शुभचार

भुवि भार हए हरि खल गन मारि के ॥

चरन सरन रामसेवक चहत मन

बेहु हरि आस मम अथ श्रीन टारि के ॥१३८॥

रागिनी सोग्ठी

रमखानि मुरतिया बाजी ।

सुनत गोपी गन गाजी ॥टेका॥

गोप बाल सग हितामिति गावन वेणु मधुर मुर साजी ।

निर्त्तत बाल मध्य हरि सोहत तुरग मध्य जनु ताजी ॥

मुरली मुख मुरुचग बजावत प्रेम रग रस माजी ।

काम कोटि शत रूप देखि हरि गोपी गन भङ्ग गजी ॥

सिथिल भई गोपी गन धुनि सुनि काम सुरति रति जागी ।

मोहन मोहि लोन्ह गोपी गन कीन्ह चरन अनुरागी ॥

आयो कृष्ण बहुरि यशोमति दिग करि गोपिन सुखभागी ।

कृष्ण दरस सुख रामसेवक लहु प्रीति परसपर पागी ॥१३९॥

बाजै रुनुन मुनुन पैजनियो ।

कटि किंकिनि रसखानियो ॥टेका॥

खन मुरली मुरुचग बजावत निर्त्तत कान नथुनियो ।

नकदेसरि दमकति चमकति अति सिर शोभित चौतनियो ॥

निर्त्तत हिलिमिलि तान तोरत शिशु सुखदायक पलटनियो ।

भाल विशाल तिलक अति राजित केस न जात बरनियो ॥

भूपन बसन निचित्र सोहावन मन हरि लेत मुमुक्नियो ।

छत्रि किमि कहु शिशु मिलनि परसपर

नाचत गहि गहि पनियो ॥

शिशु लीला रत सकल गोपी गन प्रिय बोलत एक बनियो ।

सकल सुखत फल रामसेवकलहु चाहत हरि चितवनियो ॥१४०॥

राग श्री

हरि चरित गोपिन मुखदाई ।

जेहि लीला बाल सोहाई ॥टेका॥

गोप बाल लेइ अमित सग प्रभु गोपिन गृह गृह जाई ।
 दधि घृत क्षीर भाँड इत उत करि रहु गृह मध्य छपाई ॥
 गोपी गन गृह चौर कर्म लखि खोजत इत उत धाई ।
 छपि छपि गृह गृह मर्कट इव हरि लखि लखि थोट लुकाई ॥
 कोइ दिन दधि दरकाइ देत भुवि भाँड फोरि हग्व्हाई ।
 माखन दधि कोइ दिन भोजन कर बालन देत रिआई ॥
 गोपी गन कोइ छन कर धरु हरि छुटत वहुत मचलाई ।
 तजि गोपी पुनि गहत जबहि कर हरि अग अग लपटाई ॥
 कल छल करि हरि करनि छुड़ावत चलु निज भवन पराई ।
 चोर चोर कहि प्रमुदित गोपी रामसेवक सुख छाई ॥१४१॥

हरि गोपिन मन ललचाई ।

चार वार गृह जाई ॥टेका॥

जहँ गोपी निति लिपत बिसद करि चौका विमल बनाई ।
 मूत्र पूरीख करत तहँ तहँ हरि बुँकि धुँकि चलत पराई ॥
 गोपी गन चलु धरन धाइ जंत्र कर अँगुनी चमकाई ।
 इत उत चितइ बहुरि गृह प्रबिसत कर गहि भाँड उठाई ॥
 दधि दरकाइ सियाइ शिशुन कहँ माखन देत बहाई ।
 उल्लखल चढि सिकहर डेरत शुभ लकुठ लगाई ॥
 भाँड फोरि दधि भुवि वरसावत रात स्व शिशुन सियाई ।
 मर्कट इव इत प्रभु चितवत चौर कर्म अस भाई ॥
 गोपी लखि धरु धाइ कृष्ण कर शिशु बनि भुवि मचलाई ।
 निमुट्टाइ गयो रामसेवक गृह गोपिन सुख दरमाई ॥१४२॥

हरि बार बार पुलकाई ।

आयो गोपिन गृह बहु धाई ॥टेका॥

गोपिन रूप देखाइ चपल अति इत उत गयेउ छपाई ।

गोवल्मन बधन हित रजु इत उत प्ररेउ चोराई ॥

बछरन छोरि छोरि एहि थल सन ओहि थल करु हरयाई ।

गोप गोपी लखि विस्मय करु फेर फार को लाई ॥

कोर जुगौ बन कर छोरत चौर भाखि पछताई ।

कोइ दिन बछरन छोरि छोरि हरि गौवन देत पिआई ॥

शिशु कर तन लखि गोप गोपी गन सुख उर पुर न समाई ।

बाल चरित गोपन उर भावत गोपिन अधिक सोहाई ॥

कुपथ कुचाल चरित निति करु हरि

ब्रज भुवि सुख रहु छाई ।

सुपथ अमृत रस भरित कृष्ण बर रामसेवक श्रुति गाई ॥१४३॥

हरि गोपिन हित तन धारी ।

करु चरित सकल सुख कारी ॥टेका॥

गोपिन गृह गृह जाइ बाल लेइ करत केलि सुख सारी ।

द्रधि मायन सव शिशुन सिआयत भाँड फोर भुवि डारी ॥

गोपिन कहँ सुख देत विविधि विधि प्राकृत नर अनुहारी ।

गोपी गन कर धरत चोर कहि मचलात कर टारी ॥

भागि भवन निज गवन कीन्ह हरि यशुमति देखि दुलारी ।

स्थन पान कराइ लाइ उर निरगत बदन सुखारी ॥

गोपिन कर मन तन हरि पद रत चितवत नयन उघारी ।

कव आवहिं हरि देर होत बहु एक टक रहु निज द्वारी ॥

धाइ धाइ हरि जात गोपिन गृह पुनि पुनि मिलु महँतारी ।

इत उत रुचि करु रामसेवक हरि भक्ति विनोद प्रिचारी ॥१४४॥

राग टोडी

करुहरि लीला बहु गोपी गृह जाय के ।
 यशुमति प्रीति लखि रूप दरमाय के ॥टेक॥
 छन छन गोपी गृह यशुमति ढिग लहि
 इत उत प्रीति रम भेद स्व ढाय के ।
 दधि चीर भाँड फोरी सिकहर गहि तोरी
 खात दधि आपु कटु शिशुन रिआय के ॥
 बद्धरन छोरि छोरि धेनु स्व पियाउ चोरी
 रज्जु छोरि छोरी ओट धरत छपाय के ।
 गोपी गन चोर कहि हँसि हँसि कर गहि
 बाल इव हरि धरि अग लपटाय के ॥
 केलि इत उत करि गोपी कर धरि धरि
 भुवि मचलाइ गृह चलेउ पराय के ।
 चलेउ हरि गृह भागी गोपी गन सग लागी
 ओरहन व्याज पथ चलु अरुमाय के ॥
 यशुमति ढिग जाय गोपी शिशु जस गाय ।
 उर पुलकाय रिसि उपर जनाय के ।
 दधि भाँड फोरि फोरी गारि देत जोरि जोरि
 कर गहि मोरि मोरी भुवि मचलाय के ॥
 सुनि ताहि क्रोध जागु बाल मोहि मद लागु
 यशुमति निज गृह राखु ललचाय के ।
 ओरहन देत मुख देखि रूप लेत सुर
 कृष्ण पद रहु रामसेवक लोभाय के ॥१४५॥
 हरि अवतार सुखकर नर नारि के ।
 चरित विशेष मज भुवि रुज टारि के ॥टेक॥

गोपी गन छन मन तजत न कृष्ण जन
 प्रीति इत उत कनि कहत दुलारि के ।
 गोपी गन प्रीति जानी हरि उर पहिचानी
 गृह गृह जाइ रचि करत सवारि के ॥
 छपि छपि गृह जाइ चोरी चोरी दधि खाइ
 ब्रह्म अज अखिलाइ सकल विसारि के ।
 गोपी गन लरि धाइ चोर कहि कहि गाइ
 हरि मुसुकाइ दधि भुवितल डारि के ॥
 कर गहि लपटाइ बही इव अरुम्माइ
 गोपी गन सुखदाइ हँसु कर धारि के ।
 इत उत विलगाइ भुवि गिरु मचलाइ
 कर चमकाइ गृह चलेउ अचारि के ॥
 गोपी सग चलु धाइ उर पुर पुलकाइ
 चोर चोर बहु गाइ गलिन पुकारि के ।
 यशुमति दिग जाइ ओरहन देत गाइ
 कृष्ण पद ध्यान लाइ रहु मन मारि के ॥
 गोपी गन धुनि सुनि यशुमति उर गुनि
 सुत अपराध नहिं कहु दुतिवारि के ।
 नेत्र कर डोलि डोली गोपी नहिं मुख खोली
 गृह चलु बोली रामसेवक निहारि के ॥१४६॥

राग केदारा

कहु कवि कृष्ण जस किमि गाय ।
 अगम महिमा सुगम कर जग बुद्धि नहिं ठहराय ॥टेक॥
 ब्रह्म अज अखिलेश पूरण एक त्रयपुर द्वाय ।
 कहत सेस महेश बुध श्रुति ध्यान भई कोइ पाय ॥

करत लीला भक्त भुवि हित रूप प्रगट देखाय ।
 प्राकृत नर इव चरित सोड हरि कहत करि सकुचाय ॥
 गोपिन के गृह जाइ प्रसित बाल अमित लेवाय ।
 चौर इव डत डत त्रिलोकत खाइ दधिय रिआय ॥
 गोपी गन कहि चौर धरु कर लपटि तन मचलाय ।
 छद करि निफुटाय निज गृह आय शिशु लेइ धाय ॥
 गोपी गन मग व्याज ओरहन आइ उर पुलकाय ।
 देखि रूप हरि रामसेवक राखु हृदय बसाय ॥१४७॥
 ओरहन सुनत यशुमति माय ।

कहत गोपिन गाय ॥टेका॥

गाल अति मम तनय देखहु जात किमि बहु धाय ।
 खात दधि किमि भाँड फोरत धेनु देत पिआय ॥
 जुग तुम मम देखु बालक अग कहि लपटाय ।
 देत गाली कबनि त्रिवि तोहि बात नहि फरचाय ॥
 पुत्र नहि मम करत तव कहु कहत बात वनाय ।
 भाँड बहु मम गृहे गोरस नेरु नहि शिशु खाय ॥
 जाउ निज निज भवन तुम सज मूठ नाहि सोंहाय ।
 नेरु नहि अपराध मम शिशु नाहि तव गृह जाय ॥
 सुनत यशुमति बात गोपी रहत कृष्ण लोभाय ।
 राखि हरि उर रामसेवक जात भवन बोलाय ॥१४८॥

रागिनी धनाश्री

शिशु ओरहन प्रिय निति लागै ।

प्रीति परसपर जागै ॥टेका॥

कृष्ण गोपिन की प्रीति अगम लखि प्रतिछन गृह गृह बागै ।
 सग मग निति गृह चलि आयत देइ ओरहन अनुगाँ ॥

यशमति वरजहु अपन बाल एह दधि माखन नहिं, मागै ।
 भौंड फोरि दधि घृत ढरकावत गहन चलै तब भागै ॥
 बाधि राखु गृह जात नहीं सहि बटि रेसम बर तागै ।
 सकल शिशुन कहँ बँधन लावहु राखहु एकइ धागै ॥
 एक सूत्र बद्धरा जिमि बाँधत गृह राखत तिमि छागै ।
 गोपी गति किमि रामसेवक कहु जेहि उर प्रेम की दागै ॥१४९॥
 सुनि ओरहन उर अकुलाई ।

यशमति सुतहिं बुझाई ॥टेका॥

मम गृह बहु दधि चीर सुमाखन
 बहु पकवान मिठाई ।

पर गृह किमि तुम दुबत फेरु
 शिशु ओरहन निति बहु पाई ॥

बाँधव तोहि मारव एहि साटिन
 ओरहन नहिं सहि जाई ।

निति कर ओरहन रोग बढत उर
 सहत सहतहिं गरुवाई ॥

अब फोटि बहत कहत तोहि मारव
 सुनि सुख लहत लोगाई ।

सुनत कृष्ण मुख सन नहिं बोलत गोपिन बहुत सोहाई ॥
 सुसुफि सुसुफि कर नयन मिजत हरि

जननी बहुत रिसि आई ।

असित कृष्ण जननी निज मानत
 जेहि हरि सकल डेराई ॥

ज्ञान ध्यान करि लहत कोइ उर
 एह सुख भक्ति बडाई ।

बाल केलि रम रामसेवक सुखहरि ब्रज जन दरसाई ॥१५०॥

राग गौरी

जननीं हम नाहि दधि खाई ।

मॉड नहीं कोइ फोरु लकुट सन नहिं कोइ दधि ढरकाई ॥टेका॥
 बछरा नहिं रड्जु इत उत करु नहि कोइ धेनु पिआई ।
 मूत्र पूरीप नहीं कोइ गृह नहि अग धरि लपटाई ॥
 कह तरुणी एह सकल गोपी गन किमि एन्ह सन अरुमाई ।
 हम शिशु तव दिग रहत सदा पुनि तुम देखत रहु माई ॥
 साक्षि केहि विधि केहि निहोरउं तुम माता हौ सदाई ।
 सकल गोपी गन हँसत देखु मोहि मिथ्या दोस लगाई ॥
 किमि पतिआत सदा तुम देखत कहु एह बात बनाई ।
 यशुमति सुनि शिशु बचन मानि ध्रुव स्थन पान कराई ॥
 मुख चूमत पछतात कारि रिसिं धार बार उर लाई ।
 ब्रह्मानंद रस रामसेवक सुख हरि शिशु तन दरसाई ॥१५१॥

निररत कृष्ण रूप ब्रज नारी ।

उर लहु सुख अति भारी ॥टेका॥

निज निज गृह करु केलि चोर कहि

दिलि मिलि तन कर धारी ।

प्रात काल करु ध्यान कृष्ण उर साँझ समय सुख सारी ॥
 ओरहन न्याज सग हरि आवत गावत चरित सवारी ।
 चोरी करु तव सुत यशुमति दधि धरत देत बहु गारी ॥
 तव दिग साधु रहत शिशु सम एह मानत तोहि महँतारी ।
 तरुण प्रवल गोपिन मिलि गरजत गारी देत प्रचारी ॥
 लपटि भूपटि चनकाइ धरत कर भ्रमकोरत त्रिय मारी ।
 देखत छोद छोद तव बालक राखहु भवन दुलारी ॥
 ओरहन देत यशुमति सन अस सान मो कृष्ण पुकारी ।
 चलत भवन कहु रामसेवक सत्र आनहु बेगि मुरारी ॥१५२॥

रागिनी सोरठी गति टोमरी

छोटी छोटी छोटी अति छोटी धुनुधुनियों ।

बाजत सु छोटी राग रनुमुनु सुनियों ॥टेक॥

कनक मई सुसाटी कर सोहै

छोटी लाठी लोटी छोटी शुचि चौर पानकी करनियों ।

बकई सु छोटी छोटी जडित सु मोती छोटी

गेन्दुवा सु छोटी छोटी स्वरण बरनियों ॥

छोटी छोटी अंगुली सु मुदरी सु छोटी अति

। नख जोति मोती जनु पकज दलनियों ।

छोटी छोटी मुरली म्रुचँग वेणु अति छोटी

कनक जडित पोर पोर बहु मनियों ॥

छोटी छोटी धोती कटि पनहीं सु छोटी पद

ललित कनक चहुँ सब सुख खनियों ।

छोटी छोटी पद अँगुली सु नख जोती मोती

छोटी छोटी राग छोटी पद पैजनियों ॥

छोटी छोटी अँग सँग भूपन सु छोटी छोटी

छोटी छोटी म्रँथी वर कटि करधनियों ।

कँचुकी सु छोटी छोटी सिर टोपी अतिछोटी

कनक जडित सिर छोटी चौतनियों ॥

छोटी छोटी चौर बहु रँग को पतँग छोटी

नदरानी शिशु हित देत निज पनियों ।

छोटे छोटे बाल रामसेनक सुसँग श्याम

प्रिय अति लागु हरि तोतरी बचनियों ॥१५३॥

छोटे छोटे बाल सँग करत मिलनियों ।

सिरवत यशुमति बोलनी चलनियों ॥टेक॥

छोटी छोटी लाठी शुभ कनक रचित गौठी
 चकई धराइ कर लडु लटकनियों ॥
 छोटी छोटी पनहीं पयैजनी सु छोटी छोटी
 पहिरन हित वट्ट करधनियों ॥
 कचुकी सु छोटी सिर कुलही तलित छोटी
 देत सु वताइ सिर छोटी चौतनियों ॥
 यशुमति सुत हित गेल वट्ट मिररत
 छोटी छोटी पुडिया सुरैगनि जु पनियों ॥
 छोटी छोटी मुरली म्रुचँग येणु अति छोटी
 कर गहि सिसवत सकल धजनियों ॥
 छोटी छोटी अँगुली मो छोटी छोटी मुदरी
 छोटी छोटी मणि छोटी कनक की कनियों ॥
 छोटी छोटी नधुनी सु फान नाक अति छोटी
 छोटी छोटी मोती सु जडित छोटी मनियों ॥
 छोटी छोटी केम लटकनि शुचि छोटी छोटी
 करते सबारी मानो छोटी सेस फनियों ॥
 अँग अँग शत काम निरस्तन तन श्याम
 शोभा नहिं जात कहि पद सुख रानियों ॥
 वदन निरखि रामसेवक पुरित वाम
 मन हरि लेत हरि शिशु चितवनियों ॥१५४॥

राग कल्याण गति चंचरीक

राजित सग बाल कृष्ण शोभा छनि छरिं ।
 जननी निज हाथ चीर भूपन पहिराई ॥टेका॥
 कँचुकी अमृत्य वारि कुलही शिर कर सुधारि,
 स्वर्ण सूत्र रचित पचित मोती चहुँलाई ॥

गल मो डारि भुजा वारि कुलही सिर वर सुधारि
 यशुमति दुलारि हाथ फेरत हरखाई ।
 भूपन पहिराइ अंग दीन्हैवै करि वाल सँग
 निरखत नर नारि कृष्ण रूप की लोनाई ॥
 मुरली शुभ अधर लाइ कर म्रुचग वेणु पाइ
 श्रृंगी हित नाद कर धराइ गति बताई ।
 कुँडल छत्रि करण लोल नथुनी नासा अमोल
 कुँचित कच केस श्याम देरि मन लोभाई ॥
 पैजनी पद सुभ्र रेख मनसिज जनु अमित वेप
 कटि को सूत्र अति अनूप शोभा जनु धाई ।
 वनक छडी सुभ्र हाथ वाल वृंद कृष्ण साथ
 मनहु घन समूह तडित निरखत समुदाई ॥
 चलत मिलत घाल सँग निरखत अंग छवि अनँग
 मोहत नर नारि देरि चचल चवसाई ।
 कल कपोल देरि लोग ध्यान रसिक करत
 जोग नयन कमल चरने सीस भाल मन लगाई ॥
 गोपी गन गोप बाल रामसेवक सुख निहाल
 अर्थ धर्म काम मोक्ष कृष्ण देरि पाई ॥१५५॥
 राजित श्रीकृष्ण राम शोभा शत कोटि काम
 मेघ तडित सघन मनो इन्दु शत तमारी ।
 भूपन वर वसन वारि अंग प्रति सुरग सारि
 जंननी निज हाथ सीस केस बहु सवारी ॥टेका॥
 कचुक मन मोल लेत बेष्टन सिर सकल देत
 अर्थ धर्म काम मोक्ष लहत निरखि म्कारी ।
 पैजनी पद पनहिं देरि किंकरणी कटि मलक फेरि
 मनहु मीन फेनु सहित वाहन तन धारी ॥

कुडले भय रूप लोल बेसरि नक मधुर डोल
 मलकत जनु मीन विमल पाय मरित वारी ।
 चौतनी मिर ललित लाल केस मधुप लटक ब्याल
 निरखत नर नारि वदन लहत प्रेम भारी ॥
 मुरली शुचि अधर लाय कनक साटि कर लगाय
 फेरत चित चौरि लेत करत जन मुखारी ।
 देखत कल प्रीव हार चलत अमित सरित धार
 चारि नर समूह देह गेह सुधि बिसारी ॥
 कमल नयन तिलक भाल मुक्ता मणि मनहु जाल
 शोभा शत कोटि काम दायक फलचारी ।
 देखत नर नारि भूरि कोइ सनिकट कोइ दूरि
 पावत सुख अचल लोक शोक हरु मुखारी ॥
 गोपी गन गोप मात शोभित बहु सग घात
 यशुमति कर धारि गोद लीन्ह सुत दुलारी ।
 भक्ति नात अति अपार बस्य जाहि जग अधार
 रामसेवक रात्रि दिवस रूप हरि निहारी ॥१५६॥

रागिनी जैतिश्री

निति सिखवत शिशुहि दुलारी ।
 एह बछरा धेनु तुमारी ॥टेका॥
 जाइ दुहाइ दुध गृह ल्यावहु सग सग घर कर धारी ।
 थल थल बछरन बाँधु जानि निज रज्जु धरहु विधारी ॥
 दधि बर क्षीर खाहु रुचि माखन जनि कोइ कहँ देउ गारी ।
 धेनु अमित तव गृह बछरु बहु देखत रहहु मुखारी ॥
 पर गृह प्रविसत होत हृदय दुख दूरि करहु मज नारी ।
 गृह आँगन बछरन थल डोलहु देवहु नयन उचारी ॥

शिशु त्रिनोद बहु शिशुलेइ करु गृह बलि बलि जाय महँतारी ।
हरखित रहु दिन रयन चयन लहि सुत तव वदन निहारी ॥
यशुमति अस सिरा देत मानि सुत त्रिभुवन नाथ विसारी ।
सकल सुकृत फल रामसेवक लहु परसत चरन मुरारी ॥१५७॥
मुनि मातु वचन अनुसारो ।

हरि प्राकृत शिशु सम चारो ॥टेका॥

वद्धरन मग मग जात दुहावन कनक छडी कर धारी ।
वद्धरन की रज्जु गौवन जुत चिन्हि चिन्हि धरत सवारी ॥
दुहनी दुध धरावत निज गृह गोप बाल अनुहारी ।
देखि देखि आचरन कृष्ण कर हरखित बहु महँतारी ॥
तेल फुलेल रग बहु उपदन शिशु अगलाइ दुलारी ।
स्थन पान करावत प्रसुदित निज जानू बैठारी ॥
वदन निरखि कर केस सर्वाँरत श्रम हरि करत सुपारी ।
यशुमति सुरा सम अपर नहीं लहु ब्रह्मादिक त्रिपुरारी ॥
बाल त्रिनोद परम सुरा लहु निति ब्रजवासी नर नारी ।
यशुमति सुरा लहु रामसेवक बर जिमि भुवितल अधिकारी ॥१५८॥

रागिनी सोरठी

कीन्ह्यो हरि गवना री लडीली के भवनवाँ ।
वेगि नहिं होइ सखी कृष्ण को अवनवाँ ॥टेका॥
राधा रानी महारानी चतुरी सयानी ज्ञानी
रूप को निधान घर जानत जहनवाँ ।
कंरि को श्रृंगार घर हरि बैठाइ घर
दधिय खियाइ कर हरि लेइ मनवाँ ॥
दुरि नहिं कोइ ग्राम देखि परु सोइ धाम
हिलि मिलि किमि सखी करहु गवनवाँ ।

कुलपति लाज तजि किमि चलु गृह भजि

भिन भिन वृष्टि होत मास री सबनवों ॥

कोइ भाव ग्राम चली रीति प्रीति करि अली

उर होत राधा कन्या वृषभनवों ।

नद-वृषभान की मिताइ तिहुँ पुर छाडि

चलि पछताव सर्यो नहिं रही सनवों ॥

गोपी गन उर प्याम हरि पद जल आस

पथ चितवत मन गयन पयनवों ।

करत बिनोद रामसेवक के हरि गोद छन नहिं

त्याग चाह राधा जु खनवों ॥१५९॥

सुराधा के भवनवों मो हरि चलि जाई री ।

मूरली बजाइ रूप दरसी लौभाई री ॥टेका॥

राधा गृह हरि पाइ कर गहि बैठाइ

रीति तौ पुरानी प्रीति नड करवाई री ।

प्रथम मिलाय करि हँसि हँसि कर धरि

दधि दुध आगे आनी बिरा सुर्य पाई री ॥

करि सतकार सार धूप दीप व्यवहार

करि धिर ध्यान रूप उर बैठाई री ।

करि उर केलि रस भोग वर जोग बस

नयन उघारि देखु हरि मुसुकाई री ॥

देखि देखि लपटाइ प्रगट सो अग लाइ

राधा चहुँ ओर हरि रूप घर पाई री ।

ज्ञान दृष्टि उर देखु नयन प्रगट पेखु

हरि रूप राधा कवि एक ठहराई री ॥

गोपी गन राधा गुन कहत बिरह मन

हरि प्रीति लखि इत उत रटु छाई री ।

रूप तव अगम रामसेवक सुगम लहु
भक्ति नात वर हरि फल दरसाई री ॥१६०॥

राग केदारा

बन हरि वाता फेलि अघाय ।

जननि सुख दरसाय ॥टेका॥

भवन गोपिन गवन करु हरि प्रथम धेणु बजाय ।

मोहि गोपिन करत क्रीडा धारि कर लपटाय ॥

अग अग अनग करि हरि गोपी नर तिय बनाय ।

क्रीडत हरि शिशु रूप धरि बरसकल गृह गृह धाय ॥

होत बीडा कहत कथि उर कहै केहि विधि गाय ।

प्राकृत नर नहि करत अस कोइ करत उर सकुचाय ॥

ब्रह्म अज अखिलेश पूरण क्रीडत सकल गवाय ।

राधिका गृह गवन करु जय सुरति मन चित लाय ॥

अंग अंग प्रति सग क्रीडत देह सुधि बिसराय ।

ब्रह्म रस सुख रामसेवक राधिका वर पाय ॥१६१॥

हरि वर रूप लखि ब्रज नारि ।

उरसि राखु सवारि ॥टेका॥

क्रीडत बाल संग जब हरि कनक साटी धारि ।

फेरत लाठी काँध इत उत धेनु शिशुन दुलारि ॥

लेइ बद्धरन धेनु ढिग करु प्रेम करि चुचुकारि ।

लेइ दुध लिआइ बालन कीन्ह मातु सुखारि ॥

बहुरि बद्धरन छोरि निज कर देखि यमुना बारि ।

पिवत हरि जस पिवत बद्धरुमगन होय आयो द्वारि ॥

नारि नर ब्रज कृष्ण लीला कहत सुनत निहारि ।

बाल लीला रामसेवक अमृत सदश मुरारि ॥१६२॥

राग श्रो

हरि बद्धरन सग सग धाई ।
 करि गोप बाल अगुवाई ॥टेका॥
 नद यशुमति करि सबत वर गनक ते सुदिन धराई ।
 चरावन हित बद्धरा प्रेम जुत कृष्णहिं बहुत सिराई ॥
 कुल व्यवहार सुनाइ बाल सग करि निति नेम बताई ।
 जुन बेला गृह जान अवन की नंद जु मुदित बुझाई ॥
 सिकहर काँध धराइ दीन्ह शुचि विंजन सब जेहि ठाई ।
 रोटी धरि सिक्कर पर काँधे सग सुसग सोहाई ॥
 बद्धर चराइ लेइ गृह आये हरि नइ नेह बडाई ।
 यशुमति पद मर्दन बहु विधि करु बार बार उर लाई ॥
 गोपी गन गृह गृह सन धाइ जनु बहु दिवस पाई ।
 पान करत हरि रूप नयन पुट रामसेवक न अघाई ॥१६३॥
 हरि सिक्कर काँध सवारी ।

भोजन हित रोटी विंजन बहु सिकहर मध्य सुथारी ॥टेका॥
 गोवत्सन सग चलेउ बाल मिलि कनक छडी कर धारी ।
 चरावन हित धेनु बत्स हरि हरख लहत जनु भारी ॥
 प्राकृत शिशु सम खेलत बोलत डोलत सम बनचारी ।
 हरित घास चोंथि चोंथि निज कर हरिबद्धरन देत दुलारी ॥
 सिकहर खोलि खात बालन मिलि एक एक रोटी निहारी ।
 नौकि हमारि तुमारी नहीं निकि हँसि हँसि कहत पुकारी ॥
 चिखि चिपि विंजन सकल चिरपावत बाल बचन अनुसारी ।
 बत्स लेइ शिशु सग गृह आवत धाइ धरत महँतारी ॥
 मर्दन करि पद भोजन करावत धाइ मिलत ब्रज नारी ।
 प्राण गये लहि रामसेवक सुख तिमि लहु मिलत मुरारी १६४॥

राग टोडो

आये हरि गृह निज यद्धरा चराय के ।

सग बहु गोपाल सुख उपजाय के ॥टेका॥

नद नदरानी ज्ञानी सुन निज पहिचानी

उठि अकुलानी कर धरु हरस्वाय के ।

गोद बैठाइ मुग्य चुमि चुमि बलि जाइ

भोजन, कराइ उर गहु पुलकाय के ॥ ।

पद मर्दन करि पय श्रम शिशु हरि

अंग अंग उपटन बहु मिधि लाय के ।

बदन निहारी सारी केस बेवराई वागी

। , ब्रह्म रस सुख उर पुर रहु छाया के ॥

॥ बद्धरा चराइ आइ , गोपी गन सुनि धाइ

हरि रूप प्यास पान करत अघाय के ।

छन जुग सम जात हरि जन विलगात

। गोपी गन पछतात मन को पठाय के ॥

निरखि बदन हरि गोपी गन उर थरि

। , तनःगृह राखु मन हरि मो समाय के ।

मन तन लपटानी गोपी गन गुरु ज्ञानी

। राधा रानी महासानी किमि कहु गाय के ॥

बद्धरन संग जात वन दधि भात रात

। , गोप बाल हिलि मिलि पुनि जाय आय के ।

कृष्ण पद छोम रामसेवक उरसि लोभ

। , ब्रज नर नागी रूप रहत लोभाय के ॥१६५॥

चलैउ हरि बद्धरन संग सुख सारि के ।

मुरली बजाइ गोप बालन पुकारि के ॥टेका॥

काधे सिकहर करि रोटी छोटी मोटी धरि
 दधि भात माखन सु, बिजन सवारि के ।
 बछरन आगे करि शिशु मिलि तीर सरि
 बन रुण लखि बर बँत कर धारि के ॥
 चरन लगेउ बछा शिशु न तजेउ पछा
 खेलन लगेउ खेल सिक् भुत्रि डारि के ।
 एक एक साथ करि कर सन कर धरि
 हँसि हँसि भुवि गिरु आगे पीछे टारि के ॥
 कर गहि घुमि घुमि थिर होहिं दुमि दुमि
 हरख लहहिं भुवि गिरत पछारि के ।
 चलत जयहिं धाइ कोइ गहि लपटाइ
 कोइ दुरि जात कोइ धरु परचारि के ॥
 बाल सु विनोद करि भात राइ तट सरि
 गृह आउ हरि शिशु बछरा दुजारि के ।
 यशुमति सुत लहो गोद राखि दीन्ह दही
 कृष्ण सुत बनि सुख दीन्ह महँतारि के ॥
 गोपों गन कृष्ण लहु बार बार अस कहु
 तुम बिनु दीन जिमि मीन बिनु बारि के ।
 छन छन रीति रामसेवक बढत प्रीति
 ब्रज नर नारी नेह चरन सुरारि के ॥१६६॥

रागिनी सोरठी

राधा के भवन्वाँ मो, कीन्हो हरि गवना री ।
 कोइ बिधि बेगि नही होइ गृह अवना री ॥टेक॥
 करिके शृंगार बर मणि दीप, बारि घर ।
 रूप दरसाइ हरि लेत हरि मना री ।

धरन कमल घुनि मन रस वस गुनि
 भृग जनु डोलु बहु धोलु मनभना री ॥
 फनक मई घनाइ रेशम की डोरि लाइ
 माणि गन रधि पधि करु पलना री ।
 हरि पवँदाइ धाइ अँग अँग कर लाइ
 मुलत मुलाइ सँग सँग चलना री ॥
 मारन सु मिथी लाइ मिरा स्व कर सिआइ
 दधि ओष्ट लाइ फहि कहि ललना री ३
 पलना मुलाइ गाइ हरि जस मन लाइ
 ' प्रेम जुत उपटन अँग अँग मलना री ॥
 प्रेम वत्त ब्रज नारी उर पुर हरि धारी
 विरह बिवस अस मिलि भनना री ।
 ललिता लवँग रामसेवक करत सग
 राधा आगे हम सय का गनना री ॥१६७॥
 राधा गृह केलि हरि करु अँगना री ।
 विधि सन तप फल घर मँगना री ॥टेका॥
 हरि प्रिय होंहि मोहिं अस वर माँगु तोहि
 विधि हरि दीन्ह घर अचल न गबना री ।
 पूर्व बल तप राधा करत न कोइ धाधा
 धार धार जात हरि राधा जु के भवना री ॥
 तप बल अधिकार राधा करु शुभचार
 हँसि हँसि कर गहि ढिग वैठवना री ।
 बहुरी हरी उठाइ अँग प्रति अँग लाइ
 । कर । लेइ । निज अँग धरना री ॥
 मन भावै जोइ जोइ करवावै सोइ सोइ
 ' राधा वस अस हरि सय बरना री ।

पलना भुलाइ गाइ मुसुकाइ उर लाइ राधा ।
हरि लीला मन चित के भुलवना री ॥
कहत सुनत रामसेवक लहत श्याम
भक्ति ज्ञान थित उर मन करु पवना री ॥१६८॥

राग केदारा

हरि जस करत सुर मुनि गान ।
रूप बर करि ध्यान ॥टेका॥
ब्रह्म अज अद्वैत अनभव गम्य जोइ भगवान् ।
बाल लीला करत मोड हरि जगत हित कल्याण ॥
डिंभ लीला करत नर इव कहत सुनत सयान ।
होत पावन अधम नर भव परत नहि लहि ज्ञान ॥
गोप गोपी भाग्य बरतत वेद सकल पुरान ।
पिंगि कहि हँसि सुनत गारत कृष्ण हरत मला ॥
गोप बालन सग धावत करत बद्धरन प्रान ।
चौर कृत करि अनृत बोलत गोपिन अग लपटान ॥
कृष्ण कह अस कहत सुनत हँसत लहु निरवान ।
कहै गुन किमि रामसेवक कृष्ण मम धन प्रान ॥१६९॥
यशुमति सुदिन द्विजन सोधाय ।
कहेउ कृष्ण ते गाय ॥टेका॥
जाहु बालन सग अय सुत आउ गौब चराय ।
लेहु रोटी धारि मिन्हर देत माखन लाय ॥
सुनत जननी बचन बर हरि प्रकृत इव हरखाय ।
गोप बालन बोलि लीन्हो चल्हो बन सचुपाय ॥
अप्र करि बहु धेनु शिशु मिलि वेणु अँगि बजाय ।
हरित वृण महँ धेनु करि सब दीन्ह बहु पवँदाय ॥

धारि सिकहर भूम्य थल सब खेल खेलु अघाय ।
 बाल लीला कारि हिलि मिलि खाय खाय पुलकाय ॥
 वृष लखि सब धेनु निज निज चलेउ गृह समुदाय ।
 धेनुशाला रामसेवक धेनु करि गृह आय ॥१७०॥

राग श्री

हरि वेनु चरावन जाई ।

बहु गोपबाल सग लाई ॥टेका॥

आवत जात स्वप्नाम निकट हरि मुरली करि शब्द सुनाई ।
 गोपिन कर गत प्राण कृष्ण विनु एहि विधि नाथ जिवाई ॥
 गोपी गन सुनि शब्द मुरलि बर मन हरि साथ पठाई ।
 तन गृह राखु छपाइ नयन रचि सुनत बहुरि उठि धाई ॥
 जाइ निकट हरि रूप विलोकत एक टक रहत लोभाई ।
 जाहि अबहि नहि दूरि कतहुँ हरि कर गहि उर लपटाई ॥
 तन मन सकल कृष्ण गोपिन कर श्रुति बहु एक ममाई ।
 अपर चरित हित जात कृष्ण वन व्याज सुधेनु चराई ॥
 असुर बधन हित केलि करत वन जोइ शिशु सकल सोहाई ।
 कृष्ण चरित कहि रामसेवक सुनि फलि जन बहु सुर पाई ॥१७१॥

हरि गोपबाल अनुहारी ।

करु चरित सकल सुरकारी ॥टेका॥

गौव चरन जब लागु हरित वृन वृष्ण बाल मिलि ग्गारी ।
 सिकहर अब्र सहित सब धरि शिशु लाठी सकल भुवि पारी ॥
 हिलि मिलि श्रीडा लागु करन सन गोता काष्ट सवारी ।
 लेइ ताकुट भुवि तल शिशु मागत इत उत गोला टारी ॥
 हँमि हँसि गोला इत उत टारत गाडत बहुरि उगारी ।
 एही चरित, करि अपर कर्न प्रभु भुनि नहु रेता सारी ॥

छिपि छिपि आँट चिन्ह भुत्रि करु बहु पुनि खोजत सुविचारा ।
 अपर खेल खेलत विह्वल शिशु वका असुर हरि मारी ॥
 भोजन करि बिसय लहि सत्र शिशु भजन आइ विस्तारी ।
 वका असुर वध रामसेवक सुनि हरखित ब्रज नर नारी ॥१७२॥

राग टोडो

हरि वर चरित कहत बुध गार्ड के ।

भेन लोड वाल सग वन सु जाई के ॥टेका॥

धनु सत्र घाम चरु वाल मिलि केलि करु

भुत्रि भार हरु व्याज खेल मन लाई के ।

दुड फाट करि हरि इत उत कर धरि

म य एक चहुँ दिशि करेउ बुम्माई के ॥

मध्य मटँ धाल जोड धरत प्रचारि सोइ

वाप्ति इव शिशु छुइ चलत पराई के ।

इत सत्र धरि जात उत सब छुइ जात

जीति जोइ सोइ शिशु हँसत ठठाई के ॥

एक एक भुजा परि एक एक कर धरि

कोठा दुइ कारि तेहि शिशुन चढाई के ।

इत उत लेइ चरु चमर सो शिर फेर

हँनि हँसि हिलि मिलि चढु सग धाई के ॥

क्रीडा कोइ अस करु नेत्र निज कर धरु

कोइ सिर छुइ डिग रहत छपाई के ।

बुझि पर जोइ काइ काधि चढु शिशु सोइ

जहाँ की वदान तहाँ जाय थल आई के ॥

अस क्रीडा हरि करि भुत्रि भार वर हरि

अमित असुर नभि जस भुवि छाई के ।

गृह गृह आइ रामसेवक शिशुन गाइ
सुनि हरि जस जन रहु पुलकाइ के ॥१७३॥
हरि कर केलि शिशु सँग सुख सारि के ।
बद्धरन सग यन भुविभज टारि के ॥टेका॥
चिन्ह भुवि ग्याचि ग्याचि इत उतरग राचि
चहुँ फेर कोठा कारि गोटी बहु धारि के ।
यादी कछु ताइ लाइ हार जिति गाइ गाइ
हँसि हँसि लेत शिशु शिशु बैठारि के ॥
एक चिन्ह लवा करि बगल सु दुइ धरि
कोठा बिच त्रिच गढी लघुई टि वारि के ।
एक पद उर्द्ध कारि एक पद सिल टारि
चिन्ह डाकि डाकि चलु पद सन मारि के ॥
अस केलि देखि देखि असुरन ईश पेरि
छपि छपि रूप आयो शिशुन निहारि के ।
बद्धरन भुख करि शिशुन समेटि धरि
हरि अघा बका मार बदन विदारि के ॥
कस दूत मजवूत कृष्ण खेल अन्भूत
देव मुनि देखि कर बिनय पुकारि के ।
शिशु सुख सब लहु आइ गृह गृह कहु
सुनि नर नारी शिशु राखत दुलारि के ॥
सुख तिहुँ लोक लहु कस सुनि दुख सहु
सुख बहु देत हरि ब्रज नर नारि के ।
भक्ति ज्ञान कहि रामसेवक सुनत लहि
बाल केलि सुख प्रद परम मुरारि के ॥१७४॥

रागिनी धनाश्री

हरि अघा बका रिपु मारी ।

कियो लोक समस्त सुग्यारी ॥टेका॥

सुर मुनि निकट आइ स्तुति करु जैति जैति धुनि धारी ।

निज निज दुख कहि भवन चलेउ सुर रूप अनूप निहारी ॥

सुनि अचरज ब्रज नारि लहत नर विस्मय लहु महँतारी ।

जो शिशु बदन लोक त्रय देउ कोइ समय गरुव पुकारी ॥

नहि निश्वास ब्रह्म हरि आरत सुत ध्रुव मानि प्रिसारी ।

हरि क्रीडा हित ज्ञान देत मुत जेहि सुर लहु ब्रज नारी ॥

मृतिका हाल बहुरि अब भारत शिशु गरुवाइ बिचारी ।

गोद लीन्ह यशुमति सुत लखि निज क्षीर पिआवत गारी ॥

गरुव भयो हरि शत परवत सम भार न सहु भुवि डारी ।

असुर बधन हित गमसेवक जस कयहुँ न कहु सुत भारी ॥१७५॥

हरि रूप अगम सुप्रिसारी ।

सुन बुद्धि लहत महँतारी ॥टेका॥

मृतिका जय हरि स्थायो शिशु मिलि प्राकृत शिशु अनुहागी ।

सकल बाल मिलि कहु जननी सन जेहि मारै नेइ गारी ॥

हँसन हेतु शिशु पुनि पुनि भारत मृतिका सुर बहु धारी ।

सुनत यशोमति छडिय लेइ कर त्रास देखावत भारी ॥

मारु मारु कहि लीन्ह गोद सुत करि गहि भुवि बैठारी ।

भारव तोहि रज्जु गहि पाँवव किमि मृतिका सुर डारी ॥

शिशुन कहनि पतियात कयहुँ नहिँ हलधर कहु एहि पारी ।

तव भ्राता बलदेव सत्य कहु तेहि ते तोहि अर मारी ॥

सुसुकि सुसुकि हरि कहत जननि सन मिथ्या सकल पुकारी ।

गुर देखहु बहु रामसेवक मम देखु जगत ओजियारी ॥१७६॥

राग टोढी

शिशु मुग्ध यशुमति देखत त्रिचारि के ।

फर निज लाइ नहिं मृतिपा तनिक पाड

त्रिभय लहु सुत बदन निहारि के ॥टेका॥

तीहें लोक जीव देखि देव मुनि पितृ पेखि

वरुण कुबेर यम भूत गन म्कारि के ।

अनल पवन लेगु रूप रवि शशि देखु

दस दिगपाल पच लोकपाल धारि के ॥

सुर नारी आदि सतिसकल त्रिलोकि गति

सुरपाल अज रूप लखु त्रिपुरारि के ।

यत परयत देखु नदी नार सिंधु पेखु

त्रयलोक रूप देखि भुवि नर नारि के ॥

देखि ब्रह्मांड भोंड सात दीप नय राँड

माया परचड दड नयन उधारि के ।

देखि देखि उर त्रास जीवनकी नहिं आस

अपित सुगात सुत हित थिर थारि के ॥

हरि माया हरि लीन्ह सुत हित ज्ञान दीन्ह

दुरा अति देखि सुरजी करु महँतारि के ।

सौर नीधि तोर देवा जन्म हेतु कर सेवा

गर्भ काल निनय बहु करत दुलारि के ॥

बाल बछ अज हरु इन्द्र रिसि वृष्टि करु

पूर्व रीति प्रीति ब्रह्म सुरति बिसारि के ।

परम अगम रामसेवक सुगम लगु

माया ओट आपु हरि देतजब टारि के ॥१७७॥

हरि गति कोइ बिधि नहिं कहि जाई री ।

बार बार मातु दिग जाइ मचलाई री ॥टेका॥

जोग करि लहि द्धान मुनि कोइ लहु ध्यान
 ब्रह्म अज अगुण न सगुन जनाई री ।
 अगम निगम मम कबहीं नहीं सुगम
 सोइ बाल मिलि हरि करु लरिकारै री ॥
 कोइ बाल बछा बनि कोइ छाग बृक घनि
 कोइ चोर साहु होय बुझत बुझाई री ।
 अगुली न भात लेत खात स्व रियाइ दंत
 एक छुइ धलु एक कर धरु धाई री ॥
 दधि घृत करु चोरी गृह गृह भाँड फोरी
 अनृत कहत गोपी अग लपटाई री ॥
 तरु पद गहि गहि लटकि भटकि कहि
 पटकि पटकि भुवि करत मुठारै री ॥
 भरकट इव इत उत ताकत जीव
 गृहपाल देखि चलु चिहँकि पराई री ।
 अज इन्द्र जिमि यशुमति भूलु तिमि
 जब हरि नर बनु अखिल गवाई री ॥
 हरि वर करु लीला तिहँ पुर दानशीला
 भुवि भार हरु खल असुर नसाई री ॥
 ब्रह्म अज केलि रामसेवक जगत रेल
 कहि सुनि नर नारी हरि पद पाई री ॥१७८॥

राग केदारा

हरि कर चरित किमि कहु गाय ।
 जाकर नहिं कोइ आदि पावत अत नाहिं जनाय ॥टेक ॥
 बाल लीला करत नर इव कहत कत्रि सकुचाय ।
 ब्रह्म अज अद्वैत अनभव गम्य किमि दरमाय ॥

भक्त हित अवतार बहु हरि मोपि नहि असराय ।
 कृष्ण लीला देखि सुर मुनि पिवत नयन अघाय ॥
 भूलि जात नहि लगत हरि तन माया रहु उर छाया ।
 देव जहँ भुलि लगत नहि मातु नहि पछताय ॥
 मातु निज सुत मानि ताजत पूरुं दृष्टि भुलाय ।
 देव भूलत नर न अस करु करत उरसि लजाय ॥
 कृष्ण लीला अगम दुस्तर मोरि मति न समाय ।
 ग्राहि ग्राहि कलि रामसेवक सरा तन हरि आय ॥१७९॥
 हरि जस कहत बुध श्रुति गाय ।

कृष्ण पद सिर नाय ॥टेका॥

बाल लीला करत शिशु मिलि धाय गृह हरि आय ।
 छुवा अति मोहिं लागु जननी देहु चीर पियाय ॥
 मथन दधि नहि देव तोहि अब धारि कर मचलाय ।
 चीर दीन्ह सुत देर लखि बहु गोद निज बैठाय ॥
 पिवत स्नान धारि कर हरि उदर नहि अघाय ।
 वृष नहि सुत कार्य हित कोइ गड गृह मो धाय ॥
 क्रोध करि हरि अपर गृह गत भाँड लगु बहुताय ।
 फोरि लकुटन चीर दधि घृत दीन्ह धरणि बहाय ॥
 देखि सिकहर चढि उल्लसल भाँड फोरि गिराय ।
 चीर दधि घृत रामसेवक खात शिशुन लुटाय ॥१८०॥
 हरि को चरित किमि कहि जाय ।

कहत कछु सकुचाय ॥टेका॥

फोरि सपड खात दधि घृत भुम्य जोइ ढरकाय ।
 बाल बहु मिलि दधि खात चितवत प्राइ जाइ नमाय ॥
 मनहु मरकट ताकि इत उत शीघ्र मुख धरि खाय ।
 शीघ्र शीघ्र कर मेलु नधि मुख चाटु जीभि लगाय ॥

चौर इव उर डरत पीवत हउल बहु मुख लाय ।
 बाल लीला करत अस हरि जुक्ति अमित बनाय ॥
 छुधा नहिं कोइ प्यास हरि उर त्रास नहि कोइ आय ।
 भोग जेहि त्रय लोक पूरण जाहि सकल डेराय ॥
 भक्ति नाता मानि हरि वर केलि नर दरसाय ।
 लहत सुर्य बहु रामसेवक कृष्ण दरसन पाय ॥१८१॥
 कहु कवि कृष्ण लीला गाय ।
 वेद बुध समुदाय ॥टेक॥
 चौर पीवत त्यागि जननी गइ कार्य कोइ पाय ।
 जानि पुत्र अतृप्त कृत करि धाइ सोइ थल आय ॥
 देखु नहि थल खोजु गृह बहु कृष्ण जहँ तहँ जाय ।
 भाँड दधि घृत चौर जुत सब फोरि भुवि ढरकाय ॥
 रात शिशु मिलि चपल चितरत देगु क्रोध बढाय ।
 देखि जननी त्रास उर गहि चलेउ कृष्ण पराय ॥
 कनक साटी लेइ जननी चली सग सग धाय ।
 जोगि जन कोइ ध्यान मो लहु धरति यशुमति माय ॥
 अमित लरि धरवाउ निज कर आपु हरि प्रगटाय ।
 भक्ति तरु फल रामसेवक प्रगट नज दरसाय ॥१८२॥

राग श्री

हरिभक्ति परम सुखदाई ।
 कहु वेद सेस बुध गाई ॥टेक॥
 जोगी जन करु जतन विविधि त्रिधि
 ध्यान मो कोइ गहि पाई ।
 त्रास हेतु यशुमति सुत लरि निज
 मारव कहि सग धाई ॥

थकित मातु लगि भक्त जानि निज
 हरि त्रियो आपु घराई ।
 सुसुकि सुसुकि रोदत नहि बोलत
 कर गहि प्रास देसाई ॥
 बाँधन हित रज्जु बहु जोरत
 आँटत नहि पछताई ।
 देखि श्रमित जननी बहु व्याकुल
 आपुने दीन्ह अँटाई ॥
 रिसि बस करखि करसि कर रज्जु
 जानु चरन उर लाई ।
 दाम उदर लखि हँसत सकल शिशु
 कर घर ताल बजाई ॥
 कृष्ण गुनत जमलाज्जुन की गति
 भक्त विनोद सोहाई ।
 बाँधन नहि कोइ रामसेवक हरि
 एह हरि भक्त बडाई ॥१८३॥

हरि दाम उदर निज धारी ।

दामोदर निज नाम रूढ करु भक्त सुजस करु भारी ॥टे॥
 धनेश्वर सुत नल कूबर वर सोइ गति उरसि विचारी ।
 नारद मापदीन्ह धन मद लखि छौं मो नगन निहारी ॥
 मापानुग्रह कीन्ह महा मुनि मम अस परस सवारी ।
 जमलाज्जुन सोइ भयेउ महा जड तरु अत्र देव उखारी ॥
 नल कूबर कहें देव मेहा सुख मत वचन अनुमारी ।
 उल्लसल मम उदर दाम वर माता सुभग सवारी ॥
 त्रिजग होय अस परस मध्य करु तरु सोइ बेगि उपारी ।
 शिशुन के चरिा देसाइ देत्र छन नल कूबर कहें तारी ॥

व्यग्र होय माता कोई गृह कृत तव शिशु देव दुलारी ।
कृष्ण सरण गहु रामसक अथ लखि जुग जुग उपकारी ॥१८४॥

राग केदारा

हरि कहँ बाँधु बधन लाय ।
छर्डीय त्रास देसाय ॥टेक॥।
करहुगे अस कर्म कबहा मारि तोहि अघाय ।
पद उल्लखल बाधि यशुमति कहत सुतहि चुम्माय ॥
त्रसित चितवन मनहु नर शिशु मारु नहि अब माय ।
त्रसित जनु हरि बैठु निरभय नयन जल ढरकाय ॥
बदन भुपि ओरमाय सुसुकत बह्य सुरनि गणाय ।
आँट जाय किमि मानु तजि मोहि जाव दव सहाय ॥
कार्य हित कोई शीघ्र यशुमति गई गृह मो धाय ।
घुसुकि चलु हरि जन्त सुत हित घाल कर स्व वजाय ॥
त्रिजग तन करि मध्य चलि हरि दीन्ह तरु बिलगाय ।
रूप दुइ बर राममेवक प्रगटि थल दरसाय ॥१८५॥
हरि जस कहत श्रुति बुध गाय ।
दीन दुरिय सहाय ॥टेक॥।
दाम उदर लगाइ पर हित पाव सहित वैधाय ।
सँग चलु बहु गोप बालक हँसत कर स्व वजाय ॥
व्यंग्य बोलत घेरि चहुँ दिसि खोदि चलत पराय ।
लध्रा कहँ भल बाधु जननि सुभग रज्जु लाय ॥
सहत प्रमुदित वचन शिशु हरि बधन उर सुख छाया ।
दीन बधु नहिँ कृष्ण सम कोई सहत तरु ढिग आया ॥
त्रिजग करि तन बर उल्लखल मध्य तरु प्रगटाय ।
बृत्त इत उत कारि भुवितल , दीन्ह साप छुडाय ॥

रूप दुइ धर देखि सुदर सकुचि बालक ठाय ।
रूप हरि लखि रामसेवक जहसुत सुख पाय ॥१८६॥

राग कल्याण

नौमि इन्दिरापति सत्ता गति जनार्दन ।
सुराकर सुसागर कुपाप शाप मारन ॥टिका॥
नमामि त्वा जगतपति सनातन सुसद्गति
निरामप निरजन निरीह पाप भजन ।
नृलेप शास्वत अज कृत नृवेदन गज
अनत विग्रह धृत सुरारि वृद्ध गजन ॥
अनादि निर्गुण पर नमामि इन्दीरार
गजेन्द्र मोचन कृत समस्त दोष नासन ।
कृत सुसत रजन सुग्राह दुर्ष भजन
पवित्र नाम ते धर हरि नृशंस शासन ॥
उद्भव स्थिति लय धृत सुविग्रह चय
निर्गुण गुणा अगार देव सत रजन ।
कार्य कारण पर अज हरि शिव धर
नृलेप एक विग्रहे सुगंध रहित अजन ॥
नमामि आदि कारण कृत सरूपधारण
मत्त कत्त तुरग क्रोड नरहरि सुवावन ।
विप्र वस वज हस परशुराम देव अश
दुष्ट धर अरिष्ट कीन्ह दैत्य दावन ॥
राम रूप त्वा धृत विचित्र सग्रह कृत
रूप चरित नाम राम मुनिन भावन ।
रावणादि दुष्ट मारि सकल धरणि भारहारि
संतत त्रिशाम दीन्ह चरित पावन ॥

नारद मुनि साप दीन्ह कृपानाथ परम कीन्ह
दरस परस गात कीन्ह कृष्ण घदन ।
जन्त तनय विनय करत रूप कृष्ण उरसि धरत
रामसेवक शांति कांति त्रिसम्पन्न चदन ॥१८७॥
जैति जैति जय कृपाल जैति जगत नायक ।
महिमा अपार वेद पार नहीं पायक ॥टेका॥
जयति कृष्ण अति उदार रणसकल धरणि भार
लीला अवतार दनुज मनुज लायक ।
बाल चरित करत नाथ बाल वृद्ध चलत साथ
मात कृत हास्य सहत बचन सायक ॥
जयति धृत ऊल्लसल सुदाम उदर कोमल
आरत जन जानि मोहि निकट आयक ।
पाप ताप साप ह धृत सुख विग्रह
कृत सु पावन वपु अडोल ध्यान धायक ॥
जयति दाम उदर नाम रुढ कीन्ह जगत काम
जड सरूप तारि दीन्ह भाव भायक ।
स्तुति बर जन्त कीन्ह ज्ञान भक्ति कृष्ण दीन्ह
भवन गवन कीन्ह सगप राय गायक ॥
जयति जयति गाइ गाइ चरन सीस नाइ नाइ
निदा कृष्ण कीन्ह रूप निज देखायक ।
बाल चरित हरत पीर रामसेवक कहत धीर
अर्थ धर्म काम मोक्ष सकल दायक ॥१८८॥

राग टोडी

हरि भुवि भार हरु नर दरसाय के ।

ब्रह्म अनवद्य अज अखिल गनाय के ॥टेका॥

मातु वर त्रास मानी उर मुर काज जानी

बाल बृद चल्दु सग दाम उर लाय के ॥

देव ऋषि साप जानी जत्त सुत पहिचानी

तरु पिच जाड उत पाटु विलगाय के ॥

रूप स्व देखाइ नल कूबर को सुखदाड

दाम स्व उदर गोप बालन देखाय के ।

विनय सु यत्त कीन्ह ज्ञान भक्ति कृष्ण दीन्ह

गृह गत दोड निज रूप घर पाय के ॥

शब्द परचड सुनि गोप गन मन गुनि

किमि उतपात ब्रज भयो अस आय के ।

सुनु तरु वर गति हरि दीन्ह असमति

ब्रज जन गृह तजि आयो सब धाय के ॥

वृत्त मिलगान देखि कृष्ण तेहि मध्य पेरि

बाल चहुँ ओर ठाढ रहु मुरुमाय के ।

नद सुत गोद लेइ दाम उर छोरि देइ

टारि को ऊल्लसल स्व वैठु कठाय के ॥

विप्र बोलि दान दीन्ह साधु सनमान कीन्ह

सुत प्राण लहु जनु रतन लुटाय के ।

वदन निहारि रामसेवक सुप्रेम वारि

चलत नयन उर पुर पुलकाय के ॥१८९॥

ब्रज जन ठाढ हरि वदन निहारि के ।

जीवन धन हरि गोप गोपनारि के ॥टेका॥

तरु वर देखि देखि शिशु तन पेरि पेरि

सब पछतात जिमि मीन विनु वारि के ।

पवन प्रचड नहीं जल बृष्टि नहीं कहीं

कवन अग्नि वर गयो तरु फारि के ।

कीन्ह तव सहाइ आइ पूजा लहि सेवकाइ
 हरि रक्षा करु तरु मध्य तन धारि के ॥
 देखि बिकलाइ धाइ शिशु मिलि सत्र गाइ
 कृष्ण मध्य जाइ हरखाइ तरु टारि के ।
 कोइ नहीं पतिआइ हरि जस शिशु गाइ
 देव रूप दुइ गयेउ कृष्ण को दुलारि के ॥
 गोप उत्पत्त जानी कृष्ण के अरभ मानी
 कह सत्र नद सन वचन विचारि के ॥
 बहु उत्पत्त आइ एहि पुर रहु छाइ
 वसत भलाइ नहीं कहत पुकारि के ।
 सुनि सुनि गोप धानी सुत हित नदरानी,
 चलु धन आन सुत सकट सवारि के ॥
 सुत बध हित लाइ अमित अरिष्ट आइ
 हरि रक्षा कीन्ह पुतनादि रिपु मारि के ।
 कृष्ण रुचि काम रामसेवक वसत प्राम
 रीति प्रीति वर हरि करु सुख सारि के ॥१९०॥

राग श्री

हरि रुचि पुर पुर अनुसारी ।

करु गोप गोपी गन मारी ॥टेका॥

जमलाज्जुन सन कृष्ण बचेउ जब मिलि सब गोप विचारी ।
 चलहु जहाँ धन होइ सघन अति दृण तरु की अधिकारी ॥
 गौ बछरा सुप्त लहँहि जहाँ मम शिशु सब रहँही सुगारी ।
 बृदाबन सत्रत मिलि करु सन गोवर्द्धन लगि भारी ॥
 सब ऋतु सब सुख लहँहि धेनु शिशु तट यमुना शुभ बारी ।
 वैश्यन के धन धेनु जानु जग शिशु सुग्य लहु नर नारी ॥

चृण तरु सघन आद्रि वन सुदर हम सत्र कहँ सुख वारी ।
हरयित सकल गोप गोपी गन शिशु मन बोलु दुलारी ॥
शिशुन चढाय दीन्ह सकटन पर रस गोरम बहु धारी ।
प्रमुन्ति जन बहु रामसेवक उर पाहत सरन मुरारी ॥१९१॥
लेखि वृन्दावन सुखदाई ।

चलु गोप गोपी हरसाई ॥टेक॥

अन्न क्षीर दधि घृत भाँडन करि सकटन अमित धराई ।
गोप गोपी गन चढि गावत चलु गोरथ शिशुन चढाई ॥
स्वस्ति पठत द्विज भूरि सग चल शुभ हित शख बजाई ।
नद यशोदा सग रोहिणी दोउ सुत रथ बैठाई ॥
राम कृष्ण हित कुशल यशोदा बहु विधि रत्न लुटाई ।
निरखत चलु हरि रूप मुदित मन कृष्ण विसद जस गाई ॥
यमुना उतरि गयो वृँदानन प्रविसत सुख चर पाई ।
नद जथा विधि सकल गोप कहँ प्रमुदित तुरित बसाई ॥
नद भवन करि बसेउ वृँदानन तिहुँ पुर सुख रहु छाई ।
सकल सुकृत फल रामसेवक लहु कृष्ण चरन मन लाई ॥१९२॥

राग केदारा

प्रमुदित गोप गोपी आय ।

देखि वन हरसाय ॥टेक॥

निकट यमुना घाट सुदर श्याम जल दरसाय ।
सघन वन चृण हरित अतिबहु लता जाल सोहाय ॥
मोर कीर चकोर गुँजत कुँज बहु छवि छाया ।
अद्रि शोभा कहत भति गति रहत कधि सकुचाय ॥
मनहु करि श्रृंगार रतिपति सपन जुत प्रगटाय ।
चारि रानि जत जीव त्रय पुर राखु वनहि तोभाय ॥

पाइ बूँदावन अनदित गोप गन समुदाय ।
धेनु बछरा बाल सुख लखि वसेउ इष्ट मनाय ॥
नदसुत आनद कर बर निरखि सुख उर पाय ।
रहत प्रमुदित रामसेवक नेह हरिपद लाय ॥१९३॥

राग श्री

हरि बूँदावन जन आई ।

शोभा वन दरसाई ॥टेका॥

बूँदावन रमणीय केलि थल चहुँ जुग हरि रहु छाई ।
सकल निभव बूँदावन कर हरि सुदरता सुखदाई ॥
गोप गोपिन कहँ प्रगट देखावत वसु वन एहि हरखाई ।
वन बूँदावन सम न कोइ सुर शोभा बर अधिकाई ॥
अस अललित कीन्ह ब्रज भुवि हरि जेहि तिहुँ पुर ललचाई ।
अस वन बृगसित करि हरि अपुना गोप गोपिन को लोभाई ॥
हरित घाम लखि गोप अनदित चरु मम धेनु अघाई ।
बालन कहँ सुख होइ इहाँ बहु अस कहु लोग लोगाई ॥
कृष्ण केलि भुवि जन उर भावत जेहि मुर मुनि मिर नाई ।
भुवि महिमा किमि रामसेवक कहु निरखि अधम गति पाई ॥१९४॥

राग टोडी

कृष्ण रस केलि करु बूँदावन आय के ।

गोप बाल सग गोपी गृह गृह जाय के ॥टेका॥

गोकुल सो लीला कीन्ह ब्रज जन सुख दीन्ह

कलि जन हित बहु तिरथ बनाय के ।

खण सुरेती करि गोपी कुप नाम धरि

केलि भुवि बाल कूप जल स्वपियाय के ॥

कौन्हे गद्गाएड घाट चिंता की हरन बाट

। यमुना के तट मातु सुख दरसाय के।
दरसि परसि हरि मजन करत सरि

। हरि निज धाम देत कहु बुध गाय के॥
कलि कल्मष नास रात्रि एक करु वास

हरि रूप मिलु अघ अवगुण मेटाय के।
गोकुल को ग्राम धाम गृह बसि लेत नाम

पाप पुज नास होत सुख रहु छाया के ॥
कलि हित करि कार हरि हरु भुवि भार

॥ गोकुल ते बृंदावन आये हरखाय केध
बृंदावन रसखानी करु हरि सुखदानी

। भक्त लहु ज्ञान रहु मुरुर भुलाय के ॥
बृंदावन सुख छाइ बृत्त कल्प प्रगटाइ

। रूप दरसाइ जन रखत लोभाय के ॥
बृंदावन जीव रामसेवक लहेउ शिव

। गोपी गन गोप सुख लहु हरि पाय के ॥१९५॥
लीला करु बृंदावन हरि सुख वारि के ।

॥ सुर नर मुनि हित भार भुवि टारि के ॥टेक॥

बन बृगसित करि जल निरमल सरि
पुष्प बहु भाति थरि भ्रमर दुलारि के ।

मृग पत्नी करु बहु राम कृष्ण कृष्ण कहु
मुनि मन हरि लेत नाद सु पुकारि के ॥

कुज करि लसा जाल सुरती मितान माल,
। सुखप्रद सब काल ब्रज नर नारि के ।

अस बृंदावन करि सुख थल थरि थरि
॥ मोहु ब्रज नारी नर रूप बर धारि के ॥

कुज बुज ओट करु रस सुखप्रद घर
 लहत अमृत ज्ञान नयन उधारि के ॥
 मुरली बजाइ गाइ कुज कुज आइ आइ
 करत बिहार सुनिहारी सुख सारि के ॥
 मोहन स्वनाम कारी मोह तिहुँ लोक डारी
 जीव सब टेरि लेत खल गन मारि के ।
 गोपी गन गोप आइ सुर मुनि ध्यान लाइ
 सुर सब पाइ हरि वदन निहारि के ॥
 नाम सुरंगीले कहि सुगम छबीले गहि
 मुरली मनोहर कहत सुबिचारि के ।
 अर्थ धर्म काम रामसेवक को देत श्याम
 मोक्ष वर देत भव-सिंधु स्व उतारि के ॥१९६॥

राग केदारा

हरि वर रूप ब्रज दरसाय ।

करत देव सहाय ॥टेक॥

कीन्ह बृंदावन सोहावन सकल सुर प्रगटाय ॥
 नाम मोहन रूढ़ करु जग मोहि जन समुदाय ॥
 सकल जीव की बोल समुझनि एक शब्द मो लाय ।
 बोलि लेत तेहि मोहि निज दिग अधर वेणु बजाय ॥
 सिंधिल चर सुनि होत जल जुत अचर उर पुलकाय ।
 गोप गोपी सुनत रव वर आइ नेह जनाय ॥
 देव मुनि सुनि ध्यान करु उर पाइ हरि हरसाय ।
 असुर गन खल चोर सुनत सकुचि रहू डर पाय ॥
 मोहन मुरली शब्द सुनि शिशु रहत हरि दिग आय ।
 वेणु रव अस रामसेवक कहत बुध श्रुति गाय ॥१९७॥

क्रीडत कृष्ण, नर अनुहारि ।

भार वर भुवि टारि ॥टेका॥

जात बृदावन चरावन धेनु शिशु सुखसारि ।

खेलत खेल अडोल जग हित लीकि कलि वर डारि ॥

खेल सिद्धि प्रसद्धि कलि भयो जानु सत्र नर नारि ।

कृष्ण बादी लाइ खेलत हारि जीति प्रचारि ॥

गाल पथर कारि सुदर एक भुवि कोइ धारि ।

कर अँगुष्ट भुवि परसि निरखत मध्य अँगुलि वारि ॥

हँसत साधत दृष्टि करि वर गोलि एक एक मारि ।

त्यागि अस खेलवार सोइ छन सकल शिशुन दुलारि ॥

बृह फल बहु तोरि शिशु मिलि पिवत रस सोइ गारि ।

॥ अमृत रस वर रामसेवक पिवत कृष्ण पुकारि ॥१९८॥

राग श्री

हरि बृदावन सुखसारी ।

कारि केलि भार भुवि हारी ॥टेका॥

मुरली बजाइ सुनाइ गोपिन कहँ शिशु गन लीन्ह पुकार ।

धेनु अप्र, करि चलेउ बृदावन बालन बहुत दुलारी ॥

सिकहर काँध कारि रोटी दधि लकुट काँध कर धारी ।

धेनु हरित कृष्ण लागि चरन जब कृष्ण गोप शिशु म्भारी ॥

सिकहर लकुट सहित कवल भुवि दीन्ह सकल शिशु डारी ।

क्रीडा करन लगे शिशु हिलि मिलि कहिन जात सुख भारी ॥

पुष्प अमित गुँजा वन लहि बहु निज निज आसन डारी ।

पत्र लेइ सिर मुकुट बनानत गहि सिर छत्र सुगारी ॥

गुँजा वर कान भूपण कर अँग अँग पुष्प सगारी ।

व्यंजन चमर सु रामसेवक गहि फेरत मीस मुरारी ॥१९९॥

हरि बृंदावन छपि छाई ।

करि बाल केलि सुखदाई ॥टेक॥

करि श्रृंगार पुष्प माला गल सीस सु मुकुट बनाई ।

भूपन बसन पुष्प पत्रन करि कोइ बलकल अंग लाई ॥

व्यंजन चमर डोलावत इत उत छाता सीम धराई ।

कोइ राजा कोइ धाबु बनत शिशु कोइ मत्री दरसाई ॥

सैन्य अमित जूस्यप जुत नायक कोट स्व ओट लगाई ।

विजय प्रदेश करत चहुँ किरि बन मारि असुर थल आई ॥

न्याव करत फिरियादि कोइ बहु राजा देत सजाई ।

कोइ कहँ दड न देत नृपति कछु तुरितहि देत छुड़ाई ॥

एहि विधि शिशु तांला हरि कर बहु कस को दूत गवाई ।

कृष्ण चरित सुनि रामसेवक जन सकल लोक सुख पाई ॥२००॥

हरि बृंदावन महँ जाई ।

करु लीला अगम सोहाई ॥टेक॥

लकुट बीच पद इत उत करि भुवि चढि चढि शिशु हरसाई ।

अथ निपुन निज कहत कुटावत हँसि हँसि बन दवराई ॥

कोइ छन युध्य करतहिलि मिलि शिशु करभुज ताल बजाई ।

सीस सीस धरि कर कर करगहि इत उत बहु भरमाई ॥

भुजा मरोरि ऋपटि कर पकडत लडत अंग लपटाई ।

पद गहि पद भुवि इत उत टारत जानु मो जानु लगाई ॥

गिरत कोइ भुवि लडत बहुरि उठि वैठि लडत कोइ घाई ।

पडित कोइ शिशु युध्य सिरावत देखत अमित लडाई ॥

एहि विधि कस दूत हरि मारत खेलत ओट लुकाई ।

कृष्ण चरित सुनि रामसेवक अस ब्रज जन बहु सुख पाई ॥२०१॥

हरि सुर नर मुनि हितकारी ।

करि केलि असुर गन मारी ॥टेक॥

नर इव चरित कारि वृदानन सकल भार भुवि हारी ।
 मुरली बजाइ सुनाइ शब्द धर त्रयपुर कीन्ह सुखारी ॥
 धेनु चरत वृण हरित मुदित मन क्रीडत शिशु मिलि म्कारी ।
 भुम्य कछुक उन्नत करि कर सन अम्र स्व खोदि सवारी ॥
 दूरि जाइ कछु पृथक पृथक शिशु धाइ धाइ करि पारी ।
 डौकत कहत दूरि हम आये नापत हाथ पसारी ॥
 धाइ धाइ पुनि पुनि भुवि डौकत एक सो एक प्रचारी ।
 डौकत उर्द्ध उठाइ कोइ कर वख लकुट वृण धारी ॥
 अस क्रीडा बिहल शिशु लखु नहिं बधु हरि असुर पधारी ।
 लहत महत सुख रामसेवक सुनि महिमा अगम मुरारी ॥२०२॥

राग टोडी

हरि धर चरित अगम त्रिपुरारि के ।

सुगम भयेउ सोइ ब्रज नर नारि के ॥टेके॥

मुरली अवर लाइ रस प्रद स्वर गाइ

वन चलु शिशु लेइ ब्रज सुख सारि के ।

वृण वन धेनु चरु शिशु मिलि लीला कर

वन छपि छपि छन हँसि सुख वारि के ॥

अपर सु खेल लाइ शिशुन स्व कहि गाइ

भुवि थल बैठु मिलि वृण मृदु डारि के ।

कोइ शिशु गृहपाल कोइ बृक छाग जाल

एक एक लेइ चलु बृक तन धारि के ॥

अस खेल हरि देखि असुर सुर लेखि

बृक वनि सब शिशु हरेउ प्रचारि के ।

एक दुइ शेष रहु कृष्ण बलदेव कहु

शिशु थोट काढि गति दीन्ह खल मारि के ॥

शिशु सय खल देखि हरि गुण बर पेखि -

गृह गृह आई कहु सकल पुकारि के ।

विसमय लहि लहि हरि जस कहि कहि

शिशु गोद लेइ मुख चुमत दुलारि के ॥

कृष्ण जस गाइ गाइ ब्रज जन सुख पाइ

ज्ञान भक्ति दृढ लहु बदन निहारि के ।

कृष्ण बर ध्यान रामसेवक लहत ज्ञान

हरि निनु तोहि भव उदधि उतारि के ॥२०३॥

हरि बर केलि शिशु करत लोभाय के ।

सुर मुनि हेतु बूढ़ावन छवि छाप के ॥टेका॥

सुरली सुरस गाइ सुख ब्रज उपजाइ

॥ बाल बूढ़ सग करि बूढ़ावन जाय के ।

लीला बहु भाति करि खल बध चित धरि

कोइ गृहपाल कोइ चौर बनाय के ॥

कंस दूत बर आई शिशुन मो मिलु धाइ

॥ चोरि चोरि शिशु ओट धरत छपाय के ।

प्रयल चऊर बनु हरि कहँ शिशु गनु

हरि बध हित बन रहत लुकाय के ॥

हरि तेहि पहिचानी कस दूत अभिमानी - -

मारि गति दीन्ह कृष्ण रूप दरसाय के ।

देव मुनि बूढ़ वारी पुष्प वृष्टि बहु कारी

॥ सुख लहु बर गृह गृह सुर आय के ॥

शिशु सुख पाइ धाइ हरि सग गृह आई

॥ हरि कृत निज निज गृह कहु गाय के ।

मुनि अचरज लहि हरि जस बर कहि

॥ मातु पिछु गोद गहु शिशुन बुझाय के ॥

वृष्ण पद प्रीति करि श्याम रूप उर धरि ;
 गोपी गन गोप उर सुख रहु छाव के ।
 पुलकि पुलकि रामसेवक गहत श्याम
 यशुमति सुख चुमि हरि उर लाव के ॥२०४॥

राग धनाश्री

हरि भार सकल भुवि टारी ।

करि बाल केलि रस भारी ॥टेका॥

वृंदावन हरि धेनु चरावत करि क्रीडा रिपु भारी ।
 निरखत गोप बाल प्रमुदित वन सुर मुनि करत सुखारी ॥
 क्रीडा अपर करत रिपु लखि दिग गोप बाल बोलि भारी ।
 करि जोडी शिशु प्रति खल बध हित मित्र अमित्र सवारी ॥
 श्रीदामा हरि मित्र जोडी सोइ दैत्य जोडी हलधारी ।
 अपर शिशुन की जोड कहौं किमि रिपु बध वृष्ण विचारी ॥
 क्रीडत हित सुर मुनि उर धरि हरि जेहि सुख लहु नर नारी ।
 नेत्र मुँदि कोइ शिशु निज निज कर कोइ बुझत सुख सारी ॥
 बुझत जोइ सोइ चढत काँध शिशु एक स्व एक पुकारी ।
 रिपु बध सुनि सुख रामसेवक लहु गहु जन सरन मुरारी ॥२०५॥

हरि क्रीडत शिशु मिलि भारी ।

लखि कंस दूत रिपु भारी ॥टेका॥

वृंदावन अति सघन सोहावन वृत्त लता अधिकारी ।
 धेनु हरित वृष्ण चरन लागु जत्र सिसु सब देखि सुखारी ॥
 वृत्त अवधि करि क्रीडत सब सिसु निज निज जोडी सुधारी ।
 श्रीदामा हरि को जोडी बर वृषभासेन दुलारी ॥
 अलवा रोहिणी सुत जोडी हरि एह खेल विचारी ।
 जथा जोग्य शिशु सकल जोडी करि क्रीडा परम सवारी ॥

कौंध प्रलना असुर महा खल बलदेव सुरसोरी ।
 चहु परलना की कौंध जगहि प्रभु हलधर लहि निज पारी ॥
 अवधि डाकि जग चलेउमहा खल लखि हलधर तेहि मारी ।
 सुर मुनि सुर लहु रामसेवक उर लखि बर चरित मुरारी ॥२०६॥

राग केदारा

हरि करि बाल चरित उदार ।

हरत भुनि बर भार ॥टेका॥

कौंध असुर चढाय हलधर मारि करु तन धार ।

प्राण गत भुवि गिरत ऋट खल जथा भरकट डार ॥

कोइ असुर भ्रमाय भारत प्राण जात न वार ।

बदन कोइ परवेश करि हरि कीन्ह तन दुइ फार ॥

कीन्ह स्थन पान कोइ कर प्राण कीन्ह अहार ।

दोन्ह गति तन हीन करि प्रभु कारि जग उपकार ॥

कृष्ण अरु बलदेव जस बर वेद त्रिधि महँ सार ।

कृष्ण तन बलदेव राजित देखि लजित मार ॥

परम पावन कृष्ण जस बर करत जन उद्धार ।

पतित अति कलि रामसेवक करहु हरि भव पार ॥२०७॥

हरि बध हेतु कस पठाय ।

अघासुर दिग आय ॥टेका॥

सेस सम तन कारि निज शठ मैघ जनु ध्रुवि ध्रुव ।

उर्द्ध ओष्ठ करि गन राजित अपर भुवितल लाय ॥

अद्रि सम तन बहुरि सोभा शृंग अमित बनाय ।

नेत्र मुख करि पाछि अहि सम जीभि शुभ ललाहाय ॥

रोकि पथ शठ रूप धरि अस खान सकल अघाय ॥

कृष्ण लखि सोइ गाइ सोभा सत्य उर ठहराय ॥

सकल शिशु पशु कीन्ह सोइ पथ आपु सोइ मुख जाय ।
करत सपुट श्रोष्ट द्वौ हरि दीन्ह तन विलगाय ॥
कीन्ह रक्षा सकल शिशु पशु असुर प्राण गवाय ।
दीन्ह गति तेहि रामसेनक रूप हरि दरसाय ॥२०८॥

राग कल्याण गति चंचरीक

क्रीडत शिशु सग कृष्ण रूप नर सवारी ।
चचल चित चपल नयन ब्रह्म अज तिसारी ॥टेका॥
मुरली धुनि सुभग कारि राजित करि गोप नारि
वाल वृद्ध गगारि मोहनि तन डारी ।
सिकहर कौंधे मो कारि रोटी विजन सुधारि
धेनुन करि अम कौंध लकुट शुभ सुधारी ॥
वृदानन सघन जाल वृद्ध अपर तरु तमाल
चरत घास धेनु शुभ्र पिवत धर वारी ।
वाल चरित कृष्ण करत कस दूत सग चरत
वत्स रूप धारि कृष्ण घात उर बिचारी ॥
जानि असुर वत्स रूप कृष्ण चरित अति अनूप
हलधर सन राइ असुर भाव उर मुरारी ।
पुछ गहि भ्रमाय धाइ लपटि कपटि कर वढाइ
वत्सासुर भुम्य पटक बेगि कृष्ण भारी ॥
जयति जयति जय पुकारि देव सकल हरि निहारि
। प्रमुदित आनद वद पुष्प वृष्टि कारी ।
पुतना को दीन्ह तारि वृणावर्त काक मारि
वत्सा प्रलव भारि कीन्ह सुर सुखारी ॥
बका अघा असुर काल प्रासेसि वत्स सकल बाल
। रक्षा करि बाल काल ब्याल तन बिदारी ।

सुर नर मुनि पाल रामसेवक हरि जन दयाल
 असुर वश काल सकल भार धरणि हारी ॥२०९॥
 राजित तन कृष्ण श्याम सोभा शत कोटि काम
 बाल चरित करत सकल कस चर गवाई ।
 वृदावन सघन पात गोप बाल बैठु ब्रात
 हलधर तन गौर सग निकट ढोड भाई ॥टेका॥
 चहुँ दिसि होय गोप बाल बैठे जनु नरगत जाल
 सूर्य चंद्र मध्य भेद नेक न जनाई ।
 मेघ मध्य तड़ित भ्राज तारा चहुँ दिसि बिराज
 मध्य तरु तमान वृक्ष अपर चहुँ सोहाई ॥
 मध्य कमल पीत श्याम चहुँ दिसि बहु रग नाम
 मध्य नील मणि सुसेतु धातु चहुँ लगाई ।
 चहुँ दिसि अति बन बिराज मध्य गोप बाल भ्राज
 मनहु ऋतु वसत कारि रति पति छवि छाई ॥
 सिकहर उतारि दीन्ह विंजन सत्र विलग कीन्ह
 भात दधि मिलाय बाल बैठेउ समुदाई ।
 विंजन मिलाइ साथ कर मो धरत एक हाथ
 हिलिमिलि सग रगत कृष्ण वाँसुरी बजाई ॥
 अँगुलिन मो लाय लाय विंजन सब गाय गाय
 मुख लगाइ खात रस पिवत तालचाई ।
 हँसि हँसि सब रगत भात स्वाद स्वाद कहत प्रात
 देत मुख चटाइ कोइ लेत मुख रियाई ॥
 कोइ देखाइ फेरि लेत खाइ म्व रियाय देत
 कौतुक अस पेरि कृष्ण गयो अज मुलाई ।
 लीला हरि अति कराल रामसेवक सुख रसाल
 सकल लोक सोक हगत रूप नर देखाई ॥२१०॥

राग श्री

श्रुति गृह चरित दनुजारी ।

लखि परत न देव मुरारी ॥टेका॥

जो ब्रह्मा करु सृष्टि विविधि त्रिवि सत रज तम गुण धारी ।
 सोइ भुलेउ हरि केलि निरखि भुवि सुवि बुधि सकल प्रिसारी ॥
 चीर सिंधु तट करु स्तुति त्रिधि गर्भाऽस्तुति करु भारी ।
 जन्म महोत्सव लखि निश्चय करु कस दृत बहु मारी ॥
 वृदावन हरि चरित त्रिलोकत गोपवाल वैठारी ।
 कर पर भोजन धरि अंगुलिन करि खात खियावत वारी ॥
 हँसिहँसि भोजन करत चपलचित्त निज मुखशिशु मुख डारी ।
 ब्रह्मा लखि नर रूप न हरि तासु निज उर बहुत विचारी ॥
 हेतु परीक्षा भवन गयो त्रिधि हरि बछरा शिशु भारी ।
 विधि गति उर लखि रामसेवक हरि निज माया विस्तारी ॥२१॥

विधि बछरन शिशुन चोराई ।

निज भवन लेइ जय आई ॥टेका॥

हरि विधि कर्म जानि वृदावन उर पुर जनु सकुचाई ।
 विनु बछरा किमि धेनु लढी सुग्य किमि ब्रज लोग लोगाई ॥
 ब्रह्मा लेत परीक्षा मम ध्रुव जोइ हर सोइ देखेसाई ।
 सदश वत्स शिशु कारि एही छन त्रिधि वर भर्म छुडाई ॥
 बछरन शिशु महँ आत्म अंश वरि ब्रज नित नेह बढाई ।
 अस मन गुनि बछरु जत शिशु रहु तम तम रूप धनाई ॥
 माया प्रवल न जानु कोइ ब्रज गृह गृह हरि दरसाई ।
 बछरा शिशु निज निजजननी दिग प्रतिदिन सम गयो धाई ॥
 हँकरि कैनु जननी उठि धायेउ शिशु लेइ सुख उपजाई ।
 प्रीति नइ प्रतिदिन उर बाढत रामसेवक हरि पाई ॥२१॥

राग टोडी ।

हरि ब्रज जन सुग्य दीन्ह दुख टारि के ।
 भुवि भार हरि कस दूत बहु मारि के ॥टेका॥
 विधि हरि लीन्ह जय शिशु बद्धरन तव
 हरि सुख दीन्ह ततछन तन धारि के ॥
 जत गोपबाल रग तत करु शिशु सग
 रोति प्रीति चाल बोल सदृश धारि के ॥
 धेनु निज शिशु जानु गोपी निज सुत मानु
 प्रीति निति नई करु शिशुन निहारि के ।
 शिशु जव बढ़ि जात प्रीति तव घटि जात
 नेह निति बहु मातु रासत दुलारि के ॥
 जेहि विधि मचलात प्रतिदिन दधि खात
 तिमि मचलाइ हरि माँगत पुकारि के ।
 सिकहर जस जस हरि करु तस तस
 लकुट सदृश रुचि भाव स्व विचारि के ॥
 सकल सुभाव करि जुन दाव लरि हरि
 लखि न परत भेद कोइ नर नारि के ।
 बद्धरन लेत छोरि जेहि विधि जेहि खोरि
 सोइ विधि जात बन इत उत धारि के ॥
 शृंगी बसी नाद सोइ गृह चाल नहिं गोइ
 माया हरि ध्रुव प्रीति कस्त निहारि के ।
 अरस माया कीन्ह रामसेवक के सुख दीन्ह
 ब्रज नर नारि निति लहत मुरारि के ॥२१३॥
 हरि करु केलि निज माया प्रगटार्इ के
 प्रीति वृद्धि करु यह रूप दरसार्इ के ॥टेका॥

एक ते अन्त हरि होत प्रय, लोक करि
 माया छन एक रचु जीव त्रिलगाई के ।
 अचरज नहिं लहु बुध वेद सेस फहु
 इच्छा हरि चारि खानि रहु जग छाई के ॥
 विधि हरि लीन्ह जन माया हरि कीन्ह तन
 क्रीडा ब्रज करु शिशु बद्धरा बनाई के ।
 धरप प्रमान मानि विधि हरि नर जानि
 क्रीडा सोइ शिशु देखु वृंदावन आई के ॥
 बद्धरन सब देखि शिशुन को केलि पेरि
 स्वात भात सोइ रीति हँसि पुलकाई के ।
 विसमय लहि विधि हरि वर देखि सिधि
 पुनि शिशु देखु निज लोक महुँ जाई के ॥
 इत उत आई जाइ बद्धरन शिशु पाइ
 । विकल विधाता थल रेऊ कष्टाई के ।
 माया हरि जानि मानि विधि उर पहिचानि
 करि को गलानि धिऋ धिक पछताई के ॥
 लखि हरि सकुचाइ चार चार मिर नाइ
 भुवि माथ हाथ धरि श्रेष्ठता गवाई के ।
 विनय विविधि कीन्ह हरि तेहि बोध दीन्ह
 सुर रामसेवक लहेउ श्री हरि पाई के ॥२१॥

राग कल्याण

नौमि ब्रह्मरूप त्व निरतर निरामय ।
 अज अखण्ड निर्गुण सनातन सुचिन्मय ॥१॥
 प्रभु विभु निरजन समस्त दोष गजन
 भजन सुरारि शृद सत वश रजन ।

निर्गुण गुणाकर सनातन धराधर ।
 आदि मध्य अत हीन कल्प भजनं ॥
 नौमि ईड्य ईड्य नाथ एक ब्रह्म सर्व हाथ
 साथ नाहिं कोपि त्रिगुण एक विग्रह ।
 जगद्गुरु च साम्बत अरुण रड बर्जित
 जगद्विय ताप निर्मल कृत सरूप समह ॥
 अभ्र सदृश वपु तडित सुश्रवर धर
 गुंजावत समोर पक्ष धारन ।
 शृग वन गल कृत सुनेतज कर धृत
 सुकज शृगि सुदर नमामि आदि कारन ॥
 चन्द्रव स्थितिं लय कृत सुविग्रह चय
 शिव अज जनार्दन नमामि कंज लोचनं ।
 धृत सुमच्छ कच्छ त्व-सरूप क्रोड नरहरिं
 वामन भृगुं रघु सुवशा शोच मोचनं ॥
 गोप बाल सगज सरूप पालन अज सुखाकर
 सुशातिद कृत चरित्र पावनं ।
 नमामि भक्त वत्सल कृपाल गोप सकुल
 पवित्र रामसेवक कृत मुनीन्द्रि भावन ॥२१५॥
 नौमि कृष्ण ते पद प्रफुल्ल कज लोचन ।
 सुखाकर सता गतिं जनानि शोच मोचन ॥टेक॥
 अनादि निर्गुण पर अज अखड सुवर ।
 कृत नृसमह वपु मुनीन्द्र ध्यान भावन ।
 गोविंद गोपतिं प्रभु समस्त पालक विभु
 अनेक विग्रह धृत कृत सुचरित पावन ॥
 चरित करत ज घन पवित्र पावन घन
 हरति गर्भ सर्व त्व नमामि बुद्धि चालनं ।

पाप साप तापह समस्त दुःख नापह ।
नजानिमीश्वर त्रिभु रिपु समस्त घालनें ॥
गोप बाल सग भात देखा ठिलिमिलि सो ग्यात ।

अज्ञ भाव मानि जानि नर नरायन ।
सुमाशील क्षमा करो अज्ञ जानि माहिं भरो ।
। त्व अज अखण्ड एक सकल लोक आचन ॥
यद्धरा न शिशु हत सु नाथ हेलन कृत ।
। , , क्षमस्व त्व दयाकर विशुद्ध ज्ञान त्रिप्रह ।
जगत्पति जनार्दन अरिष्ट दुष्ट मर्दन ।
। निरामय निरजन कृत सरूप सप्रह ॥
उद्धव स्थिति लय त्वमेकमद्भुत चय ।
। गुणा अगार निर्गुण गुण सरूप वर्जित ।
नमति रामसेवक अज सरूप घालक ।
। आदि आदि आदि देव सकल चर्चित ॥२१६॥

जयति जयति जय मुकुद जयति, जगत वदन ।
खडन समस्त पाप भक्त हृदय नदन ॥टेका॥

विशुद्ध ज्ञान त्रिप्रह कृत सरूप सप्रह ।
। , , समस्त दुःख नापहं सुरारि बृद खडन ।
जगद्गुरुं च सास्त्रत समस्त दोष वर्जित ।
। चर्चित पदाज अवति खड मदन ॥
निरामयं निरजन - सुरारि बृद भजन ।
। जगद्धिताप कृष्ण त्व धृत अनेक त्रिप्रह ।
जनार्दनं जगद्गतिं सनातन जगत्पति ।
॥ निरस्यइन्द्रियादिक कृत नृदेह सप्रह ॥
मनोज वैरि वदित सुरेन्द्र आदि सेवित ।
। अह त्रिरचि दाम त्व नमामि कज लोचन ।

रजोगुण जटा धृत समस्त सृष्टि त्व कृत । । । ।

। । हत शिव । तमोगुण गृहित शोच मोचन ॥

सृष्टि कारण च य गुण धृत कृत त्रय

। कार्य कारण पर भवान लेप वर्जित ।

शिव अज हरि प्रभु विभेद भेदन विभु

। गुण सरूप धारण कृत समस्त चर्चित ॥

समस्त पावन कृत गोपाल रूपज धृत

मोहन पवित्र गात दुष्ट गजन ।

नमति रामसेवक समस्त गोप बालक

सरण सरण सरण पाहि सत रजन ॥२१॥

नौमि गोपि बल्लभ गोपाल गोप नायक ।

अज अखड निर्गुण गोविन्द गोपि गायक ॥टेका॥ ।

गोपबाल सग्रह कृत अनत विग्रह

। बत्सरानन धृत जोगिन्द्र ध्यान लायक ।

गोपीश गोपि रजन मदादि दोष भजन

। पूर्ण सर्व लोक गोपि भाव भायक ॥

बाल केलि जत कृत अनत विग्रह धृत

। मोहन समस्त अज्ञ जीव वायक ।

भवान हेलन कृत समस्त बालज धृत ॥

। नमति सन्मुख न त्व रहति सकुचायक ॥

कृत शिशु निरीक्षण समस्त बद्धर वन

। अज्ञ भाव ब्रह्म लोक बहुरि देखु जायक ।

सदृश रूप। चत्सक निरीछ सर्व बालक

। नमति मे मन प्रभु विभु समीप आयक ॥

विम्वय नहीं नदेक ब्रह्म एकते अनेक

। मायया प्रचड सर्व लोक धायक ॥

भजंति ते पदायुज नमंति त्व अह अजं ।
 । विभ जु अज्ञ तासु घोलि वचन सायकं ॥
 कृत सुचरित पावन अरिष्ट दुष्ट दावन ।
 । मुनीन्द्र सत भावनं स्व ज्ञान दायकं ।
 विधि शुभ स्तव कृत सुरामसेवक भृतः ।
 । नमति बार बार कृष्ण भक्ति पायक ॥२१८॥

राग श्री

विधि बछन शिशु हरि ल्याई ।
 । एक वर्ष म्य भवन बसाई ॥टेका॥
 जत बछरा शिशु रूप कीन्ह । छन हरि महिमा प्रगटाई ॥
 क्रीडत वृंदावन हलधर जुत बालन सदृश बनाई ॥
 ब्रह्मा निज पुर छाडि बत्स शिशु परीक्षा हित आई ।
 वृदावन बछरन शिशु लरि विधि पुनि देखेउ गृह जाई ॥
 इत उत बाल सकल बछरन लरि विधि उर बहु सकुचाई ।
 होय लजित हरि पद बंदन करु महिमा आत्म गवाई ॥
 विविधि भाति स्तुति करि करि विधि पद रज सीस चढाई ।
 निज अपराध भर्मचित कहि कहि विधि उरसकल छडाई ॥
 सुरभी सग गगा जल शुचि कर विधि स्नान कराई ।
 होय प्रसन्न हरि बोध विविधि विधि रामसेवक सुख पाई ॥२१९॥
 विधि हरि स्तुति अनुसारी ।

लहि ज्ञान भक्ति सुखकारी ॥टेका॥

करि अत्रिपेक तिलक त्रिभुवन थरि महिमा अगम त्रिचारी ।
 वृंदावन ब्रज गोप गोपिन की भाग्य बहुत विधि वारी ॥
 पूरण ब्रह्म मनावन जोइ हरि मित्र मयो जीव मारी ।
 नद यशोमति भाग्य न कहु कोइ ब्रज वासिन नर नारी ॥

हरि अहा धरि सीस सुरभि जुत रूप अनूप निहारी ।
 परदक्षिण करि सीस नाय पद विधि निज भवन सिधारी ॥
 शिशु बछरा जोइ रहेउ पूर्व सोइ करि हरि बेगि दुलारी ।
 कुशल पूछि शिशु हरि गृह आयो महिमा जग विस्तारी ॥
 बालक कहु निज मातु पिता सन मुनि अचरज लहु भारी ।
 वर्ष अवधि पुर रामसेवक विधि शिशु ब्रज बाल मुरारी ॥२२०॥

दोहा

सकल बाल निज मातु सन कहेउ पिता सन गाय ।
 वर्ष दिवस विधि भवन रहु अद्य भवन निज आय ॥ १ ॥
 मुनि अचरज लहु मातु पितु प्रतिदिन देखत तात ।
 हरि महिमा घर जानि सब हिलि मिलि शैलत बात ॥ २ ॥
 कल्प भेद हरि चरित बहु गावत वेद पुरान ।
 निज युधि सम कहु कहत पुनिजस सुनु हरि बर कान ॥ ३ ॥

राग केदारा

तिहुँ पुर कहत नारद गाय ।
 हरि भाव उर ठहराय ॥ टेका ॥
 कसं दिग कहु कृष्ण जस बहु शत्रु भाव लखाय ।
 सुनत लखि मुनि सत्य बानी दूत अमित पठाय ॥
 कृष्ण बध करु जानि सुर रिपु कस ध्रुव पति आय ।
 पूतनादि बध जानि रिपु निज कृष्ण बध मन लाय ॥
 ब्रह्म गति बछरा शिशुन लरि सुनत गयो मुरुमाय ।
 जोहत कस बिचारि दिव निशि नारद कन गृह पाय ॥
 कृष्ण बध की रीति नारद बेगि देहि बताय ।
 कृष्ण मन गति जानि नारद कहत कस ते जाय ॥

कंस भेजत दूत वर लगि धीर धीर जनाय ।
 कृष्ण लीला रामसेवक अचल सुग दरसाय ॥२१॥
 हरि गुन कहत शिशुन बुझाय ।
 गाइ दूहव आनु हम भल देसु तुम मसुदाय ॥टोका॥
 कहत शिशु सन कृष्ण प्रमुदित मातु पितरि सुनाय ।
 जानु दुहनी धारि निज हरि कर स्र चिटुकी लाय ॥
 रीति दूहन जानु हम भल देत तोहिं वताय ।
 जानु नोइ डारीति वद्धरा दुहव धेनु पेंधाय ॥
 दुहव क्यहीं धेनु मुख निज पिअव दूध अघाय ।
 दुहत अस कहि धेनु प्रतिदिन धेनु बहु सुग पाय ॥
 नद यशुमति देखि सुत गुण हर्ष उर न समाय ।
 गोप गोपी देखि शिशु भव हर्ष गृह उर छाया ॥
 कृष्ण ब्रज जन देत सुग बहु रासु प्रेम वढाय ।
 । कृष्ण जस बहु रामसेवक कहत श्रुति बुध गाय ॥२२॥

राग श्री

हरि वचन सफल सुखदाई ।

सुनि करु लोग लोगार्इ ॥टोका॥

ताल नाम बन जोइ बृदावन तेहि फल फूल सोहाई ।
 धेनुका नाम असुर हरि बध हित तेहि बन रहत छपाई ।
 रासभ रूप धारि तरु तालहिं हिलावत हिहिनाई ।
 फल फुल दलनहिं गोप लहत कोइ डर वसानहिं नियराई ॥
 सकल जानि हरि कहत अज्ञ इव बालन बहुत बुझाई ।
 चलहु ताल बन धेनु चरावन सुनु वृण तर अधिकाई ॥
 मधु पियव फल खाव मुदित मन चर वृण धेनु अघाई ।
 सुनि शिशु सकल हर्ष उर धादत हरि सब ठाव वचाई ॥

श्रीदामा बलदेव मुदित मन हरि संवत भल भाई ।
 हरि अज्ञा करि रामसेवक सुख लहु तिहुँ लोक बडाई ॥२०३॥
 हरि त्रयपुर जन सुखकारी ।
 खल बध निज हृदये विचारी ॥टेका॥
 करि सबत शिशु धेनु लेड हरि आयेउ ताल मकारी ।
 हलधर ताल हिलाड सोर करि जनु रिपु बोलु अगारी ॥
 धेनुका सुर गर्भ को रूप धरि क्रोधित सुनत दुखारी ।
 हिंकरि हिकरि वृद्धत दिति छाडत आइ नाद करु भोरी ॥
 घसित मेघवत नाद सुनत शिशु गह उर सरन मुरारी ।
 हलधर निमट जात हहकारत बीर धुरीन निहारी ॥
 हलधर कर पद धारि असुर कर बेगि स्व अवनि पछारी ।
 पुनि भरमाड तात तरु ऊपर ऋटक पटक तेहि मारी ॥
 पुष्प वृष्टि करु देव मुदित मन जैति जैति धुनि धारी ।
 फल वृण लहि सुख रामसेवक नहु पशु ब्रज खग नर नारी ॥२०४॥
 हरि धेनु चरावन जाई ।
 प्रतिदिन शिशु सग लेवाई ॥टेका॥
 यमुना तट काली दह के ढिग कोड दिन शिशु चलि आई ।
 त्रिप सयुक्त पवन चलु सोइ दिसि जहँ बालक समुदाई ॥
 मृतक होय बालक अपनी परु बिप ज्वाला अधिकाई ।
 बन बालक इत उत हरि रोजत अन्नत इव पछताई ॥
 आइ मृतक बालक सब देखेउ अमृत दृष्टि स्व जियाई ॥
 सुप्त सदृश बालक उठि बैठेउ फहु हरि प्राण बचाई ॥
 हरि त्रयपुर पालन हित धरणी नर तन धरु श्रुति गट्टे ॥
 पुनि श्रुति कहत विशेष हेतु ब्रज पालत छन छन दृष्टे ॥
 कोड दुर्गम अरिष्ट परत ब्रज हरि सोइ तुरत मेट्टे ॥
 करु रक्षा हरि रामसेवक जग ब्रज जन अधिदु मेट्टे ॥२०५॥

हरि ब्रज हित उरसि विचारी ।

जेहि होय शुद्ध सरि वारी ॥टेका॥

रवणक दीप नाग जब पठइव गरुड़ महा भय टारी ।

यमुना जल निर्मल होइ हित बहु सुख लहु ब्रज नर नारी ॥

काली दह परु नाम अचल जग कलि कल्मष दुख हारी ।

करि स्नान लख्यो चारिउ फल अधम नारि नर भारी ॥

सौरभ तप थल पावन अति थल बृदावन अधिकारी ।

कालिंदी महिमा अति उत्तम वेद पुरान सवारी ॥

मम पद परस सोइ थल करु सरि अघ हरि करइ सुखारी ।

लीला मम एह गाइ श्रवन करि सुख लहु जन उर भारी ॥

अस विचार हरि मन करु जबहीं नारद उर छन धारी ।

कस भवन नारद सोइ छन चहु रामसेवक सुखसारी ॥२२६॥

हरि निज मन जोइ विचारी ।

सोइ नारद उर धारी ॥टेका॥

कस द्वार करतल वर वीणा धारि आय सुख सारी ।

शत्रु जनाइ प्रेम हरि पद करि गावत प्रभु गुण भारी ॥

काली नाग जेहि जाइ भवन निज होय शुभ्र सरि वारी ।

कंस हृदय होय त्रास अधिक जेहि सुख लहु ब्रज नर नारी ॥

सोइ नारद करु गान कस सन हरि जस बहु विस्तारी ।

तव रिपु नद सुवन नहि देखत हित होय कहत दुलारी ॥

काक कृष्णाव्रत पुतना बधु जोइ बका अघा सुर मारी ।

धेनुकासुर वध कान्ह सुनत तुम हलधर अवनि पछारी ॥

काली दह ढिग जाहि पुष्प हित नाग देइ छन जारी ।

शत्रु हीन सुख रामसेवक लहु महिमा अगम मुरारी ॥२२७॥

सुनि नारद वचन सोहाई ।

कस कछुष हरखाई ॥टेका॥

दूत बोलि मुनि बचन सत्य लखि हरि कहँ रिपु ठहराई ॥
 जाहु बेगि अब नंद भवन तुम कहु ब्रज जन समुदाई ॥
 काली नाग जहाँ रहै महा हृद सोइ विष तहाँ अधिकारै ।
 कमल प्रफुल्लित निकट नाग के रहु चहुँ दिसि बन छाई ॥
 पुष्प सोइ बलदेव कृष्ण मिलि लेइ आवहिँ दोउ भाई ।
 विष ज्वाला अधिकार लगत नन जाहिँ बेगि मुरुमाई ॥
 एहि विधि रिपु कर नास होय ध्रुव बेगि कहो अब धाई ।
 सुनत नद यशुमति ब्याकुल भई सिर धुनि धुनि पछताई ॥
 कृष्ण चरित सुनि रामसेवक ध्रुव मुर नर सुनि सुख पाई ॥२२८॥
 सुनि नद सकल पुरवासी ।

जोइ कस दूत परगासी ॥टेक॥

चार धार पछतात यशुमति सुत पद प्रीति हुलासी ।
 कोइ नहिँ कहइ कृष्ण सन कमल हाल दुख रासी ॥
 बालन सग मम शिशु दोउ क्रीडत सुनत तहाँ चलि जाती ॥
 नाग छाडु फुकुकार जवहिँ मुख सोइ छन सुत मुरुमासी ।
 बिलपत नंद यशुमति बहु विधि सग दास मिलि दासी ॥
 सुत विषयक अस प्रीति करत बर लखत न हरि अविनासी ।
 क्रीडत कोइ सन कस हाल एह सुनत कृष्ण पुलकासी ॥
 जाइ कमल लेइ आइ देव तेहि अस मन गुनि हरखासी ।
 अद्भुत चरित करव फणि ऊपर सुख अहिँ बहुधा सी ॥
 कृष्ण सृष्टि सब रामसेवक जग कस न लखु महिमा सी ॥२२९॥
 हरि यमुना तट हरखाई ।

गयो बालन सग लेबाई ॥टेक॥

कस मान मर्दन हित क्रीडत शिशु मिलि बहु मन लाई ।
 कमल लेइ डिग धरव कस जब तब ब्रज जन सुख पाई ॥
 नाग जाइ जवहिँ गृह अपने तब रिपु घास जनाई ।

गेंदुवा खेल खेलत शिशु द्विति मिलि एक एक प्रेम बढाई ॥
 श्रीदामा हरि मित्र परम शुचि लेइ सोइ गेंदुवा धाई ॥
 यमुना तट दह निरुद दाम तरु हरि सहि भट्ट चढि जाई ॥
 श्रीदामा कर गेंदुवा सुदर काली तह मो गिराई ॥
 मैत्री तजि कहत श्रीदामा गेंदुवा लेन हम भाई ॥
 हम तुम सन नहिं घाटि कोइ विधि कहि कर गहि अरुभाई ॥
 महिमा कृष्ण न रामसेवक लखु हरि कर मित्र बडाई ॥२३॥
 कहि जात न चरित मुरारी ।

करु प्राकृत नर अनुहारी ॥टेका॥

अलौकिक करु कर्म सकल ब्रज लखत न कोइ नर नारी ॥
 मित्र सकल न मित्र कोइ हरि भक्त पक्ष अनुसारी ॥
 श्रीदामा गेंदुवा निज कर गहि डारि दोन्ह सरि धारी ॥
 कर गहि श्रीदामा भक्तभोरत गेंदु गयो सम वारी ॥
 काली दह तुम जाहु वेगि अरु नार्हा देत बहु गारी ॥
 कूदेउ शीघ्र हरि वचन मित्र सुनि सोइ हृद मध्य निचारी ॥
 सकल बाल देखत मुरुछित भयो श्रीदामहिं दुख भारी ॥
 नद यशोमति सुनि विलपति अति हाहाकार पुकारी ॥
 हरि महिमा बहु विधि तेहि कहि कहि प्राण राखु हलधारी ॥
 कृष्ण हरहिं दुख रामसेवक ध्रुव ब्रज जन अविदु दुलारी ॥२३॥
 हरि काली दह मो जाई ।

करु चरित अमित सुखदाई ॥टेका॥

कृष्ण रूप नागिनि अति देखत सुदर वदन लोनाई ॥
 मोहि गई नहिं अनत विलोकत श्याम सूरति मन लाई ॥
 कहत कृष्ण सन जाहु वेगि गृह सर्प, उठत को बचाई ॥
 सुदर रूप जीव परिहेलत वेहि कारण द्रौ आई ॥
 कृष्ण कष्टो तन नाह लेन हित सुनत स्व पतिहिं जगाई ।

जागत नाग विपम त्रिप छाडत कृष्ण चढयो सिर धाई ॥
 नागिनि नाग विनय बहु करु हरि कमल लेइ सुख छाई ।
 नाग सकल दरसाइ सरित तट पुष्प कृष्ण धरवाई ॥
 खणक दीप बसाइ नाग कहँ ब्रज जन सुख दरसाई ।
 कृष्ण निरखि सुख रामसेवक जनु लहु धन तन गत पाई ॥२३२॥

राग केदारा

कहु हरि चरित बुध श्रुति गाय ।

प्रेम नेम बढाय ॥टेका॥

कल्प कल्प हरि चरित बहु विधि कहत भेद जनाय ।

कस हरि बध हेतु निज बल कीन्ह अमित उपाय ॥

कीन्ह अमित गलानि निज उर दूत अपर बोलाय ।

जाहु गोकुल नन्द गृह अत्र कहहु मम प्रभुताय ।

पारिजातक कज तरु बहु पुष्प मोहिं सोहाय ।

कृष्ण अरु बलदेव जुत अत्र नद पुष्प लियोय ॥

बेगि आवहि नद मम पुर कहहु जाइ बुझाय ।

कस शठ हठ कारि बहु विधि दूत शीघ्र पठाय ॥

नद सन कहँ जाइ नृप मत दूत बहु हरसाय ।

नद सुख बहु रामसेवक कृष्ण जब दरसाय ॥२३३॥

हरि पद प्रीति किमि कहु गाय ।

मानु रिपु कोइ मित्र शिशु लखु अत सम फल पाय ॥टेका॥

कमल पुष्प की हाल कहु जब दूत त्रास जनाय ।

नद कस भय प्रीति सुत पद सुनत गयो मुरुभाय ॥

सुनत यशुमति नद भापित अवनि गिरु बिरुलाय ।

कृष्ण सुनि शिशु लेइ ब्रीडत गयो सरि तट धाय ॥

लेइ कहुक धारि निज कर तुरत हृद मो जाय ।

फारि जल पाताल गत हरि नाग तहँ दरसायि ॥
 मित्र श्रीधर कृष्ण को वर घेगि गोकुल आव ॥
 कृष्ण गति फहु सुनत जननी उठी ब्रह्म अकुलाव ॥
 आइ यमुना तीर धावत देव पितर मन्त्रय ॥
 दान घत यहु रामसेवक मानु हरि प्रगटाव ॥२३४॥

राग टोडी

हरि कर लीला तिहँ पुर सुर छाय के ।
 भक्तन अभक्त सुर दुर दरसाय के ॥टेक॥
 कटुक स्व कर लाइ कज हित चलु धाइ
 कदम हिलाइ कुदि जल महँ धाव के ।
 जल फहँ फारी टारी गयेउ पवाल वारी
 काली नाग डिंग हरि घैठयो हरखाय के ॥
 नागिनि बिलोकि हरि बचन सुअनुसारि
 रूप को निधान कहौ आयो केहि लाय के ।
 जुवा खेलि हारे होउ गृणि कोइ कहु सोउ
 धन लेइ जाउ बहु देउ तेहि जाय के ॥
 ककण सुहार लेहु मन भावै तेहि देहु
 जीव अनमोल काहे देत इहाँ आय के ।
 जय ते न नाग जागी तब ते तु जाउ भगि
 उठि खाइ अँग तब सकल चघाय के ॥
 कृष्ण कहु नाग धारि कस द्वार एहि द्वारि
 लेइ जाव घेगि फुल लादि दवराय के ।
 नागिनि सुक्रोध करि सुनि के बचन हरि
 रिपु गृह आयो कहु नाह को जगाय के ॥

सुनि रिपु काली नाग सभ्रम सो उठि जाग

मेघनाद कीन्ह फुफुकारि हरि पाय के ।

कृत सभारि रामसेवक हरि पुकारि

सुख हरि दीन्ह नाग पतिनी बुझाय के ॥२३५॥

करु क्रोध नाग हरि बदन निहारि के ।

पस्म स्व शत्रु मानी रूप हरि नहिं जानी

रोस बस जागो अज अगुण बिसारि के ॥टेका॥

क्रोध करि विष धरु श्याम तन श्याम करु

मूर्छित विकल करु बहु फुफुकारि के ।

गरुड़ को हरि टेरी लीन्ह सोइ नाग घेरी

पुष्प लादि कीन्ह टेरी सेस सिर धारि के ॥

गरुड़ को बिदा कीन्ह साप सन अभय दीन्ह

चलु गृह नाग लेइ पुष्प सु सवारि के ।

नागिनि को तोप करि नाग सिर पुष्प धरि

गर्ज घोष बर करु सरि जल फारि के ॥

हाहाकार नाग करि त्रयलोक कप भरि

कृष्ण बेगि कर उर्ध्व यमुना सु बारि के ।

रूप स्व देखाइ धाइ ब्रज जन सुखदाइ

कस द्वार, जाइ पुष्प दीन्ह दिग डारि के ॥

नाग गृह जान कहु कस विस्मय लहु

हरि पुर आइ सुख दीन्ह नर नारि के ।

नाग लीला गाइ रामसेवक सुगति पाइ

कल्प भेद बहु विधि चरित मुरारि के ॥२३६॥



राग विहाग

सकल जन कृष्ण कृष्ण धुनि लाई ।
 सुत धित नारि नाह गोकुल सुर सुधि बुधि तन विसराई ॥टेका॥
 कदुक गहि चढि कदम बृच हरि कूदि यमुन हृद जाई ।
 श्रीधर वर हरि मित्र परम शुचि नद भवन अस गाई ॥
 नद यशोमति सुनत विकल अति सभ्रम चलु उठि धाई ।
 गोप गोपी गन सुनत बचन सर अति निहल चलि आई ॥
 हाइ हाइ करि नीर निहारत कहाँ हरि देहु लप्याई ।
 वाता मकल काली दह थल वर अँगुलिन दर दरसाई ॥
 कृष्ण कृष्ण कहि कहि उर ताडत निररत वारि लोनाई ।
 कृष्ण सरिम सरि वारि श्याम वर एक टक रहत कठाई ॥
 देव पितर गन सकल मनावत देहु कृष्ण प्रगटाई ।
 कृष्ण कृष्ण रटु रामसेवक जन कृष्ण सकल सुरदाई ॥२३॥
 विकल अति सरि तट ब्रज नर नारी ।
 कृष्ण विरह व्याकुल अति पुरजन तन सुधिसकल विसारी ॥टेका॥
 हाइ हाइ कहि कृष्ण पुकारत यमुना वारि निहारी ।
 रोदत वदत हरि गुण गन कहि कहि हरित सरित जल वारी ॥
 सकट सब ब्रजभूमि हरण हित प्रभु वका अधासुर मारी ।
 विप सन सकल जिघायेउ बालक अब कहु कवन उवारी ॥
 नद यशोमति उर कर ताडत भुवि लोटत पट टारी ।
 सिर पटकत महि डूवन चलु भरि हलधर धाइ कर धारी ॥
 सहि न समत जड जीवविकल बहु कृष्ण विरह अति भारी ।
 मिलिपत धेनु सहित वधरा तट शिशु सब कृष्ण पुकारी ॥
 गहिमा हरि बलदेव जानु सन बोधत पितु महतारी ।
 कृष्ण कृष्ण कहि रामसेवक सुर लहु अस नाम मुरारी ॥२४॥

सकल ब्रज कृष्ण विना अति दीन ।
 नारि सकल नर धारि बिलोकत एक टक पद गति हीन ॥टेका॥
 नद यशोमति भुवि पटकत सिर जीवन कृष्ण आशीन ।
 तलफत नद यशोमति किमि भुवि जिमि विनु नीर पाठीन ॥ ३
 शून्य लगत त्रयलोक कृष्ण विनु पीन अद्रि अति छीन ।
 सकल सृष्टि त्रिपति लगत उर पुष्ट छीन छीन पीन ॥
 शिशु लगु बृद्ध बृद्ध शिशु लागत जुना नारि नर खीन ।
 बिहल गोप गोपी किमि भुवि तल निचटत जिमि जल मीन ॥
 इह जन्मनि नहिं पाप कीन्ह कोइ देखि परत प्राचीन ।
 मुगति कुगति निज कृत सुख दुख लहु भोग करत नावीन ॥
 दुख हर सुख कर कृष्ण सकल ब्रज अपराध नहिं कीन ।
 हाहु प्रगट अथ रामसेवक हित चरन कृष्ण मन लीन ॥२३९॥

सकल ब्रज कृष्ण निरह रहु छाई ।
 बछरा चीर पिवत नहिं हुँकरत धेनु घास नहि खाई ॥टेका॥
 पत्नी गन जत जीव बृंदावन तरु तृण सब मुरुभाई ।
 गोप बाल अति विकल कृष्ण विनु कृष्ण कृष्ण धुनि लाई ॥
 गोप मकल गोपी गन बिहल जनु अहि मरिण स्व गवाई ।
 नद यशोमति लोटत भुवितल मन धुधि सुधि बिसराई ॥
 काली दह कोइ छन निरखत जल विनु हरि कछु न सोहाई ।
 हरि महिमा कहि कहि रौहिणी सुत ब्रज जन प्राण बचाई ॥
 आइ जात हरि देर नहीं कछु कहि अस शाच नसाई ।
 नागिनि नाग जगाइ जगतपति रिपु कहि दीन्ह देखाई ॥
 छाडत मुख फुफुकार क्रोध करि हरि तेहि सिर चढि जाई ।
 नाग सहित अथ रामसेवक प्रभु आवत जन सुखदाई ॥२४०॥

राग कल्याण गति चंचरीक

राजित, फणि सेस कृष्ण रूप वर सुधारी ।
 गोकुल नर नारि विक्रल देव मुनि सुखारी ॥टेके॥
 चरन कमल श्रति सुभ्राज धक्कुश ध्वज जव विराज
 नख मणि गन जोति मोति कोटि शत तमारी ।
 भूपण वर वसन श्वग देखत अनग दंग
 कोटिन शशि वदन भास केस लहि मुरारी ॥
 मुरली रव मधुर राज किंकिणि धुनि श्रति सुभ्राज
 सुदर गति ताल लाल मोहत सुर नारी ।
 ठुमुकि ठुमुकि धरत पाव पैजनी धुनि लहत दाव
 शीघ्र श्रति अनूप सेस सीस पृथक कारी ॥
 तोरत बहु वाम तान दक्षिण कर धारि कान
 पलटत थद शीघ्र मनो श्रमि जेरत टारी ।
 निर्व्व अहि सीस ईश कृष्ण सकल लोक धीश
 देखत, सुर वाद्य गान करत पुष्प मगरी ॥
 तप्ता त्येइ त्येइ गाय त्येइ त्थेइ कर छठाव
 देव मुनि समाज तान तोरु सग धारी ।
 जिमि जिमिपट धरत सीस नाचत तिमि शीघ्र ईश
 सोइ भाव सदृश देव लावत कर तारी ॥
 प्रसुदित अहि सीस ईश ताल क्रिया चलत वीस
 मिलि सराग तान गान देव हरि दुलारी ।
 निर्व्व गान करि उदार हरत सफल धरणि भार
 देवन श्रानद देत सेस अघ विदारी ॥
 नाग नम्र कीन्ह सीम निरगत मुनि देव ईश
 नागिनि अरु नाग कृष्ण रूप उर विचारी ।

महिमा अपार जानि जगत नाथ नाथ मानि
 जोरि हाथ मोरि सीस स्तुति अनुसारी ॥
 जयति जय प्रकृति पार हरण सकल धरणि भार
 लीन्हेड अघतार भनुज दनुज कुल निहारी ।
 मारि मारि तारि दीन्ह सकल लोकसुजस लीन्ह ।
 जड प्रकृति जानि मोरि सहेड नाथ शारी ॥
 चरन कमल सीस घारि दीन्हेडें मम अघविदारि ।
 परसत नहिं परत कोपि भव समुद्र चारी ।
 अमित अघम कीन्ह पार रामसेत्रक करु विचार
 लोजय अपनाय कृष्ण जानि मोरि पारी ॥२४१॥
 निरत अहि सीस ईश निरखत मुनि देव धीश ।
 तोरत यहुत तान मान बाँसुडी बजाई ।
 सग सग देब नारि गावत सुर मुनि सुभारि
 तुमुल राग नाग नाक लोक रह्य्छाई ॥टेका॥
 नागिनि अरु नाग देखि कृष्ण रूप ब्रह्म पेखि
 स्तुति अनुसारि चरन कमल सीस नाई ।
 द्विजय पति दान नाथ नाहँ सीस फेरि हाथ
 अमय कीन्ह लोक तीनि चरन सीस लाई ॥
 पुन्य पूर्व रह्यो जाल चरन कमल धरु कृपाल
 सीस अहि पुनीत कीन्ह दोष अघ मिहाई ।
 जोइ निज सकल जानु अगम निगम नहिं स्व मानु
 धन्य नाग भाग्य अचल पायो अधिकारी ॥
 सकल देव मुनि सुरेश ध्यान करत अज महेश
 चाहत पद रेणु नाथ सुजस विविधि नाई ।
 पावत नहिं चरन धूरि सेवा सुर करत भूरि
 दीन्ह्यो अधिकार नाग नाथ इहाँ आई ॥

चन्द्रव स्थिति नाम हाथ अपर नाहिं कोपि साथ
 जीव सकल लोक मोह माया लपटाई ।
 वृषभ नाक सूत्र धारि फेरत इत उत प्रचारि
 तथा जीव गुण सु सूत्र राखत अरुम्हाई ।
 दीजय अहिघात दान राखहु मम नाह प्रान
 महिमा न जानु अज्ञ अज्ञता गवाई ॥
 नागिनि कर बोध कीन्ह कृष्ण ज्ञान भक्ति दीन्ह
 अज्ञता विभजि कीन्ह नाग की घडाई ।
 नाग लेइ जाय अथहि छाडि देव पार तरहि
 रवणक घर दीप घास देव तेहि बसाई ॥
 चरन कमल घीन्ह सीस देखहि जन वीय ईश
 अभय दान देहि तोहि राखहि कर भाई ।
 पुष्प सहित नाग लेइ ज्ञान भक्ति घासे देइ
 आये मरि तीर धीर नाग को बचाई ॥
 कृष्ण रूप अति ललाम देखत घन नाग श्याम
 पुलकित नर नारि सकल बस त्रास पाई ।
 रवणक घर दीप घास कीन्ह गरुड विगत त्रास
 पायो सुख भूरि नाग नागिन सु दाई ॥
 कृष्ण कृष्ण कृष्ण रटत रामसेवकें सुख स्व चरत
 वेद सेस कहत कृष्ण प्रभुता प्रभुताई ॥२४२॥

राग श्री

हरि कीन्ह शुद्ध सरि वारी ।

रवणक दीप वाप्त कालिय करि हृदय मुना ते निकारी ॥टेका॥

कसहि त्रास दीन्ह उर अतर जस त्रिभुवन भिस्तारी ।

कृष्ण कृष्ण तट रटत जानि सरि ब्रज वासी नर नारी ॥

निकट जाइ तेहि दीन्ह महो सुख शोक मोह भ्रम हारी ।
 नद यशोमति लहत प्राण सुत तुरतहि आस उधारी ॥
 बोलि विप्र दियो दान विविधि विधि सुत गहि गोद दुलारी ।
 प्राण गये लहि प्राण वहुँरि जिमि तिमि सर्व भयेउ सुखारी ॥
 हरि लीला बलदेव जानि सत्र मिलु हंसि भुजा पसारी ।
 गोपी गोपगन संकल अनदित शिशु सब सुख लहु भारी ॥
 श्रीधर शिशु हरि मित्र परम शुचि सुख बहु कहु श्रुति चारी ।
 सुख लहु रामसेवक त्रिभुवन अति लखि बर चरित मुरारी ॥२४३॥
 हरि सकल लोकें सुखदाई ।

ब्रज जन अधिक सहोई ॥टेका॥

कस महो स्व दैत्य पंठायो चहुँ दिसि अनल लगीई ।
 किमि रक्षा करु कृष्ण सकल जन छैन महुँ देउ जराई ॥
 अति प्रचड बोलो चहुँ दिसि चलु पवन वेगि अधिकारी ।
 गर्जत अति तर्जत हहकारत धूम अनल रहु छाई ॥
 विकल भयो ब्रज नारि सकल नर ताप न उर सहि जाई ।
 कृष्ण सरण गहि कृष्ण पुकारत हरि लखि जन बिकलाई ॥
 आरत बचन सुनत निज गति लखि जोगानल प्रगटाई ।
 अग्नि पानकियो मारि असुर खल ब्रज जन सकल बैचाई ॥
 जब जन भीर परत ब्रज ऊपर करु रक्षा हरि धाई ।
 हरि सरणागत रामसेवक जन सकल परम सुख पाई ॥२४४॥

हरि जस कहु ब्रज नर नारी ।

महिमा अमित पुकारो ॥टेका॥

पुतना बध करि शकट उलटि पद काक वृणतव्रत भारी ।
 बका अधा प्रसि लीन्ह शिशुन सर्व मारेउ सोई तन फारी ॥
 धेनुकासुर बलदेव मारि खल ब्रज जन कीन्ह सुखारी ।
 यमुना जल कियो शुद्ध जतन हित बालि नाग कहै टारी ॥

दावानल करि पान सकल जन हरि एहि वार उवारी ।
 विष ज्वाला सन मृतक सकल शिशु जियायेठ हरि वारी ॥
 फल बुम्माइ चढाइ पलटि शिशु प्रलवा को निहारी ।
 भाँडीर वन अवधि वृत्त वट अप्र चला बल धारी ॥
 असुर प्रबल बलदेव जानि ध्रुव अवनि पटक तेहि मारी ।
 सकल सराहत रामसेवक जन सुखप्रद सुजस मुरारी ॥२४५॥

हरि चरित विसद श्रुति गाई ।

बहु गोप गोपिन सुखदाई ॥टेका॥

करत केलि ब्रज गोपनाल मिलि अज अनवद्य गनाई ।
 अलौकिक तजिलौकिक करु हरि अति प्राकृत ननि जाई ॥
 गोपिन की रुचि करत सदा हरि नेह सुप्रेम बढाई ।
 भक्ति नात अधिकार मानु हरि एह चहुँ जुग चलि आई ॥
 पनिघट घाट गोपिन कर मेला एक एक मन लाई ।
 मिलहिं अकेल कवहिं मोहिं हरि पथ कर गहि उर लपटाई ॥
 उर गहि सकल भाव गोपिन कर हरि उर अधिक सोहाई ।
 लेइ शिशुन पनिघट हरि आयो तरु पर रहेउ छपाई ॥
 गोपी जल लेइ चलिय जबहिं गृह हरि गहि जल ढरकाई ।
 गेंडुरी इत उत करि हरि अरुम्मत रामसेवक सुख छाई ॥२४६॥

राग सोरठो

घाट परो घाट निति रोकत कँधाई री ।

इत उत देखि चलु नहीं दरसाई री ॥टेका॥

प्रातकाल जाइ काँध बसुडी बजाइ गाइ

कदम सु तरु पर बेगि चढि जाई री ।

बोलत न कोइ रीति इत उत चितवत

तरु पात ओट डुकि रहत छपाई री ॥

जल लेइ चहु जन कृष्ण पथ रोहु तन
 नीर ढरकाइ हरि कर धरु धाई री ।
 अटपट बोलि वात अग लपटाइ जात
 कर मकमोरि उर रहु अरुभाई री ॥

नद ढोटा अति खोटा ठगन मो ठग मोटा
 देखत को छोटा कर धरि मुसुकाई री ।
 कोइ भाव गृह आइ टोना सोइ सग धाई
 मन हरि लीन्ह ठगि वदन देखाई री ॥

ठाग खोट कहि रूप उर गहि गहि
 सकल सरिन उर ललचाई री ।
 सकल सुअग रामसेवक सुसग लखु
 कहि न सकत कयि वदन लोनाई री ॥२४७॥

रोकि पानीघाटे हरि रहत छपाई री ।

कुल बर कानि लाज सकल गवाई री ॥टेका॥

कदम सु तरु प्रात चढि जात धरि लात
 बोलत न दुकि देखि रहत कठाई री ।

यमुना सरित नीर भरि भरि धरु तीर
 वृक्ष को हिलाइ डार तन दरसाई री ॥

गेंडुरी पवारि लेत जल ढरकाइ देत
 पथ रोकि कहि कहु कर चमकाई री ।

गगरी सु फोरि देत बहियोँ पकडि लेत
 गेंडुरी बहाइ नीर अग लपटाई री ॥

गृह नहि जाने देत चीर छिनि छिनि लेत
 फारि इत उत करि कर धरु धाई री ।

गोपी गन सुनि सुनि मन पुलकित गुनि
 पृथक पृथक सुख लहु तट आई री ॥

उर पुर पुलकाइ मुर सन गारी गाइ
सुख रस लहि लहि रहु अरुभाई री ।
गोपी गन रीति रामसेवक न कहु प्रीति
भक्ति ज्ञान रस रग अग मो समाई री ॥२४८॥

राग टोड़ी

हरि किमि कर छेड पनिघट आय के ।
लोक लाज कुल कानि सकल गनाय के ॥टेका॥
गोप सुत न मानि कन्या गोप मोहिं जानी
एक ग्राम धाम जाति पाति विसराय के ।
तुम सन छोट नार्ही जाइ कहु केहि पार्ही
कुल गहि लाज उर रहु सकुचाय के ॥
कुल गति तजि कानि हसि किमि गहु पानी
गाली अस देत किमि नाता उर लाय के ।
सिर न कलक लेहु गृह अत्र जाने देहु
किमि अरुभात मम जल दरकाय के ॥
चूर्ण घट फोरि कीन्ह गेंडुरी पवारि दीन्ह
कर गहि लीन्ह अग अग लपटाय के ।
छाडि देहु अय मोहि कहत पुकारि तोहि
नद नदरानी सन कहु नहि जाय के ॥
कस सन कहु जाइ सुनत दोहाइ आइ
पकडि भगाइ तोहिं राखव बधाय के ।
कृष्ण कहु मुसुकाइ कस की नहिं सिराइ
मातु पितु उर नहिं कहव बुझाय के ॥
गोपी गन गृह आइ पृथक पृथक गाइ
निमुटइ जोइ भात्र सोउ कहु गाय के ।

कृष्ण जस गाइ रामसेवक सुकृत पाइ
पाप नसाइ हरि रूप मो लोभाय के ॥२४९॥
हरि पनिघट रहु हित ब्रज नारि के ।
चोर इव तरु चढि इत उत चितवत
ब्रह्म अज अगुण स्व सगुण विसारि के ॥टेका॥
ब्रज नारी आइ आइ पृथक पृथक धाइ
सिर धरि फलु गृह यमुना सु वारि के ।
कृष्ण हहकारि धाइ पथ रोकु दिग जाइ
जल ढरकाइ लपटाइ कर धारि के ॥
गोपी निमुटाइ मुसुकाइ सुख पाइ पाइ
गृह जाइ जाइ कहु धरित मुरारि के ।
यशुमति दिग जाइ ओरहन देत गाइ
मित्र उर पुर मुख शत्रु स्व पुकारि के ॥
यशुमति बोध करि ओरहन उर धरि
निदा करु गोपिन को बहुस दुलारि के ।
कृष्ण निज गृह आइ यशुमति धइ पाइ
गोद रायि सुत कहु बचन सवारि के ॥
पनिघट किमि जाइ धूम करि मचलाइ
गेंबुरी पथारि घट सिर ते उतारि के ।
कर गहि लपटाइ घट जल ढरकाइ
पुनि घट इत उत करु फोरि फारि के ॥
सुनि रिसि मारि रहु सिख अब तोहि कहु
कुल लाज गहि गृह रहु विचारि के ।
कृष्ण बोध करु रामसेवक स्व मुख भरु
निरदोस लखि रहु वदन निहारि के ॥२५०॥

जल ढरकाइ लेत गेंडुरी पवारि देत ॥

धूम अति करु नहिं एसो जगी री ॥

ठगन मो ठग घर धरि लेत भट कर ॥

सिर पट टारि त्रिय करु नगी री ।

वर नहिं धरु दाया नेक नहीं करु माया ॥

देत हीं दोहाइ नहिं कोइ सगी री ॥

छादि देहु मम बाट जनि रोकु एहि घाट ॥

सुनि घात दगा करु अस दंगी री ॥

कर गहि लपटाइ तजि मुरली बजाइ ॥

वेणु मुरुचग देखु परु मुरुचगी री ॥

पृथक पृथक प्यास हरि करु पूर आस ॥

कृष्ण को विलास गाय रस रग रगी री ।

करत विनोद रामसेवक हृदय ओद ॥

पनिषट व्याज कृष्ण गोपी एक अगी री ॥२५२॥

घर जाने दे कंधाइ जनि रोकु डगरी ।

तुम रगरा मोहिं लखु रगरी ॥टेका॥

सहि नहिं जात निति घाट एह रोकु बाट ॥

गारी देइ देइ किमि फोरो गगरी ।

गेंडुरी पवारि महि जल ढरकाइ गहि ॥

कर मकमोरि निति निति मगरी ॥

सखी बहु कहु गाइ जब कस बिग जाइ ॥

चोरी करि गृह गृह खायो दगरी ।

अस नहिं चलु गाटा देखु नृप द्वार हाल ॥

भट - दड देइ सिर धोरु, पगरी ॥

नद सन कहु गाइ यशोमति को सुनाइ

नद सम को दयाल एह जग री ।

रागिनी सोरठी तस्या दस्या
ठोमरो अति प्राकृत भाषा कजली

देखो देखो नट ढोटा अति खोटा रगरी ।

प्रतिदिन प्रात उठि छेकु डगरी ॥टेका॥

वृक्ष पर छिपि जाइ गोपी देखि दिग आइ

। पथ रोकि रोकि सिर फोरै गगरी ।

कर गहि लपटाइ गेहूरी वहाइ धाइ

। जल ढरकाइ मचलाइ मगरी ॥

कवहीं कुनहि वारि कर भो लकुठ धारि

कवहीं के सिर धर टेढी पगरी ।

भुवि अठिलात चलु कर सन भुज मलु

। नयन चलाइ इत उत बगरी ॥

अति मगरूर नहीं भुवि सुर वीर कहीं

मानु राजधानी निज भुवि सगरी ।

अतिशय अभिमानी करत न उर कानी

। चोरी चोरी खात गृह गृह दगरी ॥

नद की दोहाइ तोहि वधाइ देउ कंधाइ

। मोहि जाने देउ गृह जनि,रोकु मगरी ।

चहुँ सुर लहु रामसेवक सकल कहु

अब न बसब नद जू की नगरी ॥२५१॥

देखो नद के ढोटाना जल रग रगरी ।

वहियों मरोरि देत मूट पथ रोकि लेत

नयन तरेरि चमकावै अगुरी ॥टेका॥

॥१॥ पनिघट छेकि छेकि गोपिन को देखि रोकि

अटपट वात कहु मानो भगी री ।

जल ढरकाइ लेत गेंडुरी पवारि देत ।।
धूम अति करु नहिं एसो जगी री ॥
ठगन मो ठग वर धरि लेत भट कर ।
सिर पट टारि त्रिय करु जगी री ।
वर नहिं धरु दाया नेरु नहीं करु माया ।।
देत हीं दोहाइ नहिं कोइ सगी री ॥
झाडि देहु मम बाट जनि रोकु एहि घाट ।।
सुनि वात दगा करु अस दंगी री ।।
कर गहि लपटाइ तजि मुरली बजाइ ।।
वेणु मुरुचग देखु पर मुरुचगी री ॥
पृथक पृथक प्यास हार करु पूर आस ।।
कृष्ण को विलास गाय रस रग रगी री ।
करत निनोद रामसेवक हृदय ओद ।।
पनिघट व्याज कृष्ण गोपी एक अगी री ॥२५२॥
घर जाने दे कंधाइ जनि रोकु डगरी ।।
तुम रगरा मोहिं लखु रगरी ॥टेका॥
सहि नहिं जात निति घाट एह रोकु वाट ।।
गारी देइ देइ किमि फोरो गगरी ।
गेंडुरी पवारि महि जल ढरकाइ गहि ।।
कर भक्तमोरि निति निति भगरी ॥
सखी बहु कहु गाइ जब कस दिग जाइ ।।
चोरी करि गृह गृह स्यायो दगरी ।
अस नहिं चलु गाल देखु नृप द्वार हाल ।।
भट - दड देइ सिर छोरे, पगरी ॥
नद सन कहु गाइ यशोमति को सुजाड ।।
नद सम को दयाल एह जग री ।

थरजहु कृष्ण धरि करत अचगरी
 जाइ वसु प्राम आन नहिं तव नगरी ॥
 कस थरा नास करि मातु पितु बोध धरि
 जाने नहिं देव तोहि एह मगरी ।
 कृष्ण पद पास रामसेवक करत आस
 सकल विलास हरि भुवि सगरी ॥२५३॥

हरि बोलत कहिं नहिं बात सुंदरी ।

देखत को छोट जनु बाल भुदरी ॥टेका॥

घुनि घुनि गारि देत मुख को सकोरि लेत
 । गेंहुरी पवारि वनु वड़ हुँदरी ।

कुदि कुदि कर गहु बात नहिं कोपिं कहु
 केस सीस चलु फुन फुन सुँदरी ॥

ताकत घुरेरि टेरी बहियाँ मरोरि घेरी
 कर चमकाइ के देखावै सुँदरी ।

घाट रोकि टोकि देत मगरी स्व छिनि लेत
 डारी सिस भैवत सुरग सुँदरी ॥

कटि को डोलाइ गाइ पैजनी बजाइ धाइ
 । वाजत स्व आपु रुनकुन सुनरी ।

इत उत तान तोरु मुख सिर कर मोरु
 । अपुना ते गुती वनु एहि गुन री ॥

रोकि रोकि सरि घाट चलने न देत घाट
 । पनिघट सुख लहु गोपी गन री ।

कृष्ण की चरन रामसेवक सरन जन
 । गोपी गन गहु क्रम वच मन री ॥२५४॥

राग धनाश्री

गोपीगन की बुद्धि सयानी ।

हरि पद गहि उर लपटानी ॥टेका॥

कोइ भाव ढिग होय गहु हरि पद लाभ होय नहि हानी ।

पुत्र भाव रिपु भाव भक्ति पथ दृढ़ अनुराग मों हानी ॥

नाह भाव महँ गोपी दृढ़ अति तजि पति सुत धन प्रानी ।

कृष्ण कृष्ण रटि नाह नेह करि हरि महँ अत समानी ॥

कल्प कोइ पति हेतु कृष्ण कह पूजेउ हर हररानी ।

गोपेश्वर धरि नाम थापि शिव मत्र जपेउ हलि पानी ॥

कोइ कल्य हित नाह मितान हरि पूजेउ गोपि भवानी ।

पूजि सदा शिव पूजि भवानी कहु तुम घर घरदानी ॥

नद कुमार को करहु मोर पति मन उर रुचि पहिचानी ।

कल्प भेद कहु रामसेवक कहु जस भव कल्याणी ॥२५५॥

किमि कहु तप गोपिन गाई ।

जेहि तप बल हरि पति पाई ॥टेका॥

हेमौत ऋतु घरत करत तप बिधि बुध गुरु ठहराई ।

करि सकल्प अचधि उर थिर धरि ऋतु अरु गाम जनाई ॥

कात्याइनि देवी पद पूजत नेम म्य प्रेम बढ़ाई ।

सरित मध्य जल कठ मग्न तन जपत मंत्र हरराई ॥

कात्याइनि महमाय अधीश्वरि करु तय जगत बढ़ाई ।

नद गोप सुत करहु मोर पति पद तय बंदत गाई ॥

मत्र इहै निति जपत कठ जत कृष्ण चरन गन टाई ।

कात्याइनि को सच ब्रत पूजा यंत्र मंत्र करायाई ॥

मानै कलि जन जेहि देवी बहू हरि विचारि भगटाई ।

भक्ति रूढ़ हित रामसेवक हरि गोपिन ढिग पहिचानी ॥२५५॥

राग टोढी

गोपी गन मत्र जपु सरिवर जाय के ।
 कठ भरि जेल हरि पद मन ताय के ॥टेका॥
 देवी पद सिर धरि मत्र देवी जय करि
 मागु घर दान देवी पद सिर नाय के ।
 नद सुत-पति करु मम सिर कर धरु
 गोपी गन कहु निति देवी गोहराय के ॥
 देवी पद ध्यान लाइ धार वार कहु गाइ
 हरि पति होहिं मम उर हर राय के ।
 ऋतु एही मिलु कात तप्त उर होत सात
 गोपीगन मन कहु उर पुलकाय के ।
 देवी धरमान हित कृष्ण भाव धरि चित
 भक्ति मम रही चहुँ जुग घर छाया के ॥
 अबहीं हिमात रितु मास वर नाहीं वितु
 गोपी डिग जाइ अब फल दरसाय के ।
 करि के बिचार दाव गोपी उर लखि भाव
 चीर हरि लीन्ह हरि सरि तट आय के ॥
 देवी जग घर भाखु गोपिन को भाव राखु
 दीन को दयाल दीन दानी कहवाय के ।
 चीर हरि हरि लीन्ह गोपीन को घर दीन्ह
 देवी जस देइ निज जस प्रगटाय के ॥
 हरि कहँ पाइ रामसेवक हृदय लाइ
 गोपी मन पुर श्रुति बुध कहु गाय के ॥२५॥
 गोपीन चीर हरि लीन्ह सुख सारि के ।
 सकल बटोरी तरु गयो कर धारि के ॥टेका॥

गोपीगन अति धीर मत्र जप करु थीर
हरि पद आस देवी चरन सगारि के ।
जय करि चलु तीर गोपीगन धरि धीर
बखहि न देखि थल । रहु दुति बारि के ॥
इत उत ताकि भारी हरि पद उर राखी
मागु चीर सब हरि बदन निहारि के ।
कदम सु तरु ओट हरि धोलु बात मोट
एक एक आयो सब अगन उधारि के ॥
एक एक ताकि भारी निज रुचि उर राखी
चीर देउ श्याम निज उरसि बिचारि के ।
नगन न देगी नारी कहु बुध श्रुति चारी
चीर देहु जोरि हाथ कहत पुकारि के ॥
जल महँ कथ गात गृह मो रोदत तात
चीर देहु नाथ तोहि कहत दुलारि के ।
कृष्ण तब पद आसी चरन उपामी दासी
चीर अब देहु बेगि तरु वे उतारि के ॥
हरि नम्र कहु पुनि जोनि ढोकि चलु सुनि
हरि कहु अम्र आउ कर जोनी टारि के ।
हरि पद प्यासी रामसेवक सुखद रास
बीर गोपी लीन्ह लोक लाज भुवि डारि के ॥२५८॥

रागिनी सोरठी

हरि हरि लीन्ह चीर सकल बटोरी ।
कदम सु तरु चढि लखु विबुधीरी ॥टेक॥
गापी गन धीर नीर कपित न गात थीर
चीर हित हरिसन बहुत निहोरी ।

गृह मँह बाल दीन रोदत न कोइ पीन
अव गृह जाव हरि चीर देउ मोरी ॥
पृथक पृथक धाइ न गन मन आइ
मम दिग कहु गाइ चीर देव तोरी ।
चछु न पलक लाइ कर जोइ नील गाइ
चीर लेन चलु गोपी मति करि भोरी ॥
कर अग टारि देहु नयन पसारि लेहु
चीर निज लेउ आइ मम नहि खोरी ।
रवि को प्रनाम करि निज कर शिर धरि
सन मुख आयो मम दोउ कर जोरी ॥
गोपी आइ चीर लीन्ह कृष्ण रस भक्ति दीन्ह
ज्ञान सुविराग मो अमृत रस घोरी ।
लहि बरदान रामसेवक स्व मन मान
गोपी गन गृह जाइ वसु सुख सोरी ॥२५॥
चीर हरि किमि हरि करत ठठोरी ।
धुनि करु तरु चढि हँसि को थपोरी ॥टेका॥
हम अबला गृह वाताक रोवत
कपित रहु जल हाथ मरोरी ।
देहु चीर अपजस जनि लहु प्रभु
रारि बढै एहि वात न थोरी ॥
हरि बहु पृथक पृथक सब आयो
चीर लेहु रुचि करु सब तोरी ।
अग ढोंकि चलु प्रमुदित पट हित
हरि बहु आयो चीर लेऊ कर छोरी ॥
अग सन कर छोरे भक्ति भाव उर जोरी
सन मुख आयो मम दोउ कर जोरी ।

गोपी गन आइ आइ चीर लीन्ह कर लाइ
गृह गइ बर लहि सत्र सुख सोरी ॥
करि के प्रिनोद गोद प्रेम रस सुख ओढ
गोपी गन पति मानि उर परि सोरी ।
सब लहु रुचि रामसेवक भयेउ शुचि
अब हरि देहु भक्ति रुचि राखु मोरी ॥२६०॥

राग सोरठी तस्या दास्या

तस्या किकरी गति भूमरि अति प्राकृत फगुवा

दीजे चीर हमारा मुरारी ।

हम अत्रला गृह गलक रोवत काँपत नीर मकारी ॥टेका॥
गहि गहि चीर कदम चढि बैठेउ मुरली अधर सुधारी ।
कर जोरे रनि सनमुख चितवत मम दिग आवो उधारी ॥
निज कर जोइति ढाकि चहु सनमुख निरखत पैना वारी ।
अग सग कर टारि देहु अजौ चहौँ सुख उर भारी ॥
सुनि हरि बचन सकल पुलकित उर अँग कर दीन्हेउ टारी ।
हरि सन लाज न कोइ प्रिय राखत आपुहिं आपु निहारी ॥
चीर लीन्ह हरि मानि बचन फुर भक्ति भाज अनुसारी ।
प्रेम सकल लगि रामसेवक हरि गोपिन बहुत दुलारी ॥२६१॥
दीन्हेउ चीर उतारी मुरारी ।

कदम बृत्त सन उतरि आव भुवि गोपिन की रुचियारी ॥टेका॥
पृथक पृथक लियो चीर सकल त्रिय केल करत मिलि मारी ।
अग सकल असपरस कीन्ह हरि काम अग्नि दियो जारी ॥
तप्त रही गोपी उर अतर सीतल कर सिर धारी ।
सकल अग हिलिमिलि हरि परमतसुख लहु बहु ब्रज नारी ॥

हरि मुरली मुरचग बजावत गावत हाथ पसारी ।
 गोपीगन हरि सँग मिलि गावत और बजावत तारी ॥
 नाचत तोरत तान मान करि गोपिन बहुत दुलारी ।
 सकल मनोरथ रामसेवक लहु कृष्ण सदा उपकारी ॥२६१॥

राग गौरी

प्रति दिन आवत धेनु चराई ।
 श्याम गौर दोउ भाई ॥टेका॥
 गोपीगन निरखत मारग रहु कब हरि तन दरसाई ।
 चात्रिक इव धनश्याम कृष्ण तन चितवत प्रेम बढाई ॥
 छन एक तजत प्राण जनु निकसत जिमि मणि सेस गवाई ।
 साँझ समय पुरवा हरि चितवत पद भुवि सीस उठाई ॥
 देखत दूरि धूरि नभ उडत अगुलिन सकल वताई ।
 कर करि ओट नयन निज निरखत आये देखु कधाई ॥
 वशि बजावत गावत शिशु मिलि गोपि निकट हरि आई ।
 प्राण गये तन लहे प्राण जिमि तिमि गोपिन सुर पार्ई ॥
 आरति करि करि रूप हृदय धरि गृह आवत गुन गाई ।
 गोशाला हरि रामसेवक चहु सँग सँग जन समुदाई ॥२६१॥
 वन ते आवत धेनु चराई ।
 निरखत जन समुदाई ॥टेका॥
 आगे आगे धेनु पीछे सब बालक मध्य राजु दोउ भाई ।
 श्याम गौर जनु मेघ तडित छत्रि धेनु धूरि नभ छाई ॥
 धेनु बाल बहु रग मेघदुनि सेत पीत मेचकाई ।
 चमकत अति सिर मुकुट लकुट कर विशद नयन अरुनाई ॥
 धूसलि धूरि सकल अँग राजित उपमा कहि न समाई ।
 साँझ समय हिलि मिलि शिशु गावत मुरली अधर बजाई ॥

गोपिन निरखत सुख पावत अति प्रेम बिबश सँग धाई ।
 गोशाला अति धूम करत निति हरखित लोग लोगार्ई ॥
 गृह आवत सुत निरखि यशोमति गोद लेत हरखाई ।
 माखन मिश्रि खियाइ चुमि मुख रामसेवक सुख पाई ॥२६४॥
 वन ते आवत नद को लाला ।

बजत मुरली करताला ॥टेका॥

आगे आगे धेनु पिछे मज बालक मध्य त्रिराजु गोपाला ।
 शीश मुकुट मलकत ललकत मन देखहु मुरली वाला ॥
 साँझ समय बर रूप धरत हरि जेहि सुख लहु ब्रज वाला ।
 निरखत बदन कामशत सुदर गोपी सकल निहाला ॥
 हिलि मिलि सग चलेउ वन सन गृह गावत गीति रसाला ।
 हुकरत धेनु चलत बछरन हित सग गोप शिशु जाला ॥
 गोशाला तकि धूम हर्ष अति जनु सुखमा घनमाला ।
 एह सुख मनन करत उर अतर रहतन अघ कलि काला ॥
 साँझ समय सुख देत अधिक ब्रज अस हरि दीन दयाला ।
 निज कृत अघ कलि रामसेवक उरु गति एक कृष्ण कृपाला ॥२६३॥

हरि कहँ देखि सुखी नर नारी ।

वनते धेनु चराइ आउ जन हरखि उठत जन म्कारी ॥टेका॥
 जिमि सरदातप निशि शशिहरु सत्र रयन करत ओजियारी ।
 सयन करत सुख लहि प्रमुदित मन दिवस की ताप त्रिसारी ।
 हरि बिनु तप्त दिवस पुर जन रहु देखत होत सुखारी ॥
 साँझ समय वनते पुर आवत रयन चयन लहु भारी ।
 गोशाला करि धेनु देखि सुख गृह चलु जगहि मुरारी ॥
 गृह प्रविषत घशी रव करु शुभ आरति यशुमति वारी ।
 गोद लेइ मुरख चुमि खियावत सुख लहु बदन निहारी ॥
 पद मर्दन करि हरत मनहु भ्रम मोयन गो-दुलारी ।

प्रति दिन अस आनद सकल ब्रज हरि हरि नाम पुकारी ॥
 कृष्ण नाम रदु रामसेवक अत्र तोहि भव सिंधु उतारी ॥२६६॥

रागिनी भैरवी गति प्रभावती

होत प्रात सुति उठि निति यशुमति कृष्ण सु कृष्ण पुकारी ।
 कर परसत पट टारि कोमल तन वदन निहारि दुलारी ॥टेक॥
 उठहु लाल भयो भोर सोर अति करत नगर नर नारी ।
 रग मृग केल करत सुति उठि सब कुकुट धुनि अनुसारी ॥
 क्रय विक्रय करु धनिक मनिक पुर चलत पथिक पथ भारी ।
 गोप बाल तव हेतु ठाढ सब बजावत कर तारी ॥
 मेवा बहु पकवान मिठाई मारन मीश्री सनारी ।
 पृथक पृथक दधि भात दुध वर भरि भरि कचन थारी ॥
 उठहु खेल हित लेहु खेलवना करहु बियारि त्रिहारी ।
 बलदेव तव हेतु ठाढ एह चितवहु नयन उवारी ॥
 धेनु चरावन जाहु सग बन बलि बलि जाउँ मुरारी ।
 एहि त्रिधि मातु जगाउ कृष्ण निति रामसेवक कर धारी ॥२६५॥
 कृष्ण कृष्ण कहि कृष्ण हाथ गहि जननी कृष्ण उठाई ।
 उठहु लाल भयो भोर सोर अति करु पत्नी ममुदाई ॥टेक॥
 भक्त सकल, अख्यान ध्यान करु पूजत सुर मन लाई ।
 घटा धुनि शुभ राग पाठ शुचि करु बहु शर बजाई ॥
 धनिक वनिक क्रय विक्रय करु गृह पथ चलु जन हरसाई ।
 गोपी गन दधि मथन करत अत्र हरि वर पुन गन गाई ॥
 गोप बाल सब द्वार ठाढ अत्र संग हित प्रेम बढाई ।
 सब दिग ठाढ सग हित प्रमुदित बलदाऊ तत्र भाई ॥
 तव हित रोटी एक छोटि मोटि करि मारन बहु लपादाई ।
 मारन माश्री बहु मेवा भज दधि वर भात बनाई ॥

बियारी करि जाहु सग बन आवहु वेनु चराई ।
जननी भक्ति लागि रामसेवक हरि नयन खोलि मुसुकाई ॥२६८॥

राग श्री

नित यशुमति कृष्ण जगाई ।

बन धेनु चरावन लाई ॥टेका॥

उठहु तात करि लेहु बियारी आवहु धेनु चराई ।

गोपबाल जूरि मव पथ जोहत सँग हित तव वर भाई ॥

एक वार बहु विधि सो जगाड पठयेउ सुतहिं खियाई ।

लकुट हाथ काँधे सिकहर धरि चलु हरि वेषु बजाई ॥

गोपनाल गयो दूरि धेनु लेइ पृथक पृथक समुदाई ।

कृष्ण पुकारत धाइ धाइ चलु ठाढ रहो भाई आई ॥

कृष्ण गयो ढिग कहेउ शिशुन सन तुम मोहि तजि आयो धाई ।

तोहि तजि अत्र लेइ जात निज शिशु उर नाहि सोहाई ॥

सरणागन सत्र शिशु जनि त्यागहु सुनिहरि बहुरि बुझाई ।

आजु चरावन चलहु कुमुद वन रामसेवक सुख पाई ॥२६९॥

गौवन को ही ही बोलत भुरारी ।

आइ कुमुद वन धेनु दूरि गत शिशुन ते कृष्ण वचन अनुमारी ॥टेका॥

निज निज धेनु टेरि निज ढिग लेउ बोलेउ हिलिमिलि शिशु सत्र मारी ।

धवरी पीअरी लोही कारी फुलही कवरी चमरी सवारी ॥

कपिली कौशीली लीमुँछी घोची लागि महोरी दुलारी ।

राती सेतो धूमरि सवरि रौरी धूसरी नाम पुकारी ॥

धूरी गोरी सहरी कजरी गइनी मैनी भवरी निचारी ।

रौची चौरी टिकई सुभगि याम करी मखरी पुकारी सुखारी ॥

सुभरणी निकही रतन नीरही जतनी धेनु नाम सोइ पारी ।

सकल धेनु हरि टेरि बोलायो फीन्ह दुलार सीस वर धारी ॥

कहु बलदेव कुमुद बन चलु जनि नद रिसाहि बहुत महँतारी।
वृँदावन अब रामसेवक चलु जहँ सुख लहु त्रिमुवन नरनारी ॥२७॥

राग बसंत

देखो आजु वृँदावन ललित लाल ।

जब ते अघासुर घात कीन्ह हँस तब ते भयो बन सुखद काल ॥टेक॥

अतु बसत सदैव रहत भुवि

देखु सघन तरु लता जाल ।

फूलत फलत नित निटप अनदित

भुवि परसत तरुवर रसाल ॥

ललित पत्र चहुँ दिसि छवि छावत ।

मध्य सकल शोभित तमाल ।

चरत हरित तृण धेनु अनदित

मृग सुख लहु गुजत मराल ॥

बकुल कदव पणस पीपल बट

उद्ध अधिक लखु वृच ताल ।

शीतल मद सुगंध पवन गति

वृँदावन सम को दयाल ॥

वृँदावन महिमा हरि कहु बहु

सुनत लहत सुख गोपवाल ।

मधुर मधुर फल खात रियावत

रामसेवक हरि अस कृपाल ॥२७१॥

देखो वृँदावन अति सघन भ्राज ।

जनु काम अनी चहुँ दिसा राज ॥टेक॥

अतु बसत उपजाइ कीइत

बन शोभित सकल समाज साज ।

त्रिविध समीर बहत सुखदायक
 लहत मनो भव सुर समाज ॥
 पत्र ललित फल फूल अधिक तरु
 भुवि सिर शोभित मनहु ताज ।
 खग मृग रव अति करत सोहावन
 नाचत मोर चकोर गाज ॥
 खात मधुर फल पिवत वारि सरि
 नीक लागु नहिं अपर नाज ।
 दाग परत रस रग परसपर
 कहनी कृष्ण मन गह निमाज ॥
 कृष्ण बचन सुनि गोपबाल सब
 लहु उर सुख गत लोक लाज ।
 बृदावन सुमिरन मन करु अब
 रामसेवक होय सिद्धि फाज ॥२७२॥

राग श्री

हरि निज मुरत करत बड़ाई ।
 बृदावन घेनु चराई ॥टेका॥
 हरित हरित वृण चरेउ पुलिन तट देखेउ घेनु अघाई ।
 गोपबाल सन कहत मुदित हरि बन जस बन बहुताई ॥
 देरहु बन शोभा चहुँ दिसि अति सघन बिसद समुदाई ।
 जनु शृगार तिलक करि निज सिर मोहत लोग लोगाई ॥
 बृदावन सम नहिं सुदर कोइ नहिं टानी अधिकाई ।
 अर्थ धर्म लहु काम मोक्ष सुख चहुँ जुग परसि सो पाई ॥
 मोहि लेत जीव सकल देखु तुम निभव आत्म दरसाई ।
 वृण चरि घेनु अघाइ दीन्ह बन फल तोहि मधुर खियाई ॥

देखहु अम दानी १ अपर कोड भिनु स्वारथ सुख छाई ।
सुनि सुख रामसेवक सन लहु शिशु कृष्ण चरन तिर नाई ॥२७३॥
हरि कहत सत तर भारी ।

भिनु स्वारथ पर उपकारी ॥टेक॥

वृद्ध समान न अपर साधु कोइ देखहु हृदयें विचारी ।
जाति पाति नहिं जीव पुत्रत कोइ सम पालत दुख टारी ॥
आवतर्हा हरु ताप छाँह निज बरपा पवन तमारी ।
हिमिकी त्रास हरत निज बत पुनि डार पात विस्तारी ॥
सोवन हित देइ पात विद्ववना पात्र हेतु छद मारी ।
तापन हित शुचि पाक करन लागि देत इन्धन भुवि डारी ॥
पुष्प सु देइ सुगंध वसावत वृष्य होत नर नारी ।
फल सु पियाइ अघाइ देत छन सुधा सकल तरु हारी ॥
काटी जात तहँ गृह छावत सूर्यत कोइ तरु जारी ।
डारत छार अन्न बहु उपजत खेत प्रयल करि वारी ॥
मृतक भये उपकार करत तरु जीवत भल अनुसारी ।
परहित फलत फुलत तरु प्रतिदिनपरहित सरि बहु वारी ॥
सत प्रिटप सरिता गिर धरणी कर एह सकल सुखारी ।
पूजहु मानहु सेवहु एन्ह कह सहत मारि जन गारी ॥
एन्ह सम साधु अपर नकोइ जग सुख करु जनु धरु थारी ।
गोपबाल सन रामसेवक कहु निज मुख साधु मुरारी ॥२७४॥

राग बसंत गति होरी

होरी खेलत बन बनवारी ।

सग गोपबाल हलधारी ॥टेक॥

धेनु चराइ पियाइ मधुर जल केलि करत शिशु मारी ।

यमुना तट प्रसीबट के निकट अति भुवि हरि विसद विचारी ॥

वृंदावन अति सवन बृहत् छन्द पुष्प सुगन्ध निहारी ।
 रग मृग मधुर मधुर स्वर गावत नाचत पौंछि पसारी ॥
 मुरली हरि मुरचग बजावत शृंगि नाद करु भारी ।
 नाचत गावत तान तोरत अति तुमल नाद सुखकारी ॥
 इत उत चलत अमित पिचुकारी भरि भरि यमुना वारी ।
 पुष्प रग मिलि धूरि उडावत अविर मनहु अरु नारी ॥
 एहि विधि फाग वृंदावन खेलत सुर नर मुनि भय टारी ।
 भार सकल भुवि रामसेवक हरु सुख सारि परम मुरारी ॥२७५॥
 हरि खेलत वृंदावन होरी ।
 बहु गोपबाल सग जोरी ॥टेका॥

ललित पात कर लेइ सकल शिशु पुष्प ललित तरु तोरी ।
 चुनि चुनि पुष्प सकल शिशु हँसि हँसि धरत पात की मोरी ॥
 गारि रग तरु पात पात्र करि रँगु पुष्प रस घोरी ।
 एक एक पर पुष्प पजारत बाल तिनोद न थोरी ॥
 इत उत लपटि भूपटि सिर डारत रग लेइ बहु बोरी ।
 चलत अमित पिचुकारि वदन पर चहुँ दिसि रग घटोरी ॥
 नाचत गावत ताल प्रजावत देखत सुख त्रिबुधोरी ।
 वमीवट यमुना के निकट सन गृह आयो सब कोरी ॥
 गोपी गन देग्यत सुख लहु बहु आरति जननि करो री ।
 उपटन उत्तम रामसेवक लेइ हरि अग सकल मलो री ॥२७६॥

राग टोडो

हरि लीला कर निज भक्तन लोभाय के ।
 इत उत सुख धरु उर ललचाय के ॥टेका॥
 एक दिन घन जाइ धेनु शिशु सग लाइ
 धरि गयो भ्राम सन मनहु भुलाय के ।

निज निज भात खाइ उदर न पुर पाइ
 हरि माया करु बहु क्षुधा उपधाय के ॥
 हित द्विज द्विजनारी क्षुधा हरि करु प्यारी
 शिशु सब हरि दिग रहु मुरुमाय के।
 क्षुधा त्राण करु नाथ कहु बहु जोरि हाथ
 सहि नहि जात पुनि कहु सिर नाय के ॥
 द्विज अभिहोन करु दया उर पुर धरु
 भात मागि ल्यावो खाव सकल अघाय के।
 गाइ लेह दूरि खाइ क्षुधा पिउ सब पाइ
 जाँचु बलदेव नाम मम जुत गाय के ॥
 बाल यज्ञशाला जाइ जाँच्यो हरि नाम गाइ
 द्विज पद माथ नाइ क्षुधा स्व बताय के।
 द्विज सब मुसुकाइ हरि कहँ निच गाइ
 भोग नार्हीं इष्ट लाइ देवन गवाय के ॥
 बाल द्विज मुख सुनि जँचा भँग उर गुनि
 कृष्ण सन कहु पुनि शिशु सब धाय के।
 कृष्ण तोरु कीन्ह रामसेवक को बोध दीन्ह
 पुनि द्विज नारी दिग शिशु पलदाय के ॥२७॥
 हरि द्विज नारिन को भक्त स्व त्रिचारि के।
 भात हित पुनि शिशु पठयेउ दुलारि के ॥टेका॥
 द्विज अभिमानी ज्ञानी मोंहि नहिँ पहिचानी
 नारी सु सयानी भात देहिँ तोहि वारि के।
 बाल सब जाइ गाइ नारी पद माथ लाइ
 सुनि हरि हाल उठु नारी सुख सारि के ॥
 च्यँजन सुधार धरि भाग्य निज अनुसारी
 कृष्ण दिग खाइ प्रेम उर बर धारि के।

प्रथम चरित सुनि रही मन उर गुनी -
 भई सय मग्न श्याम रूप सुनि हारि के ॥
 हरि ज्ञान भक्ति दीन्ह त्रियन को बोध कीन्ह
 शिशु मिलि भात खाइ रिदा करि नारि के ।
 नारिन की हाल सुनि विप्र मन सुनि गुनि
 करत गलानि ज्ञान मान भुवि डारि के ॥
 धिक धिक पूजा दान धिक मम ज्ञान ध्यान
 यज्ञ व्रत धिक हरि अज्ञा घर डारि के ।
 नारी मम गुरु ज्ञानी हरि पद पहिचानी
 बुद्धि स्व सयानी सुर सरि सम डारि के ॥
 पाक करु मोहि नारी हरि भक्ति उर थारी
 मोहि सम धन्य नहिं रहु अघ जारि के ।
 कृष्ण जस आइ रामसेवक शिशुन गाइ
 द्विज द्विजनारि लहु सरन मुरारि के ॥२७८॥

राग श्री

करु संवत पुरजन मारी ।
 जेहि सुखिय रहँहि नर नारी ॥टेका॥
 नद गोप जहा बैठु सभासद तहाँ चलि गयो मुरारी ।
 हनुमत कर वरदान सुमिरि उर इन्द्र गर्भ जेहि हारी ॥
 नद प्रभ्र कीन्ह अज्ञत इव किमि मिलि मत्र विचारी ।
 कहहु पुत्र सन लौकिक वैदिक सुनि पितु मुरत उर धारी ॥
 कहव सुनव पुनि करव वात सोइ मानव वचन दुलारी ।
 नद कहेउ सुत इन्द्र जाग घर बुध श्रुति कहत पुकारी ॥
 इन्द्र वृत्त होय करत वृष्टि जल जेहि जन सकल सुखारी ।
 वृष्ण भुवि वदत अन्न उपजत बहु अस पावस ऋतु वारी ॥

इन्द्र अनद करत वसुधा तल विनु मय भुवि वृणे जारी ।
प्रति सबत मय लेइ इन्द्र निज रामसेवक सुख धारी ॥२७१॥
सुनि पितु मुख की वर बानी ।

हरि लखि इन्द्रहिं अभिमानी ॥टेका॥

कहेउ नद सन सुनहु तात अब तव वर बुद्धि सयानी ।
इन्द्र रक का पालु प्रजा भुवि निज हित करत गलानी ॥
ईश्वर सकल जीव रक्षा करु जगईश्वर सुखदानी ।
ईश्वर हेतु करहु मय पावन हित आपन पहिचानी ॥
रजसत तम गुण धारि सृष्टि करु उद्भव यिति करि हानी ।
रेत सहरि जल वेद कहत ध्रुव रवि रश्मि गति पानी ॥
गोवरघन पूजन मख ढिग गो गो ब्राह्मण परधानी ।
भोजन पायस देहु सुदक्षिणा भेवा धहु हित जानी ॥
वैश्य के धेनु लहै सुख करु सोइ वन परबत मुख खानी ।
गिर परदक्षिण करहु गोप मिलि रामसेवक वन प्रानी ॥२८०॥
सुनि कृष्ण वचन सुख पाई ।

नद गोप समुदाई ॥टेका॥

महिमा कृष्ण की जानि सकल जन गोवर्द्धन ढिग आई ।
नाचत गावत बाद्य बजावत उत्सव करु अधिकारी ॥
इन्द्र जाग हित रही सप्रदा सोइ सकटन धरि ल्यारी ।
यज्ञ कीन्ह बहु निवि गोरम रस धहु पकवान धरारी ॥
अमित निप्र भोजन करि दक्षिणा लीन्है आसिर्य गारी ।
धेनु पूजि वन पूजि गोवर्द्धन पर दक्षिण करु धारी ॥
गिरिवर कहँ नैवेद्य अमित धरु हरि तन धरि सोइ रारी ।
देखावत हरि सकल गोप कहँ निज तन गिर प्रगटारी ॥
गोवर्द्धन परसन्य जानि सत्र हरि पद प्रेम बढारी ।
लेइ प्रसाद सकल गृह गो निज रामसेवक मिर नारी ॥२८१॥

सुनि इन्द्र क्रोध करु भारी ।

हरु मम मरु ब्रज जन भारी ॥टेका॥

कृष्ण कहे मम भाग हरेउ मरु सुत कहँ प्रबल विचारी ।

नद को गर्व अधिक सुत लहि भुवि दीन्हेहुँ मोहिं विसारी ॥

मानुष बचन मानि सुर तजु सब गोप अह्न अधकारी ।

मम अपमान फीन्हे सोइ फल अब देत बेगि ब्रज डारी ॥

रक्षा किमि तब करहिं कृष्ण अब देखहु तुम नर नारी ।

वृष्टि प्रलय सम करत उपल जुत देखव कृष्ण गोहारी ॥

प्रमुता कृष्ण की देखव अब हम जाकी बचन अनुसारी ।

अधम कृष्ण नर रूप करहिं किमि एहि विधि दियो बहु गारी ॥

हरि माया बस इन्द्र कहत अस को हरि चिंतित टारी ।

इन्द्र प्रास नहिं रामसेवक लहु जो गहु सरन सुरारी ॥२८२॥

राग मल्लार

ब्रज भुवि बरपत इन्द्र रिमाई ।

हरि माया बल पाई ॥टेका॥

महा प्रलय जोइ करत मेघ धर सबत्रक श्रुति गाई ।

गनन सहित करि कोप इन्द्र तेहि निज ढिग लीन्हे बोलाई ॥

जाहु सपदि गन लेइ गोकुल महँ छन महँ आउ बहाई ।

सबत्रक जूधप कोपित करि ब्रज भुवि इन्द्र पठाई ॥

अपुना ऐरावत सवत करु चह लाइव जन आई ।

छप्पन कोटि मेघ अति आतुर ब्रज उपर आयो धाई ॥

गर्जत तर्जत वृष्टि करत अति ब्रज उपर नियराई ।

भुकि भुकि इत उत पवन भँकोरत जल चहुँ चलत अघाई ॥

हस्ती सुड सम धार गिरत भुवि दुख लहु जन समुदाई ।

कृष्ण सरन गहु रामसेवक जन हरि भुवि नीर सुखाई ॥२८३॥

वरपत मेघ प्रलय सम वारी ।
 ब्रज जन सकल दुखारी ॥टेका॥
 ऐरावत पर इन्द्र निराजत चार चार ललकारी ।
 देहु बहाय गोकुल एक छत्र महुँ बजू सरिस जल पारी ॥
 इन्द्र वचन सुनि अधिक कोप करि हउल हउल जल डारी ।
 छप्पन कोटि मेघ अति गरजत वरपा कीन्ह अधियारी ॥
 शिशु ब्रज जीव धेनु अति कपित बिकल अधिक नर नारी ।
 त्राहि त्राहि एक सरन कृष्ण तव इन्द्र कोप करु भारी ॥
 आरत सरनागत हरि लखि जन निज अपराध बिचारी ।
 मूढित लीन्ह उत्पाटि छत्र इव करे नख गिरवर धारी ॥
 गोकुल जन कियो छाँह ताहि हरि जल परवत पर जारी ।
 इन्द्र गर्व हरु रामसेवक हरि जल भय ब्रज जन डारी ॥२८४॥

राग धनाश्री

हरि चरित निगम बिस्तारी ।
 कियो ब्रज जन सकल सुखारी ॥टेका॥
 छप्पन कोटि मेघ वरपत जल इन्द्र त्रास गहि भारी ।
 सरनागत लखि नारि सकल नर निज अपराध त्रिचारी ॥
 जौजन साठि हजार गोबरधन बिनु प्रयास उपारी ।
 छत्र समान राखु निज सिर हरि कनगुरिया नख धारी ॥
 सप्त रात्रि दिन धारि सोस हरि छाँह राखु नर नारी ।
 बुद ठोप नहि परत एक ब्रज इन्द्र कोप अधिकारी ॥
 बड़वानल सम कीन्ह अद्रि हरि परत बुद सोइ जारी ।
 छोट नहि ब्रज उपर परु कोइ इन्द्र गर्व हरि हारी ॥
 छपन पहर वृष्टि अति करि करि शिथिल भयो धन मारी ।
 प्रभुता किमि घर राममेवत्र बहु पालत सरन मुखारी ॥२८५॥

हरि महिमा किमि कहु गाई ।

कवि मानस उर न समाई ॥टेक॥

अति उन्नत परवत सिर धरु हरि जन हित अस मृदुलाई ।

छप्पन। कोटि मेघ जल धरपत बुद न भुवि नियराई ॥

अट्टि उपर जल जाति जोग बल ब्रज जन सकल वचाई ।

मेघ सकल तन शिथिल सुरति गति जनु सब प्राण गवाई ॥

इन्द्र डरित हरि रूप विलोकत देखत वर प्रभुताई ।

जानि कृष्ण अतार वितय निज उर वहु इन्द्र लजाई ॥

सुख सन्मुख नहिं होत आट होय निररपत रूप अघाई ।

सरनागत वत्सल हरि पद लरि इन्द्र धाइ सिर नाई ॥

त्राहि त्राहि सरनागत लरि प्रभु मो पर होहु सहाई ।

जथा तथा गिरवर भुवि करि हरि रामसेवक सुख छाई ॥२८६॥

राग कल्याण गति ध्रुपद

नमामि ते पन् विभु प्रभु समस्त लायक ।

अखण्ड रगड धर्जित स्व भक्ति ज्ञान दायक ॥टेक॥

निरामय निरजन समस्त दोष गजन ।

निरीह निर्विकल्पक स्व धाम जायक ।

अज अखण्ड निर्गुण धृत सरूप सर्गुण ।

कृत सुकम पावन अमाय मायक ॥

जगन्मय जनार्दन । जगत्सरूप धारन ।

कारण समस्त लोक । भाव भायक ।

जगद्धिताप निर्मल समस्त विश्व सकुल ।

प्रभु विभु अनामय सुनाय बायक ॥

अन्त विग्रह धृत । न लोक सग्रह कृत ।

नृलेप ब्रह्म । शास्वत मुचाह चायक ।

जगत्पति जगज्जति सनातन । जद्गतिं ।
जगत्सु कार्ये । धारण जगत्सु ध्यायक ॥
आदि मध्य अत हीन ब्रह्म एक पूर्ण पीन ।
स्व पक्ष पालन कृत नृलोक । आयक ।
उद्भव स्थिति लय । कृत सुभूत सचय ।
जोगीश जोगि बल्लभ त्रिलोक नायक ॥
त्व अज शिव विभु सुरेश त्व रधि प्रभु
निशीश यरुण यज्ञ ढड घाव घायक ।
नमति रामसेवक । हरिं हर सुदेवक
सुरेश ईश कृष्ण पालि । शालि पायक ॥२८॥
नौमि ब्रह्म एक कृष्ण जगत आयन । ।
अनेक त्रिमह धृत कृत समुद्र सायन ॥टेक॥ ।
नमति ते पदावुज-भवादि देवज अज
सेवति शक्ति सर्व त्व त्रिशोच शोच मोचन ।
क्षम स्वमेपराध त्व अभाव भावना कृत ।
सुरेश मानज धृत विलोकि कज लोचन ॥
अह देव सकल राज गर्व कीन्ह साज साहु ।
बृष्टि करु फठोर सोर यज्ञ भावन ।
सुरेन्द्र भावन हत पवित्र पावन कृत
अज्ञता विभजि । कीन्ह । गर्व दावन ॥
गर्व नम्र कीन्ह नाथ वचन कहत जोरि हाथ ।
शीप दीन्ह कीन्ह विसद उचित पावन ।
ज्ञान भक्ति दान देहु दास बोलि सुजसलेहु
वार वार नमत चरन । मन वसावन ॥
इन्द्र तोप कृष्ण कीन्ह ज्ञान भक्ति अभय दीन्ह ।
वर्ष यज्ञ भाग दीन्ह कारि शासन ।

स्तुति पर नाम कारि कृष्ण रूप उरसि धारि
 इन्द्र भवन जाय वैदु पर आसनं ॥१॥
 अद्रि कृष्ण सीस लीन्ह गोप गोकुल त्रान कीन्ह
 पाक अरिहिं शीप दीन्ह शत्रु घालन ।
 चरित विसद अति उदार रामसेवक सुख अगार
 हनुमत धर बचन कृष्ण कीन्ह पालन ॥२८८॥

राग केदारा

ब्रज जन ग्रान करु हरि धाय ।
 अद्रि धर सिर लाय ॥टेका॥
 गोप गोपी धेनु शिशु ब्रज जीव सकल बचाय ।
 जारि कीचों पात करि जल इन्द्र गर्भ गँवाय ॥
 सप्त रात्रि दिन वृष्टि कर घन बुद नहिं भुवि आय ।
 मातुष शिशु नहिं करत कोइ अस जुवा वृद्ध नहिं भाय ॥
 होत विस्मय देखि तव शिशु नद कहु कंस पाय ।
 पूतनादि बध कान्ह सुर रिपु नाग ल्याव पुर जाय ॥
 जोजन पट्टो सहस्र परवत लीन्ह बेगि उठाय ॥
 राखि कर नख पहर छप्पन छत्र इव दरसाय ॥
 धारु सोइ थल त्राण करि जन मुगम उर हरसाय ।
 ॥ कर्म नहिं शिशु । रामसेवक देव मोहिं जनाय ॥२८९॥
 हरि जस गोप कहु समुदाय ।
 नद उर हरसाय ॥टेका॥
 कहेउ तुम सब कर्म मम सुत सुनहु जन्म अघाय ।
 गार्गाचार्य यदुवश कुलै कर पूज्य मम गृह आय ॥
 लेइ सुत पद मेलि द्विज वर नाम धरु दोउ भाय ।
 नाम हलधर कहु सँकर खन रामथल सुर गाय ॥

कृष्ण नाम अनत बहु द्विज अपर, हेतु बुझाय ।
 पालिहिं एह त्रयलोक्य तव सुत करिहिं देव सहाय ॥
 टारि देइहि दुर्ग एह सब आइ ब्रज जो जाय ।
 राज करु विनु तिलक सुवि एह गोपन कहँ सुख दाय ॥
 जन्म लीन्ह वसुदेव गृह एह कबहिं सुनु नद राय ।
 गयो गृह द्विज रामसेवक कृष्ण भाव वताय ॥२९०॥

राग धनाश्री

हरि लीन्ह गोपधन धारी ॥

सुख लहु उर पुर नर नारी ॥टेक॥

सकल अलौकिक कर्म कृष्ण लखि गोप केहेउ सुविचारी ।
 कहहु नद सुत जन्म कर्म अस को सुर नर अनुहारी ॥
 गर्गाचार्य की कहकी नद कहु मुनि सुख लहु जन भारी ।
 कृष्ण को ब्रह्म जानि ध्रुव जन सब स्तुति बर अनुसारी ॥
 नद चरन सब प्रजु धारि सिर भाग्य विभूति सवारी ।
 कार्तिक शुक्ल एकादशी व्रत करि द्वादशी लघु व्रत भारी ॥
 फल हित सरि खानि करन चहु रात्रि लखेउ नहिं फारी ।
 बन्धा दूत हरि लीन्ह नद कहँ शब्द सुनत सरि वारी ॥
 कृष्ण हाल सुनि गयेउ बरुण पुर पितु हित बरुण दुलारी ।
 नद आइ गृह रामसेवक बहु विधि सन चरित मुरारी ॥२९१॥
 देखि बरुण पुरी गृह आई ।

हरि सुजस नद बहु गाई ॥टेक॥

नूतन जन्म पाइ पति यशुमति बहु विधि रब लुटाई ।
 गोप गोपी गन सुनि सय आयो कुशील पुत्रु हसलाई ॥
 एकाकी हम गयेउ सरित तट शौचादिक करि भाई ।
 धोती भारि धरि यमुना तट तिथि द्वादशी नियराई ॥

रात्रि रही यमुना जल मँजत बरुण दूत धरु । धाई ३
 बरुण लोक मोहिं लेइ गयो जब सुनहु कृष्ण प्रभुताई ॥
 मोहिं खोजन हित गयेउ बरुण पुर देखि करुण पुलकाई ।
 अहो भाग्य निज मानि धारि कर सिंहासेन बैठाई ॥
 पाव धोइ जल गृह सिर सींचेउ निधि भोजन करवाई ।
 धमा कराइ कसूर दूत कहि बेगि सो मोहि छुडाई ॥
 अश्वादिक सन निभव देव्यायेउ कृष्ण परसि सुख छाई ।
 नद बचन सुनि सकल गोप गन नद चरन सिर नाई ॥
 घन्य नद तव सुत त्रिभुवन पति बैकुठ सुगवाई ।
 बैकुठ पति दरस परस करु हम सब नयन अघाई ॥
 बैकुठ दरसन हित पुर जन उर पुर बहु ललचाई ।
 दिव्य चक्षु देइ हरि गोपन कह रामसेवक दरसाई ॥२९२॥

राग टोडी

हरि करु चरित गोपिन सुख छाय के ।
 सुनि भवतरु कलि जन सोइ गाय के ॥टेका॥
 गोपबाल सन कही खान हित बन दही
 दान लेन चलु दधि शिशुन लिवाय के ।
 गोपिन को वाट रोकि शिशुन सो करु टोकि
 ॥जान नहिं पावै दधि लेन स्व रिमाय के ॥
 शिशुन को लेइ लेइ सिख अस देइ देइ
 हरि घाट वाट छेकु सोइ पथ आय के ।
 गोपी गन चलि आइ दधिय बेचन गाइ
 शिशु गन घेरि लीन्ह चोर इव धाय के ॥
 गोपीगन डर पाइ ठग घेरु मोहिं आइ
 शिशु हरि नाम गाइरहु हरखाय के ।

हरि स्व निकट आइ गोपी देखि मुसुकाइ-
 हरि दधि दान मागु मुरली बजाय के ॥
 कयहीं न दधि दान दीन्ह नहिं सुनु कान
 नैरिति किमि करु हरि, मुसुकाय के ।
 बघने स्व जात दही अस नही कोइ कही -
 तुम ठग इव याट रोकु मचलाय के ॥
 देय नहिं दधि दान कोटि करु तान मान
 तजु लरिकाइ मनुसाइ के गवाय के ।
 बचन कठोर रामसेवक कहत चोर ॥
 गोपीगन लहु सुर हरि दिग पाय के ॥२९३॥
 हरि दधि दान मागु गोपी कर धारि के ।
 गोपीगन करु वाद हरि परचारि के ॥टेका॥
 कर ककमोरि भोरी बख सन छोरि छोरी
 हरि दधि दान मागु गहि पर नारि के ।
 विनु दान दीये मोहिं जाने नहि देव तोहिं -
 कृष्ण कहु जनु निज सुरति बिसारि के ॥
 गोपीगन पुलकाइ जनु उर रिसि आइ
 कृष्ण किमि कहु कुल लाज भुवि डारि के ।
 कोइ भाव निमुटाइ यशुमति दिग जाइ ।
 हरि कृत गाइ उर प्रेम रस गारि के ॥
 यशुमति सुनि पाइ उर पुर रिसि धाई ।
 भूठ मिलि कहु सन बात सु सवारि के ।
 बरष सु दस बाल तुम सन जुवा माल ।
 किमि दधि दान मागु सकला उधारि के ॥
 तु मो सुत थोर कहु दोष नहिं लेश लहु
 प्राम धाम तजि कहि बसु रिसि मारि के ।

ओरहन लेत नहि शीप सुत धेत नहि
प्रजा पालु भाव केहि कहव पुकारि के ॥
कृष्ण गृह धाइ आइ। यशुमति सुख पाइ
भोजन कराउ निज उरसि दुलारि के ।
गोपी सुख रामसेवक निगम गाइ
गृह गई सख हरि बदन निहारि के ॥२९४॥

रागिनी सोरठी तस्या दास्या तस्या
किंकरी ठोमरो टपा लचारी अति प्राकृत कहरवा
दैहो न काँधा दही कर दान ।
इत उत किमि बहु तोरत तान ॥टेका॥
बसत भयो बहु काल नद पुर
अचगरी अस सुनो न कान ।
बाँह पकडि इत उत मकमोरत
टारि बसन अग अग लपटान ॥
चमकावत ललचावत धावत
नद सुवन तुम कवन सयान ।
अटपट बचन कहहि जनि मोहन
जनि मारहु चितवनि रस वान ॥
छोरि लेब मुरली सुख मलित
बरहीन कोइ उर बर गति मान ।
किमि घेरत दधि हितवन बसि प्रिय
नयनन मुँकि मुँकि मारत-सान ॥
गोपीगन रस बस बहु बोलत
हरि कर गहि गहि रहु मचलान ।

प्रेम विवस सुर रामसेवक लहु । । ।
एहि विधि हरि गुन करत बखान ॥२९५॥
कबहीं न दधि तोहिं दैहीं देखाय । । । ।
मचलैहौ तौ जानै बलाय ॥टेक॥ । ।
माँगत दधि कर दान आइ वन । । । ।
। । अब फहौं गई तव घर ठकुराय । । । ।
माँगहु घर घर गल भोरी धरि वन । । । ।
किमि रहु दधि हित ललचाय ॥ । । । ।
छोट कर्म अति सोट करत निति । । । ।
कहि दैहीं तव जैहीं लजाय । । । ।
दधि चोरी गृह गृह फिरि फिरि करु । । । ।
जन देखत रहु कोने छपाय ॥ । । । ।
गृह कोने खोजत कोइ पावत । । । ।
। । । । देखतहि गृह चलु बहु धाय । । । ।
धाइ धरत कोइ चार चोर कहि । । । ।
। । । । लपटि भूपटि पुनि चलु निकुटाय ॥ । । । ।
ओरहन यगुमति सन कोइ बिधि कहु । । । ।
। । । । तुम अस डंग कहु मूठ बनाय । । । ।
अटपट रामसेवक गोपी कहु । । । ।
। । । । रूप निरखि हरि उर पुलकाय ॥२९६॥ । । । ।

राग सोरठी

कैसे चलो घाट हरि मागै दधि दाना री । । । ।
कबहीं न दान दीन्ह नहिं कोइ दान लीन्ह । । । ।
। । । । कबहीं दधि दान सुनु निज काना री ॥टेक॥ । । । ।

गोपबाल सग ल्याइ पथ भग कर घाइ ।

ठग इव घेरि लेत देत नहिं जाना री ।

कर गहि लपटाइ दधि दान माँगु धार ।

गारी देत लाज तजि लगु उर बाना री ॥

कर धरि मकमोरै भौंह मरोरि घेरै ।

घसन उतारि अग रहु लपटाना री ।

धार बार मुसुकाइ दधि कर दान गाइ ।

मुँकि मुँकि तान तोरु करु रस गाना री ॥

हँसि हँसि कर धरु दान हित सोर करु

गोपी बहु रूप हरि एक अरुमाना री ।

रूप बर घनश्याम शोभा शत कोटि काम

चितवनि बोल लगु विशिष समाना री ॥

सुनि सुनि हरखानी प्रेम बस पुलकानी ।

हरि को मिलन हित करु उर ध्याना री ।

दधि दान गाइ रामसेवक प्रेम पाइ ।

गोपी गन भक्ति दृढ़ लहु गुरु ज्ञाना री ॥२९७॥

रोकत कँधैया री सुनै पानहीं कोई ।

हरिफेर सोटो काम नहीं सखी गोई ॥टिका॥

दधि दान मागि मागि गाली देत बन घागी ।

कुल कानि लोक लाज दीन्ह सब सोई ।

कर गहि अरुमात धार बार - मुसुकात ।

प्रेम त्रिच निज हित देत जनु बोई ॥

अग कर परसत जनु सुख वरमत

सरि निर लेइ जिमि गज पशु धोई ।

ओरहन बहु देत यशुमति नहि लेत

सुत की ओर कहत होय सोई ॥

अस नहिं सुनु फोड़ व्याज राखै थीर सोइ
मातु पिता नृप प्रजा बल एतनोई ।
नृप नहिं देत त्रास मातु पितु सुत आस
अस दुख सखी केहि सन कहु रोई ॥
करत विनोद मोद हरि प्रिय लागु गोद
वचन कठोर जनु रिपु बर जाई ।
गोपी गन कृष्ण रामसेवक सो एक धिष्ण ।
प्रेम छवि राग रस रग सग मोई ॥१९८॥

रागिनी सोरठी तस्या दास्या गति कजरी
नहिं देहिं दधि दान काँध छोडु डगरी ।
किमि रगरा निति करु भगरी ॥टेव॥
माँगत दही को दान करि उर अभिमान
देव नहिं दधि नहिं भित्त दगरी ।
जौ रगरा निति भग रोकि करु हरि
फिरि जाड घर मोहि लखि रगरी ॥
कस गृह जाइ धरवाइ दड देव अब तजि
निज गृह नद जू की नगरी ।
वाट परु घाट बन रोकि दधि दान माँगु
देखि परु ठग पथ छोरे पगरी ॥
कर गहि लपटाना हरि सुनि मुसुकाना
नयन तरेरि नहिं तजु भगरी ।
हरि अस लीला कीन्ह दधि दरकाइ दीन्ह
मदुकि पटकित इत उत बगरी ॥
दधि दान ब्याज हरि करु गोपी गन काज
सुख हुल बन ब्रज नारी सजरी ।

दधि कर कीच रामसेवक सुप्रग लाइ ।
 मुमि मुमि हरि मिलि खेलु कजरी ॥२९९॥
 दधि दान धिनु जान नहिं देहो पथ री ।
 हरि पथ शोकि कर गहि अथरी ॥टेका॥
 जाने न देव नहिं जान कबहिं गृह
 सैन करव वन कुस सथरी ।
 वन फल खाइ जो सोहाइ उर मन भाइ
 ओढि सुखदाइ वन की कथरी ॥
 गोपीगन मुसुकाइ उरपुर हरखाइ
 ठग बट पार कहि कहु शठ री ।
 पथिक बोलाइ को लोभाइ दरसाइ तन
 कपट निधान वन छोह गठरी ॥
 दधि दान देव नहीं वन नहिं उसु कहीं
 तजि परिवार सुर घर मठ री ।
 नहिं दधि दान देव कद मूल नहिं लेन
 बार बार कहु हरि छाड़ हठ री ॥
 हरि मुसुकाइ दधि मुख अग लाइ त्रिय
 कजरी खेलत वन वन यगरी ।
 प्रेम अधिकार रामसेवक सुप्रद सार
 केलि हरि बाल करि बसु नगरी ॥३००॥

राग केदारा

किमि कहु प्रेम की गति गाय ।
 कृष्ण पद करु प्रेम गोपी आंगन गृह न सोहाय ॥टेका॥
 फिरत चहु उन्मत्त इव भुवि लोक लाज गवाय ।
 कृष्ण कृष्ण कहि रटत चितवत व्याकुटा शोय महु धाय ॥

एक एकन चितइ रहु थकि लोचन पलक न लाय ।
 प्रेम रस वन पूर गोपी आय न पर न जनाय ॥
 होय वारी फिरत इत उत सत रोदत अधाय ।
 मनहु कणि त्रिनु सेस व्याकुल भक्ति रस अधिकाय ॥
 कृष्ण अस घर प्रेम लारि उर तुरित दिग प्रगटाय ।
 वृष करु हरि नारि गोकुल रूप घर दरसाय ॥
 भाग्य गोपिन की कहत कनि बुद्धि, रहु सकुचाय ।
 ध्यान करु उर रामसेवक भक्ति रहु तन धाय ॥३०॥
 श्रुति बुध कहत प्रेम प्रधान ।
 लहत जेहि गुरु ज्ञान ॥टेका॥
 प्रेम करि हरि रूप धरि उर करत मरि स्नान ।
 गोपीगन जल करत क्रीड़ा आये, तट भगवान ॥
 दरस करि अस परस गोपी दीन्ह तन मन दान ।
 भक्ति लहि वैराग्य तिष्ठण ज्ञान लहु पहिचान ॥
 मार्ग मिलन की प्रीति किमि कहु जोति नहि बिलगान ।
 मिलन वर सकेत कवि कहु भई ब्रह्म समान ॥
 गर्भ व्याज हरि त्रिह् वरनत एक तन मन प्रान ।
 मिलि परसपर कीन्ह जस अनुराग कहत सुजान ॥
 नारि नर सुनि होय पुलकित उरसि रहु न मलान ।
 प्रसित निज अघ रामसेवक कृष्ण, करु अत्र ज्ञान ॥३०॥

राग टोडी

राधा को श्रृंगार कनि कहु किमि गाय के ।
 कहत सुनत जोइ अघ भागु धाय के ॥टेका॥
 भूपन वसन साजि नयन कजल माजि
 अरण्य पराग भाल केस सबराय के ।

सिर बदी टारि टारि सम करु सुख बारी -
मुकुर स्व कर धारी जगत मुलाय के ॥
निज प्रतिबिंब देखि अपर सु नारी लेखि -
अचरज लहि उर रहत लोभाय के ।
मोहिं सम कोइ नारि लोक त्रय हरि प्यारी
रही केहि प्राम अस रूप बर पाय के ॥
बोलत नहिं बोलाये नयन सु भलकाये
प्रतिबिंब किमि बोलु ताकत कठाय के ।
दरस परस करु हरि एह कर धरु
ताते मानि भइ नहीं बोलु दिग आय के ॥
सबति विचारि राधा खेद करु लखि बाधा - १ ५
हरि रूप उर बारी रहु पुलकाय के ।
हरि प्रेम पहिचानी भक्ति रस ज्ञान दानी -
राधा सिर कर धारी बेगि दिग जाय के ॥
राधा भुलि गई दूरि उर सुग्य लहु भूरि
कृष्ण सग करु केलि हृदय बसाय के ।
रूप मो समाइ रामसेवक कबिन गाइ -
राधा कृष्ण एक नाम दुइ प्रगटाय के ॥३०३॥
नयनाऽनुराग करि कहु सुख धारि के ।
प्रेम अधिकार श्रुति कहु ब्रज नारि के ॥टेक॥
ब्रज नारी सुख सारी हरि रूप उर बारी
एक टक रहु हरि बदन निहारि के ।
पलक नयन टारि उर पछु को बघारि
लहि ओजियारी इत उत सुख सारि के ॥
चात्रिक निरखि घन मुदित मयुर ग
तिमि गोपीगन रूप लखत मुत्तारि के । -

एक टक ध्यान करु हरि रूप उर धरु ।
 नयन अघात नहिं पिवत उघारि के ॥
 जग रस रग त्यागी हरि रस रग रागी ,
 एक टक इत उत देखु भव टारि के ।
 जत नारी रूप धारी एउ टक चहु चारी
 तत कृष्ण आगे ठाठ रूप वर धारि के ॥
 नयन अनद देइ गोपीगन सग लेइ
 क्रीडा कर सरि तट सकल दुलारि के ।
 सुख कर वशीवट सरि रमणीय तट
 केलि करु हरि गोपी प्रेम सु विचारि के ॥
 सम नयनाऽनुराग नहिं कोइ जप जाग
 कृष्ण गोपी दीन्ह गति फल अधिकारि के ।
 अगम सुगम कीन्ह कृष्ण भक्ति ज्ञान दीन्ह
 निठुर भयेउ रामसेवक की पारि के ॥३०४॥

राग धनाश्री

म्रज नारी सकल हरस्यई ।
 करु मुरली की अधिक बडाई ॥टेका॥
 धनि वन धनि भुवि धनि तरुवर धनि सरि निरुट सोहाई ।
 वेणु जाति कहं धन्य कहत बुध निकट किचक बहुताई ॥
 एक बीज महे निश्रित जोइ बहु कीचक की अधिकाई ।
 सोउ कीचक सन एक धन्य वर जेहि मुरली दरसाई ॥
 ताहु सन अति धन्य परं जत हरि कर मो जोइ आई ।
 वेध धन्य शत कोटि ताहु सन जोइ हरि निज मुर ली लाई ॥
 पित्रत अधर रस भाग्य कहीं किमि रात्रि दिवस सुर छाई ।
 धनि मन्ना जेन्ह दीन्ह अधिक सुख वेणु धम उपजाई ॥

जोइ बसी धुनि सुनत लोक प्रय मोहत लोग लोगाई ।
 बसी कौ भाग्य कहत अति गोपी रामसेवक सुख पाई ॥३०५॥
 मुनि धर्मी शब्द सुप्रकारी ।
 तिहुँ लोक शोक भ्रम हारी ॥टेका॥
 ज्ञान भक्ति रस पूर चहुँ चहुँ मुनि गन सुनत सुखारी ।
 देव पितर लहि भाग अनदित असुरन उर डर भारी ॥
 रग मृग लहु सुर बिनु व्याधा जग स्थावर सुख सारी ।
 रत्रि शशि नखत महा सुख लहि उर शिथिल भयो जिव भारी ॥
 सरित सिंधु महँ धाई चलत जल सोपि घहत नहिं धारी ।
 घोर पिवत नहिं यत्स धेनु गति गल वृण रहु सब धारी ॥
 अमित शब्द बसी महँ निकसत सुप्रप्रद सब नर नारी ।
 जड़ फहँ करत सचेत चेतन कह जड़ करि शिथिल सवारी ॥
 काम सुप्रद प्रद शब्द लागु उर गोपिन कह अति प्यारी ।
 रामसेवक अस सुनत शब्द बर गहु भट्ट चरन सुरारी ॥३०६॥

राजित तन मेघ श्याम लजित लखि कोटि काम

। अद्भुत शत इन्दु कोटि तेज धर तमारी ।

भूपन धर बसन बारि तडित नखत गन दुलारि

। मोर शत चकोर कंज नहिं जनु सवारी ॥टेका॥

सप्त सूर तीनि प्राम मुरुछल एक ईश ललाम

। गावत मुरली सुधारि मोहत जिव भारी ।

मुरली रस रव गभीर सुनत ध्यान तजत घोर

। पीवत रस रग राग जगत सुरति टारी ॥

मुरली रव सुनत कान लेहत सकल भक्ति ज्ञान

॥ देव पितर दनुज नाग मोहेउ नर नारी ।

खग मृग जल चर अपार कीट भृंग बन पहार

मुरली रव सुनत शिथिल अचर चर सुरारी ॥

रविशशि धुनि सुनत कान उड गन जुत शिथिल ज्ञान ।-

१) । रथ समूह चलत, नाहिं वाहन, सुख, भारी ।

धाइ सिंधु चलत नीर सरिगन जल छन न थीर

मुरली रव सुनत शिथिल, बहत नाहिं वारी ॥

वद्धत तजु, चीर पान शब्द सुनत मुरलि कान - - ।

॥ १ ॥ निगलत नाहिं घास धेनु देह सुधि पिसारी ।

नटवत हरि रूप वारि, वशी धुनि रस सुधारि

। , मोहेउ ब्रज नारि अधिक लीन्ह दिग पुकारी ॥

जड़ चेतन्य कृष्ण कीन्ह चेतन जड, ज्ञान दान्ह -

। ॥ मोहेउ त्रयलोक जीव मुरलि, अधर धारी ।

मुरली धुनि सुभग कारि दीन्ह भक्तिरस विचारि

॥ १ ॥ - रामसेवक ज्ञान भक्ति मागु तोहि मुरारी ॥३०५॥

राजित श्रीकृष्ण श्याम शोभा शत-कोटि काम,

। ॥ १ ॥ - मोहत, नर नारि, सकल वेणु, वर बजाई ।

नटवत वपु वर सुधारि भूपन शुचि बसन वारि,

॥ १ ॥ भाल तिलक फेस चिकुर सुर मुनि सुखदाई ॥३०६॥

मुरली वर शब्द धाय रही सकल लोक छाय ।

॥ १ ॥ देव दनुज मनुज नाग पितर गन लोभाई ।

सिध्य गन सुनींद्र ध्यान करत सुनत देइ कान

। १ ॥ पावत विभ्राम जगत सुरति को गवाई ॥

देव पितर भाग पाय मानहुँ सुख अमर छाय ।

॥ १ ॥ भक्ति रस अडोल भक्ति पिवत हरखाई ।

मुरली धुनि सुनत अचर प्रेम विमश होत सचर

। १ ॥ कृष्ण रूप निरखि मनहु चलत सरन धाई ॥

सचर सुनत पुलक गात पक्षी, मृग कीट व्रात

अचर, गति सुपाय शब्द ध्यान मन लगाई ।

बद्धरा तजु चीर पान शब्द सुनत लहु सु ज्ञान ।
 । । निगलत नहिं धेनु घास प्रेम उरसि छाई ॥

रवि शशि वर नखत थीर चलत नाहिं सरित नीर ।

। । पवन गवन रहित अग्नि भूतल सकुचाई ।

भक्ति सकल शब्द सुनत चकित निज मनसि गुनत

। । वशी धुनि जानि मोनि कृष्ण सरन आई ॥

गोपीगन धाइ धाइ कृष्ण निकट आइ आइ ।

॥ - ॥ जीवन फल पाइ कज चरन लहि अघाई ।

कृष्ण कृष्ण कृष्ण रटत जन्म कोटि पाप कटत ।

रामसेवक ताप घटत कृष्ण सरन पाई ॥३०८॥

राग धसंत

। ।

राग धसंत

बृदावन ललति लवग लाल ।

कुसुमित तरु सघन सुलता जाल ॥टेक॥

बकुल कदम पनस केदली शुचि ।

। । अति राजित वर तरु तमाल ।

घट पीपल दल विल्व ललित अति ।

। । लहि वसत राजित रसाल ॥

कनक वृक्ष पाट लजक बहु शोभित ।

। । जेहि तरु सेत रसाल ।

जाही जुही बहु वेइली सोहावन ।

। । पुष्प अधिक तरु उर्ध ताल ॥

वैर विहाय मृगा अति राजित ।

। । व्याघ्र वृकादिक लघु शृगाल ।

विपधर विष तजि रहत बृदावन ।

। । लहि ऋतु राज उमग च्याल ॥

मोर चकोर कार परावत
 राजित किमि गनु बहु मराल ।
 शृगसित बहु रग कमल सरन सर
 शृग रसिक शोभित सु नाल ॥
 कृष्ण ललित बहु रग उडावत
 हिलि मिलि गोप बाल ।
 बाध सुनत त्रयलोक अनदित
 रामसेवक गति रति गोपाल ॥३०९॥
 शृंदायन भुवि श्रुतुराज राज ।
 श्रीकृष्ण क्रोडित बहु शिशु समाज ॥टेक॥
 लता विटप वन सघन सोडावन
 देत मनो फल फूल नाज ।
 ललित पत्र चहुँ दिसि अति राजित
 मध्य मदन श्रुतु राज गाज ॥
 बहु विधि ताल शृदग धजावत
 गोपवाल करि विविधि साज ।
 कृष्ण ललित भूपन पटधारी ।
 मुख मुरली मुरचग बाज ॥
 रग सुरग उडावत इत उत
 किंसुक तरु तन अधिक भ्राज ।
 हिलि मिलि गावत सुख उपजावत
 सुनत गुनत गत लोक लाज ॥
 श्रुतु बसत हरि रूप विलोकत
 मदन सहित करु चरन राग ।
 कृष्ण फाग रस रग अनूप
 रामसेवक उर प्रेम दाग ॥३१०॥

होरो

सग राधा प्यारी ।

होरी खेलत कुज त्रिहारी ॥टेका॥

कुज लता द्रम अधिक सोहावन भूपन पसन सवारी ।

त्रयपुर मोहन हेतु रूप बर मुरली अधर फर धारी ॥

गोपबाल हरि सग रग लेइ राधा सग ब्रज नारी ।

बाद्य वजावत गोपबाल बहु नारि सकल फर तारी ॥

गाइ फाग सुर रस उपजावत रग सु इत उत डारी ।

पुष्प विनोद कोइ छन करु हरि अविर् वदन मिर भारी ॥

कृष्ण वदन राधा रग लावत राधा रंग मुरारी ।

इत उत प्रीति परसपर लखि उर सुधि बुधि देह बिसारी ॥

अपिल निरजन केलि करत भुवि लखि सुख लहु अधिकारी ।

ज्ञान ध्यान रस भक्ति देत हरि रामसेवक अघ टारी ॥३११॥

सरि कुज लता मो खेलत कृष्ण बर होरी ।

कृष्ण मेघ तन श्याम ललित अति तडित राधिका गोरी ॥टेका॥

गोपबाल हरि सग मुदित मन राधा नारि षटोरी ।

होत परसपर फाग दुहुँ दिसि लखि निज निज जोरी ॥

अनिर गुलाल केसरि रग मिभित अपर रग बहु घोरी ।

दुहुँ दिसि चलत अभित पिचुफारी रस प्रद फाग बनोरी ॥

गोमुख ढोल मृदग झाल डँफ दुँदुभि धुनि चहुँ ओरी ।

वजत मुरुचग सु अगन फीरी मुरली धुनि शुभ सोरी ॥

इत उत रग लगावत हिलि मिलि अधिर धारि भरि मोरी ।

राधा वदन निज हरि रग लावत हरि राधा मलोरी ॥

अस बर फाग देखि सुर हरखित सुमन सुश्रुष्टि करो रा ।

ब्रज बासी सुर रामसेवक लहु गुणि गन बहु विबु घोरी

बृषभान की दुलारी । ११

त्रिचरत सग मुरारी ॥टेक॥

जूथ जूथ गोपी सग गावत वजावत, कर तारी ।

केस रचित चूडामणि राजित बेणो, भाल सुख कारी ॥

केसरि कस्तुरी अग, चगचित, भूपन, वसन सवारी ।

घेरि लीन्ह हरि कहँ प्रमुदित, सब फागुन की देइ गारी ॥

रग अग हरि को सत्र लावत हरसि हरसि ब्रज नारी ।

वदन रग, हरि लावत राधा रहँसि, त्रिहँसि कर धारी ॥

हरि निम्फुटाइ धाल सग राजित सरि, सिर रग बहु डारी ।

राधा मुख मलिरग विप्रिधि त्रिधि भिजि सकल तन सारी ॥

कृष्ण राधिका फाग परसपर, खेलत रग भरि थारी ।

पुष्प वृष्टि सुर, रामसेवक करु गावत बुध श्रुति चारी ॥३१३॥

रग भरि भरि मारी ।

कृष्ण धारि पिचुकारी ॥टेक॥

उमँगि उमँगि अनुराग प्रेम रस जग मग सुरति विसारी ।

गावत फाग, सुरस, उपजावत मुरली अंधर कर धारी ॥

गोपबाल गोपीगन, हिलिमिलि इत उत रँग, बहु डारी ।

काहु की, भीजत सुरग चुटरी, काहु की सिर पट भारी ॥

राधा वदन रग, कृष्ण, लगावत, राधा वदन मुरारी ।

ब्रज भुवि धूम मचावत यहि, त्रिधि कृष्ण सुजसे, विस्तारी ॥

ब्रह्म निरजन सतुन केलि, तन सुर मुनि रूप निहारी ।

सगुन ब्रह्म कहि जैति पुकारत सुर, तरु सुमन सु भारी ॥

कृष्ण राधिका फाग निरसि बर सुर मुनि सकल सुगारी ॥

निरसत रामसेवक क्रीडत हरि हरसित ब्रज नर नारी ॥३१४॥

रागिनी खोरठी तस्या दास्या तस्या किरुरी
रागिनी भुमरि अति भाषा फगुवा चहक

यशोदा धरजहु कुँवर कँधाई ।

होत प्रात निति बालक लेड बहु गृह गृह धूम मचाई ॥टेका॥
गृह कृत, एकउ करन नहिँ पावत देइ, गाली चमकाई ।
धुवत अधिक मचलात केलि हित अग, प्रति अग लपटाई ॥
गृह गृह जाइ लुकाइ बाल मिलि भूपणु चीर चोराई ।
गोपछरन की धधन छिनि छिनि इत उत धरत छपाई ॥
दधि मिलि ग्यात मुकुटि गहि फोरत देत सो छिर बढाई ।
हँसि हँसि कोइ छन बछरन छोरत धेनुन देत पियाई ॥
मूत्र पुरीप, धुँकत इत उत बहु गृह प्रति गृह करु नाई ।
तव सुत मम नहिँ अपर बाल करु तेहि ते तोहि कहु गाई ॥
ओरहन न्याज ते जात नद गृह पुनि पुनि लेत बोनाई ।
कृष्ण रूप गहि रामसेवक, उर गोपी रहत लोभाई ॥३२५॥

गोपिन की भाग्य चहुँ श्रुति गाई ।

सुर मुनि गन जाको ध्यान न पावत अग अग हरि लपटाई ॥३२६॥
छन भरि तजत न रूप कोइ हरि मन तन रटु अरुमाई ।
श्याम धरन तत, मेघ महा छनि चात्रिक नयन यनाई ॥
चरन कमल अनुराग करत निति मधुकर मरिम ताभाई ।
जौ कोइ छन नहिँ मिलत कृष्ण तहि आरहन लइ गृह जाई ॥
दधि माखन घृत चीर नीर लेइ इत न्त गृह, दरपाई ।
गाली देइ चमकाइ बहुरि एह तज डिग ध्यायइ धाई ॥
यशुमति सुनि उर लाइ लीन्ह सुत नाति सुधर्म सिखाई ।
बोध कीन्ह गोपिन कर यशुमति रामसेवक सुत पाई ॥३२७॥

गोपिन सग नाचत बेणु बजाई ।
 अमित कृष्ण तन धारि धारि त्रिय रूप परम दरसाई ॥टेका॥
 मुरली अधर बजाइ लोक त्रय मोहेउ लोग लोगई ।
 जड चेतन जत जीव तीहुँ पुर सुधि बुधि सन निसराई ॥
 छवो राग रागिणि मिलि गावत सुत सोइ सग बनाई ।
 सप्त सुर गति भ्राम तीनि वर मूर्च्छल एक ईश लाई ॥
 गान तान वर ताल एक गति निर्रत इत उत धाई ।
 गहि बहियाँ कर कनियाँ चढि चढि हिलि मिनि सन लपटाई ॥
 सकल गोपिन को मान रासु हरि कर गहि काँध चढाई ।
 राधा ललिता आदि सुकृत करि रामसेवक सुख पाई ॥३१॥
 गोकुल महँ बसी बजाइ मुरारी ।
 बसी को धुनि सुनि त्रयपुर मोहेउ सुर नर मुनि गन झारी ॥टेका॥
 रग मृग जीव पतग भग गति भृग सेस सुख भारी ।
 बद्धरन नोर क्षीर तजि दीन्हो वृण मुख धेनु न धारी ॥
 शिथिल पवन गति गवन मंद रवि बहत न यमुना वारी ।
 ब्रज विशेष सुख जीव सकल लहु प्रमुदित बहु नर नारी ॥
 हिलि मिलि गावत आय सकल त्रिय रजनी करु ओंजियारी ।
 रास बिलास करन हरि लागेउ रजनी बहु विस्तारी ॥
 कर गहि निर्र करत बहु बिधि हरि कोटिन रूप सवारी ।
 ब्रज सुख रामसेवक किमि वरण थक्यो श्रुति चारी ॥३१॥
 गोकुल महँ ब्रह्म सगुण तन

अनुशासन जोड़ करत तिहुँ पुर जड चेतन नर नारी ।
 सोइ हरिब्रजधासिन बस भयो बहु सकल बचन अनुसारी ॥
 कर गहि इत उत हरि नाचत देत पिवन, हित धारी ।
 लहत परम सुख रामसेवक जन महिमा कहत मुरारी ॥३१९॥
 गोकुल मह, अद्भुत रूप मुरारी ।
 निर्गुण ब्रह्म, अलख अमिताशी सगुन सोइ तन धारी ॥टेका॥
 जन्म लीन्ह बसुदेव देवकि गृह सुर नर मुनि हित कारी ।
 नद यशोदा के गृह गो पुनि ब्रज जन लहु सुख भारी ॥
 पुतना को बध कीन्ह दीन्ह गति अघा बकासुर मारी ।
 कृष्णवर्त लबासुर बध करि बेसी बधि हरि तारी ॥
 मुष्टिक बधि चारुदुर मारु पुनि बसहि मारु प्रचारी ।
 देवकि अरु बसुदेव लह्यो मुख कुबेरिहि करु धर नारी ॥
 उद्धव को पठयो गोकुल हरि भक्ति ज्ञान अनुसारी ।
 चरित परम शुचि रामसेवक कहि भक्ति लहत बनवारी ॥३२०॥
 सकल लोक भयटारि मुरारी ।
 चहुँ जुग नाम उदार कृष्ण कर बुध जन कहु श्रुति चारी ॥टेका॥
 सुर नर मुनि सुख अगणित लहु हरि उम भार भुवि हारी ।
 करु विशेष रक्षा गोकुल जन शोक, भर्म भय टारी ॥
 बूढत ब्रज जल इन्द्र कोप ते गोवर्द्धन नख धारी ।
 अमित असुर सन जान कीन्ह सरि खोजि खोजि खल मारी ॥
 दावानल करि पान श्रान करु गोप जीव गन मारी ।
 फालिय नाग निकारि नीर ते निर्मल करु सरि बारी ॥
 अमित पतित कह दीन्ह कृष्ण गति अथ निरखहु मम पारी ।
 फागु परम एह रामसेवक कहु भक्ति हेतु बनजारी ॥३२१॥
 गोपिन सग नाचत कृष्ण, कन्धैया ।
 जत गोपी तत कृष्ण रूप धरि कर गहि गोप लोगैया ॥टेका॥

रान मुरली मुरुचग बजावत गोमुख वेणु बजैया ।
 हिलि मिलि गावत रस उपजावत सुर समूह गति छैया ॥
 तोरत तान मान प्रिय राखत नाचत ताता थैया ।
 लपटि भूपटि इत उत रग लावत गोपिन उरसि सोहैया ॥
 रास प्रिलास देखि मन मोहन प्रय पुर रूप लोभैया ।
 गोपी गन लरि प्रहस सहज सुर अग अग लपटैया ॥
 देखि प्रिनोद मोद उर पुर बहु देवनारि ललचैया ।
 कोटि काम रति सग एक लखि रामसेवक सुर पैया ॥३२॥
 देखो कृष्ण सग बहु धनिया ।

धन चपला इव इत उत चमकत कर गहु हरि निज पनिया ॥टेका॥
 गल वैजती हार सोहावन सीस मुकुट चौतनिया ।
 तारा गन मह चंद्र प्रिराजत उपमा नहि कोइ अनिया ॥
 सुरति ताग रस रग गहि पोहित एक एक घर मनिया ।
 रास मडल करि हिलि मिलि नाचत कर इत उत तनिया ॥
 गोपी गन अग अग अग मेलत कर गहि पुनि चहु वनिया ।
 पुनि निरत कर गहि इत उत प्रिय क्रिमि धरणै पलटनिया ॥
 खन मुरली मुरुचग बजावत गावत मिलि रस रनिया ।
 रामसेवक धनि भाग्य गोपिन की राधा सन की रनिया ॥३२॥
 यशुमति राखहु बाल बुझाई ।
 तत्र दिग आइ मौन होय वैठ्यो मम गृह करु प्रमुताई ॥टेका॥
 अति खोटा डाटा तोहि सुदर मोकहँ नहीं, सोहाई ।
 तुम कहँ प्रिय हम कहँ प्रिय नार्हीं केहि बन जाउँ पराई ॥
 बालक बनि तत्र दिग एहँ बोलत सुनहु तामु मनुसाई ।
 गोप बाल लेइ गृह गृह धावत पुनि गृह रहत छपाई ॥
 दधि माखन गहि खात खियावत देत सो बहुरि लुटाई ।
 भौंड फोरि मर्कट इव चितवत बद्धरन छोरि पिआई ॥

जों कोइ देखि वरन हित धावत इत उत भवन लुकाई ।
 कर अगुली चमकावत बहु विधि हँसि हँसि सीस मुलाई ॥
 अति मचलात छुपत कर बालक अब एह आवत धाई ।
 सान बुझाइ धोलाइ आउ गृह रामसेवक हरखाई ॥३२४॥
 गोपी सग्न हरि वर रूप लोभाई ।
 नित उठि ओरहन देत यशोदाहिं कर गृह शयन बोलाइ ॥टेका॥
 हिलि मिलि गावत वाद्य बजावत लौकिक लाज गवाई ।
 अनिर गुलाल उडावत इत उत मुरख लावत मुसुकाई ॥
 इत उत चलत अमित पिचुकारी नाचत पुनि समुदाई ।
 जो सुख सुर दुर्लभ श्रुति गावत सो रहु ब्रज भुवि छाई ॥
 दूम मचावत चौहट फिरि फिरि मुरली अवर बजाई ।
 श्याम गात शत काम कोटि छनि निरग्रत लोग लोगाई ॥
 सत चकोर देखि तन वर हरि पीवत नयन अघाई ।
 गोप गोपी गन अति प्रसुदित ब्रज रामसेवक सुर पाई ॥३२५॥
 गोपिन संग नाचत कुज निहारी ।
 कर गहि इत उत हिलि मिलि गावत तोरत तान मुरारी ॥टेका॥
 हरि मुरली मुरुचग बजावत भेरी न फेरी सुधारी ।
 गोमुख शर मृदग माल हफ गोपीगन करतारी ॥
 रास मिलास हुलाम अधिक उर इत उत रग सिर डारी ।
 चलत अमित पिचुकारि दुहँ दिसि एक सो एक प्रचारी ॥
 गोपवाल गोपीगन हिलि मिलि त्रयपुर छुट्टण पुकारी ।
 त्रयपुर सुर लहु रामसेवक उर अधिक गोप बचनारी ॥३२६॥
 एह अचरज भइ भारी मुरारी ।
 निर्गुण प्रदा सगुण होय आयेउ सुधि बुधि काहें निहारी ॥टेका॥
 जाफर आदि न अत लखै कोइ गोप गौदन सन पारी ।
 परिपूरण त्रयलोक एक रस गृह यन घरु बनवारी ॥

अमित असुर वध कीन्ह जोइ हरि कमहि मार प्रचारी ।
 सोइ कहँ घेरि गोपीगन कर गहिपटकेउ भूमि पद्वारी ॥
 गोवर्द्धन कर नर हरि रासत गोपी उर हरि धारी ।
 सफल अग रग लावत हिलि मिलि गावत हरि जस भारी ॥
 नाचत इत उत कृष्ण कृष्ण कहि वाजत बहु करतारी ।
 गोपीगन कहु लाय कृष्ण उर हम जीती तुम हारी ।
 कर गहि पुनि कहु रामसेवके त्रिय पूरण भाग्य हमारी ॥३२७॥
 अब को पारी हमारी मुरारी ।

अब जनि तजु प्रमल बनि अबलन हम जीती तुम हारी ॥टेका॥
 अति अंधियारि भयावन कर जनि तेमे नारि विसारी ।
 बन छिपि गयो इत उत तोहि खोजत नारिन लहु दुख भारी ॥
 सुरति डोरि तोहि लीन्ह करसि उर प्रेम स्व गहेउ प्रचारी ।
 दीजय दान दिश्रावत ललिता राधा कहत पुकारी ॥
 कर गहि गावो वजावो हिलि मिलि नाचहु कनियो धारी ।
 रास विलास कोन्ह रजनी रुचि गोपीगन भय टारी ॥
 करु विस्तार रात्रि सुरदायक देखत सुर मुनि मारी ।
 अति बिनोद करि रामसेवक हरि गोपिन कीन्ह सुरारी ॥३२८॥
 मुरारी अब जनि तजु ब्रज नारी ।

हम अबला खोजत बन लहु दुख रात्रि भयकर कारी ॥टेका॥
 मुरली धुनि करि मोहेउ मृगी सम गृह कृत तजि आये मारी ।
 मातु पिता परिवार त्यागि सब सुत पति धाम अटारी ॥
 चरण सरन गहु स्वारथ हित हरि मन तन तोहि प्रभु हारी ।
 सरन त्याग नहि करत कोइ हरि का अबला रिपु भारी ॥
 धाम ताप लसि बेना डोलाइव शीत हरव अंगारी ।
 छाया करु कर कनियो चढि तव वरपा ऋतु मेह बारी ॥
 पानी पियाइत प्यास लगे हरि सोआइत कर धारी ।

भूख लगे रियोइन निज कर उठाइन मुख -मारी ॥
 हिलिमिलि गावत अंग लपटावत कृष्ण भान त्रिचारी ।
 जस मुख रामसेवक गोपी लहु तस नहिं अज त्रिपुरारी ॥३२९॥
 देखो रास विलास मुरारी ।
 नाचत गोपी उधारी ॥टेका॥
 जो अज अलख निरजन निर्गुण त्रिगत भेद अत्रिकारी ।
 सोइ सखिदानद एव घन व्यापत सगुण सरूप स्व धारी ॥
 क्रीडत गोपीगन हिलिमिलि हरि रूप अनूप सवारी ।
 गहि बहियो गोपी कनियो चढि नाचत बाँह पसारी ॥
 जत गोपी तत कृष्ण रूप पर कर गहि त्रिवि विस्तारी ।
 बीच बीच जनु रचित नील मणि शशि मणि कोर स्व पारी ॥
 निरत गावत मुख उपजावत मेघ तड़ित दुति भारी ।
 रति शत कोटि काम जनु निरत छत्रि शृंगार बलिहारी ॥
 देव मुदित निरखत हरि लीला सुमन अधिक तरु मारी ।
 रास विलास कहत मुख लहु बहु रामसेवक की पारी ॥३३०॥

दोहा

मुमरि राग मो चरित हरि रामसेवक कहू गाय ।
 कहत सुनत हँस बोलि शुचि ज्ञान भक्ति नर पाय ॥१॥
 फाग परम हरि अनघ जस गावहिं सुनहिं मुनान ।
 लहहिं चारि फल अघम नर रामसेवक कल्याण ॥२॥
 कृष्ण चरित शत कोटि महँ राम विलास उदार ।
 कहत सुनत हरि बाल गुण अघम होय भय पार ॥३॥
 कलि निज अघ अवगुण समुक्ति सूर्प तनय की प्राप्त ।
 रामसेवक अति प्रसित ठर कृष्ण सरन कर आस ॥४॥

रागिनी सोरठी तस्या दास्या किंकरी

॥ ठोमरी टपारेक्ता वा न्यावा घोर्ध्य ॥

त तनन तनन तोरु ताना ।

ग गनन गनन करु गाना ॥तेका॥

॥४॥ च घनन घनन चाना ।

॥ ५ ॥ भ भनन भनन भर माना ॥

॥ ६ ॥ प पनन पनन पन पाना ॥ ६ ॥

॥ ७ ॥ म् म्मनन म्मनन म्मनमाना ॥

॥ ८ ॥ ठ ठनन ठनन रचि, ठाना ।

॥ ९ ॥ ट, टनन टनन लपटाना ॥

॥ १० ॥ न ननन नारि रस जाना ।

॥ ११ ॥ म मनन मनन, मराना ॥

॥ १२ ॥ कोइ नद ग्राम धरिसाना ।

॥१३॥ एक, कृष्ण राधिका स्थाना ॥

करि रामसेवक उर-ध्याना ।

लहु भक्ति प्रिरति विज्ञाना ॥३३१॥

॥ १४ ॥ ता ल्ये ल्ये ल्ये ल्ये थाई ।

॥१५॥ हरि नाचत बाँह उठाई ॥देका॥

॥ १६ ॥ कर गोपी गन कर, लाई ।

॥ १७ ॥ निज रूप अमित दरसाई ॥

॥ १८ ॥ रस रग राग बहु गाई ।

॥ १९ ॥ जग मोहन मुरली बजाई ॥

॥ २० ॥ धर, भूषण बसन धनाई ।

॥२१॥ शत-कोटि काम छवि छाई ॥

हरि गोपि अग लपटाई ।

सुर नारि सफल ललचाई ॥

एह भक्ति नात अधिकाई ।

सुर ' रामसेवक ' जन पाई ॥३३॥

॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

राग सोरठी

वेप रातिनी रूप हरि आई ।

रस नयन सुनयन मिलाई ॥टेका॥

भूपन बसन नारि सम धरि वर केस सुविधिनी बनाई ।

अजन नयन सोहावन पावन भाल वेणी मलकाई ॥

इत उत धँचत धोलत चूडी गोदना गति समुभाई ।

राधा भवन कियो गवन जवहिं हरि प्रीति अलौकि छाई ॥

पेटारिन छाला मूट ग्योलि ग्योलि वस्तु आमन दरसाई ।

देश देश को भाव रग कहि चूड़ी आदि वताई ॥

सोनहुली रूपहुलो कहि कहि रत्न जडित बहु गाई ।

राधा कर गहि हरि पहिरावत रामसेवक सुर पाई ॥३३॥

वेप रातिनी रूप हरि धारी ।

राधा भवन सुख धारी ॥टेका॥

देश देश की वस्तु घतावत भोल अधिक अनुसारी ।

अमूल्य कहि कहि पहिरावत हँसि हँसि वदन निहारी ॥

कर गहि भाल बिंदु हरि लावत लौकिके बचत दुलारी ।

सिर वदी सोलत सिर मोरत मुँकि मुँकि केस विधारी ॥ १ ॥ १ ॥

वेणी मलक भाल दरसावत जूट केश सु प्रिचारी ॥ १ ॥ १ ॥

भूपन अवन भाल अति राजित जनु शत इन्दु तमारी ॥

राधारमण वेद बुध गानत तहि सुर हित हरि नारी ।

सुरप्रद रामसेवक त्रिभुवन हरि राधा मन सुमुरारी ॥३३॥

॥ राग टोढी ॥

राधा कोइ न्याज गृह राखत मुरारी के ।
लोक लाज तजि रहु सरन सुधारी के ॥टेका॥

सिर पीर कहु कोई अरि दाह बहु रोई
मातु पितु सुनि बोलु वैद्य सु निहारि के ।

वैद्य नारी धरि नाइ दुख राधा नहि पाइ
शास्त्र गति भुल नहि कहत विचारि के ॥

वैद्य नहि नारी जानु एहि को अनारी मानु
नद सुत बोलु पितु कहत पुकारि के ।

वृषभान सुनि कान लहि उर गुरु ज्ञान
नद सुत बोलि लीन्ह बहुत दुलारि के ॥

कृष्ण कर गहि लीन्ह छन दुख दुरि कीन्ह
दरस परस करि प्रेम रस डारि के ।

उठि प्रीति पहिचानी राधा रूप गुन रानी
कर गहि मुसुकानी पर दुख टारि के ॥

राधा रानी महारानी भक्ति ज्ञान सुखदानी
पर अर्घ रज हरु जस बिस्तारि के ।

कृष्ण राधा रामसेवक को भक्ति दानी
चरित बिसदे सुखप्रद नर नारि के ॥३३५॥

राधा गृह हरि रहु रात्रि दिवस छाया के ।
रूप तौ अनेक एक रूप प्रगटाय के ॥टेका॥

प्रेम रस पहिचानी उर बसु सुखदानी
रहत लोभाइ दुइ रूप दरमाय के ।

॥ प्रगट सु केलि करि राधा गल कर धरि
अग अग प्रति -हरि रहु अरुमाय के ॥

घरि घरि पलङ्गन कहि हरि, गुन गने ।

॥ राधा रात्रि दिन रहु उर पुलकाय के ।

श्यामल गवर गात बोलत सुगम बात ।

खात हिलि मिलि एक तन मन लाय के ॥

तरुणै तमाल भाल सघन बेइलि जाल ।

॥ तडित सुघन लखि रहु ललचाय के ।

छवि सु शृंगार घारी रवि शत काम भारी

॥ रूप को निधान तेज रहत सिहाय के ॥

उपमान कोइ पाइ कधि रहु सकुचाइ

॥ राधा हरि रूप मन राखत लोभाय के ।

अतिशय अनूप रूप राधा कृष्ण जग भूप ॥

॥ महाराज महारानी सुखदानी पाय के ॥

राधा कृष्ण केलि गाइ कधि नहिं थाह पाइ

ध्यान करि उर कछु जस कहु गाय के ।

कलि काल त्रास रामसेवक को एक आस

राधा कृष्ण सरन पुकारु सिर नाय के ॥३३६॥

राग हिंडोल

पलना भूलत एकै साथ ।

मुँकि मुँकि जोरि जोरि माथ ॥टेक॥

कृष्ण राधिका श्याम गवर तन मेघ, तडित तथि साथ ।

रस प्रद प्रेम पुलक छवि छावत वरपत शुचि चक्षु पाय ॥

सुंदर बदन नयन झलकावत घरि राधा, बेरि हाथ ।

रसिक शिरोमणि रस उपजावत हरि त्रिभुवन एक नाथ ॥

राग हिंडोल गाय सुख पावत अधर ललित लहि काथ ।

दरान पक्ति निरदत पावत सुख सुर, नर मुनि जुय जाथ ॥

- राधा भवन रहत हरि निति निशि ।
1-32/11 आजु हमारी पारी री ।
ललिता प्रतिदिन शोच करत अस
115 7 1 हरि विनु सब व्रज नारी री ॥
रिमि किमि बरसत जीव अति तरसत
11 115 1311 कव आवहिं बनवारी री ।
सकल भाव हरि रामसेवक करु
113 171 अस घर सरन मुरारी री ॥३१॥
चहुँ दिसि ते होय आवत घदरवा
11 13 131 हरि विनु मोहि डेरवावत री ।
धवलो धूसर धूमल कारी
116 17 1 पीत हरित बहु धावत री ॥टेका॥
गरजत बरसत चपला चमकत
1116 177- विरहिनि भय उपजावत री ।
सनननन चहुँ पवन चलत अति
117 177- 1 सननन भोगुर गावत री ॥
11 7 मोर मोर दादुर धुनि करु बहु
पिपिहाः पतिहि मोलावत री ।
विनु पति रयन सयन न चयन लहु
कोकी शब्द सुनावत री ॥
115 1 नारि रयन पति पाइ लहत सुख
116 177- 117 मोहि सकल ललचावत री ।
वरपा अतु सुख लहत महत त्रिय
11 117 177 जोइ पति भवन बसावत री ॥
विरह अनल लहि गान गोपी करु
13 17 1 हरि लहि उरसि जुडावत री ।

अर्द्ध उर्द्ध पवढत छनि छावत रति मनसिज जनु आथी
 रामसेवक अघ दूरि बहावत सुनि गुनि कहि हरि गाथ ॥३३५॥
 हिंडोला भूलना सुख सारी ।
 संग राधा प्रिय नारी ॥टेका॥
 छवि शृंगार जनु श्याम गवर तन रस मोहनि रग डारी ।
 रस बस हँसि हँसि कर कर मेलत इत उत वदन निहारी ॥
 रेसम डोरी कनक राजित चहुँ अति चिप्रित रग वारी ॥
 चदन की लकड़ी सिद्धित अति शुचि सुगध सु अटारी ।
 अर्द्ध उर्द्ध पवँदावत गावत मुरली अधर सुधारी ॥
 गावत रागहि डोल बजावत राधहि उरसि दुलारी ।
 रूप अनूप विलोकत सुर मुनि सुख लहु तिहुँ पुर भारी ॥
 मज जन सुख बहु रामसेवक लहु निरखत वदन मुरारी ॥३३६॥

अथ धुरिया मल्लार

॥३३७॥ घेरि आइ घदरिया कारी री,
 श्याम त्रिना जाँव लरकत तरसत
 लखि नि परत ओंजिआरी री ॥टेका॥
 श्याम गवर किमि होय भवन मम,
 सूकुन हाथ पसारी री ।
 अति थँधियारी कारी लगात भवन भारी,
 हरि डिग किमि चलु प्यारी री ॥
 केहि विधि मिलन होय हरि सजनी,
 मास सकल रजनी दुखप्रद
 निप्रभादव अति अँध्यारी री ॥३३८॥

- राधा भवन रहत हरि निति निशि ॥ १ ॥ ॥ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ आजु हमारी पारी री ।
 ललिता प्रतिदिन शोच करत अस ॥ १ ॥ ॥ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ हरि विनु सब ब्रज नारी री ॥
 रिमि भिमि वरसत जीव अति तरसत ॥ १ ॥ ॥ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ कब आवहि धनवारी री ।
 सकल भाव हरि रामसेवक करु ॥ १ ॥ ॥ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ अस घर सरन मुरारी री ॥ ३१ ॥
 चहुँ दिसि ते होय आवत बदरवा ॥ १ ॥ ॥ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ हरि विनु मोहि डेरवावत री ।
 धवलो धूसर धूमल कारी ॥ १ ॥ ॥ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ पीत हरित बहु धावत री ॥ टेका ॥
 गरजत घरसत चपला चमकत ॥ १ ॥ ॥ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ निरहिनि भय उपजावत री ।
 सननन चहुँ पवन चलत अति ॥ १ ॥ ॥ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ भननन भोगुर गावत री ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ सोर दादुर धुनि करु बहु ॥ १ ॥ ॥ ॥
 पिपिहा पतिहि घोलावत री ।
 विनु पति रयन सयन न चयन लहु
 कोकी शब्द सुनावत री ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ नारि रयन पति पाइ लहत सुख
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ मोहि सकल ललचावत री ।
 वरपा ऋतु सुख लहत महत त्रिय ॥ १ ॥ ॥ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ जोइ पति भवन बसावत री ॥
 विरह अनल लहि गाना गोपी करु ॥ १ ॥ ॥ ॥
 ॥ १ ॥ ॥ ॥ हरि लहि उरसि जुडावत री ।

दरसि परसि करि केलि कृष्ण तन । । । । ।
 रामसेवक सुख पावत री ॥३४०॥
 चमडि घुमडि चहुँ चलत बदरवा । । । । ।
 रूप अमित दरसावत री ।
 रिमि मिमि मिमि मिनि बुद परत मुवि । । । । ।
 विरहिनि सुख उपजावत री ॥टेका॥
 करि कलोल बोलत चहुँ मोरवा । । । । ।
 दादुर धुनि अति लावत री ।
 पिय पिय पिय पिय करत पपिहरा । । । । ।
 मंगुर शब्द सुनावत री ॥
 छत्र दड अतुला भुवि भ्राजत । । । । ।
 चदन मनहुँ चदावत री ।
 जीव अमित सकुल भुवि डोलत । । । । ।
 बरपा ऋतु भल भावत री ॥
 सस्य सम्पन्न धरणि लहि राजत । । । । ।
 तृण तरु लहि छवि छावत री ।
 अष्ट मास लहि ताप धरणि बहु बरपा ताप बुझावत री ॥
 पति बिनु नारि लहत दुख बहु विधि । । । । ।
 लहि पति ताप बुझावत री ।
 गोपीगन लहि रामसेवक हरि । । । । ।
 बहु विधि उर सुख पावत री ॥३४१॥
 देखो री बहु रूप बदरवा गरजत बरसत धावत री ।
 हरि बिनु मोहिं डेरवावत बहु विधि । । । । ।
 चहुँ दिसि घेरि टिग आवत री ॥टेका॥
 चम चम चम चम चपला चमकत । । । । ।
 घन घन घन घन गावत री ।

गोपीगन तहि कृष्ण गुदित मन कर गहि उरसि बसावत ।
 यशुमति लहि हरि रामसेवक जत्र बदन चूमि उर लावत ॥३४३॥
 भोजत कँजा वन दोउ भाई ।

गोपवाल समुदाई ॥टेका॥

सघन श्रोत तरु कमल धरि सिर पत्र छत्र धर छाई ।
 करि कलोल वैठेउ घालन मिलि तृण तरु पात डसाई ॥
 सीत पीत कहीं हरित सोहायन श्याम घटा अधिकार्ये ।
 इत उत चितवत हँसि हँसि शिशु मिलि देखत बदन लोनाई ॥
 सनननन अति पवन चलत चहुँ मेघ मधुर, धुनि लाई ।
 वरसत जुट सोहायन पावन तरु तृण पिवत अघाई ॥
 सत्र ऋतु ते वरपा ऋतु उत्तम, करु हरि अधिक बडाई ।
 जेहि जल ते तृण अन्न होत भुवि पशु नर तेहि सुख पाई ॥
 अस कहि हरि सिम्हर खोलि दधि लेइ शिशु मिलि अन्न सुखाई ।
 धेनु चरावत रामसेवक, हरि प्रतिदिन, गृह वन आई ॥३४४॥
 धेनु चरावत नहीं मुरारी ।

वरपा ऋतु सुख भारी ॥टेका॥

हरित हरित तृण धेनु चरत भुवि पिवत चहुँ शुचि बारी ।
 दुग्ध देत पिवत बालक सब हरिसग रहत सुखारी ॥
 गरजत बरसत चमकत, चहुँ दिसि मेघ घटा अतिकारी ॥
 तरु तर फोड़ छन कोइ गिर कदर इत, उत, धेनु निहारी ॥
 इत उत वन कुमुमित निरपेत पुनि ऋतु महिमा कहु सारी ।
 वापी कूप, तडाग, अधिक, जल, नीर, सरित-विस्तारी ॥
 वन परवत चहुँ दिसि जलफलकत निर्मल अति भुवि धारी ।
 करि मजन हरि पान करत मोइ शिशु मिलि शुद्ध विचारी ॥
 अन्न अधिक जल लहि भुवि वृगसित सकल लोक दुखटारी ।
 वरपा ऋतु गुन रामसेवक कहि हरि, पालत नर नारी ॥३४५॥

हरि कहँ निरखतीवन समुदाई । ॥ १ ॥ १६ ॥ १
 वरपा ऋतु बर पाई ॥टेका॥
 द्वादश वन उपवन द्वाश वर कृष्ण केलि श्रुति गाई ॥
 वरपा ऋतु चौबीस वन भीतर क्रीडत शिशु लैई जाई ॥
 ऋतु अनऋतु तजि सकल वृत्त वन फूल फल हरपाई ।
 सुखल काठ, पलुहि शारदा चलु उद्ध पत्र दरसाई ॥
 अपर वृद्ध हरि धरत त्रिलोकत परमत भुवि नियराई ॥
 सकल शिशुन फल कृष्ण खियावत करि तरु अमित बडाई ॥
 गल पहिरावत पुष्प हार वर बैठत पत्र विछाई ॥
 करि घन प्रत्र, मेह तरु वारत निरखि रूप पुलकाई ॥
 अस सतकार करत तरु हरि कर वन उपवन जहँ आई ॥
 वरपा ऋतु सुख रामसेवक लहु श्याम सुरति मन लाई ॥३॥
 बदरा बरसत, नहीं ललचावत ।
 विरहिनि सब दुख पावत ॥टेका॥
 इन्द्र धनुष चपला चहुँ चमकत श्याम घटा बहु धावत ।
 उडत बक नभ, इत उत पावत ऋतु सम शोभा भावत ॥
 दादुर मोर मौन होय, निरगत, जलवर जलना गिरारत ॥
 सूरत धान पानी विनु वृण तरु नर पशु रग तरसावत ॥
 हरि लहि ताप भवन न गत करी अरु लन बहु सतावत ॥
 बरसतु किमि त्रिय प्राण लेत घन, किमि उर भय उपजावत ॥
 किमि भिभि किमि भिनि बुद वर सुघन सुनि त्रिय ताप जुडावत ।
 रग मृग वृण तरु लहे उ धरणि सुख प्राक वृत्त सकुचावत ॥
 गोपी गन, लीहि कृष्ण चयन करु काम, अग्नि जुडवावत ।
 वरपा ऋतु सुख रामसेवक लहु गृह, गोपनि हरि आवत ॥३४॥
 देरहु बदन केरि लोताई ।
 जनु चहुँ शोभा छाई ॥टेका॥

सेत पीत कहीं हरित सोहावन ललित श्याम अधिकाई ।
 इन्द्र धनुष की शोभा किमि कहु चपला चनकि सोहाई ॥
 चक्र उडत शोभा नभे पावत सेत श्याम छवि पाई ।
 नाचत मोर चकोर हर्ष उर पिपिहा पिय पिय गाई ॥
 दादुर शब्द करत अति आतुर भाँगुर मन मन लाई ।
 तृण तरु सुख लहि धान्य अधिक भुवि नर पशु रग हरखाई ॥
 वरपा मिसु हरि तन वरनन करु श्याम गवर दरसाई ।
 अग अग प्रति अग बिलोकत रहु मन चरन लोभाई ॥
 गोपी गन की भाग्य कहत कवि मन बुधि रहु सकुचाई ।
 वरपा अतु गुन रामसेवक कहि हरि पद सब सिर नाई ॥३४८॥
 निरखत हरि तन वर घन श्याम ।

सकल भक्त सब जाम ॥टेका॥

मेघ श्याम सम अग सोहावन पीत बसन दुति दाम ।
 इन्द्र धनुष कचन साठी कर मुरली अधर ललाम ॥
 उपमा पुनि कवि कहत हृदय गुनि जेहि मन लहु विश्राम ।
 कृष्ण श्याम घन तड़ित सोहावन चमकत राधा बाम ॥
 भक्त ध्यान करि नाम रदत जिह सुमिरि सुमिरि गुन ग्राम ।
 प्रेम नयन जल बहु विधि वरसत रोम रुर तरु चाम ॥
 मेघ श्याम तन तड़ित ध्यान करि भक्त लहत मन काम ।
 वरपा अतु लखु कृष्ण राधिका रामसेवक जपु नाम ॥३४९॥
 हरि तन वरपा अतु रुचि राई ।

सकल विभव रहु छाई ॥टेका॥

मेघ श्याम तन कृष्ण पीत पट भूपन तड़ित सोहाई ।
 बाम भाग राधा कर फेरत चचलता अधिकाई ॥
 भक्त सनेह नेह जल वाढत वरपत नयन लोनाई ।
 सकल भक्तशाली बृगसित अति दृढ बिकार गवाई ॥

आरु जवास वासना वांती-करु हरि सुजस बडाई ।
 काम क्रोध कुमिशाली चालत बेगि स्व नीर नसाई ॥
 बरपा ऋतु अस भक्तन को हरि कहत वेद बुध गाई ।
 राधारमन भवन उर करि भजु रामसेवक मन लाई ॥३५०॥

धुरिया मल्लार

रिमिक्किमि रिमिक्किमि देव बरसत री ।
 हरि विनु, निसि जीव तरसत री ॥टेका॥
 उमडि घुमडि चहुँ चलत बढरवा गन गन घन गरजत री ।
 सनननन सन चलत-पवनवा तन तन तन तन तरजत री ॥
 इद्र धनुष सर धूद अधि चलु कम कम कम कम कमकत री ।
 चपला इत उत चहुँ दिसि धावत चम चम चम चम चमकत री ॥
 अग अग गध सुगध पुष्प बहु गम गम गम गम गमकत री ।
 आइ गये, निशि केलि कीन्ह हरि गोपिन के भय धरजत री ॥
 सुखप्रद रामसेवक चहुँ जुग हरि अग अग कर सिर परसत री ॥३५१॥
 गरजत धरसत तरजत बहु विधि मेघन महँ जोड घोर बारी ।
 करि क्लोल बोलन लागे जीव अमित चहुँ ओर बारी ॥टेका॥
 इत उन वक उडत नभ धायन घुमरि घुमरि जिमि चोर बारी ।
 पिय पिय पिय पिय रटत पपिहरा दादुर करु बहु शोर बारी ॥
 डेक महोर, आदि खग देखत गावत नाचत मोर बारी ।
 सननननन पवन चलत चहुँ शब्द करत घनघोर बारी ॥
 प्यारा सग न लहत प्यारी भय जो त्रिय करु बल जोरबारी ।
 राधा सग निति हँसत बोलत हरि मोहि बुधि बल अति थोर बारी ॥
 गोपी गुन करि ध्यान मदा हरि राखत निज निज कोर बारी ।
 श्याम गात उर रामसेवक बरि पर तन हरि पद भोर बारी ॥३५०॥

रागिनी गुंजरी

हरि रसखान निरस मुरली बजाई री ।

मोदि तिहुँ पुर जीव स्व बस बसाई री ॥टेका॥

कुजन लता ललित बन परबत जित

मृग तरु नीर निज जड़ता गवाई री ।

अग्नि पवन रधि रंग मृग पशु गवि

जलचर जीव निज देह बिसराई री ॥

जदुन चेतन गति चेतन न जड मति

मुरली धुनि अस तिहुँ पुर छाई री ।

सुर नर गन मुनि सुनत हृदय गुनि

तजि उर ध्यान रस शब्द मन लाई री ॥

प्रेम ते पुलक गात मुख नहिं आई वात

सिधिल सनेह अग रहत कठाई री ।

धेनु पशु जाइ जाइ हरि पद सिर नाइ

किमि कहु गति ब्रज लोगन लोगाई री ॥

शब्द रस वान लागु गोपी उर काम जागु

घायल सकल त्रिय घरु पद धाई री ।

हरि पद पाइ रामसेवक सु लपटाइ अग

परसाइ गोपी गन सुख पाई री ॥३५३॥

मुरली की धुनि तिहुँ पुर रहु छाई री ।

सुख बरदानी रसखानी अघहानी कर

अस रस जानि जीव पीवत अघाई री ॥टेका॥

मुनि मुनि शब्द कान सिधिल चेत ज्ञान

जड़ जीव हीन हाल कहुँ कहुँ गाई री ।

तरु जोइ हीन पात सुनु सखी सोइ बात
 ललित सुपात लैइ जग दरसाई री ॥
 सुरल सुखल काठ सुनु अचरज पाठ
 पलुही पलुही बृगसत पुलकाई री ।
 मुरली करि शब्द सुनि काष्ट उर गुनि पुनि
 शाखा चलु उद्ध ललकारि बहु धाई री ॥
 जदुन की हाल अस सुनत सचेत कस
 जनु इन्त्री प्राण जीव सकल गवाई री ।
 सुर मुनि सुनि सुनि ध्यान तजि उर गुनि
 शर रस पान करि रहत लोभाई री ॥
 गोपी गन सुनि कान गृह कृत तजि मान
 हरि पद गहि भट रहु लपटाई री ।
 प्रेम रस पाइ रामसेवक अनट छाइ
 गोपांगन सुर अति हरि उर लाई री ॥३५४॥

राग कल्याण गति चंचरीक

राजित श्री कृष्ण सधन त्रिपिनि धन सोहाई ।
 भूमन धर वसन तडित वेप बर बनाई ॥टेका॥
 गुजत बहु पुष्प श्याम राजितसत कोटिकाम
 अगन प्रति अग रहत कोटिन छवि छाई ॥
 सुरमा परम अपार रहत सग छवि शृंगार
 कोटिन बुध वेद पार पावत नहिं गाई ॥
 मोहनि रसरानि जानि त्रिभुवन सुख प्रद सुदानि
 मुरली कर अधर लाय कृष्ण हंसि बजाई ॥
 हास्य मोह करु कृपाल मुरली मोहनरमाल
 त्रिभुवन नर नारि सुनत देइ निज गवाई ।

विकल अति सिथिल गात नीश्रित नहिं वदन वात ॥
 चित्तवत टक लाय सुनत शब्द सुरति लाई ॥
 मनहु सकल प्राणहीन शब्द सुनत ज्ञानपीन ॥
 मुरली रव धर रसाल पीवत पुलकाई ।
 मुरली रव रस गभीर पीवत मन मुदित धीर ॥
 काम क्रोध लोभ व्याधि सकल धर नसाई ॥
 गोपीगन रव रसाल पीवत मिलि गोपनाल ॥
 काम अग्नि ज्वलित कृष्ण रूप मो लोभाई ।
 जाकह जस भाव मनसि मुरली रव धरत उरसि
 पावत सुख भूरि करत कृष्ण की बडाई ॥
 मुरली धुनि अमृत सार पीवत भव जीव पार ।
 रामसेवक कृष्ण पाइ गोपी सुख पाई ॥३५५॥
 मोहत जन सकल मोह वरसि रस मुरारी ॥
 मोहनि रस डारि बोरि मुरली अधर धारी ॥टेक॥
 मुरली रव रस गभीर पीवत सकल रहत थीर
 रति शशि रत रोकि नखत रटत नाहिं टारी ।
 बद्धन अनुराग जाग चीर पीन कीन्ह त्याग ॥
 धेनु घास त्याग करत शब्द लगत प्यारी ॥
 रग मृग रव सुनत कान सिथिल भयो म्वजन ज्ञान ॥
 जलचर यलचर सुजीव देह गति निसारी ।
 वृक्ष अद्रि पुलक गात डोलत जनु डोलत घात ॥
 सरित सकल उलटि धार वहत नाहिं वारी ॥
 सुर नरमुनि गन सुज्ञान उरसि धरत सुनत कान ॥
 निजनिज रुचि भाव वैठि सिथिल होय त्रिचारी ।
 गोपीगन गोपनाल सुनत शब्द रस रसाल ॥
 पीवत पुट फान उरसि धरत रस भवारी ॥

गोपिन करि मकल हात कहत छुटत जगत जाल ॥ १ ॥
 मन त्रिचारि सुनत भक्ति पावत नर नारी ॥ २ ॥
 शब्द धमी की सुनत उरमि काम वान लगन ॥ ३ ॥
 भक्ति कृष्ण सरन जाय रूप बर निहारी ॥ ४ ॥
 काम अग्नि दृरि कीन्ह ज्ञान भक्ति कृष्ण मीन्ह ॥ ५ ॥
 अग अग परमि रूप दरमि करु सुखारी ॥ ६ ॥
 गोपीगन भक्ति पाय रामसेवक कहत गाय ॥ ७ ॥
 कृष्ण सरन देहु अगहिं जानि मोरि पारी ॥ ३५६ ॥

राग धनाश्री

हरि मुरली की धुनि सुनि आई ।
 मकल गोपी हरखाई ॥ टिका ॥
 जनु यदुवशी भरि टेरत काम वान रस लाई ।
 घायल होय गापी इत उत घुमरत देह गेह निमराई ॥
 शब्द मनहु रज्जु होय करखत डोलत नह सगाई ।
 आइ कृष्ण पद कमल त्रिलोकत काम त्रिवस सिर नाई ॥
 कर सिर परसि सुमगल वानी हरि त्रिय ताप बुझाई ॥
 नारि धर्म इतिहास अमित कहि प्रेम प्रतीति बढाई ॥
 हरि करि बचन सत्य बुध श्रुति कहु गोपिन उर न सोहाई ।
 हरि पद प्रीति सरिस न धर्म कोइ एह गोपिन मत भाई ॥
 जाकर पति परिवार रोकु गृह सोइ त्रिय हरि सो ममाई ॥
 तजि पति सुत उर ध्यान कृष्ण कर रामसेवक सुखपाई ॥ ३५७ ॥
 गोपिन फेरत भवन दुलारी ॥ ३५८ ॥
 धर्म गाइ यहु नारी ॥ टिका ॥
 दुखित रोजत परिवार सकल वन भ्रातृ पिता महतारी ।
 जाहु अगहिं फिरि भवन सकल त्रिय रात्रि देखहु अधियारी ॥

अध बधिर कुप्री धनहीन रोगी महा अधकारी ।
 ऐसेहु पति कर त्याग करत त्रिय वमपुर लहु दुख भारी ॥
 अष्टादश पौराण कहत एह बुधजन श्रुति कहु चारी ।
 पति सेवत त्रिय लहत स्वर्ग सुख भुवितल रहत सुखारी ॥
 अस विचारि फिरि जाहु भवननिज सेवहु पति सुख सारी ।
 रात्रि भवन नहिं नारि जात कोइ कुल कलक लहु भारी ॥
 हरि करि बचन सुनत गोपीगन एक टक बदन निहारी ।
 बोलत नहिं उर रामसेवक रुचि निशि दिन सरन मुरारी ॥३५८॥

राग बिहाग

सरन हरि त्यागहु जनि बननारी ।
 प्रणतपाल तव नाम वेद बद निज प्रण राखु मुरारी ॥टेका॥
 काम धान रस बोलि लीन्ह त्रिय धायल करि जनि मारी ।
 विकल होय तव सरन पुकारत काम धान दुख भारी ॥
 ज्वाला अधिक उर जात सहा नहिं हरहु ताप बनवारी ।
 शीतल कर तव ताप बुझावत सकल अग सिर धारी ॥
 मुरलि बजाइ स्व वस त्रयपुर करु अवलन दुख अधिकारी ।
 टेरि लीन्ह ढिग रयन चयन हित अब काहे निशि डारी ॥
 रोदत वदत कर जोरि मोरि सिर हरि पद गहु त्रिय मारी ।
 गोपी गन हरि त्रिरह विकल अति नयन भरत बहु धारी ॥
 धीरज धरि पुनि सरन पुकारत हरि करु सकल सुखारी ।
 सुख लहु रामसेवक गोपीगन हरि घर बदन निहारी ॥३५९॥
 त्यागहु जनि बनवारी विकल नारी ।
 बसी करि शब्द सुनत व्याकुल अति आये सरन मुरारी ॥टेका॥
 मन तव पद रत तन किमि चहु गृह पद न परत भुवि डारी ।
 जाइ भवन कृत कवन करब हरि कर नहिं चहु तप सारी ॥

नारि धर्म पतिव्रत वर कहु हरि विषय भवन उतारी ।
 तुम त्रिभुवनपति वेद कहत ध्रुव परसत अग अघहारी ।
 मातु पिता गुरु वधु सकल तुम दायक फल वर धारी ॥
 स्वार्थ रत परिवार वधु पति विषय भांग अधिकारी ।
 हरि तजि पति मानत ध्रुव विषयी परत नारि भव धारी ॥
 विषयी पति तजि हरि पति मानत सुख लहु तिहुँ पुर भारी ।
 कामातुर त्रिय सरन बिलोकहु बचन वान जनि भारी ।
 सरन दीन्ह हरि रामसेवक ध्रुव कर सरोज सिर धारी ॥३६०॥

राग टोडी

हरि टेरि लीन्ह मुरली बजाय के ।
 सुखप्रद शब्द रस रग धरसाय के ॥टेका॥
 पति एक नारी टोकि गृह राखु पथ रोकि
 हाय हाय करु हरि सुरति लगाय के ।
 हरि पद ध्यान धरि रूप उर पुर धरि
 तदगत मन करि हरि मो समाय के ॥
 अपर गोपी सुधाइ मुरली करि शब्द पाइ
 काम बस हरि पद गहु मिर नाय के ।
 विनय अभित करि हरि पद सिर धरि
 कर जोरि सरन पुकारु पुलकाय के ॥
 हरि सिर हाथ दीन्ह काम पीर हरि लीन्ह
 गोपीगन हरि ढिग रहु हरखाय के ।
 रास सुबिलास गाइ सुखप्रद उर भाइ
 गोपीगन कृष्ण ध्रुव मत ठहराय के ॥
 रात्रि पष्ठ मास करि शत्रुराज सुख सरि
 चंद्र को प्रकास थीर करु सुख छाया के ।

गोपीगन तन जत-कृष्ण धरु रूप तत
 त्रिच त्रिच नारी एरु एरु कर लाय के ॥
 चद्र पद्मराग मनी जनु, मोती लालकनी
 नील मनी नगर चिप चिप लपटाय के ।
 राम सु विलास देखि हरि रूप पर पेखि,
 सुर मुनि रहु रामसेनक लोभाय के ॥३६१॥
 हरि गस करु निज रूप बहु धारि के ।
 मालाकार सार भार ग्रथो जनु वारि के ॥टेक॥
 कर सन कर धारि गल सन गल वारि
 अग प्रति, अग करि, सुख सारि के ।
 गोपीगन केलि करि हरि रस रग धरि
 बाँह धरि काँध चढि रहु कर टारि के ॥
 पुनि कर गहि गहि रास रग कहि कहि
 नाचि नाचि गान करु प्रेम रस गारि के ।
 सीतल सु हरि कर अग प्रति अग पर
 गोपीगन लहु सुख काम रुज जारि के ॥
 मुख मकरद रग गोपी मन भृग सग,
 सुख रस पान करु नयन, निहारि के ।
 मृदुल वचन बोल अग प्रति अग डोल
 थेइ येइ येइ ताथेइ धिर थारि के ॥
 इत उत तान तोरि कर गहि सिर मोरि
 ताविलग ताधिलग, ताधिलग कारि के ।
 सप्त सुर तीनि ग्राम गान करि बिसराम,
 मनननन भन भन भन भारि के ॥
 इत उत लपटाइ धन मुरली बजाइ
 मन सन मन सन सन सचारि के ।

गोपी पुलकाइ गमसेवक सरन पाइ-
मन मन मन पद गहत मुरारि के ॥३६३॥

राग कल्याण गति ध्रुपद वा चंचरीकं चोर्ध्वं

रास मडल कारि गोपिन मध्य रहु मुरारी ।

निर्त्तत दिन रयन कोटि वपुष वारी ॥टेक॥

प्रथित जनु तर तमाल कनक वैइलि तता जाल

रति पति शत कोटि रति कोटिन घलिहारी ।

कर ते कर लाय श्याम शोभा शत कोटि काम

तडित घन समूह बृहत मनहु सुख सवारी ॥

मुक्ता मणि अमित राज पद्मराग मध्य भ्राज

चंद्रमणि मो नील जाडित पीत मणि मुखारी ।

तारा गन मध्य प्रथित चद्र चलत नहि श्रमित

मनहु रास करत सग कोटि शत तमारी ॥

भूपन वर वमन भूगि निर्त्त करत जात दूरि

सनन जनु फर फरात पवन कर पसारी ।

मुरली धुनि गति रमाल निर्त्तत जनु बहु भराल

गावत मिलि सरस राग गोपीगन भारी ॥

सप्र मूर तीनि ग्राम एकइभ मुरझल ललाम

राग रागिनी समूह गान करु निचारी ।

शोभा भृगार चलित ह्यनि अनूप मध्य जडित

चचल टुतिकार मेघ गरन भवन भारी ॥

सुर गन मुनि धरत ध्यान लहत परम भक्ति ज्ञान

रास वर तिलाम कृष्ण निरखत नरनारी ।

पुष्प वृष्टि करत देव कृष्ण चरन सकल सेव

रामसेवक कृष्ण रूप देखत अधिकारी ॥३६३॥

राजित रून श्याम कामे दाम शत लोनाई ।

१ गेसमंडल कारि मधुर बॉसुडी यजाई ॥टेका॥

४जनी वर वजत ताल क्षुद्र घटिका रसाल

१ मोहत नर नारि कृष्ण किंचित मुसुकाई ।

भूपन वर बसन वारि मुरली वर कर सुधारि

नासिका बुलाफ मलक मलकत सुरदाई ॥

कुडल श्रुति घर अमोल चचल गति नहिं अडोल

१ भाल बिंदु रचित रचित मनसिज मन भाई ।

सोभित बनमाल लाल पदिक हार मणि सुजाल

१ ग्रीवदर अनूप अमित शोभा दरमाई ॥

चिबुक अधर कल कपोल दसन चमक मृदुल धोल

१ मोहत त्रय लोक शुभग नासिका सोहाई ।

सीस मुकुट अति ललाम शोभा शत कोटि काम

१ कुचित कच केस मधुप लटक की बडाई ॥

चरन कमल कज हाथ गोपीगन जुत्थ साथ

१ भुज मिसाल नयन मयन शोभा रहु छाई ।

निर्त्त गान करत चरत अगन प्रति धरत हरत

१ गोपीगन मध्य कृष्ण क्रीडत कर लाई ॥

सोरत बहु विधि सुताय राखत गोपिन मनाय

१ सतधिलग ततधिलग श्रीरीरी राग गाई ।

थेइ थेइ थेइ गान नाचत छन धारि कान

॥ रामसेवक सुर समूह शोभा सुर पाई ॥३६४॥

काति गोपिन मध्य श्याम राजत बनवारी ।

रासमंडल कारि एक एकन कर धारी ॥टेका॥

कर ते कर जोरि श्याम दक्षिण छन फिरत वाम

॥ पलटत इत उन सभारि देखत सुर भागी ।

मेघ तडित मनहु भूरि भटित लटक चलत दूरि ।
 मिथित व्रतुला अकार फिरत कर पमारी ॥
 कनक रत्न मणि मो अमित मनहु नील मणि सुपचित ,
 प्रथित इद्रु जनु तमारि लहत रूप भारी ।
 वाजत मुरचग सग धीणा मुरली मृदग
 घोल डोल सोर रस सारगी सुखारी ॥
 तुमुल नाद भुवि अकास प्रमुदित सुर देखि रास
 बधुन सहित करत गान पुष्प सीस डारी ।
 तता थेइ थेइ थाय श्रीरीरीरी रिक्त गाय
 नाचत फर लाय मुदित वदन मुर निहारी ॥
 धृत धृत धृत धृतान राग रागिनी सुजान
 सप्त सूर तीनि ग्राम गावत रस गारी ।
 रिक्त रिक्त रिक्त तान निर्रत कर गहि म्वकान
 कुचित कच केस सीस फडलि रही कारी ॥
 सुनत पैजनी रसाल किकणी कटि वजत ताल
 मोहत त्रय लोक्य देव दनुज मनुज नारी ।
 वाजत करताल ततधिताग गति रसाल -
 राममेवक मकल लोक एक गति मुरारी ॥३६५॥
 रासमडल कारि जोति मोतिन दरसाई । -
 निर्रत गान करत गोपिन सग कर लगाई ॥टेका॥
 फडलि रही सीस केस सुधि बुधि नहिं देह -
 श्याम गोर शोभा अग अंगन रहु छाई ।
 केरि को तिलक भाल रचितरचित त्रिंदु जाल
 शोभा शन कोटि चद्र भाल की लोनाई ॥
 भूपन वर वसन भ्राज तडित जनु तरग राज
 रवि शशि शत कोटि मेघ पटल लारि लोभाई ।

छवि शृंगार एक ठवर मनहु प्रथित श्याम गवर
 ठवर सेस कहत पवन गवन अधिकार्ई ॥
 खजरी मृदग झाल बाजत मुरली रसाल
 सारगी मुरचग ढोल वेणु छन बजाई ।
 किंकणी त्रिचित्र जाल बाजत पैजनी रसाल
 गोपिन गन सग कृष्ण करतल धुनि लाई ॥
 तुमुल नाद होत शुभ्र भुधि अकास पटल अश्र
 मनहु शत तमारि इदु घटा घन सोहाई ।
 तता तता तता तान गगा गगा गगा गान
 थेइ येइ येइ तारौइ थाप थाई ॥
 श्रीरीरीरी राग गाय ततधिलग कर उठाय
 धीरीरीरी धीरता लगाइ नाचि नाचि वाई ।
 कुशल राग गान तान गोपिन को रासु मान
 रामसेवक रासमडल देखत सुखदाई ॥३६६॥

राग टोडी

ताद्विलग ताद्विलग ताद्विलंग लाय के ।
 श्रीरीरीरीरीरीरी श्री राग गाय के ॥टेका॥
 रास सु विलास करि रूप स्वअनत धरि
 गोपीगन मध्य थिरी थिरी थिर थाय के ।
 नृत्त गान करि करि सुख रस भरि भरि
 धीरीरीरीरी धुकि धारि धुरि धुरि धाय के ॥
 पैजनी पएल बाजी किंकणी सुकटि राजी
 ता ता थेइ थेइ ताल सकल बजाय के ।
 सप्त सुर तीनि ग्राम राग रागिनी ललाम
 मुरझल गति धुनि तिहूँ पुर छाया के ॥

सरस मृदग ढोल सागगी मृदुल बोल
 रजरी मुरुचग झाल ताल ललचाय के ।
 तनन तनन तोरु तान सिस कर मोरु
 गनन गनन गुन गति दरसाय के ॥
 मननन मनभोरि मनन मन मोरि
 नयन नयन जोरि जोरि उर पुलकाय के ।
 सननन सन चलि बहु कृष्ण संग अलि
 कर सन कर गहि इत उन आय के ॥
 गोपी गन पुलकाइ हरि मन मरन पाइ
 बाँह धरि चढि काँध रहु लपटाय के ।
 करि विश्राम रामसेवक बहुरि श्याम
 कर गहि नृत्त करु गोपी सुखपाय के ॥३६७॥
 हरि व्रीडा करु रास मडल सवारि के ।
 गोपी गन मध्य तिज रूप बहु धारि के ॥टेका॥
 कर सन कर धरि रात्रि पष्ट मास करि
 चद्र को प्रकाश मृतुराज सुख सागि के ।
 काम रस राग गाइ मुरली अधर लाइ
 धेइ धेइ धेइ यिर धेइ यिर थारि के ॥
 नटवत नृत्त करि त्रयपुर मन हरि
 श्रीरीरीरीरीरीरी ताद्विलग कारि के ।
 अगम सुगम चरि सुगम अगम थरि
 निगम करि हाल ब्याल जनु भुवि डारि के ॥
 आदि मध्य अत हीन एक रस ब्रह्म पीन
 विगत विकार करवैया श्रुति चारि के ।
 विगत विनोद बोध रूप श्रुति पथ सोध
 सोइ अज व्रीडा करु संग बहु नारि के ॥

त्रय काल एक वीर पूर्ण नभ सम थीर
 चक्र इव रास करु गोपी कर धारि के ।
 एक ते अन्त होइ निज रूप मणि गोइ
 नर इव लीला करु भुवि रज टारि के ॥
 लसत न रूप कोइ अध नर नागि खोइ -
 अलस निरजन असुर भुवि मारि के ।
 सुखप्रद कारि रामसेवक सरूप धारि
 कृष्ण तन श्याम सुर मुदित निहारि के ॥३६८॥

राग केदारा

हरि निज रूप भुवि प्रगटाय ।
 अमित रुचि बनाय ॥टेक॥
 मास पट्ट को रात्रि करि पर जोति शशि दरसाय ।
 राजऋतु करि प्रगट भुवितल केलि करत अधाय ॥
 रासमडल कारि निर्रत वणु अधर वजाय ।
 मध्य गोपिन कृष्ण राजित श्याम गवर सोहाय ॥
 गावत हरि रस खानि निर्रत एकन एक कर लाय ।
 रूप घर दरसाय निज हरि काम प्रद रस गाय ॥
 अभित कोइ छन होत गोपी वाँह धरि मुसुकाय ।
 भाव लसि उर कृष्ण गोपिन लीन्ह काध चढाय ॥
 भाग्य गोपिन की कहत कत्रि रहत बुधि सकुचाय ।
 कहत बुध श्रुति रामसेवरु गोपीगन सुख पाय ॥३६९॥
 हरि रस रग राग सुधारि ।
 मोहेउ त्रयपुर मारि ॥टेक॥
 वाद्य सकल वजाय कोइ छन भूपन धमन मवारि ।
 एक एक कर धारि निर्रत राममडल कारि ॥

गोपिन मध्य हरि श्याम सुरति नाचत हाथ पसारि ।
 राग रागिनि प्राम मुरुद्वल धरपत स्वर रस गारि ॥
 रूप निज मोहनि मनोहर कारि स्वरस डारि ।
 पीवत अमृत श्रवन पुट मुनि नयन घदन निहारि ॥
 ज्ञान भक्ति शैराग्य लहु उर कामादिक रिपु मारि ।
 ध्यान करि दुइ मुज मिलोकुत फोइ मुनि कर चारि ॥
 गर्व मुनि नहि धीन्ह कधहि गर्व करु ब्रजनारि ।
 गर्व हित सोइ रामसेवक फीन्ह कृष्ण सुरारि ॥३७०॥

राग श्री

गोपी करु उर धर अभिमाना ।

मोहि सम त्रय पुर नहि आना ॥३६९॥

रास विलास हुलास करत सग कर गहि गल लपटाना ।

बाहुँ पकडि हरि कौंध निराजत लृण सम त्रय पुर जाना ॥

गर्व दूरि जेहि भक्ति अचल लहु उपजै जेहि उर ज्ञाना ।

उपजै मम पद कमल प्रीति दिठ सोइ प्रिचारि भगवाना ।

माया करि मति भोरि कौंह हरि होय गये अतर ध्याना ॥

अति विह्वल गोपीगन भइ रन अनु तन गत भयो प्राना ।

पूछत पात पात वृन्दावन कुज लता मो विताना ॥

स्योजत गिर कदर तरु पूछत सरि मर रग सृग नाना ।

श्याम गात सिर मुकुट विराजित मलकत कुडल काना ॥

देखे वताइ देड अगही मोहि रामसेवक करु वाना ॥३७१॥

गोपी व्याकुल सोजत बन भारी ।

बन विह्वलि गये वनवारी ॥३७०॥

जिमि जलहीन मीन गति धरनी मणि धिनु सेम दुरवारी ।

तिमि व्याकुल विह्वल गोपीगन सोजत वनहि मुरारी ॥

रोदत वदत गग मृग सन पूछत सरि सर लता निहारी ।
 अति त्रिहल गिर तरु सन वृक्षन मुकि मुकि सरि सर धारी ॥
 चिन्ह सकत हरि अग धतावत श्याम मुरति सुखकारी ।
 भूपन वसन धिचित्र हार गल तिलक भाल दुति भारी ॥
 पद पैजनी किंकिनि कटि बाजत मुरली अधर सुधारी ।
 करन लोल कुडल अति राजित सीस मुकुट ओजिआरी ॥
 नयन वदन सोभा निरगत हरि मोहत त्रिभुवन नारी ।
 चरन कमल गहि रामसेवक जन भक्तिभाव अनुसारी ॥३७२॥

राग विहाग

प्रगट हरि होहु त्रिकल लखि नारी । ।
 विकल होइ तत्र सरन त्रिलोकत रयन भयकर भारी ॥टेका॥
 रास विलास कराइ चूमि मुख त्रिरह वान जनि भारी ।
 चरित तुमार उदार अमृत रस पित्रत श्रवन अचधारी ॥
 तत्र जीवन कर ताप बुझावत कविगन कहु श्रति चारी ।
 तुम त्रयलोम्यनाथ श्रुति बुध कहु चहुँ जुग जीव उपकारी ॥
 तव दासी त्रिनु मोल जतन कर सीतल कर सिर धारी ।
 तत्र हृदय तव दरस परस त्रिनु कामामि जनि जारी ॥
 अति दयाल चहुँ जुग श्रुति गावत बुधजन कविगन भारी ।
 गोपीगन तत्र त्रिरह त्रिकुन अति करुना काहें त्रिसारी ॥
 गोपीगन विहल वन रोजत गिर कदर सरि वारी ।
 गोपिन कह सुख रामसेवक एक केवल सरन मुरारी ॥२७३॥
 रोजत नारि होहु प्रगट वनवारी ।
 तुम त्रिभुवन पति वेद कहत बुध अवलन काहे त्रिसारी ॥टेका॥
 रास विलास परम सुग्य देइ हरि किमि तजु निशि वन नारी ।
 मुरलि नजाइ बोताइ तीन्ह दिग कीन्ह जगत अतिकारी ॥

अमृत पियाइ सुनाइ सुजस निज अज किमि बिष मुखे डारो ।
 काम अग्नि तन तप्त ज्वलत अति धरि कर सिर रुज डारो ॥
 होहु प्रगट सरनागत लरि त्रिय जनि तजु सरन मुरारी ।
 अधरामृत शुचि पान फरायहु अग प्रति अग फर धारी ॥
 कर धरि हरि निज कौंध चढावहु नाचहु हाथ पसारी ॥
 रास बिलास घहुरि जव करु हरि तव त्रिय होहि सुखारी ॥
 त्रिय अभिमान नेक जनि धरु उर नारि सुभाव विचारी ।
 हरि हित रामसेवक गोपीगन इत उत सकल निहारी ॥३७४॥

राग टोडी

हरि गोपीगन तज रास निसराय के ।
 गर्व उर लरि वर प्रेम स्व जमाय के ॥टेका॥
 एक नारि अति प्यारी सग लीन्ह कर धारी
 वन इत उत फिरु तन स्व दृपाय के ।
 भइ परिशात नारी अगम सुगम कारी
 कर धरि चखु हरि काधे स्व चढाय के ॥
 हरि कौंध चढि गोपी निज कर सिर तोपी
 मोहिं सम कोइ नहि त्रयपुर जाय के ।
 गोपीगन त्यागि हरि मोहिं सग लीन्ह धरि
 मोहिं सम आत नहि गर्व रहु छाया के ॥
 गोपी गर्व जानि हरि त्याग कीन्ह सोइ धरि
 इत उत वन छिपि छिपि रहु धाय के ।
 बिकल अकेलि जानि कृष्ण उर भाव मानि
 प्रगट भयेउ गोपी गहु हरखाय के ॥
 कृष्ण सिर कर धरि शोक ताप लीन्ह हरि
 केलि सुखप्रद रस करु उर लाय के ।

गोपी हरि पद गहि निज उर रुचि कहि
 लहि सुर भोग मन रहु पुलकाय के ॥
 कृष्ण गर्व करि दूरि देत सुख जन भूरि
 सेस वेद बुध कहु हरि जस गाय के ।
 गोपीगन भूख रामसेवक लहेउ सुख
 कृष्ण उर जामी दीन्ह स्वप्रगटाय के ॥३७५॥
 गोपी गन खोजु वन वनहिं मुरारि के ।
 सुजस विमल कहि बचन दुलारि के ॥टेक॥
 जुम्भ गीत गान करि हरि रूप उर धरि
 सरि तट छटि करु रोदन पुकारि के ।
 उद्य स्वर करि करि चक्षु नीर भरि भरि
 बृष्टि करु अग अग नेह जल झारि के ॥
 उर सिर धुनि धुनि गर्व निज गुनि गुनि
 पुनि गोपी कहु हरि सुजस विचारि के ।
 तुम त्रिभुवन मीव गोपी ब्रज जन हीत
 अधा वका आदि राल गन रिपु मारि के ॥
 दावानल पान करि नाग को निकारि सरि
 ब्रज जन त्रान करु गिर नख धारि के ।
 रास सुविलास करि गोपी उर सुख थरि
 अब जनि मारो हरि काम सर नारि के ॥
 रूप दरसाइ नाथ गोपिन को धरि हाथ
 नार्ही तौ मिलु तोहि निज तन जारि के ।
 रोदन करत गोपी कर जोरि प्रण रोपी
 गूढ भाव लखि हरि नेह स्व निहारि के ॥
 धमुडी वजाइ पद चिन्ह दरसाइ
 प्रगट भयेउ हरि गोपी रुज टारि के ।

गोपी पुलकाइ रामसेवक सरन पाइ
हरि करु रास पुनि कर स्व पसारि के ॥३७६॥

राग ध्रुपद श्यातिला नाथा संगीत श्यान्या बोध्यं

ताद्विलग ताद्विलग ताद्विलग लाई री ।
सुखप्रद रस मुख वॉसुड़ी बजाई री ॥टेका॥
धा धा धी धीर धु धुर धारी धीरीरीरी गति चारी
मनननन मन जनन रिमाई री ।
दादा दी दीर दुदुर दारी नृत्तगावत कुज विहारी
मनननन मन कर गहि धाई री ॥
थाथा थी थीर थुथुर थारी अग अग प्रति अग पर वारी
थनननन थन थन थन थाई री ।
ता ता ती तीर तु तुर तारी भ्रम भ्रम भ्रम भ्रम भ्रम भ्रमकारी
तननन तान तोरु तननाई री ॥
नादिर नादिर नादिर वारि रुमुन मुमुन मुमुनु धारि
थेइ थेइ थेइ तान तोरि पलटाई री ।
रा रा री रीर रुरुर रारी सीरीरी रीर सीरीसारी
धनननन धन सम घहराई री ॥
चाकृत चकृत चाकी वागृत वगृत बाकी
शत अर कोटि काम रूप दरसाई री ।
रूप को तिधान रामसेवक ललित गान
करि गोपी गन सग देखि मुख पाई री ॥३७७॥

वं वगृत वगृत रचि वारी ।

चं चकृत चकृत चकृ चारी ॥टेका॥

ल ललित लवग ललचाइ क ककृत ककृत कर धारी ।

र रगृत रूप दरसाइ स्वरचित रास मुख सारी ॥

ज जगृत जगृत जस छाड़ ज त्रिभुवन जयति पुकारी ।
 त तगृत तगृत धुनि लाइ च चटक बजत करतारी ॥
 भ भगृत स्वभाव वताइ त तोरत तान मुरारी ।
 स सकृत सकृत पलटाइ न निरतत हिलि मिलि नारी ॥
 ध धकृत धुकृत धुकि धाइ ग गगृत गान रस गारी ।
 घ घनननन घहराइ हरि रामसेवक अघहारी ॥३७८॥
 ज जनन जनन जजीत ।

करु सनन सनन सगीत ॥टेक॥

कर सन कर लाइ इत उत चलु धाइ
 मुरली बजाइ जन हरु भव भीत ।
 दा दीर दी दीर दु दुर दाना नाचत गावत रासत माना
 धीरीरीरीरी , रस रीत ॥
 ताद्विलग ताद्विलग ताद्विलग लावय गावय
 सप्त सुरति निप्राम मुरुञ्जल धीत ।
 नादिर नादिर नादिर ताना गीरीरी गी रीक्त गान -
 श्रीरीरीरी सर सी सर शीत ॥
 थेइ थेइ थेइ थाय ता ता थेइ थेइ लाय ।
 थोरीरीरीगी थीर प्रथि थीर थीत ।
 तननन ताना तोरि गननन गल मोरि
 सुरप्रद रस जग आपु सो अतीत ॥
 सरगी मृदग ढोल मधुर मुरुचग बोल
 सँजरी सुताल भाल रसप्रद भीत ।
 अनुपम रूप वारी रामसेवक दुलारी
 धुनि श्रुति रूप चहु तीहुँ पुर पीत ॥३७९॥
 त तकृत तकृत घर बानी ।
 घ घगृत बजत रस रानी ॥टेक॥

तननन तोरि तान विमल करत गान
 नृत्त गहि गहि पानी ।
 सननन मन साना चहु जोरि मुसुकाना
 मस मुरति निग्राम रस वर सानी ॥
 म्नाल ताल वाजत मृदग ढोल गाजत
 मुरली मुरुचग रग रस पहिचानी ।
 किंकिनी त्रिचित्र जाल पैजनी सुभग माल
 सारंगी मधुर राग जन सुखदानी ॥
 नृत्त गान ताल तान स्वर गति पहिचान
 लगि पर उर जाकी बुद्धि है सयानी ।
 ललिता लवग लाची लक्ष्मी आदि मध्य राची
 गोपीगन सग राधा प्रिय महारानी ॥
 भनन भनन भन मनन करत मन
 उर बसु राग रास सोइ वर प्रानी ।
 रास सुविलास रामसेवक करत आस
 भक्ति वैराग्य लहि होय नर ज्ञानी ॥३८०॥

रागिनी रामकली

कहि जात न रास विलास मोहि
 जहँ ज्ञान भक्ति रस बहुधासी ।

ज्ञानहीन भतिमद द्वन्द्व रत
 त्रिपय भोग कलिमल भासी ॥टेका॥

ब्रह्म अखिल अनन्य निरजन भाव गम्य अज अत्रिनासी ।
 निर्गुण रहित निकारपूर्ण जग एक अनेक कला भासी ॥
 सोइ अज अगुण सगुण तन धरि वर क्रीडत बोलि दास दासी ।
 भक्ति नात अधिकार करत जग त्रिभुवनपति सब उर वासी ॥

असुग्न बधि भुवि भार हरि प्रभु गोपिनगन कर सुखरासी ।
 जत गोपी तत रूप धारि हरि क्रीडत अग अग अरुभासी ॥
 कर गहि मध्य गोपिन निरतत अति गावत राग रागिनि आसी ।
 सुरली बजाइ चढाइ काँध निज चार चार हरि पुलकासी ॥
 सविलास हुलास कहत हरि रहत न कोइ जन उर प्यासी ।
 सुनत लहत सुर रामसेवक उर कहिन सकत अज महिमा सी ॥३८१॥

कहि जात न रास उदार हरि

जोइ कहत सुनत भव भ्रम हारी ।

गावत राग रागिनि हिलि मिलि

त्रय भास पष्ट निसि निस्तारी ॥टेका॥

राग पष्ट बुध श्रुति वरनत वर वसत सप्तम भारी ।
 अठठ पुत्र सकल रागन कहँ पच पच वर सब कहँ नारी ॥
 अठठ पुत्र सकल पुत्रन कहँ नारि अपार सुतन सारी ।
 दासी दास सखी अगिनित तेहि बुद्धि परिवार की अधिकारी ॥
 राग रागिनि परिवार सहित हरि गावत दास दासिनी बारी ।
 ङात न ताल विधान नाद स्वर नाचत गोपिन कर धारी ॥
 तुमुल नाद त्रयलोक शोक हर निरखत सुर नर मुनि भासी ।
 निज निज रुचि धुनि पान करत सुचि ज्ञान भक्ति रस रग डारी ॥
 रास विलास हुलास करत उर कृष्ण सकल कलिमल जारी ।
 अमित पतित पावन कलि करु हरि रामसेवक की अवपारी ॥३८२॥

दोहा

कृष्ण चरित शत उदधि मह रास विलास उदार ।
 कहत सुनत नर नारि कोइ बेगि होय भव पार ॥१॥
 सेस महेस दिनेम त्रिधि आगम निगम पुरान ।
 बुध जन सारद सकल करि पार न लहु करि गान ॥२॥

नेति नेति कहि गान करु लहु सुख सुख नहिं चाह । १
 १) रामसेवक किमि रास कहु बुधि लघु जस अवागाह ॥३॥

राग श्री

गोपीगन करु भाग्य बड़ाई ।

उर पुर सब मुलकाई ॥टेक॥

गोबर्द्धन नर पर जब धरु हरि कहु बुध बेद भलाई ।

गिरधारी तव नाम पुकारत तिहुँ पुर लोग लोलाई ॥

पूर्व जन्म कृत कर्म नाम एह गावत कनि समुलाई ।

त्रिभुवनपति त्रयलोक उदर तव बन परबतरहु छाई ॥

नदीय नार सब उदधि जीव गन अणु सम उदर समाई ।

सकल भार मम उर पर लेइ रहु सोवत कहु नजनाई ॥

पुष्प सरिम तव तन मोहि लागत प्रतिदिन धरु हरवाई ।

हरिधर कोइ नहिं नाम कहत मम का कहु निज प्रभुताई ॥

गोबर्द्धन, धर नाम अचल तव एह जस पुन्य सहाई ।

गोपीगन अस रामसेवक कहु गहि उर हरि सुख पाई ॥३८३॥

गोपीगन भाग्य सवारी ।

कह गान सेस श्रुति चारी ॥टेक॥

रात्रि दिवस हरि पद चिंतन करु मन वच क्रम, त्रिय मारी ।

सुत, बित पति तजि धाम श्याम तन जीवत मयन निहारी ॥

सयन करत निसि गाढ़ लाय हरि, कर गहि परसि दुलारी ।

दिवस वदन हरि रूप बिलोकत पल छैन नाम पुकारी ॥

रास बिलास कीन्ह हँसि गल चढि नाचत हरि कर धारी ।

गावत सग सग ताल, बजावत प्रथि प्रथि बाँह पसारी ॥

अस सुख विधिनहिं कोइ सुर लहु जस लहु ब्रज भुवि, नारी ।

रास क्लारि पुनि दीन्ह त्रिविध सुख ज्ञान भक्ति रस गागी ॥

पुनि भुवि ब्रज हरि खेलि फगत घट्टु रुज हरि म्वल गन मारी ।
देव सकल अस रामसेवक कहि चाहत सरन मुरारी ॥३८४॥

रागिनी सोरठी तस्य दास्या किंकरी गति कजरी

हरि वेनियों डोलारैं राधा खेलैं कजरी ।

इत उत चाल भुवि चलु गजरी ॥टेका॥

कर सन कर गहि भुवि मुकि मुकि चलु

भूपन बसन अग अग सज री ।

गोपीगन सग वृक्ष पुष्प माल निरदुद

कृष्ण तन श्याम राधा कुद मज री ॥

चिटुकी वजाइ गाइ भुवि इत उत घाइ

कृष्ण पिढे पिढे चलु ब्रज मग री ।

मुरली वजाइ गोपीगन सग हरि गाइ

राधा सिर हाथ फेरु सन डगरी ॥

नृत्त गान करि करि कर कर धरि धरि

हिलि मिलि प्रेम रस सन भगरी ।

मुख सन मुख चूमि गल सन गल घुमि

अग अग परसि फिरत नगरी ॥

करि करि रस खेलि मग रोकि करु खेलि

मुकुट धरत सिर छन पगरी ।

भाग्य गोपीगन रामसेवक को हरि धन

राधा सम प्रिय नहिं कोई जग री ॥३८५॥

राधा खेलत गोपिन मिलि दुनुमुनियों ।

चिटुकी वजाइ सिर भुवि निहराइ

चलु फिरि फिरि नाचु सन देखु दुनियों ॥टेका॥

चक इव घुमि घुमि कर सिर दुमि दुमि
 ' चटपट हाथ करु धुनि धुनियों ।
 इत उत फिरि फिर मटपट किरि किरि
 { कजरी की राग गाइ गाइ कुनुकुनियों ॥
 मुरली वजाइ गाइ कृष्ण चलु सग घाइ
 ' बहुरि बजाइ पीछे पीछे टुनुटुनियों ।
 हास सुनिलास करु गोपीगन कर धरु
 { बजत करताल पुनि रुनुमुनियों ॥
 सारंगी वजाइ ललचाइ त्रिय पलटाइ
 बहुरि मृदग दोल धुनुधुनियों ।
 वाजत मुरचग चंग गोपीगन हरि सग
 सजरी सुभाल ताल वाजु पुनुपुनियों ॥
 धरि धरि निज कान निहुरि करत गान
 ' भुमि भुमि कर स्वबजत धुनुधुनियों ।
 कजरी की राग रामसेनक सुकृत जाग
 ' हरि को तिलास गोपीगन गुनुगुनियों ॥३८६॥
 तोहि कवनि जतन मो रिभावौ रे हरी ।
 कवहीं न जस देव गावों रे सरी ॥देका॥
 दान नहिं ज्ञान भक्तिनहिं कोइ पुन्य शक्ति
 ' जोग नहिं यज्ञ व्रत तप न धरी ॥
 पूजा नहिं देवी देवा नहिं द्विज सत सेवा
 ' धर्म गति हनि तीर्थ एको न करी ।
 दाया गति हीन भति पाप करु श्रति
 ' सत गुरु वाम्य-वर उर न धरी ॥
 नहीं सतसग करु हरि जस सुनि धरु
 ' श्रति सतगुरु वाक्य-वर उर न धरी ।

नहीं सतसग करु हरि जस सुनि धरु
 रात्रि नहिं दिन पल एकउ घरी ॥
 फजरी की राग गाइ कृष्ण रूप ललचाइ
 नद सुत वेगि उर लावों म्गरी ।
 कृष्ण जस गान करि श्याम रूप उर धरि
 प्रेम मन थीर करि पावों पगरी ॥
 गोपीगन पाइ हरि उर मो बसाउ धरि
 नृत्त गान सग सग करु डगरी ।
 गोपी गन नेम रामसेवक ललित प्रेम
 कृष्ण राधा केलि नद जु की नगरी ॥३८॥
 केलि करु राधा कृष्ण नद जु की नगरी ।
 गोपीगन सग राधा गुन अगरी ॥टेका॥
 नद भ्राम वरिसाना हरि रूप पहिचाना
 कजरी की रीति प्रीति करि म्गरी ।
 मृत्तिका लगाइ धाइ सुख उपजाइ गाइ
 अग अग डारु दधि मधि दगरी ॥
 हरदी फुल्लेल घृत दधि मेलि कर घृत
 द्विरकत अग वहि चलु मगरी ।
 दधि कर कचि थरि रग बहु सरि करि
 केलि करु हरि मिलि नारि गुन सगरी ॥
 वाजुवद हरि दीन्ह मुरली मुकुट लीन्ह
 राधा चूडामणि देइ लीन्ह पगरी ।
 भूपन बसन देइ हरि कर सब लेइ
 नारी सन नर रूप धरि बगरी ॥
 राधा कृष्ण वीच नार्हीं केलि करु ब्रज मारहीं
 भाव गृह भ्राम बन एक डगरी ।

नृत्त गान करि रामसेवक को सुर भरि
पोष तोष करु हरि सब जगरी ॥३८८॥

राम टोडी

करत विहार शृदावन सुर सारि के ।

अज अनवद्य नर तन वर धारि के ॥८६॥

बाल केलि बहु कान्ह दासन को सुर दीन्ह

भुवि भार हरु सुर मुनि भय टारि के ।

कस दूत मजबूत केलि करि मारु भूत

ब्रज जन पालु गिर नर परवारि के ॥

राधा सन करु रीति सकल भुवन जीति

रस सुविलास आपु हारु सुर कारि के ।

हरि कहँ जीतु नारि प्रबल अरु कारि

काँध चढि जल पिउ बदन निहारि के ॥

स्ववश सो करि हरि गृह राखु कर धरि

नाच सुनवावत उठाइ वैठारि के ।

सेज पँढाइ देत बहुरि उठाइ लेत

मुख तिरा वर मेलि घोलत दुलारि के ॥

राधा रानी गुरुज्ञानी हरि प्रीति जग जानी

सग सग नृत्त गान करत विचारि के ।

त्रिभुवन नाथ जोइ राधा हाथ धरु सोइ

प्रेम रस भाव दाव पीउ सुख गारि के ॥

राधा सो त्रिगुह करि रीति गधर्व वरि

विधि आदि सुर प्रीति करु धिर धारि के ।

राधा रानी महागनी देव मुनि कहु ज्ञानी

सरन सकल रामसेवक मुगारि के ॥३८९॥

हरि हरु भार भुवि वृंदावन आय के ।

मङ्ग अरिलेश नर तन प्रगटाय के ॥टेक॥

रास रग करि करि सुख रस भरि भरि

अमृत मधुर गान जनन पियाय के ।

गोपी गन उर लाइ सुख घर उपजाइ -

रीति परतीति प्रेम अधिक बढाय के ॥

नेम छेम पुर करि सुजस सुकृत भरि -

रूप स्व अनूप ब्रजजन दरसाय के ।

नद नदरानी ज्ञानी हरि तप फल दानी

पुत्र कहवाइ लीकि वेद ठहराय के ॥

नवसुत नाम गूढ लोक वेद परु रूढ

राधा को रमन चहुँ जुग बहु गाय के ।

गोकुल विहार वृंदावन को चरित सार

थापि जग पाप हर उर पुलकाय के ॥

भ्रजनाथ जगनाथ गोपीनाथ गोपी साथ -

नाम एह रूढ हरि जुग जुग छाय के ।

बसुदेव देवकी की सुधि करु सेवकी की

कुबुजा प्रधान हित कस बध लाय के ॥

नारद को, हरि मन जानत जगत जन -

बुद्धि अस करु कस ढिग कहु जाय के ।

लेइ आबो कृष्ण राम गवर सरूप श्याम

हरि रामसेवक को उर मो छपाय के ॥३९०॥

राग केदारा

नारद चलेउ हरि रुचि पाय ।

हरि सुजस उरसि बसाय ॥टेक॥

कृष्ण कर ब्रज चरित गावत वीणा मधुर बजाय ।
 कस ढिग गयो कस हरखित नारद पढ सिर नाय ॥
 पूजि पकरि विनय बहु विधि आसन पर बैठाय ।
 प्रश्न करु निज भाग्य कहि बहु नारद कहु हरखाय ॥
 कृष्ण अरु बलदेव रिपु तव करत देव सहाय ।
 मारु भट परचारि तव बहु बीर बर दोउ भाय ॥
 काल तव वसुदेवमुत ओह बधहि फुर तोहि धाय ।
 बोलि निज गृह मारु दोउ कहँ कटक जाड भेटाय ॥
 नारद हरि रुचि सत्य कहु ध्रुव कस रिपु पतिआय ।
 नारद चलु पुनि रामसेवक कृष्ण ढिग पुलकाय ॥३९१॥
 नारद आउ वीना धारि ।

कहत चरित सुरारि ॥टेका॥

कृष्ण रूप तिलोकि श्यामल कीन्ह विनय दुलारि ।
 कस बध हित मनुज तन धरु सुनहु कहत पुकारि ॥
 शख चूड बध करहु अबहिं केशी बधहु प्रचारि ।
 कम बध परसो करो हरि केस धारि पछारि ॥
 भावी जस हरि सकल कहि मुनि विनय पुनि अनुसारि ।
 गवत करु विधि भवन नारद देव मुनि भय टारि ॥
 शख चूड बध तुरित करु हरि केशी बर रिपु मारि ।
 नारद बचन ओनाय चितवत पालु ब्रज नर नारि ॥
 देवकी वसुदेव की सुधि करत भुवि रुज हारि ।
 कस बध सुरा रामसेवक लहि त्रयपुर मारि ॥३९२॥

राग धनाश्री

हरि रुचि नारद मुनि गाई ।
 मुनि कस सत्य ठहराई ॥टेका॥

सभा कराइ सुनाइ वचन मुनि मच भिविधि रचवाई ।
 कृपलया हस्ती हस्तिप जुत विविधि सिखाइ लडाई ॥
 धनुष प्रबल रक्षा हित चहुँ दिसि वीर अमित वैठाई ।
 मल्ल जुधि हित वीर प्रबल अति मूष्टिकादि दुखदाई ॥
 कृष्ण राम वध हेतु जतन करि लीन्ह अक्रूर पोलाई ।
 तोहि सम नहिं कोइ हित मम एरुहि पुर कर अव वेगि सहाई ॥
 गोकुल जाइ नद जुत गोपन सहित कृष्ण दोउ भाई ।
 लेइ आवहु रग भूम्य देखन हित तत्र रिपु सोच भेटाई ॥
 राम कृष्ण वर रिपु वरनन करु नारद कहनी सुनाई ।
 मूक भयो सुनि रामसेवक ध्रुव कृष्ण सरन सुख पाई ॥३९३॥
 सुनि कम वचन दुख भारी ।

नहि रिपु उत्तर अनुसारी ॥टेक॥

अक्रूर पछताइ आइ गृह रयन मो सयन विचारी ।
 नद भवन नहिं जाय मारु खल कस अधम अधकारी ॥
 होत प्रात रथ चढि चलु गोकुल सरन पुकारि मुरारी ।
 प्रेमाकुल रथ पर अति राजित जनु तन तेज तमारी ॥
 अति बिह्वल होइ जात चलत रथ कस दृढ सुधि धारी ।
 तन मलीन होइ जात सोइ छन जिमि मारे महतारी ॥
 तत्र समुझत ध्रुव जात गोकुल हम देखन पद बन्यारी ।
 तत्र रथ चलत धाइ हरि सन्मुख जनु मिलु कुज निहारी ॥
 त्रिकल अधिक रथ पथ नहिं डोलत भरत नयन सचि धारी ।
 प्रेम भक्ति किमि रामसेवक कहु हरि जन करत सुग्यारी ॥३९४॥

राग विहाग

चलत पथ अत्र पछताई ।
 शोक हरन अधिकाई ॥टेक॥

धनिक बनिक धन वृद्धि हेतु धन लेइ चलु जिमि हरखाई ।
 क्रय विक्रय करि होत हीन धन गृह चलु मूल गवाई ॥
 तिमि अक्रूर त्रिकल हांय डोलत हर्ष शोक मन लाई ।
 हरि गुन समुभि चलत रथ धावत हर्ष न हृदय समाई ॥
 कस दूत मन गुनत त्रिकल अति रथ पीछे चलु धाई ।
 जिमि मतपार विकल होय घूमत तिमि गृह तन तिसराई ॥
 जिमि जल भ्रमर फिरत इत उत थहु अग्र पीछे चलि आई ।
 तिमि अक्रूर चलत हरि सन्मुख दूत वनत फिरि जाई ॥
 हरि की भक्ति सुरति करि चलु बहु वनत दूत सकुचाई ।
 अक्रूर सुख रामसेवक लहु कृष्ण चरन सिर नाई ॥३९५॥
 कहत चलु कृष्ण कृष्ण वनपारी ।
 अक्रूर त्रिकल होय डोलत त्राहि त्राहि धुनि धारी ॥टेका॥
 कस दूत होइ चलत दरस तित मोहि जनि नाथ तिसारी ।
 मन बच क्रम तव पद रति चाहत दीजै सरन मुरारी ॥
 त्रिभुवन पति त्रय काल एक गति सन उर पुर थिर थारी ।
 साचि सकल घट घट की जानत मम रुचि हृदये त्रिचारी ॥
 कस दूत मजबूत की तर हरि दास चरन रुचि भारी ।
 मम अपराध विसारि दूत गति दरस देइ भय हारी ॥
 जौ फिरि जाव अवहि मथुरा गृह कस अधम मोहि मारी ।
 रथ पीछे छन चलत अग्र बहु फिरत भँवर जिमि वारी ॥
 सरन पाल जब लखत कृष्ण ध्रुव तव चलु रथ हहकारी ।
 कृष्ण सरन सुख रामसेवक लहु अग्र कृत नर बहु नारी ॥३९६॥

राग टोडी

हरि चरित कहु पुनि पुनि गाय के ।
 रथ चढि चलु अक्रूर जन धाय के ॥टेका॥

श्यामल मुरति त्राजु दरस परस साजु
 पुन्य फोड़ काल की उन्य भइ आय के ।
 बहु काल दुख दीन्ह कस सुख हरि लीन्ह
 ताप नास होइ धुन नयन जुझाय के ॥
 भूपन वसन जुत देगि पाप होइ धुत
 अमृत सरूप हरि पीअव अघाय के ।
 मोहिं पितृ भ्रातृ जानी आनर करहि मानो
 देखि हरखाइ पाइ मिलु अक लाय के ॥
 भोजन सुभग वास देहिं मोहि लखि दास
 पितृ भाय मानी पद मर्दु हरखाय के ।
 अस अहाद करु हरि रूप उर धरु
 रथ अति चलु घेगि पवन छपाय के ॥
 जन होस कस आइ दूत निज मुख गाइ
 रथ पीछे चलु मन रहु सकुचाय के ।
 कस दूत जानु जन कृष्ण दूरि जाहिं तन
 दरसन होय मोहिं किमि करु जाय के ॥
 तरक अमित करि हरि रूप उर धरि
 भक्ति बल बर घोरि चलु पुलकाय के ।
 कृष्ण राम पाइ रामसेवक मुखद छाइ
 दुख निसराइ हरि पद सिर नाय के ॥३९॥
 चलु अत्रूर रथ चढ़ि मुख वारि के ।
 तरक अमित करि भक्ति रस गारि के ॥टेका॥
 कस दूत गुनि गुनि कर सिर धुनि धुनि
 उर पछतात मुख कृष्ण को पुकारि के ।
 मुरली बजाइ भाइ सहित चराइ गाइ
 मिलु मोहिं स भू काल भय रुज टारि के ॥

धुसरी सुधूरि अग गोपयाल बहु सग
 रूप को निधान कर लकुट सुधारि के ।
 किधौं कस दृत मानि भागि जाहिं रिपु जानि
 किधौं पितृ भाइ मानि राखहि दुलारि के ॥
 पथ पछतात जाइ गोकुल निकट आइ
 कृष्ण उर जामी स्वामी लखु सुर्य सारि के ।
 त्याग रथ करि धाइ कृष्ण लगि उर लाइ
 भाग्य निज गाइ हरि भव भय हारि के ॥
 हिलि मिलि गृह आइ रूप बर दरसाइ
 वृत्त अकूर करु प्रेमजल ढारि के ।
 पथ को विचार सार हरि करु भुव पार
 पितृ भ्रातृ बोलि पूँछु कुशल महँतारि के ॥
 नद ढिग जाइ धाइ रग भुवि हाल गाइ
 हिलि मिलि बैठि कहु कुशल विचारि के ।
 गोपगन गोपनारि त्रयलोक जन भारि
 चाहत सरन रामसेवक मुरारि के ॥३९८॥

राग सोरठ

हरि को बास गोकुल चाहत ।
 कहत कधि सुख लहत ॥टेक॥
 गोपीगन सग केलि करु हरि गोपी सब उर गहत ।
 चरित कहत उदार लहु सुख भाग्य बहु नहि नहत ॥
 त्याग गोकुल गवन मथुरा गोपीगन किमि सहत ।
 रात्रि दिन नहि तजत हरि छन सुजस कहु दधि महत ॥
 प्राण धन जीवन सु गोपी निरखि हरि रूज दहत ।
 समुक्ति कधि मन सकुच पावत निठुर उर जोइ कहत ॥

बहत मथुरा गवन हरि कोक बिन चछु जल बहत ।
 त्याग सग प्रह नहिं न कोइ हरि सुलक्षण जहत ॥
 पूर्ण त्रयपुर प्राम घट सब जल सुधल हरि अहत ।
 त्याग किमि सहु रामसेवक सग जोइ हरि रहत ॥३९९॥
 कोइ कहँ रुचत नहिं हरि गवन ।
 छोडि गोकुल जात मथुरा त्यागि राधा भवन ॥टेक॥
 कहत जोइ उर वान लागत सुनत मन दुख तवन ।
 कहत किमि सहि जात उर पुर निठुर अस कवि कवन ॥
 रासि हास विलास सुनि जन हँसत लहु मुनि जवन ।
 गोपीगन रुचि प्रीति कहि सुनि होत अघ सब दवन ॥
 नंद यशुमति प्रीति पावन स्वाद जीवन लवन ।
 गोपीगन सुनि गवन पर पुर होत तन विनु पवन ॥
 कहै कवि किमि गवन हरि अस ज्ञान घर सकुचवन ।
 कृष्ण रुचि सुनि गवन कहु कवि वदुरि नहिं भुवि अवन ॥
 नद गृह अकूर राजित सकल पुर दुख सबन ।
 चाहु सुख उर रामसेवक सरन राधारमन ॥४००॥

राग केदारा

हरि ब्रज जस अनुपम छाया ।
 अकूर आवन मोहाय ॥टेक॥
 प्रथम मिलु बलदेव हरि तेहि दीन्ह भरम हुडाय ।
 रग भुवि करि हाल कहु सब कस बचन छिपाय ॥
 गोपन जुत सुत लेइ चलु अब तोहि नृपति बोलाय ।
 नद प्रमुदित बोलि गोपन कहेउ सब हरस्त्राय ॥
 मकट साजहु रचित वाहन भेट अमित धराय ।
 चलहिं बालक सकल हरि जुत देखन कहँ समुदाय ॥

प्रात होत चलु उदय रवि लखि शीघ्र माजहु जाय ।
 नद करि बर बचन सुनि मन गोप गृह गृह आय ॥
 माजु रथ भट रामसेवक कृष्ण पद सिर नाय ॥४०१॥
 हरि दिग चलेउ पुनि हगखाय ।
 प्रेम नेह एकान्त लहि हरि कहव रात्रि अघाय ॥टेका॥
 नद सन आनद कहि सब कुशल कस सुनाय ।
 आवत लखि अक्रूर कह हरि मिलेउ उठि पथ धाय ॥
 धोह पद बैठाइ आसन पूजि भोजन कराय ।
 सेज बर विछाड निज कर दीन्ह ताहि सोआय ॥
 मर्दन करु पद कृष्ण पितु कहि प्रेम नेह बढाय ॥
 कुशल कहु मम मातु पितु कर हेतु मम दुख पाय ।
 चलत तब सग कर्म मारव पालब नोहि समुदाय ॥
 अक्रूर सुनि हरि बचन ध्रुव बर उरसि बहु पुलकाय ।
 कस करिसब हाल विधिवत कहेउ हरि मन गाय ॥
 भाव बर पथ रामसेवक पाइ सुख रहु छाया ॥४०२॥

राग बिहाग

चलत रथ निरखत सब ब्रज नारी ।
 पलक निवारि चहुँ निमि चितवत एक टक नयन उघारी ॥टेका॥
 चकृत होइ रथ अमित बिलोकत निरखत रथ बनवारी ।
 बाल वृद्ध रथ चढि चलु प्रमुदित न गोपिन मारी ।
 श्यामकृष्ण अक्रूर एक रथ जनु घन इहु तमारी ॥
 प्रभ करत कह जात सकत मिलि हरखित सत्र रथ चारी ।
 सकल हाल अक्रूर मुखहिं सुनि हाय हाय धुनि धारी ॥
 होइ विकल अक्रूर को सब त्रिय देत विविध विधि गारी ।
 पद अति अक्रूर को नाम कहत किमि अक्रूर सुवारी ॥

कपट्टी कुटिता अज्ञ एह ठग वरनीन्ह गोपिन दुखभारी ।
 गोपिन कर धन प्राण जीवन हरिहरि लेइ जात मुगरी ।
 कृष्ण कृष्ण कहि रामसेवक बहु गोपी सरन पुकारी ॥४०३॥

बिकल अति ठाढ़ि गोपी पछताती ।

हाइ हाइ कहि कृष्ण पुकारत मिर पीटत कर छाती ॥१॥
 एह अक्रूर कीन्ह छल बहु प्रिधि बसि गोकुल एक राती ।
 धन मन प्राण जीवन मम सरसस किमि हरु ठग पर थाती ॥
 नद भवन रहु मम अधित मन किमि लेइ जात बिनु पाती ।
 नद नात नहि नात मोर कहु न जानो कवन जाती ॥
 हरि बिनु काम कोटि छवि देखत नेक न उर ललचाती ।
 हरि अरपन बिनु जल नहि पीवत अन्न न कोइ रचि ग्याती ॥
 अति बिह्वल नहि ज्ञान कोइ तन कुररी डव बिललाती ॥
 हरि बिन काम धेनु चिंतामणि सुर तरु लहि न अघाती ।
 जिमि चात्रीक घन नीर निदरु सव तृप्त होत जल म्याती ॥
 तिमि हरि लहि सुख रामसेवक उर गोपीगन पुलकाती ॥४०४॥

गोपीगन निरखत रथ बनवारी ।

श्याम मूरति शुचि चरन त्रिलोकत त्रिह्वल अति दुख भारी ॥१॥
 रोदत बन्त हरि सन गोपीगन सुदर वदन निहारी ।
 पुनि न भवन गोकुल तव हरि सुनु जानत त्रिय गन भारी ॥
 सग लेइ चञ्चु जाउ जहाँ हरि दोष होइ तजि नारी ।
 रात्रि दिवस सुखसगुभि शोक उर किमि सोइ नाथ विभारी ॥
 बोलनि भिलनि हँमनि तव चितवनि सहि न सकय जनि मारी ।
 हाइ हाइ कहि सिर उर ताडत मगन मरन सु पुकारी ॥
 कृष्ण पक्ष मडँ कहु हम आइव गोपिन बचन दुलारी ।
 रथ चदि चलु त्रिज निज उर गोपी हरि वर बचन बिचारी ॥

हरि नहि आवहिं बचन न कहु पुर चितवत नयन उधारी ॥
 कृष्ण कृष्ण धुनि रामसेवक करि चाहत सरन मुरारी ॥
 निरखु रथ गोकुल ते गइ दूरी ।
 एक टक नयन उधारि विलोकन लहु गोपी दुख भूरी ॥टेका॥
 रथ अगिनित पथ चलत पवन गति धूरी ही नभ पूरी ।
 घन मम रव रथ करत मधुर स्वर बृष्टि शमाम नभ धूरी ॥
 लालच करु गोपीगन प्रमुदित इत आवत रथ मूरी ।
 चितवत रथ नहि आवत देखत धूरि पूरि नभ रूरी ॥
 सफलक सुत रथ लेइ जात हरि हम सब कहँ करि कूरी ।
 हम सब कहँ लखि हरि हर शठ अक्रूर नहि फूरी ॥
 हरि तजि दीन्ह नहिं दोस लेश कोइ सुगलहु मथुरा मथूरी ।
 निरखत रथ नहिं ल कि परत लगि मग बुधि सन त्रियधूरी ॥
 एक टक चितवत नहिं मृमन्त पथ मनहु भइ सब सूरी ।
 कृष्ण कृष्ण मुख रामसेवक बहु प्राम निकट सब जूरी ॥४०६॥

श्री राग

सकल त्रिय मन बुद्धि चित सकुचाई ।
 अहकार नहि तजत कृष्ण पद बार बार जस गाई ॥टेका॥
 प्राम निकट गोपीगन हिलि मिलि निरखत रथ टक लाई ।
 अक्रूरहि कहि क्रूर अधम खल जो हरि हरि लेइ जाई ॥
 गोपीगन हित चरित अमित करु रूप अनूप देखाई ।
 रत्ता हित नग्न पर गिरवर धरु प्रभुता प्रभु दरसाई ॥
 असुर अमित बधि निर्भय करु ब्रज गोपिन सुर प्रगटाई ।
 दावानल करि पान सरित जल निर्मल करु सुरगटाई ॥
 राम बिलास कराइ परम सुर अधरामृत स्व पियाई ।
 अस सुख देइ किमि जात अपर पुर अवला हरि बिसराई ॥

तुम बिनु नाथ जीवन किमि गोपी कहि मिर धुनि पछताई ।
 कृष्ण विरह बस सोच करत उर रामसेवक सुख पाई ॥४०७॥
 रगत नारि कृष्ण विरह दुख भारी ।
 ग्राम निकट एक टक चितवत रथ देइ अक्रूरहिं गारी ॥टेका॥
 सकल गोप हरि सग मुदित चलु रथ चढि शिशु पुर भारी ।
 किमि विरचि जग नारि प्रगट करु पर पुर नहिं अधिकारी ॥
 पर पुर जात लाज उर लागत सग न लीन्ह मुरारी ।
 लाज भई मम रिपु सजनी अति दोस न कोइ नर नारी ॥
 लाज गवाइ वेंचि हरि सग चलु सुख नहिं लहु बनवारी ।
 सन्मुख हरि नहिं लाज कहत बुध नहिं पुरान श्रुति चारी ॥
 पर पुर की बहु लाज होत उर निज अघ केहि मिर डारी ।
 भोग करब हरि नाम तजब नहिं निज उर कृष्ण निहारी ॥
 शांति भई गोपी निज बुझि उर कृष्ण भक्ति अनुमारी ।
 गोपीगन लहु रामसेवक सुख कृष्ण रूप उर धारी ॥४०८॥

राग कल्याण गति चंचरीक

राजित रथ कृष्ण राम शोभित शत कोटि काम
 छवि समूह तडितमेघ इहु जनु तमारी ।
 भूपन वर वसन भ्राज श्यामल तन गवरराज
 निररगत जनपथिक सकल मोहत नर नारी ॥टेका॥
 देवत अक्रूर रूप श्याम गवर वर अनूप
 शोभा शत कोटि काम छवि समूह दारी ।
 अति विनीत बोलत बात मधुर मृदुल शुभग गात
 अरुन चरन कमल अमल ध्वज कुलिशभारी ॥
 गुल्फ जानु कटि अमोल कुंडल श्रुति भलक लोल
 नाभी गलमाल हार देवि बहु सुखारी ।

पदज करज नखकी जोति मानहु रवि भलक मोति
 निरखत शिर मुकुट चेश देह सुधि बिसारि ॥
 चिबुक अधर दत जाल नाशिफा शुभ तिलक भाल
 कल कपोल नयन आस्य भुजा वर निहारी ।
 सकुचत अक्रूर भूरि भागि जात मन स्व दूगि
 कृष्ण रूप अति अनूप सुर मुनि हित कारी ॥
 दूत होइ लेइ जात करहि कस तुरित घात
 मोहि समान पातकी दनुज मनुज धारी ।
 मृष्टिक चाडूर धीर तोशलादि रशिप धीर
 हलधर मृदुगात शुभ्र कोमल बनवारी ॥
 करत चरमि बहु गलानि हलधर हरि बाल मानि
 त्रिभुवनपति काल व्याल नेक न विचारी ।
 जानत अक्रूर भाव रामसेवक पाइ दाव
 शोक मोह लोक भर्म सकल हरु मुरारी ॥४०९॥
 आत्म धर सरूप कृष्ण सरित जल देखाई ।
 दाम त्रास शोक मोह भरम सब गवाई ॥टेका॥
 मज्जन सरि करत लाग हर्षित जनु पर्व जोग
 दान विप्र मान करत करत सरि बढाई ।
 मज्जत अक्रूर जअहि कृष्ण रूप देखु तत्रहि
 अद्भुत अपार सकल भुवन उर समाई ॥
 नदी नार बन पहार त्रिभुवन जत जीव सार
 देव पितर दनुज मनुज अगिनित समुदाई ।
 अमित रवि शशि सरूप अग्नि पवन बहु अनूप
 इद्र वरुण यमकुबेर अगिनित दरसाई ॥
 अज महेश वेद सेम शास्त्र बहु पुरान बेस
 अस्तुति मुनि करत भूरि चरन गोश नाई ।

पार्षद वर अष्ट रंग भूपन वर वसन अग
 कृष्ण रूप अति अनूप गोभा छवि छाई ॥
 चमत्त अक्रूर देरि कृष्ण रूप तटहिं पेरि ।
 मानि को अनत ग्राम भर्म उर मेटाई ।
 अस्तुति अक्रूर कीन्ह कृष्ण प्रसन्न उतर दीन्ह
 जानि को अनन कृष्ण चरन प्रेम लाई ॥
 करि करि अस्नान ध्यान चलेउ मकल देइ दान
 मयुग वर पूरी नः फटक नियराई ।
 दरसि कृष्ण चलत सग रामसेवक परमि अग
 अचल ज्ञान भक्ति सरन अक्रूर सुखद पाई ॥४१॥

राग टोडी

चरित करत हरि सुग्य दरसाय के ।
 लगवत न कोड जन रुचि उपजाय के ॥टेका॥
 सरि अस्नान करि ग्राम को निकट हरि
 आइ नद डेग लीन्ह रयन गवाय के ।
 बिदा अक्रूर कीन्ह ज्ञान भक्ति वर दीन्ह
 यस रथ करि सुग्य देव गृह आय के ॥
 हरि अज्ञा वर पाइ चलु पथ धिलसाइ
 तजत न वनु हरि आठ मनुचाय के ।
 नद आदि चलु पूरी मथुरा नगर रुरी
 जात धौतकार कस—हित हरखाय के ॥
 ईच्छा बलदेव कीन्ह रजवन वस्त्र दीह
 गाली दीन्ह हरि सुनि मारु तेहि धाय के ।
 पट सब कोड लीह हरि रुचि लखि दीन्ह
 कचुवादि वस्त्र सय धारु पुलकाय के ॥

सुचीकार गृह जाइ बस को शृंगार पाइ,
ज्ञान भक्ति दोन्ह ताहि निज ठहराय के।

कस्तुरित माला जोइ माला करि दोन्ह सोइ
गल पहिराउ गृह पाइ दोउ भाय के।

ताहि वरदान देइ बलदेव सग लेइ
कुनरो भवन वर चदन लगाय के।

गुल्फ निज पद धरी कुनर सो सोम करी
भक्ति रामसेवक सु लहु सुख पाय के ॥४१॥

चलु रग भुवि हरि कुनरी सुधारी के।
कुनर सो सोम करि वर नारी कारी के ॥टेका॥

नगर देवत हरी शिशु सग बहु करी नद
गोप लेइ मच बैठु सुख सारी के।

नद कस भेंट देइ गोपगन सग लेइ
माल युद्धि देखु बीर लहु दहकारी के ॥

धनुष निकट आइ हरि देखि बीर धाइ
ललकारु बीर मानी बदन निहारी के।

तोरि धनु वर हरी खड करि भुवि धरी
चलु रग भुवि धनु पाल खल मारी के ॥

हस्तिप स्वहाथी लेइ हरि पथ रोकि देइ
लड़ि के कुनल प्राते जाहु कर धारी के।

हरि शुड गहि लीन्ह हस्तिप को मारी दीन्ह
इत उत जुद्धि करु हस्ती वर टारी के ॥

हस्ती दत भुवि रोपि युद्धि करु कोपि कोपि
हरि युद्धि करु दत भुवि स्व उपारी के।

पौद्धि धरि भरमाइ अबनी पटक लाइ
पुनि उठि हस्ती लहु हरि परपारी के ॥

हस्तिप सीग्याउ जोइ हस्ती लहु भाव सोइ
 हस्तीप को मारु हस्ती दत को उखारी के ।
 दत कर लीन्ह रामसेवक को गति दीन्ह
 हस्ती यध कीन्ह हरि अबनी पछारी के ॥४

राग कल्याण गति चंचरीक

राजित तन गौर राम शोभित अति कृष्ण श्याम ।
 कोटिन अनग अग हृषि समूह डारी ।
 निर्भय चलुरग अबनि चाल चलत गजकी ठवनि
 दत गजराज शुभ्र एक कर धारी ॥१॥
 शोजित गज शुभ्र भ्राज बुद अग अग विराज
 मंचो परि वैठि रूप देखत जन मारी ।
 भूपन वर वसन अग धालवृद्ध शुभ्र सग
 तारागने मध्य मनहु इहु घन तमारी ॥
 जाके उर भाव जोइ मूरति हरि देखु सोइ
 काम कोटिशत अनूप रूप लगत नारी ।
 जोगिन उर तत्व भास ईष्ट सकल देखु दास
 देखत जगमय विराट पडित अधिकारी ॥
 देखत नर वर सरूप जुरे मच साधु भूप
 महबीर परम लगत अमुर काल भारी ।
 कस काल मृत्यु लगत कपित तन उरसि डरत
 स्वजन वसुदेव गोत्र मानत सुर सारी ॥
 देवकी वसुदेव जानु आत्मज दोउ पुत्र मानु
 प्रेम नेहनीर चलत देखु चहु उघारी ।
 गोकुल को चरित रास सुनत पुरजन विलास
 कहत इहै असुर मारु नाम धर मुरारी ॥

निज निज रूचि करत गान श्याम गवर धरत ध्यान ।
 सेस अरु महेश रूप बरनत वनवारी ।
 श्याम गवर अति अनूप निज निज रूचि देखु रूप
 रामसेवक कृष्ण वदन सकल जन निहारी ॥४१३॥
 राजित श्रीकृष्ण राम शोभा शत कोटि काम
 गजको दत कर सुधारि रग अचनि आई ।
 मच रचित चहुँ विशाल बैठे विधिवत नृपाल ।
 नारि नर समूह देखु रूप की लोनाई ॥टेका॥
 मृष्टिक चाण्डूर धीर तोशलादि रणिय धीर ।
 माल युद्धि करत केल देखत समुनाई ।
 चटपट बहु वजत ताल गर्जत जनु मेघ काल
 शोभा बहु धीर करत विप्रिधि सो लडाई ॥
 कृष्ण देखि मकल डरित माल युद्धि करत चरित ।
 उपाध्याय ठाढ जोड सकल को सिग्याई ।
 इत उत बहु लडत धाय दाव पेच सकल गाय
 गोप प्रिसरत बताइ देत जोइ सब पढाई ॥
 चरित धीर सकल कीन्ह कृष्ण को देखाय दीन्ह
 बोलेउ चाण्डूर कृष्ण देखि मुसुकाई ।
 करहु माल जुद्धि आय हिलि मिलि वीरन मो धाय
 चरित माल केलि बहुत नृपति को सोहाई ॥
 सुनत धीर धर प्रधान राजा निज निज स्व कान
 देखन हित माल युद्धि कस तोहि बोलाई ।
 राजा प्रसन्न मोहि देहि विप्रिधि दान तोहि
 करहिं जे अजाच ग्राम अभय करि वसाई ॥
 कृष्ण कहत चलत तोरि भाग्य परम नुलिय मोरि
 कस सो दिवाइ, को, वसाइ देव भाई ।

पालकते माल लडत धीर ते धीर भिङ्गत
अनुचित नहिं होत रामसेवक सुख छाई ॥४१४॥

राग टोढो

कृष्ण बलदेव रूप देखु हरम्बाय के ।
बहुँ दिशि मच चढ़ी नर नरी आय के ॥टेका॥
मूष्टिक चाण्डूर धीर प्रवल प्रचड धीर
हँसि हँसि कृष्ण राम सन कहु गाय के ।
युद्धि करु मोहि सन मैं करु तोहि सन
नृप धन दैह तोहि बहु सुख पाय के ॥
अचल अडोल प्राम सुख लहु बन धाम
दिलि मिलि जुद्धि करु नृप को रिम्बाय के ।
बालन कीशोर कहु बचन सुमोरि गहु
धीर जस तब तिहुँ पुर रहु छाया के ॥
अघा बका आदि मारी गिरवर नख धारी
धनु भग करि धीर बधु गज धाय के ।
हँसि हँसि अस कही मूट हरि कर गही
बाहु जुद्धि कर बहु विधि पुलकाय के ॥
शीर पर शीर करी कर सन कर धरी
इत उत फिरु पद पदन चलाय के ।
मूष्टिक चाण्डूर धीर हलधर हरि धीर
गिरत न कोइ भुवि रहु सकुन्बाय के ॥
बाहुँ मिजि ताल मारी मेघ सम घोष कारी
उपाध्याय जुत रहु उरसि लजाय के ।
कल छल बल रामसेवक अमित करी
मूष्टिक चाण्डूर रहु भुवि शिरनाय के ॥४१५॥

मूष्टिक चाण्डूर लहु बहु ललकारी के ।
 कृष्ण बलदेव काल सुरती बिसारी के ॥टेका॥
 देखि देखि नर नारी खल कहँ देत गारी
 बाल सन जुद्धि करु बहु परधारी के ।
 दुष्ट है अरिष्ट खल किमि करु अति बल
 सुख नहि लहु हरि यदन निहारी के ॥
 सभा बुद्धि हीन भई साधु की महस्तु गई
 धरजत नहीं कोइ अनुचित टारी के ।
 जोरी सन जोरी धीर बालसन बाल धीर
 सोहत लड़ाइ ष्ह दुख नर नारी के ॥
 बचन सुनत नारी कृष्ण उर पुर धारी
 युद्धि घन घोर करु गज दत धारी के ।
 मल्ल युद्धि कीन्ह घोर तीहुँ पुर भई सोर
 तड़ तड़ ताल बाजु लड़त दुलारी के ॥
 हहकारी ललकारी अचनी पटकी डारी
 सोहु अति रूप हरि मूष्टिक को मारी के ।
 चाण्डूर जो तोशलादी बलदेव लरि मादी
 मारु सब घोर धरि धरणी पछारी के ॥
 जैति देव मुनि करी भुवि भार हरु हरी
 प्रमुदित सुर हरि शीर फुल डारी के ।
 पुर नर नारी रामसेवक हरख भारी ।
 निर्भय रहु गहि सरन मुरारी के ॥४१६॥

राग कल्याण गति चंचरीक ।

राजित तन गौर श्याम दायक जन सकल काम
 राम कृष्ण अज अनूप नर सरूप भारी ।

मूष्टिक चाण्डूर मारि तोशलादि मल प्रचारि

शोभा शत कोटि अग अग परवारी ॥टेका॥

चहुँ दिसि घर मच राज सोभित अति घन समाज,

कृष्ण राम रूप देखि बृगसित नर नारी ।

कस भइ त्रिगत आसकपित उर अधिक त्रास

मूष्टिक चाण्डूर। मारु महत्रन मह भारी ॥

देखत भुवि रग भूरि भागि गयो धीर दूरि

काल मृत्यु ध्रुव मोर वेगि- मोहिं मारी ।

मारु मारु धरो, धरो रग अबनी बाहर करो

। वायु तन घटी कस जलपत हहकारी ॥

मचोपरि गजि गर्जि खड्ग लेइ तर्जि तर्जि ।

कृष्ण ओर कर उठाय काल न प्रिचारी ।

कूदि कृष्ण केश धारि खड्ग छोरि बदन मारि -

। बीचहिं हरि लीन्ह प्राण अबनि गहि पछारी ॥

ऊपर श्रीकृष्ण हस नीचे खल दुष्ट कस

मृत्यु कस जानि सकल देव मुनि सुखारी ।

गयो सकल भुवि को भार लहेउ सर्व मुनि अचार -

। पुष्प वृष्टि कारि देव अस्तुति, अनुसारी ॥

जयति जयति, जै मुरारि मुष्टिक चाण्डूर मारि

। देवन सुरन दीन्ह परम धरणि भार हारी ।

कस घात नाथ कीन्ह अभय दान सुरन दीन्ह

। रामसेवक सकल लोक सरन गहु मुरारी ॥४१॥

शोभित श्री कृष्ण राम धवल गरुधन सुरयाम

निरखत नर नारि करत रूप की बडाई ।

गज को दत शुभ्र हाथ गोप बाल वृद साथ

। तारा गा मध्य नहु रवि शशि छवि छाई ॥टेका॥

कल्प कल्प चरित भेद कहत सकल सत वेद
 महिमा अपार पार सारद न पाई ।
 मूष्टिक चाण्डूर मारि तोशल शल उर विदारि
 केशी धर धीर मारु मल्ल युद्धि लाई ॥
 कस भ्रातृन देखि देखि निधन अबनि पेखिपेखि
 कोप करि धोलाय लीन्ह फौद धेरु आई ।
 असुर युद्ध घोर कीन्ह कृष्ण गरुड टेरि लीन्ह
 चक्र कर सुधारि गरुड ऊपर हरि धाई ॥
 काटत भुज मुड फौड जानु गुल्फ नाक खोई
 चक्र अति कराल वीर अबनि मो गिराई ।
 मुशल कर गहि प्रचारि अमित असुर राम मारि
 राजित दौड भाय बृक्ष सगिस रल दहाई ॥
 तिष्ठ तिष्ठ कस करत कृष्ण भटित केश धरत
 अबनि मो भवाय बेगि प्राण शठ गवाई ।
 सप्तमी सित माघ मास कंस आदि दुष्ट नास
 सूर्य्य उदय काल कल्प वेद भेद गाई ॥
 अस्तुति बहु सुरन कीन्ह अभय दान कृष्ण दीन्ह
 पुष्प वृष्टि कारि देव मुदित भवन जाई ।
 करत कृष्ण चरन ध्यान देवे मुदित सुजस गान
 रामसेवक सकल लोक कृष्ण छलो छाई ॥४१८॥

राग टोडी

कृष्ण बलदेव राजी सुर रिपु मारी के ।
 त्रय पुर शोक हरु भुवि रज डारी के ॥४१८॥
 मूष्टिक चाण्डूर तारी तोशलहि शल मारी
 कस आदि अघकारी मारु भुवि डारी के ।

दुष्टन को मुक्ति देइ भुवि भार हरि लेइ
 रूप स्व देखाइ सुख दीन्ह नर नारी के ॥
 गोकुल चरित करी मथुरा मो आइ हरि
 रुचि गृह ग्राम त्रास पितु महँतारी के ।
 यदी छोरि पितु मातु सक्रन स्व गोकुल पातु
 निज अपराध कहु मातु पितु वारी के ॥
 मम हेतु बदी लहु दुरा धहु विधि सहु
 पुत्र जन्म सुख नहिँ लहु दुरा वारी के ।
 पट सुत कस मारी मम हेतु दुख भारी
 सहु मातु पितु तुम सुकृत विचारी के ॥
 छमा शील छमा करो मातुपितु मोहिँ भरो
 सुनि मातु राखु गोद सुत को दुलारी के ।
 वसुदेव सुत रीती करु हरि पद प्रीती
 श्रवत नयन जल सुत धुचुकारी के ॥
 अस्थन श्रवत चीर प्रेम नेह चक्षु नीर
 दपती हुलास सुत वदन निहारी के ।
 कोइ भाव रीती रामसेवक करत प्रीती
 मोच लहु वर गहि सरन मुरारी के ॥४१९॥
 हरि बदी छोरु पितु मातु दिग जाय के ।
 कस आदि दुष्ट सवारिष्ट को गँवाय के ॥टेका॥
 कस त्रास अन्य ग्राम वसु जोइ तजि धाम
 स्व वस वसाउ हरि सकल बोलाय के ।
 कस वर राज जीती हरि राखु राज नांती
 राज—हित उपसेन गृह पुनि आय के ॥
 राज लेहु निज तात सुनि मम घर बात
 निरभय पातु जन स्ववस वसाय के ।

हम न करय राज सकल सजब काज
 सुरन असुर उर फठ हरसाय के ॥
 कोप जो जजाती कीन्ह पदु कहँ शाप दीन्ह
 राज हीन बसत बरहु फहु गाय के ।
 पुर कहँ राज दीन्ह पदु कर हरि लीन्ह
 पुरुष की शाप यदु बस रही धाय के ॥
 जन्म मम यदुबस पूर बस जन्म कस
 तब राज छोरि शठ राज करु धाय के ।
 राज तत्र देत सोइ कस घात नाहिं गोइ
 निज पाप नाश भयो भक्ता हरि भाय के ॥
 सोर अज्ञा धरि कीन्ह उमसेन राज लीन्ह
 हरि हाथ तिनक लहु अचल सुख पाय के ।
 जयति चहुँ ओर रामसेवक त्रिलोक सोर
 राज उमसेनि जीति कृष्ण ठहराय के ॥४२०॥

राग केदारा

हरि निज चरित तिहुँ पुर छाय के ।
 नगर स्ववस बसाय ॥टेका॥
 कस आदि रल मारि तारेउ भार धरणि गँवाय ।
 मातृ पितृ पद रूढ करि हरि यदि दीन्ह छड़ाय ॥
 राज देइ उमसेन कह निज भद गोप बोलाय ।
 जाहु तात निज भवन अत्र तुम लेइ सकल सहाय ॥
 उनिन नहिं तोहि सन कबहिं हम पालु मोहिं दोउ भाय ।
 मात्रि पितृ समान पालेउ तात यशोमति माय ॥
 भूपन बसन विचित्र निज कर कृष्ण तेहि पहिराय ।
 त्रिदा कीन्ह सब गोप शिशु जुत न पद सिर नाय ॥

मूष होय लेइ कठ कचट्टु पुनि नद निज गृह आय ।
 प्रीति लहि हरि रामसेवक नंद वर सुख पाय ॥४२१॥
 कहु उर निरह नद मुरारि ।
 समुक्ति हरिपुन मिलनि बोलनि नयन जल बहु टारि ॥टेका॥
 श्याम रूप वर नयन शोभा वदन शुभ वर धारि ।
 सुमिरि किंचित हँमत्र रोदत यहत बहु चहु वारि ॥
 कहेउ मोहि सन जाहु निज गृह मुनत पुरिजन मारि ।
 वाण सम महि यचन हरि आयो सुकृत सवारि ॥
 गर्गाचार्य को कहनि अथ कट्टु सुनहु कहत पुकारि ।
 जन्म यह वसुदेव गृह फुर पाहु मज नर नारि ॥
 पुत्र तव बहु नाम एन्हकर कहत बुध श्रुति चारि ।
 रामकृष्ण वर नाम कहि मुनि गयो गहुत दुलारि ॥
 रक्षा करु भुवि भार हरु सत्र असुर खलगन मारि ।
 वरमि धरि गहि रामसेवक कृष्ण रूप निहारि ॥४२२॥

राग टोडो

कृष्ण को सुभाव तिहुँ पुर रहु छाव के ।
 कोमल कठोर अति चित कहु गाय के ॥टेका॥
 करु गोपीगन त्याग जहाँ अस केल राग
 । कुजुजा को नारी वर करु लपटाय के ।
 नद कहँ त्याग करी पद परी कर धरी
 ॥५ पिना सम कहि वेहि भवन पठाय के ॥
 सुनि अस त्याग मित कुलिस द्रवत चित
 । कवि किमि कहु उर रहु सकुचाय के ।
 नद कहँ विदा करी चित मो कठोर धरी
 । पितु मातु चेत करु चित मृदु लाय के ॥

निज दोष कहि कहि पितु पद गहि गहि । -
 कोमल वचन कहि बैठु ठिग जाय के ।
 जन्म काल धेनु जोड़ मन महँ दीन्ह गोड़ ।
 अयुत बोलाइ द्विज दान दीन्ह धाय के ॥
 उत्तम करि करि सुर उर भरि भरि
 दान बहु विधि देत उर पुलकाय के ।
 वज्रत बधाइ गाइ नृत्त करु बहताइ
 कृष्ण बलदेव मुख चूमि हरखाय के ॥
 धन गत धन पाइ प्राण गत तन आइ
 तिमि बसुदेव सुख लहु सुत पाय के ॥
 कृष्ण बलदेव रामसेवक करत सेव
 बसुदेव देवकी सु सुत मो लोभाय के ॥४२३॥
 कृष्ण बलदेव रूप सकल निहारी के ।
 करु नैजछावरि सु द्विजन पुकारी के ॥टेका॥
 गर्गाचार्य वेद विधि करु सत्र कार्य सिद्धि
 मेलि केतने ऋगल लहु सुर धारी के ।
 दीन्ह सु गायत्री दान रामकृष्ण लमि कान
 श्यामल गवर रूप देखु सुर मारी के ।
 मूपन सकल अंग गल रिच हार रग
 शोभा लहु रामकृष्ण पित पट धारी के ॥
 प्रत वध कार्य करी द्विनन को हाथ धरी
 बसुदेव देत दान भग लेइ नारी के ।
 पुत्र जन्म सुर लहु दोउ पुत्र उर गहु
 वजन बजाउ गाउ रिपु दुख टारी के ॥
 मौजी मेरुलास्र धारी दंड शुचि कर धारी
 भित्ता मागु पात्र गहि कर महँतारी के ॥

वेद विधि करि कार लोक विधि समचार
 पुलकित अति सुत माला गल डारी के ॥
 कस रिपु गई त्रास पुत्र पद भई आस
 जनु जन्म सुखी दुख रिपुगन मारी के ।
 पुर नर नारी भारी भूपन वसन धारी
 करु नेवछावरि सुमगल विचारी के ॥
 गयो दुख दूरी रामसेवक को सुख मूरी
 पुर नर नारी गहि सरन मुरारी के ॥४२४॥

राग श्री

चलु वेद पठन दोउ भाई ।
 कुल रीती प्रीति उर छाई ॥टेका॥
 लहि जनेव चत्री वनि प्रमुदित अज अद्भोईत गवाई ।
 यदुवसी जहाँ पढत वाल सब कुल अचार्य ठहराई ॥
 काशी पुर गुरु वसु सदीपन नाम परम सुनि पाई ।
 हलधर जुत शिशु अपर कोइ सग पठशाला हरि आई ।
 रामकृष्ण वनि छात्र गुरु पद बार बार सिर नाई ॥
 सुदामा द्विज आदि अमित शिशु पठत वेद समुदाई ।
 कृष्ण सुदामा पठत एक सग भइ अति परम मितार्ई ॥
 सु सुरुपा गुरु करत कृष्ण अति गुरु करी प्रीति पढाई ॥
 पाव पलोदत प्रेम नेम करि पूजा विधि सु जुटाई ।
 सकल शास्त्र उर रामसेवक हरि गुरु कहँ देत बडाई ॥४२५॥
 गुरु बालन पर जुत नारी ।
 करु छोह मोह अधिकारी ॥टेका॥
 समिध लेन गयो पुष्प सकल शिशु सुदामा बनवारी ।
 बन लकड़ी गुरु हेतु निनतसन फलदल पुष्प विचारी ॥

प्रमुदित बन इत उत सत्र धावत भूली गयो शिशु भारी ।
 क्षुधा लगी अति जोर सोर करि लावत सुख सागी ॥
 भाग अन्न हरि सग सुनामा सहि न जात क्षुत् भारी ।
 भञ्जन कर दोउ भाग सुदामा हरि हँसि लियो कर वारी ॥
 अस्त भयो रनि वृष्टि पवन अति रात्री भई अधियागी ।
 सूफय नहिं तरु मूल सकल रहु हिलि मिलि तृण दत्ता डारी ॥
 गुरु पत्नी जुत पथ त्रिलोकन खोजत उरसि दुखारी ।
 आये शिशु सुख रामसेवक लहु महिमा सकल मुरारी ॥४२६॥
 हरि पठत वेद मन लाई ।

गुरु पद रुचि प्रेम बढाई ॥टेका॥

जाकी स्वास ते सकल साम्ब श्रुति उपजत बहुरी समाई ।
 सोइ पठत होत सुनि अचरज एह द्विज सत बढाई ॥
 चौंसठि विद्या चौंसठि दिन महँ हरि पढ रूप छपाई ।
 हाथ जोरि प्रिन्ती गुरु सन करु पद द्विज शीश नवाई ॥
 दक्षिणा कछु गुरु मागु मोहि सन पढे उशास्त्र समुदाई ।
 विनु दक्षिणा नहाँ फलित शास्त्र कोइ वेद त्रिवुध गाई ॥
 लेइ दक्षिणा आशीष गुरु दीजै जाउं भवन हरगवाई ।
 अमानुष मत्र कर्म लप्यो गुरु धर्म नीति निपुनाई ॥
 अल्प काल चौंसठी विद्या को नर पढु अस भाई ।
 ब्रह्म निरजन रामसेवक एह करु गुरु कुल अधिकाई ॥४२७॥

गुरु लखि हरि कहँ वर दानी ।

अज निरज ब्रह्म पहिचानी ॥टेका॥

गुरु दक्षिणा हित निज पत्नी सन कहु लखि बुद्धि मयानो ।
 मृतक तनै गुरु दक्षिणा मागहु ब्रह्म अखिल पति जानो ॥
 कृष्ण ते कहु दक्षिणा देइ गवनहु मृतरु जीवत निर पानो ।
 गुरु पत्नी मुख सुनत हर्षजुत चलु हलधर हरि जानो ॥

समन पूरो चित्रित प्रति देखत आयेउ यम रजधानी ।
 यम हर्षित पूजा बहु विधि करु निज बहु भाग्य बखानी ॥
 हरि अज्ञा गुरु सुत जीवत यम दीन्ह धोति मृदु बानी ।
 यम कर तोप कारि हलधर हरि गुरु कह सुत दियो आनी ॥
 गुरु पत्नी लहि मृतक तनय वर आशिष देइ पुलकानी ।
 करि प्रणाम हरि भवन आउ निज रामसेवक सुख मानी ॥४२८॥

राग केदारा

हरि सब शास्त्र पढि गृह आय ।
 मातृ पितृ कहँ दीन्ह सुख बहु रूप परम देखाय ॥टेका॥
 आयो हरि अक्रूर गृह पुनि मोकुल उधव पठाय ।
 आनत लरि अक्रूर हरि कहँ हर्षित मिलु उड़ि धाय ॥
 अहो भाग्य निज मानि प्रमुदित सकल दुख सुख गाय ।
 बैठाइ आसन धोइ पद हरि भोजन सुभग कराय ॥
 कस कर धेवहार सब कहि विपति कुल की सुनाय ।
 कृष्ण तुम सुख दीन्ह बहु विधि रूप वर दरसाय ॥
 बोध हरि पितृव्य कर करु पिता पुत्र गति लाय ।
 प्रबल माया कृष्ण की बर रही तिहुँ पुर छाया ॥
 पुत्र लखु अक्रूर सुंदर ब्रह्म बुद्धि गँवाय ।
 भवन गत हरि रामसेवक बहुरि कुबरीहिं पाय ॥४२९॥
 कुनरी देखु अचत मुरारि ।
 त्रिहँसि उठि कर धारि ॥टेका॥
 शुभग पलग विछाय प्रति दिन जोहत रहु गृह द्वारि ।
 पाइ शुभ बैठाय आसन धोइ पीउ पद वारि ॥
 चदन अगर लगाय विधिवत पुष्प हार गल द्वारि ।
 धूप दीप नैरेद्य बहु विधि दीन्ह कुनरी वारि ॥

प्रथम हरि हाथ निज धरि गुल्फ सोइ पद कारि ।
 कुवर पर कर धारु निज हरि दीन्ह शोभा दागि ॥
 सोज करि कूबर प्रथम हरि बहुरि खल गन मारि ।
 करत भोग विलाम निशि दिन कूजरीहि सुख सारि ॥
 सुदरी त्रयलोक्य नहिं कोइ कीन्ह अस बर नारि ।
 । भाग्य किमि कहु रामसेवक दीन्ह भव सरित्तारि ॥४३०॥

राग श्री

उद्धव गोकुल रथ चढि आई ।
 हरि अज्ञा बर पाई ॥टेक॥
 पीत वसन मकराकृत बुडल केश मधुप छत्रि छाई ।
 सकल अग हरिसम राजित अतिभात की सदृश लोनाई ॥
 अन्न भये गवि गोकुल मो गत रथ बर द्वार लगाई ।
 नद भवन करु गवन मृदु पद नद देखि उठि धाई ॥
 प्रेमाकुल दोउ नयन सजल करि गहि कर गोद मो लाई ।
 हिलि मिलि नद धारि उद्धव कर शुभ आसन बैठाई ॥
 पाव पखारि दुलारि श्रेष्ठ कहि भोजन विविधि कराई ।
 पलंग विछाड सोआड भिरा देइ कुशल पूँछु हरपाई ।
 देवकी अरु बसुदेव कुशल कहु कम दुष्ट दुरदाई ॥
 नष्ट शत्रु सुख रामसेवक लहु पुरि जन नृपति सहाई ॥४३१॥
 उधो कहु कुशल वनवारी ।
 पुरि जन कहँ सुख दीन्ह विविधि विधि कंस इष्ट बर मारी ॥टेक॥
 नद यशोमति प्रश्न करत अस मग्न नयन बहु बागी ।
 प्राप्त धाम शुधि घेनु करत नहि किमि मोहि तात बिसारी ॥
 माखन भिर्था दधिय चीर लेड अत्र केहि प्रात दुलारी ।
 हाय हाय करि रोदत वदत गुन यशोमति कृष्ण पुकारी ॥

उद्धव करु बहु बोध पत्र देइ हरि वर बचन उचारी ।
 रात्रि त्रिम त्र जम हरि गावत मानि पिता महँतारी ॥
 हरि सरवत्र समान रहत जग उर वसु सब नर नारी ।
 अत्र तुम जनक सकल त्रिभुवनपति जानि स्वहृदयनिहारी ॥
 मग्न रहो दिन रयन चयन लहि भय रुज दुख उर टारी ।
 धन्य सुकृत वर रामसेवक मति वपति सग्न मुरारी ॥४३२॥

राग टोडो

नद नद रानी उधो हरि गुन गाय के ।
 रात्रि सुप्रतीत कीन्ह उर पुलकाय के ॥टिका॥
 उद्धो चलु होत प्रात नद सन बोलि घात
 क्रिया प्रात हेतु जल पात्र कर लाय के ।
 प्रति दिन अस क्रिया रात्रि गोपी वारी दिया
 जाग्रन करु हरि हित मिलन मनाय के ॥
 मथन सुदवि करु रज्जु कर गहि धरु
 मुकि मुकि हरि जस गावत बुझाय के ।
 कर ककन धुनि सुनि उधो गान कान सुनि
 चरित्त त्रिलोकु इत उत सकुचाय के ॥
 गोपीगन रथ सुनि उर पुर गुनि गुनि
 आइ रथ देखु द्वार कृत तजि धाय के ।
 गोपीगन तरु करु हरि रथ उर धरु
 किमि अकूर करु पुनि इहाँ आय के ॥
 कस कहँ पिंढा देइ गोपिन को मारा लेइ
 तत्र त्रम होइ रथ राखत छपाय के ।
 तन मन कृष्ण साथ मृत्यु मम व्रर हाथ
 ठग नहीं पाइ कछु रही पद्यताय के ॥

कहत सुनत गोपी प्रण करि जीव रोपी

हरि सम रूप मेरि रहव कटाप्र के ।

उधो घन श्याम रामसेवक जगत नाम

गोपी नाम राखु मरु हृदय बसाय के ॥४३३॥

उधो रथ डिग देखु सब मज नारी के ।

जनु भक्ति वन भरि खोजत मुरारी के ॥टिका॥

भक्ति घर नात मानी हरि प्रिया घर जानी

भनमो अनाम करु मुनि शिर धारी के ।

उधो उर पुलकाइ भक्ति रग रहु छाइ

हरि दत्त ज्ञान पुनि भरैइ सम्भारी के ॥

गोपी मन देखि देखि हरि सम लेखि लेखि

करत करक सह रूप बनवाये के ।

उधो रथ डिग छाइ गोपी मन राखि जाइ

कृष्ण दूत पूर गोपी बोलत हलारी के ॥

करि करि परनाम स्वप्न लयि सज ज्ञान

निज निज नाम कहु सकल पुकारी के ।

कुशल श्रवण नाम श्रवण वसत धाम

सुख हरि दीन्ह रिपु कस वर मारी के ।

देवकी शमद लहु वसुदेव सुख गहु

सुरि जस हुग हरि दीन्ह दूरि मारी के ।

सुनिके अनद लहु हरि जस उर गहु

किमि उहाँ रहु हरि गोपित विसारी के ।

सेना विधि गोपी जानु कृष्ण उर भाव मानु

सुख छोड कृष्ण किमि दीन्ह मुनि मारी के ।

गोपिन की ज्ञात रामसेवक म सदि ज्ञात

उधो मुक भयो नहि कहत विचारी के ॥४३४॥

राग केदारा

गोपी कहत बहु बिलसाय ।

नयन जल दरकाय ॥टेका॥

सुनत उद्वव बोलु रहिं फछु देखत भक्ति की राय ।

बोलत अटपट निरह वस त्रिय प्रेम नैह जनाय ॥

पास दिन बढि गयो हरि पुर बहुरि नहिं पुनि आय ।

भूठ किमि कहि गयो मथुरा लालच उर उपजाय ॥

कवनि अस घर नारि सुदरि राखु हरिहिं लोभाय ।

सुनत लहु आचर्य एक बहु सुनहु सोइ कहु गाय ॥

कुवरी के गृह जात प्रति दिन कुनर पर मन लाय ।

गोपी कुनर पाठ कहँ बाहरीहि कुनर सोहाय ॥

काष्ट कुनर बनाइ त्रय विधि राख्य पृष्टि चढाय ।

रिम्हहि हरि तत्र रामसेवक गोपी कहत रिसाय ॥४३५॥

उधो सुनहु कहत पुकारि ।

कहेउ तुम एकाँत मह सब गोपी बचन दुलारि ॥टेका॥

शीघ्र आवन गयो कहि तुम हृदयँ विचारि ।

प्राण गोपी अवधि निरखत सत्य धागा धारि ॥

अवधि गत भई असत बानी प्राण तजु त्रिय भारि ।

कोटि हत्या घरहु शिर हरि तजत तन ब्रज नारि ॥

सवति नवकी भई कुवरी देखहि गोपिन तारि ।

होत रिति धरि केश कुवरी देत देश निसारि ॥

तोरि कुवर धारि भूशाल लातन बहु मारि ।

क्रोध करि जनु कहत गोपी बोध चरन मुरारि ॥

सुनत उद्वव भक्ति बाढत बहत चछु बहु वारि ।

गोपिगन सुखु रामसेवक लहत दूत निहारि ॥४३६॥

राग श्री

हरि घहुँ जुग छल उर धारी ।

भारत नारी प्रचारी ॥टेक॥

हरि विश्वास करै उर जौं कोइ लहु पिछे दुख भारी ।

कुंरौं पुनि पाछे पछताइ जिमि गोपीगन मारी ॥

वैरोचन कन्यावध करु हरि इन्द्र वज्र ललकारी ।

भृगु पत्नी वध कीन्ह सुरन हित रेणुकहिं बधु महँतारी ॥

जच सुता वध कीन्ह ताडुका नहिं उर नीति विचारी ।

सूर्यनखा कर नाक कान हरु प्रथमहिं बहुत दुलारी ॥

चीर पान करि गोद पुत्र बनि नारि पूतना मारी ।

जलधर पत्नी वृदावर छल करि व्रत सोइ टारी ॥

बलिराजा वर भक्त परम हरि तासन छल अनुसारी ।

गोपीगन कहु रामसेवक बहु सुनु उधो चरित सुरारी ॥४३॥

उधो जाइ कहो अस गाई ।

सुनत दया कछु आई ॥टेक॥

नद यशोदा गेदत रात्रि दिन बार बार पछताई ।

भारतन मिश्री अमित खेलवना देखौं केहि गोइराई ॥

चीर नहीं बद्धरा कोइ पोवत घेनु घास नहीं माई ।

वृदावन तृण तरु सत्र सूखत कुज लता कुम्भिताई ॥

बाल सकल हरि बिनु व्याकुल अति रोजत कहँ दोर माई ।

गोपिन कहँ प्रिसराइ कीन्ह किमि सुख वर उर दरमाई ॥

तुम हरि विकल होत नहिं तजि त्रिय मुन्य प्रद नारि गवाई ।

तुम त्रिनु प्राण तजहिं गोपीगन दुस उर पुर न ममाई ॥

विष भक्षण जल पतन घात तन करन न एह सहि जाई ।

भक्ति विरह सुनि पुलकित उद्वव राममंत्रक सुन्य पाई ॥४४॥

उद्धव गोपिन की सुनि यानी ।

ज्ञान भक्ति रस मानी ॥टेका॥

विरह निकल अट पट अतिबोलत लखि हरि कहँ जग प्रानी ।
 प्राकृत नारि नहीं गोपी कोइ लखि जगदध भवानी ॥
 धन्य धन्य उद्धव गोपनिफहिं लखि घर सुद्धि सयानी ।
 पत्री हरि कर दीन्ह गोपिन कर लहि घर सकल जुझानी ॥
 पत्री खोकि उद्धव पाँचन लगु हरि मुख त्रिमल कहानी ।
 विषय विराग भक्ति उर गहु दिष्ट करि बिचार होहु ज्ञानी ॥
 श्रवण मनन निदिध्यास करहु बहु होहु प्रिया अब ध्यानी ।
 सर्व सर्वगत सर्व चरालेय अपिल ब्रह्म पहिचानी ॥
 अच्युत अगम गगन सम पूरन मोहि काल त्रय जानी ।
 भजन करो अब रामसेवक ध्रुव लखि मोहिं सब जग प्रानी ॥४३९॥
 उधो हरि वर पत्री सुनाई ।

जोग करौ सजि भोग जगत सुख चहुँ दिसि कृष्ण देखी ॥टेका॥
 अचल भक्ति गोपिन की गूढ लखि नहि गुरु ज्ञान सोहाई ।
 कृष्ण चरित गोपिन सुख प्रद हित उद्धव पुनि पुनि गाई ॥
 धन्य जन्म जगती सल गोपी जो हरि हृदय बसाई ।
 सुत पित पति गृह कार सकल सजि मनचित हरि पद लाई ॥
 दरस परस करि तृप्त होत नहिं नहिं मन नयन अघाई ।
 रात्रि दिवस छन श्याम रूप चित सगुन ब्रह्म उर भाई ॥
 धन्य जन्म मम कहत उद्धव तेहि भवति वरस जय पाई ।
 धीरज धरि उर निकट लगो हरि देर नहीं अब आई ॥
 कहत सुनत हरि रूप भ्रमर धरि शब्द कीन्ह सुखदाई ।
 सुनत शब्द रस रामसेवक वर गोपिन उर सुख छाई ॥४४०॥
 सुनि भ्रम की धुनि अति प्यारी ।
 लहुँ गोपी सुख भारी ॥टेका॥

अट पट वचन धीम्य बहु बोलत उद्धव के देइ हँकारी ।
 जाहु भ्रमर अथही फिरि मथुरा जहाँ हरि के बहु नारी ॥
 हरि सदेश सुनावहु तेहि बहु जोइ उर लाइ सुखारी ।
 मम पायन किमि परत निलज होइ वचन पाण उर मारी ॥
 जाइ सुनावहु कुचरो के अथ नाहीं देत यहु गारी ।
 श्याम रूप जनि मोहि देखावहु हरि सम बर तन धारी ॥
 मथुरा की नारि पिछे पछसाहँ जैसे गोपिन मारी ।
 कृष्ण छली नहि मित्र कोई फर नहुँ जुग कहु धुति चारी ॥
 इत उत भ्रमर शब्द बर बोलत गोपिन सुख अनुसारी ।
 उद्धव रामसेवक गोपीगन लखु बर चरित मुरारी ॥४४१॥
 उद्धव हरि बर हाल सुनाई ।

गोपिन उर सुधि पाई ॥टेका॥

कहुक काल गोकुल वसि सुख लहु हिलि मिलि हरि गुन गाई ।
 बिदा मागु गोपीगन सन बहु प्रेम विचश रहि जाई ॥
 गोपीगन कहु लहि तोहि उद्धव रहु उर दुख विसराई ।
 हरि बर चरित कहत निशि दिन तुम सुनि उर ताप चुगाई ॥
 तुम त्रिनु क्षाप लहय एहि पुर यहु गृह आंगन न सोहाई ।
 उद्धव कत बहु बोध त्रिधिधि त्रिधि गोपिन सुख दरसाई ॥
 पात्र पुजाइ बुगलइ गोपिन काँ मथुरा उद्धव भाई ।
 भेद दीन्ह गोपिन कर पूजा करि यहु भक्ति बढाई ॥
 गोपिन सम नहि भक्ति देव कोई दनुज मनुज समुदाई ।
 भक्ति सुख दरस रामसेवक सुनि हरि उद्धव पुलकाई ॥४४२॥
 कत चरित अमित सुखकारी ।

बलदेव सुकृञ्च विहारी ॥टेका॥

गोपिन की सुनि डाल मुदित मन हस्तीना पुर बित धारी ।
 अक्रूर सन कहेउ दीन होइ अगिल चरित सगौरी ॥

इन्द्रप्रस्थ पुर जाहु बेगि तुम टिकि रिपु मित्र विचारी ।
 आवहु बेगि तुम देखि पाँडु सुत सुनत लहत दुख भारी ॥
 अक्रूर सुनि वचन कृष्ण की रथ चढि चहु सुख सारी ।
 घृतराष्ट्र गृह प्रथम गवन करु हिलि मिलि वैठु सुपारी ॥
 निदुर भक्त मिलु प्रेम सहित बहु सुनि सुख कुशल मुरारी ।
 भेट लीन्ह अक्रूर सकल सन अँधहि बहुत दुलारी ॥
 पुत्र छोह नहिँ अघ तजेउ कोइ हरि अज्ञा दियो टारी ।
 अक्रूर सुधि रामसेवक लेइ कुत्ता भवन पद दारी ॥४४३॥
 अक्रूर भवन निज पाई ।

कुत्ता बहु हरखाई ॥टेक॥

सधम उठि कर धारि भाइ कर मिलि शुभ थल वैठाई ।
 पाव धोआइ रिआइ अन्न शुभ पलंग दसाइ सोआई ॥
 नैहर कुशल पुछत बहु रोदत कहु भाईन भलाई ।
 कस वंस भयो नास सुना अब गृह आये दोउ भाई ॥
 देवकी अरु बसुदेव कुशल कहु पुरिजन मित्र सहाई ।
 कृष्ण सरन अत्र रहव त्यागि गृह दुख उर पुर न समाई ॥
 पाँडु पुत्र सत्र नारि सहित मिलु अक्रूरहिँ शिर नाई ।
 पाँडु वश कर घोष विनिधि करि अक्रूर गृह जाई ॥
 कृष्ण ते सकल मित्र रिपु रीति दुख कुत्ता कहु गाई ।
 सुनि हँसि गहि धरु रामसेवक उर कृष्ण पालु समुदाई ॥४४४॥

दोहा

कृष्ण चरित शत उदाधि सम गोकुल मथुरा कीन्ह ।
 धरणि भार हरि मारि खल त्रय पुर कहँ सुख दीह ॥ १ ॥
 अष्टादश पौराण कहि शारद सेस सुजान ।
 षपपुराण पुनि अष्टदश कहि कहि लहु कल्याण ॥ २ ॥

भारतादि इतिहास बहु अगम निगम कहि सार ।
सर्व शास्त्र कविगन सकल कहि सुर लहु नहिं पार ॥ ३ ॥

सोरठा

चरित कृष्ण अवगाह रामसेवक किमि पार लहु ।
श्रुति नहिं लहु करि थाह रामसेवक गठ हठ करत ॥ १ ॥
फलिमल प्रसेउ अघाय रामसेवक भयो सिथिल मन ।
करु हरि योगि सहाय एक सरन राधा रवन ॥ २ ॥

❀ इति पूर्वा श्रीमद्भागवत मत अन्य बहु पौराण मत मिश्रित ❀



उत्तरार्द्ध



राग टोढी

हरि छो चरित सुर प्रद नर नारी के

सुर नग मुनि जस गावत सुरारा के ॥टेका॥

कस घात जब कीन्ह त्रिभुवन सुर दीन्ह

पुरिजन पालु मल पितु महेतारी के ।

उप्रसेनि राज दीन्ह कस देह दग्ध कीन्ह

उपकार सुर मुनि भुवि भार टारी के ॥

मुष्टिकादि बीर मारो मोक्ष सुख दीन्ह वारी

उपकार लोक वेद करु तन जारीके ।

कस नारी दृष्ट चारी रिपु लगु हरि भारी

रोदत वदत पति गुण सुर वारी के ॥

केश विधुराइ भाइ पितु गृह जाइ गाइ

कस थात सुनि जरासध दुख डारी के ।

क्रोध करि चलु घाइ सेना लेइ पुर आइ

कृष्ण आम खेरु बहूँ दिशि परचारी के ॥

कृष्ण बलदेव सुनि रिपु उर पुर गुनि

अत्र निज गहि ठाढ भयो पुर द्वारी के ।

जरासध बड़ भूप श्यामल गवर रूप

देति मोहि गयो हरि वदन निहारी के ॥

रिपु मानि हहकारी अत्र शस्त्र शिर डारी

कृष्ण बलदेव राजी सैन्या सब मारी के ।

नृप कहँ त्यागी रामसेवक सुकृत जागी
जरा सध गयो गृह रिपु रूप धारी के ॥४४५॥

कृष्ण बलदेव रिपु तजु हरग्याय के ।
सैन्या रिपु भारी रिपु रिभि उपजाय के ॥टेका॥

ज्वरासध रही थीर अरवनी अमित वीर
जोरि जोरि ल्याइ खोजि रिपु दरसाय के ।

ढिग मारू पाइ पाइ कहँ जाव धाइ धाइ
अश उर गुनि रिपु त्याग करु पाय के ॥

तेइस चोहिणि दल ज्वरासध लेइ बल
मथुरा नगर घेरु पुनि शठ आय के ।

ललकारु देइ गारी कृष्ण राम ठाढ़ द्वारी
सनननन बान चलु बहु बहु धाय के ॥

भिंडी पाल ज्येप्री चलु जनुभुवि दलि मलु
चट पट चट पननन पननाय के ।

तोमर मुशुडी बहु मुगुदल असि गहु
चलत शतत्री घन इव घहराय के ॥

कृष्ण बलदेव डौंटी छन महँ सैन्या काटी
ज्वरासध त्यागी शरिरू धार वाय के ।

कृष्ण राम जीति पाइ विजय सकल गाइ
ज्वरा सध आयो गृह फौद स्व गवाँय के ॥

ज्वरासध पुनि जोरी वीर बहु शिर मोरी
युद्धि करि हारि गृह फिरु सकुचाय के ।

कृष्ण बलिराम रामसेवक पुरन काम
चाह नहिँ उर जस रहु लोक छाय के ॥४४६॥

चरित अगम बर सुगम मुरारी के ।
कहत सुनत अघ हरु नर नारी के ॥टेका॥

ज्वरा सध पुनि पुनि रिपु नाश गुनि गुनि
 मथुरा नगर घेरु हरिहिं प्रचारी के ।
 सननन घलु वान गननन करु गान
 मननन फिरु रिपु प्रमल निहारो के ॥
 फहत शतग्री सोर चलत भुशुडी घोर
 कृष्ण बलदेव धीर रहु थीर थारी के ।
 अत्र शस्त्र तोरु डौंटी वीर भुज शीर काटी
 रूधिर सरित बहु करु रिपु मारी के ॥
 तेईस चोहिणि दल ज्वरा सध लेइ बल
 सप्त दस वार युद्धि करु ललकारी के ।
 सप्त दश वार हारी गयो गृह परचारी
 अष्टादश रन करि मारव पछारी के ॥
 कृष्ण बलदेव राजी रिपु दल बधि गाजी
 ज्वरासध त्रास नाहिं भुवि रुज टारी के ।
 अष्टादश रण आइ धीर भाव मन भाइ
 आगिल चरित हित रहु मुख सारी के ॥
 तेईस तेईस दल चोहिणि अभित बल
 सप्त दश वार शिर फाटि भुवि डारी के ।
 कृष्ण जस गाइ रामसेवक सरन पाइ
 चहुँ जुग रीति हरि राखत दुलारी के ॥४४॥
 ज्वरासध कटक घटोरु गृह जाय के ।
 अष्टादश रण दुइ दिन रहु आय के ॥टेक॥
 वीर काल यवन न दुरूप मगनन न
 रोजत सुधीर मुनि नारद को पाय के ।
 मुनि पद गहि फहि धीर मोहि देहु सही
 तुम बहु जानु गृह गवनु त्ताय के ॥

फल कपोल चिद्युक् भाता धवल मणि सुदत जाल
 धकुटी शुचि नयन आस्य शोभा शतवारी ।
 शोभित बनमाल लाल प्रीर्वे शुभ्र मणि सुजाल
 निप्र चरन उरसि भ्राज मोह पटल टारी ॥
 शस्र चक्र गदा भ्राज भुजा चारि कमल राज
 चक्रित मुचुकुद रूप मिशद हरि निहारी ।
 सोवत दर अमित काल देख्यो नहिं जतु जाल
 देखत एह रूप परम प्रथम एक जारी ॥
 अचरज उर अमित कीन्ह अभयदान कृष्ण दीन्ह
 काल पवन घात सकल लोक जन सुरवारी ।
 सूर्यवश जन्म गाय देवन की करु सहाय
 निद्रा सुरदत्त दृष्टि पातकहु दुलारी ॥
 कृष्ण जन्म निज सुनाय आत्म रूप वर लखाय
 द्विभुज रूप तुरिन धारु त्यागि भुजाचारी ।
 देख्यो मुचुकुद भूप कृष्ण रूप अति अनूप
 रामसेवक प्रेम नेह अस्तुति अनुसारी ॥४४९॥
 जैति जैति जय कृपाल सकल लोक काल याल
 महिमा अपार वेद कहस विबुध म्कारी ।
 उद्धव धिति नाश हाथ कबहिं नहिं कोपि साथ
 भक्तन हित हेतु नाथ रूप अमित धारी ॥टेका॥
 जैति जय अनत एक भक्तन उर राखु टेक
 धरणि भार हरत दुष्ट दैत्य वश मारी ।
 ब्रह्मा शिव धरत ध्यान सुर नर मुनि राहत ज्ञान
 रूप अति अनूप चरित सुनत पाप हारी ॥
 जैति ब्रह्म अज अनूप निर्गुण गुण वर सरूप
 सेवत मुनिवृद् चरन कमल ध्यान वारी ।

पावत विश्राम धाम होत सकल पूर्ण काम
 काम क्रोध लोभ मोह मत्सर रिपु जारी ॥
 जैति जय कृपा अगार भव समुद्र करत पार
 अधम जन विलोकि नाथ पालत नर नारी ।
 दरश मोहिं कीन्ह नाथ दीन जानि कीन्ह साथ
 शीतल कर कज शीश परभि करु सुगारी ॥
 जैति दीन यधु नाथ धरत चरन कमल माथ
 आपन करि तोरि थापि देहु भव उतारी ।
 दीन जोग तप बिराग नेक नार्ही कीन्ह जाग
 तीरथ व्रत एक नार्हि सरन गहु मुरारी ॥
 जैति जैति जय कृपाल निररहु लगि जन विहाल
 प्राहि प्राहि प्राहि भाम जगत जाल घारी ।
 अस्तुति मुचुकुद कीन्ह रामसेवक सरन दीन्ह
 कृष्ण दाम आत्म खास स्वयस उर विचारी ॥४५०॥

राग श्री

हरि जुग प्रति जुग उपकारी ।
 करि चरित जगत विस्तारी ॥टेका॥
 काल यवन गिरि खोह लेइ हरि दुष्ट अरिष्ट विचारी ।
 मुचुकुद दरि मध्य सोवत रहु हरि विचारि रिपु भारी ॥
 मुचुकुदोपरि शीश तोपि पद पोतावर निज हारी ।
 आपु गयो छन श्रोत छिपि प्रभु देगि दूष्ट दियो गारी ॥
 दूगि लेइ शठ मोहि कदला सोयेउ टाँग पसारी ।
 अस कहि कालयवन हरि लगि उर मुचुकुदहिं पट भारी ॥
 कोप दृष्टि करि ताकि नृपति वर काल पवन तनजारी ।
 काल पन्न तन पात जानि हरि नृप दिग रूप मवारी ॥

रूप चतुर्भुज देखि परम हरि नृप अस्तुति अनुमारी ।
रामसेवक मुचुडुद मम अति लहि रस भक्ति गुरारी ॥१४१॥
हरि रूप परम दरसाई ।

मुचुडुद नृपति सुगदाई ॥टेका॥

माँधाता सुत सकल चरित निज कहि हरिपद शिरनाई ।
हरि निज जन्म कर्म बहु निधि कहि भक्ति नात गुन गाई ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य देखि हरि बदरी वन को पठाई ।
तप करि तन तजि वमहु अमर मोक्ष की राह बतलाई ॥
अष्टादश रण जानि महारथल ज्वरासध चढि आई ।
त्रय निशति चोहिणि दल गर्जत मारु मारु धुनि लाई ॥
आगिल कार्य विचारि दिखावत भागि चलेउ दोउ भाई ।
तिष्ठ तिष्ठ कहि दल अपार लेइ चलु पीछे खल धाई ॥
परवरसन गिरि उप गो दोउ खल चहुँ दिशि घेरेउ जाई ।
चहुँ दिशि अग्नि लगाइ जराइ वन रामसेवरु सुगदाई ॥१४५॥

राग केदारा

माधन करत दीन सहाय ।

सुजस तिहुँ पुर धाय ॥टेका॥

काल यवन जराइ पर्वत वेगि चढु दोउ भाय ।
ज्वरासध लेइ कटक पर्वत घेरि वनहिं जराय ॥
जारि जनु दोउ भाय पर्वत शत्रु रारि मेटाय ।
ज्वरासध लेइ कटक चलु गृह मुदित वाद्य बजाय ॥
मृत्यु भौम कर जानि तेहि हरि दीन्ह भवन पठाय ।
गोकुल मथुरा चरित बहु करि द्वारिका मन लाय ॥
कृष्ण अरु बलदेव प्रमुदित ज्वरासध बचाय ।
वृदि पर्वत ते भटित हरि वेगि निज पुर आय ॥

देवकी वसुदेव नृप वर देखि हरि हरराय ।

मिलउ हरिसन रामसेवक सकल जन सुख पाय ॥४५३॥

हरि आय पुरि पनिहारि ।

राजित लखु नर नारि ॥१६॥

निर्मित निज माया सराहत चहुँ दिशि अति अँजियारि ।

कनक मई सब धातु राजित भून्य गज मणि द्वारि ॥

खचित मणिगन रचित गृह थल पचित नग मणि भारि ।

डेहरि न बिडम रचित अति शोभित गृह वर द्वारि ॥

द्वार शुभग कपाट चहुँ दिशि कुलिश मणि पचिवारि ।

उदधि मध्य विराजु नगरी शोभित चहुँ दिशि वारि ॥

निर्भय करु हरि नारि नर मर रिद्धि सिद्धि गृह थारि ।

बिभव भोग विलास करु सब सुरति देश विमारि ॥

मथुरा ने सुख कोटि गुन लहु अधिक कहु श्रुति चारि ।

कुशल सुख बहु रामसेवक निरखि यदन मुरारि ॥४५४॥

राग श्री

हरि द्वारावति पुरी आई ।

धसि पालत लोग लोगाई ॥१६॥

नृत्त गान वाजन बहु वाजत सकल पुरी छवि छाई ।

अति रमणीय मनोहर लखि पुरि प्रमुदित जन समुदाई ॥

रेवत की कन्या रेवती वर तिहुँ पुर तासु बडाई ।

तासु जोम्य पति नहिँ मिलु तिहुँ पुर खोजु रेवत बहु धाई ॥

हलधर जन्म सुनि द्वापर वर वैठि रहेउ मन लाई ।

सप्त विंशति जुग हलधर पद मन पल सम गयेउ सिराई ॥

द्वारावति मह आइ रेवत नृप देखेउ रूप लोनाई ।

कन्या मम उर पाइ अनन मनहिँ मन वार वार पुलकाई ॥

बल बुधि अधिक तेज तन राजित रेवती लखु सुरताई ।
 लग्न प्रियाह गति मातु पिता जन रामसेवक सुखपाई ॥४५५॥
 बलदेव विवाह निहारी ।

सुर लहु तिहूँ पुर भारी ॥टेका॥

पुश कन्या जल रेवत गहि कर वेद पढत मुनि भारी ।
 वेद प्रहित सकल्प दान विधि हलधर लियो कर धारी ॥
 वेद घोष जय शब्द तिहूँ पुर सुमन शीश सुर डारी ।
 अति सुर लहु बसुदेव देवकी नृप उपसेन सुरारी ॥
 नृत्त गान वाजन बहु वाजत द्वारावति सुर सारी ।
 दान मान सतोष चहुँ दिशि हरपित पुर नर नारी ॥
 अति अनद लहेउ रोहिणी उर जोइ हलधर महतारी ।
 भ्रातृ प्रियाह मो लहेउ अधिक सुर जाकर नाम मुरारी ॥
 अति उत्सव मंगल चहुँ दिशि बहु रेवती प्रियाह विचारी ।
 सकल चरित एह रामसेवक हरि त्रय पुर जैति पुकारी ॥४५६॥

राग टोडो

हरि को चरित कवि किमि कहु गाय के ।
 ब्रह्म अनवद्य कृत मानुष जनाय के ॥टेका॥
 ज्येष्ठ वर भाइ मानी गोत्र परिवार जानी
 करेउ प्रियाह बलदेव मन लाय के ।
 माया परचढ हरी भीष्म को उर धरी
 रुक्म रुक्मिणी उर पुर रहु जाय के ॥
 भीष्मभीष्म नारी उर कृष्णको विवाह पुर
 कन्या जोग बर उर रहु ठहराय के ।
 रुक्म कान निज मुनि पितु वाक्य उर गुनि
 शिखर धुनि धुनि ग्लानि करु सकुचाय के ॥

- कृष्ण चरवाह गाइ नाहि नृप नीति पाइ :-
भगिनी विवाह मम किमि करु आय के ।
राजा शिशुपाल वर चैव वस वर घर
करव विवाह पितु सबत विहाय के ॥
लम सुविचार करु निज मत उर धरु
मातु पिता पुरिजन मत सुगवाय के ।
कृष्ण को विवाह सुनि शिशुपाल सुनि पुनि
हानि लाभ सुख दुख रहु जगदाय के ॥
रुक्मिनी स्व सुनि कान पति पद पहिचान
त्रिप्र बोलि कृष्ण दिग भेजु सिरनाय के ।
उत्सव वर रामसेनक मुखद कर रुक्मिनी
विवाह कृष्ण श्याम वर पाय के ॥४१७॥
फहि नहि जात वर चरिन मुगरी के ।
फेल करु जग नर तन वर धारी के ॥टेका॥
रुक्मिनी को पत्र लेइ द्विज कृष्णकर देइ
द्वारिका मो जाइ उपसेनि सभायारी के ।
पत्नी कृष्णवाचि खोलि त्रिप्र सन वात बोलि
वेगि आवो नाथ मम पत्नी को निहारी के ॥
सिंह वर भाग जोइ ससक सियार रौइ
नाथ पद माथ धरि कहत पुकारी के ।
उद्र कर जाग भाग रासभ फरत राग
उचित न नाथ उर देखहु विचारी के ॥
मातु पितु दीन्ह तोहि राखहु सरन मोहि
भ्रातृ छोरि देत शिशुपाल को दुलारी के ।
सरन न त्याग करु आइ मम कर धरु
पर पति लेत नाथ नेरु तत्र नारी के ॥

अर्धिका भवन जाइ पूजा करु हरखाइ
रथ बैठाइ गृह आनु रिपु मारी के ।
द्विज वर साथ नाथ वेगि आइ धरु हाथ
करहु सनाथ रिपु भय रुज टारी के ॥
पत्री वर हाल सुनि कृष्ण निज मन गुनि
द्विज वर तोप कीन्ह रथ बैठारी के ।
रथ चढि चरु रामसेवक न रिपु दुरु
कृष्ण जन पालनारि वाक्य अनुसारि के ॥४५८॥

रग विहाग

जोहत पथ द्विज कर देइ वर पाती ।
भीष्म सुता रुक्मिनि दुख लहु उर वार वार पछताती ॥टेका॥
हरि सदेस न द्विज लेइ आयेउ प्राण राखव केहि भाँती ।
तम गात मुख वचन न आवत हरि सुधि लहत जुडाती ॥
रात्रि दिवस चिंता उर करु बहु उत्सव पुर न सोहाती ।
कृष्ण बिना नहिं रुचत प्राम गृह नहिं पुरिजन कुल जाती ॥
लोक लाज नहिं आँखु पात करु आवा इव जरु छाती ।
लोक बात नहिं रुचत निभव कोइ नहिं विवाह बरियाती ॥
चितव पथ द्विज दिवस वितावत हरि चिंता बहु राती ।
मगल गान फरत त्रिय हिलि मिलि सुनि रुक्मिनिसकुचाती ॥
अति दयाल तजि नाम कृष्ण वर शिशुपाल जीव घाती ।
प्रणत पाल सुधि रामसेवक करि रुक्मिणि उर पुलकाती ॥४५९॥
बिना हरि उर अतर दुख होई ।
श्याम मुरति उर अतर भावत अपर नृपति नहिं कोई ॥टेका॥
शिशुपाल गृह पुर उत्सव अति कुडिन पुर गति सोई ।
वर कन्या कर नाम लेत सब चैद्य पुरी इत जोई ॥

रुक्मीणि धुनि सुनि गुनि करमी जत प्रगट नहीं उर रोई ।
 द्विज मम हित सोइ गयेउ द्वारिका पत्र मो विधि बरनोई ॥
 अबधि वितत पुर अवन गवन की लग्न विवाह नहिं गोई ।
 पत्र दीन्ह हरि कर देने हित की द्विज बर पथ खोई ॥
 मम अपराध खोड हरि आवत बीज नहीं शुभ बोई ।
 पत्नी की घर हाल सुनत हरि उर कल्मष देत धोई ॥
 रुक्मिणि उर हरि रूप असत ध्रुव हरि उर जग सत्र लोई ।
 हरि प्रण राघवत रामसेवक सब कहत त्रियुध निगमोई ॥४६०॥

राग कल्याण गति चंचरीक

राजित रथ कृष्ण श्याम शोभित शत कोटि काम
 द्विज अनूप सग रग कोटिन छवि डारी ।
 रुक्मिणि घर हाल सुनत भक्ति पक्ष मनसि गुनत
 लीला अवतार अमित कृष्ण अवतारी ॥टेका॥
 कुडिन पुर चलत चाल रथारूढ भुज बिसाल
 शोभा शत काम अग अगन पर वारी ।
 इष्ट सकल लखत वीर भागि जात पथ न थीर
 पवित सुख रस अडोल निरपत नर नारी ॥
 सुनत हलधर सुजान कलह हाल रिपु प्रधान
 कृष्ण गयो अकेल बाल फौद तासु भारी ।
 अमित कटक लेइ धाय मूशल हल कर स्वलाय
 कृष्ण निकट आयो मट हलधर ललकारी ॥
 श्याम गवर अति अनूप देखत नर नारि रूप
 मानहु छवि काम इदु कोटि शत तमारी ।
 कटक ग्राम निकट आय कृष्ण कहेउनिहँसि गाय
 ब्राह्मण गृह जाइ कहो वात पुर विचारी ॥

रुक्मिणी गृह विप्र जाय कृष्ण चरित सकल गाय ।
 महिमा हरि गाय दान वैड द्विज दुलारी ।
 आयो शिशुपाल राय अमित कटक साजि धाय ।
 बैठेउ वरात फूलि कृष्ण अरि निहारी ॥
 कृष्ण बलदेव आय भिष्म सुनत तुरित धाय ।
 पूजा करि त्रिभिध शुभ्र आसन बैठारी ।
 भोजन बहु विधि कराय रामसेवक शीशनाय ।
 मोहेउ नर नारि नगर रूप लहि मुरारी ॥४६॥
 कृष्ण श्याम तन अनूप निरगत डरु कुटिल भूप ।
 कुडिन पुर नारि सकल रूप नर लोभाई ।
 भोष्म सहित नारि देरि रूप कृष्ण मधुर पेखि ।
 कन्यासम तुल्य श्याम निरगत पद्धताई ॥टेका॥
 बाल वृद सग धाय कृष्ण निकट वैठु जाय ।
 नयन फूट पान करत रूप की लोनाई ।
 दरस परस बाल करत हँसि हँसि कर कर स्व घरत ।
 डरत नाहिं नेरु कृष्ण रूप ध्यान लाई ॥
 कुडिन पुर सकल रचित मणि गन बहु रंग पचित ।
 रत्न धातु सकल रचित शोभा रहु छाई ।
 चित्रित अति प्राम धाम पुर कपाट अति ललाम ।
 रचना धरि हाथ कृष्ण सकल शिशु देखेसाई ॥
 कृष्ण बाल तोप करत रचना लखि सुरत स्व भरत ।
 छन मो लोक सकल फारि स्वयंस करि बसाई ।
 बाल प्रेम उरमि पाय सुदर कहि कृष्ण गाय ।
 करि दुलार अमित शिशु नभ बन हरि पठाई ॥
 रुक्मिणी विवाह जोग हिलि मिलि सत्र कहत लोग ।
 कृष्ण श्याम रूप अपर भूप न सोहाई ।

कृष्ण श्याम तन अनूप एक टक सब देखु रूप ।

। रुक्मिणी निराह जोग्य इत उत सत्र गाई ॥

सुर नर मुनि गन समाज मध्य कृष्ण तन विराज ।

९२ निज निज रुचि भाव दाव निरसत समुदाई ।

कुडिन पुर सकल लोग रामसेवक कहत जोग ।

॥ रुक्मिणी निराह कृष्ण शोभा धर पाई ॥४६२॥

राग टोडो

अबिका पूजन चलु बहु हरस्याय के ।

सखी बहु मग लेइ बाजन बजाय के ॥टेका॥

कृष्ण पद प्रीति करि उर हरि रूप धरि ।

। पत्नी महँ भाव दाव प्रथम जनाय के ।

रुक्म बहु वीर जग रुक्मिणी के करु मग ।

॥ घेरि आगे पिछे चलु चहँ दिशि धाय के ॥

अत्र शस्त्र कर धारी इत उत जनवारी ।

। कौतुक देखत चलु पुरिजन गाय के ।

मंगल सुगान जोर बाजन करत सोर ।

। अमित कोलाहल नगर रहु धाय के ॥

शिशुपाल ज्वरासध कर बहु छेद बध

दल लेइ धाइ धेरु देवी मठ आय के ।

करत भुसुडी सोर तोप घहरात घोर ।

॥ धरु धनुमान कर सङ्ग चमकाय के ॥

कृष्ण बलदेव आइ रथ दल लेइ धाइ ।

देवी द्वार ठाढ़ भयो रूप दरसाय के ।

रुक्मिणी को मन भाव पत्नी लम्बि भोजु दाव ।

। रिपु दल देखि उर पुर रहु ठहगय के ।

भग्नी हाल रुक्म सुनि शिर धुनि उर गुनि , । ।
 । करेउ गलानि उठि भयो थिर थारी के ॥
 सप्त करि चट्टु धाय पुर न बहुरि आया ।
 । त्रिनु कन्या लिये रिपु मारी परचारी के ।
 सुग्न न देखाव आइ रण सन भागि धाइ । ।
 कहत उठाइ हाथ पुर नर नारी के ॥
 अस कहि चलु धाय रथ चढि गारी गाय ।
 अधम निलज नारी-चोर ललकारी के ।
 तिष्ठ तिष्ठ तीष्ठ शठ किमि भागु करि हठ, -
 रुक्म अभिमानी घेरि सर चहुँभारी के ॥
 सुशलन दल मारी बतदेव हल धारी । ।
 । कृष्ण सर काटि रिपु अवनि पद्धारी के ।
 रथ लेइ वाधि दीन्ह बलदेव दया कीन्ह ।
 ॥ । । रुक्मिणी छोह लसि उर पुर धारी के ॥
 पवन कराइ शीर अर्ध भाग त्यागि बौर । ।
 । । ज्येष्ठ भ्रातृ वाक्य कृष्ण उर अनुसारी के ।
 रुक्म बस लाज रामसेवक स्वकृत राज ।
 ॥ । गृह माम त्यागु लसि चरित मुरारी के ॥४६६॥

राग श्री

हरि जीति लीन्ह घर नारो । । । ।
 । सुर नर मुनि रिपु भय टारी ॥टेका॥ -
 ज्वरासध शिशुपाल लेइ दल मागि गयो रण हारो ।
 बुडिन पुगजन लहेउ महा सुग्न कृष्ण रूप न रिसारी ॥
 भीष्म ताहेउ सुग्न शोच गई उर कृष्ण भक्ति पर वारी ।
 सुग्न लहु घर नम कहि न मरुत वत्रि जस रुक्मिणी महँतारी ॥

रुक्म मान मधि गृह जब चलु हरि तिहुँ पुर जैति पुकारी ।
 सुर मुनि नाग की जैति शब्द सुनि रुक्मिणी अधिक सुरपारी ॥
 भाम भाम की नारि भागि चलु हरहीं न हरि बहु झारी ।
 अग्य कहत अस साधु नहीं कोइ सो हरि हृदये विचारी ॥
 देश भाम सुख देत परम हरि आये द्वारिका द्वारी ।
 हर्ष कोलाहल रामसेवक पुर सुनि जै जीति मुरारी ॥४६५॥
 हरि द्वारावति महँ आई ।

सुनि बाल बृद्ध जन धाई ॥टेका॥

श्याम गवर बर रूप बिलोकत प्रमुदित जन समुदाई ।
 रुक्मिणी कर जब हरण सुनेउ सत्रमनहुँ परानिदुग्य पाई ॥
 शिशुपाल दल जीति मान मधि रुक्म रुक्मिणी भाई ।
 नारी रत्न गृह लेइ प्रविसेउ पुर करि दोउ भाइ प्रभुताई ॥
 उप्रसेनि बसुदेव देवकी रोहिणी बहु हरपाई ।
 करि नेवछावरि वाद्य बजावत बहु विधि रत्न लुटाई ॥
 रुक्मिणी सम नहीं नारी तिहुँ पुर कहि कहि मगल गाई ।
 कृष्ण श्याम तन गौर रुक्मिणी त्रिभुवन छवि रहु छाई ॥
 मेघ तडित लखि छवि शृंगार तन रतिपनि सहित लजाई ।
 कृष्ण रूप लखि रामसेवक जन चछु फल लहि पुलकाई ॥४६६॥
 रुक्मिणी को विवाह सोहाई ।

प्रयपुर जन जै धुनि लाई ॥टेका॥

कुडिन पुर हरि हरि ल्यायो द्वारिका मो बाजत बधाई ।
 कहावत राक्षसी विवाह एह नतु गोघ बीज नाई ॥
 नतु मानुषी कन्या रुचि करु हरि सुर मुनि गति नहि भाई ।
 परम शक्ति रुक्मिणी श्रुति गावत जोइ सीता सुखदाई ॥
 सोइ सीता हित रावण प्रमुदित जनक नगर शठ जाई ।
 बन ते हरि लेइ गयो गृह अपने रामेउ जतन कराई ॥

राम मारि रावण सीता लैइ' अवध नगर पुनि आई ।
 सोइ रावण शिशुपाल जानु जग वध हित बैर वढाई ॥
 रुक्म विवाह हेतु तेहि बोलेउ भग्नी सहित गवाई ।
 हरि लीला नहिं लखि परु कोइ उर रामसेवक सुख पाई ॥४६७॥
 रुक्मिणी हरि कहँ अति प्यारी ।
 चहुँ जुग कहु श्रुति चारी ॥टेका॥
 ब्रह्माणी रुकुमिणि श्रुति गावत ब्रह्म कृष्ण सुख कारी ।
 धरि तन सकल भार भुवि हर हरि असुर बशखल मारी ॥
 कृष्ण रुक्मिणी हिलि मिलि चहुँ जुग त्रिभुवन जस निस्तारी ।
 करत विवाह राक्षसी हिलि मिलि कहत सुनत अघ हारी ॥
 श्याम गणर जोरी अति राजित वेद पठत मुनि भारी ।
 दुलह दुलहिनि द्वारावति पुर निरखत सन नर नारी ॥
 नृत्त गान बाजन बहु बाजत चहुँ फललत सुखारी ।
 अति उत्साहन जाइ वरनि कोइ भगल त्रिधि अनुसारी ॥
 रामसेवक रुक्मिणि सरनागत भागत सरन मुरारी ॥४६८॥
 उग्रसेन सभा छवि छाई ।
 बरणा तुम जुरु आई ॥टेका॥
 धर्म न्याय कर धर्म शास्त्र त्रिधि विप्र अमित वैठाई ।
 उद्धव अक्रूर कृतवरमा वैठत जु न लखि जोई ॥
 नृप बहु आवत उग्र सभा लखि राजनीति दरसाई ।
 बैठि सुभाव सुदेव निराजित राम कृष्ण सुत पाई ॥
 कोइ छन पारा हिलि मिलि खेलत राजनीनि जोइ गाई ।
 नृत्त गान कोइ छन मन राजित त्रिभव त्रिलाश सुनाई ॥
 फोइ छन हौंस्य कुशल को घोलावत हंसत सभा समुदाई ।
 ज्ञान भक्ति कोइ छन हिलि मिलि कहु कोइ छन जज्ञ वडाई ॥
 तीरथ भ्रत कोइ छन सन गायन भूत भविष्य सोहाई ।

वर्तमान हरि रूप त्रिलोकत रामसेवक मन लाई ॥४६५॥
उपसेनि सभा सुखकारी ।

जहाँ हलार कृष्ण मुरारी ॥टेका॥
धर्म शास्त्र इतिहास त्रिविधि त्रिभि कहत सुनत जनकारी ।
न्याय करत उपसेनि सभासत् सोइ नीति सुविचारी ॥
राम कृष्ण पर रूप त्रिलोकत अत्रा हरि अनुसारी ।
द्वारावति पूरी अति रागित उन्धि लहत सुख भारी ॥
हरि को धरित अगम न सुगम कोइ निरखत रहु नरनारी ।
लखि न परत का करत चरत भुवि का जग जस निस्तारी ॥
कोइ दिवस शत्राजित प्रायेउ सीमंतक मणि धारी ।
सभा मध्य परगाम् भयो अति अनु भुवि उदित तमारी ॥
इच्छा कर चलदेव लेन हित मणि सोइ शीश निहारी ।
दीन्ह नहीं मणि रामसेवक सोइ हरि आगिल जस वारी ॥४७०॥

हरि चरित न लखु मति मोरी ।

कलि कल्मष लहि भोरी ॥टेका॥

जो अज अखिल सर्व उर वासी व्यापक एक घनोरी ।
नर वहुँ दूर्जस लागत चोरी हरि वहुँ नाहीं घटोरी ॥
कृष्ण राम अवतार लीन्ह नर भुवि बर भार हरोरी ।
अमित असुर बध कीन्ह सुरत हित एह जानत सखकोरी ॥
एस न होत देखि दोउ मूर्खति श्याम गम्भ बर जोरी ।
ता कहँ किमि दूर्जस चोरी कहु अमृत महँ विषि घोरी ॥
शत्राजित उर हरि बर माया प्रविशि कीन्ह मति थोरी ।
बधु मारि मम अश्व सहित बन लीन्हेउ हरि मणि छोरी ॥
मागेउ मणि नहीं दीन्ह बधु हित हरि कृत कीन्ह ठगोरी ।
भयेउ सोर चहुँ रामसेवक बहु लगी कृष्ण मणि चोरी ॥४७१॥

हरि प्राकृत सम नर होई ।

जेहि त्रिभुवन नहिं कछु गोई ॥टेका॥

सभा मध्य हलधर मणि जाचेउ सोइ मणि कहिं गइ खोई ।

शत्राजित हरि चोरी लगावत जानि गयो सब कोई ॥

लजित होय हरि भुवि शिर नायेउ खोजन चलु मणि सोई ।

साक्षी हित हरि लेइ अमित दल पँछत पथ मिलु जोई ॥

वन पर्वत कदला गिरि खोजत जीव मिलत जतनोई ।

शत्राजित लघु भ्रातृ अस्पेटक खेलत मणि लेइ धोई ॥

अश्व सहित वन व्याघ्र मारु तेहि लरि हरि पट तट टोई ।

साक्षी बहु सग देखि जाइ कहु शत्राजित सुनि रोई ॥

जामवत बालक सोइ मणि लेइ खेलत हिलि मिलि लोई ।

जामवत हित रामसेवक हरि प्रथम वीज रहु थोई ॥४७२॥

राग कल्याण गति धुपद

राजित तन कृष्णश्याम दायक जन सकल काम

महिमा अपार सेस वेद कहत चारी ।

चोरी मणि शीश धारि खोजत धन जिव दुलारि

साच होन हेतु सग कटक अमित वारी ॥टेका॥

शत्राजित सुनेउ कान अस्व सहित लीन्ह प्राण

भ्राता मम दूरि गहन सघन व्याघ्र मारी ।

मीलत नहिं मणि स्वरोइ कृष्ण तासु वख टोइ

मिथ्या कहु चार मोहि नरक होय भारी ।

कृष्ण जगत साच भयो चोरी दुरा सकल गयो

खोजत मणि दूरि जीव देति वन सुखारी ॥

चरित अपर करत नाथ लीन्हे बहु कटक साथ

चोरी मणि न्याज लोक शोक भर्म हारी ।

पृथ वर विचार कीन्ह जनन को छपाय दीन्ह
भक्त परम जानि ठाढ़ भयो जाय द्वारी ॥
जामवत सकल बाल देवत तन नर कपाल
खेलत मरि लेइ शुभ्र भागेउ भुवि डारी ।
रोद बहु बहत जात कपित अति त्रसित गात
आयो कोइ बधिरु द्वार कहेउ शिशु पुकारी ॥
जामवत सुनत कान भावो बस लेहु न ज्ञान
गर्जत चलु द्वार मूढित शत्रुन को दुलारी ।
फदला ते द्वार आय तर्जन बहु शीघ्र धाय
कृष्ण रूप देखि धीर मानु हरि बिसारी ॥
धीरज नहिं नेक कीन्ह गाली भूढ प्रथम दीन्ह
रामसेनक देवत तन श्याम वर मुरारी ॥४७३॥
कृष्ण चरित करत परम भक्त को बुलाई ।
लीला नर इव स्व करत सुरति निज गनौंई ॥टेका॥
जामवत अति सुजान जामक सुत वर प्रधान
ब्रह्मा अवतार सेस वेद त्रिवुध गाई ।
बावन बरदान दीन्ह तीनि अवतार लीन्ह
। जामवत हेतु राम कृष्ण निज वताई ॥
रामचंद्र भक्त पाय द्वापर हित चरित गाय
। कीन्हेउ बैकुण्ठ वास ऋत्त को चुम्माई ।
माया बश ज्ञान हीन जामवत पर अधीन
स्वामी बिसराय गर्जि तर्जि करु लड़ाई ॥
बाहु जुद्धि करत घोर चट पट उर होत सोर
धीर धीर जामवत चलत न पराई ।
फरते कर फेरि फारि जघन पद टारि धारि
शीशान पर शीश बज्र पर्वत जु जाई ॥

कपटि लपटि ताड़त धाय गीर सुजम अमित गाय ,
 भागत नहि परत भुग्य शोभा रहु धाई ।
 वीर रस बरगान करत ग्राहु जुद्धि विशद चरत
 लडत नार्ही नेक डरत लाल , ललचाई ॥
 अष्ट विंशति दीनानि जुद्धि कीन्ह रम रानि मुद्धि
 मृष्टिका प्रहार , कृष्ण , वज्र तन समाई ।
 जामवत शिथिल गात कपित अति मृदुल नात
 रामसेनक जानि इष्ट चरन शीश नाई ॥४७४॥
 शोभित गिरि गुहा श्याम जीति भालु होय राम
 । । पूरण सत्र काम चरित करत धर मुरारी ।
 सप्त बीस दिवस जुद्धि कीहेउ तन दन्ह बुद्धि
 पूर्व बरदान कृष्ण आत्म गति विचारी ॥टिका॥
 जामवत शिथिल गात मृदुल शीघ्र बोलु वात
 । ग्राहि ग्राहि ग्राहि सरन पाल रावणारी ।
 स्वामी जज्ञ पाल नाथ धरहु शीघ्र शीश हाथ
 शीतल करु गात सकल चूरु मम विचारी ॥
 भालु कीश कीन्ह साथ देवेउ प्रभु उदधि पाथ
 । । ऊपर जल सेतु कीन्ह शिला अमित धारी ।
 महिमा अपार कीन्ह अभय दान सुरन कीन्ह
 । हारि भुवि भार रावणादि दुष्ट मारी ॥
 सोता कहँ लेइ नाथ भालु कीश करि स्वसाथ
 । अवध नगर आय कीन्ह लोक त्रय सुसारी ।
 सोतापति दीनप्रधु दया कीन्ह दया सिंधु
 विभिपन सुग्रीव सरन देइ विपति टारी ॥
 कीन्ह चरित अमित नाथ त्रिभुवन गति एक हाथ
 दूसर नहि रोपि अघिन राजि भव उत्तारी ।

जैति जय कृपा अंगार चरित कीन्ह अति उदार ।

कहत सुनत उरसि धरत पावत सुगभारी ॥

प्रथम कृष्ण देगि रूप अमृति करु राम भूप ।

दरसत तन प्याम राम इष्ट निज पुकारी ।

जामवत अति सुजान रामसेवक लहि सु ज्ञान

अमृति हरि करन गम रूप वर निहारो ॥४७५॥

जामवत अति सुजान त्रेता जम करि वरान ॥

द्वार वरदान राम ममुक्ति सुरति लाई ।

शोभा शत कोटि काम राम रूप धन सुश्याम ।

। , निररगत नहि वृष दृग्य चरन शीश नाई ॥टेका॥

छमा शील छमा करो दाम जागि मोहि भरो

॥ शीतल कर गात कज हाथ वर छुआई ।

कृष्ण कृपा विविधि कीन्ह भक्ति ज्ञान अचल दीन्ह ।

। , परसि कज हाथ शीश पीर तन गवाँई ॥

बिनय कृष्ण सुनत पान पूर्व भक्त तन्नि सुजान ।

। , निज सरूप श्याम राम कीन्ह धन देखाई ।

कन्या जामवती नाम त्रिभुवन शोभा ललाम ।

। दीन्हेउँ मणि महित कृष्ण कज कर लगाई ॥

कृष्ण द्वारिका मो आय सकल चरित कहेउ गाय ।

। वरसेनि सभा राज सुनत पुलकाई ।

शत्राजित नृप बोलाय सभा मध्य कृष्ण गाय ।

। मारेउ धन व्याघ्र अस्व सहित तेरो भाई ॥

प्रसेन भाइ हाल पाय शत्राजित , कप छाया ,

॥ कृष्ण बहुरि मणि की हाल कहत दरसाई ।

जामवत बाल लीन्ह बहुरि अरु मोहि दीन्ह ।

लीजै मणि हाथ धात जानत समुनाई ॥

जेहि प्रकार मणि सुपाय दीन्हैउ हरि सकल
 गाय शत्राजित लीन्ह सभा मध्य सकुचाई ।
 कृष्ण मनहु साच भयो दूर्जस कृत चौर गयो
 रामसेवक कृष्ण नाम कहत मुक्ति पाई ॥४७६॥

राग टोडो

हरि वर चरित करत सुख सारि के ।
 निगम अगम निज जस बिस्तारि के ॥टेका॥
 शत्राजित गति जानु जामवत भक्ति मानु
 माया इत उत पेरी स्वयश धारि के ।
 सूर्य्य प्रेम पहिचानी निज वर भक्त मानी
 दीन्हेंउ सेमत मणि अघ रुज टारि के ॥
 कचन सुअष्ट भार नित्य देत सुख सार
 शत्राजित एक दिन गल मणि डारि के ।
 उप्रसेन सभा जाइ नृप कहँ ललचाइ
 पुनि गृह आइ सभासदिन निहारि के ॥
 शत्राजित भाइ जाको नाम परसेन गाइ
 मणि गल लाइ वर सुरति तमारि के ।
 खेलत अहेर बन अश्वारूढ अति घन
 सिंह वध कीन्ह दौउ तन नरन फारि के ॥
 कृष्ण कहँ चोरी लागु माया इत उत जागु
 लेइ दल बन खोजु माया स्वविचारि के ।
 मृतरु प्रसेन पाइ अश्व जुत नृप भाइ
 दल को देग्याइ व्याघ्र चिन्ह वैठारि के ॥
 मणि नहिं कोइ पाइ धल वैठाइ धाइ
 खोजत किंग घन गयो अट्टि द्वारि के ।

द्वादश वितीत दीन - रामसेवक मलीन
 दल गृह आउ ध्यान करत मुरारि के ॥४७०॥
 कृष्ण जामवत हेतु अद्रि दरिजाय के ।
 करत चरित तिहुँ पुर सुख छाया के ॥टेका॥
 द्वारिका मो जन आइ कृष्ण को अद्रिशय गाइ,
 शत्राजित भाइ हाल कहु सब गाय के ।
 उमसेनि आदि मुनि नर नारि शिर धुनि ।
 हाय कृष्ण हाय कृष्ण कहु बिलखाय के ॥
 शत्राजित अति शठ चोरी लाउ करि हठ
 कृष्ण कानि घश धन गयेउ भुलाय के ।
 जामवत शिशु देखि कृष्ण कहँ नर लेखि -
 मणि भुवि छारि गयो धीलि स्वपराय के ॥
 जामवत मुनि कान धाइ आउ बलवान
 अष्ट बीस दिन जुद्धि करु लपटाय के ।
 सीतापति रूप थरी हृदये कोठरि करी
 शीतल सुभाव सुकपाट भिड़काय के ॥
 ताला अरु हलाइ कुजी बर प्रेमताइ
 राम रूप रात्रि दिव देखत छपाय के ।
 सोलेउ मुरारी सोइ शीतल कपाट जोइ
 कन्या दीन्ह वाद्य देखि ऋच सकुचाय के ॥
 जामवती व्याह गाइ नर फल चारि पाइ
 द्वारिका मो कृष्ण आइ मणि दरसाय के ।
 द्वारिका मो आइ रामसेवक सुखद छाइ
 मजत बधाइ दुरा सकल गवाय के ॥४८०॥

राग केदारा

हरि को चरित किमि कहु गाय ।

कहत मन सकुचाय ॥टेक॥

ब्रह्म अज अद्वैत अनभव गम्य कोइ दरसाय ।

करत क्रीश धारि अजया रूप ब्रह्म । गयोँ ॥

शत्राजित कहँ दीन्ह रनि मणि दुर्जस मनहु मेटाय ।

सभा मध्य कहि हाल सबमणि देरतजनसमुदाय ॥

शत्राजित मणि लेइ दुर्जस देइ बहुत लजाय ।

छूटै किमि अपराध मम एहि मिसै कर पद्धताय ॥

देव कन्या रत्र मणि जुत होहि कृष्ण सहाय ।

दीन्ह कन्या दान मणि जुत कृष्ण कर सघुपाय ॥

नारि लीन्ह हरि छाडि मणिवर थापि थाति जनाय ।

सत्य भामा रामसेवक कृष्ण लहि सुर छाय ॥४८१॥

हरि गुन कहत बुध श्रुति गाय ।

नेहँ हरि पद लाय ॥टेक॥

।पाण्डु सुत हित नारि जुत हरि हस्तीना पुर आय ।

चरित अपर विचारि उर पुर बैठु हिलि मिलि जाय ॥

कृतवर्मा अक्रूर कहु बहु शत श्रुतिहि समुभाय ।

मारि शत्राजितहिँ अवहीं लेहु मणि हरस्वाय ॥

कोन्ह नाहिँ विवाह मम शठ करव तोरि सहाय ।

मारि मणि गहि तुरित आयेउ मित्र भाव मेटाय ॥

।कृतवर्मा अक्रूर कहु पुनि जाहु वेगि पराय ।

ईश्वर ते नाहिँ लडन हम कोइ भागत सुछपाय ॥

देइ मणि अक्रूर कहँ शठ चलेउ देश लुकाय ।

सुनत मणि गति रामसेवक कृष्ण आयेउ धाय ॥४८२॥

रागिनी धनाश्री

हरि चरित निगम विस्तारी ।

करि केल मनुज तन धारी ॥टेका॥

शतभामा पितु बध सुनि रोदत सरन पुकारु मुरारी ।

श्रवण सुनत पाण्डव गृहते भट निज गृह गो धनवारी ॥

कृतयर्मा अक्रूर लित्यो नहिं शत धन्वा को विचारी ।

शत जोजन गयो भागि दूरि सठ मणि अक्रूर कर डारी ॥

हलधर हरि रथ चढि बलु चितवत धाइ धरेउ ललकारी ।

केश धारि कर भपटि पटक महे शतधन्वहिं हरि मारी ॥

बख खोलि मणि रोजु न लहु कोइ कहु हलधर ते दुलारी ।

हलधर सुनि गयो जनक नगर दर नृप सुख लहु भारी ॥

मिथिला पुर कछु दिन वसि हलधर करु नर नारि सुपारी ।

कृष्ण द्वारिका रामसेवक पुनि आई कथा अनुसारि ॥४८३॥

हरि गुण केहि विधि कहु गाई ।

निज शिर जोइ दुरजस लाई ॥टेका॥

शतधन्वा बध कीन्ह न लहु मणि सत्य अनुज को बताई ।

हलधर अनरु मानु उर अतर दिहैं नारि कहैं जाई ॥

जनक नगर काल रस्यो तेहि पुनि हस्तांना पुर आई ।

गदा जुद्धि दुरजोधन कहैं वसि हलधर दीन्ह पढ़ाई ॥

सत्य कृष्ण मणि हाल त्रियन सन कहेउ न कोइ पतियाई ।

लेइ महामणि दीन्ह भाइ कहैं अस त्रिय अनराई ॥

हरि दुरजस इत उत लहि निज शिर अक्रूरहि रोजगाई ।

लखि सुकाल सुवृष्टि काशी महैं बोलायेउ ठहराई ॥

हरि सवत लहि सभा मध्य मणि अक्रूर दरसाई ।

सत्य बचन हलधर त्रिय हरि लखु रामसेवक सुख पाई ॥४८४॥

राग, टोछी

करु हरि चरित मनुज तन धारी के ।

सुर मुनि गन सुख प्रद नर नारी के ॥टेका॥

मणि दुरजस पाइ इत उत बहु धाइ

सकल मेटाइ दोस सत्य एक बारी के ।

युयुधान आदि वीर सग लेइ चलु धीर

रथ घर साजि निज चरित विचारी के ॥

पाण्डु पुर आइ धाइ हिलि मिलि छेम गाइ

। तप्त धर्मराज शुभ थल वैठारी के ।

कुता निज रुचि गाइ धावु सुत ढिग पाइ

वृष्ण बोध करु पितृ स्वस्वा को दुलारी के ।

धरस सु एफ गयो भास दुइ चारि भयो

खान पान सतकार बढत मुरारी के ।

अर्जुन को साथ पाइ धन गयो यदुराइ

। यमुना विवाह हित वैठी तपसारी के ॥

अर्जुन की दृष्टि परी प्रभ्र कान्ह सोइ धरी

। भभी यमराज शनी सुता हौं तमारी के ।

सुनि यमुना की बोल कन्या लखि अनमोल

वृष्ण को विनाह हित कहु दुखटारी के ॥

सुनि को कालिंदी कान वर पायो भगवान

। प्रमुदित अति हरि वदन निहारी के ।

नारी लेइ आई रामसेवक को सुर्य दाई

। अर्जुन स्वगृह धाइ कहेउ पुकारी के ॥४८५॥

कालिंदी विवाह सुख रहु चहुँ धाय के ।

रसना विनोद हित कहु कवि गाय के ॥टेका॥

अर्जुन लियाई नारी कृष्ण कर करि प्यारी
 कहेउ युधिष्ठिर ते इन्द्रप्रस्थ जाय के ।
 सुनि धर्मराज गाज सजेउ विवाह साज
 वोलि विश्वकर्मा शुभ नगर बनाय के ॥
 गृह बहु रचवाइ चित्रित सुरग लाइ
 माया मोह जाल मणि दीप धरवाय के ।
 इत उत चहुँ आशा जल महँ थल भासा
 थल जल भास ओत पोत समलाय के ॥
 कृष्ण माया अस कीन्ह भावीवस रधि दीन
 भ्रम दुरयोधन के बहु होय धाय के ।
 थल कहँ जल मानु जल कहँ थल मानु
 हाँस सुनि कान रहु वैर को बढाय के ॥
 रवि पुरछन घरी कृष्ण को विवाह करी
 यमुना को वाम भाग देखि हरसाय के ।
 उत्सव अति कौन्ह कृष्ण कहँ नारि दीन्ह
 अर्जुन चलु सग द्वारिका सुभाय के ॥
 युयुध न उधो धाइ रथ चढ़ि सुख पाइ
 कृष्ण सुख देन्ह बहु द्वारिका मो आय के ।
 यमुना विवाह रामसेवक न कहि थाह
 सुख हरि दीन्ह जग रूप दरसाय के ॥४८६॥

राग श्री

मित्र विन्दा विवाह सोहाई ।
 जेहि तिहुँ पुर वीर लोभाई ॥टेका॥
 अवतिका पुरी अति पावन त्रयपुर जेहि शिर नाई ।
 विंदा अनुविंदा दोउ भाई राज पुरी कहँ गाई ॥

मित्र विंदा भगिनी हितकर त्रय पुर वीर बोलाई ।
 कृष्ण आय दल लेइ सभा तेहि स्वयंवर सुनि धाई ॥
 कन्या लखि जैमाल डारु गल करि मिनाह घर आई ।
 वजत बधाइ सोहाइ तिहूँ पुर मित्रविंदा सुख पाई ॥
 विंदा अनुविंदा सुख लहु बहु करि हरि सुजस बडाई ।
 द्वारावति पुरी अति राजित प्रति दिन उत्सव छाई ॥
 निति नूतन मंगल सुनि पुरिजन बार बार पुलकाई ।
 देत परम सुख रामसेवक हरि श्याम रूप दरसाई ॥४८७॥

हरि अपर विवाह विचारी ।

आइ अकध नगर सुखसारी ॥टेका॥

कौशल्या नृप ते कन्या हरि जाचेउ बहुत दुलारी ।
 सप्त बृपभ की हाल निज पण कहु नृप हरि रूप निहारी ॥
 सुनत कृष्ण परिकर कटि वाघेउ सप्त नाथु एक पारी ।
 जैति जैति धुनि भई त्रिभुवन महेँ नृप उर सुख लहु भारी ॥
 वेद विहित विवाह नृप करु हरि भूपन वसन सवारी ।
 नृत्त गान वाजन सब बाजत वेद घोष अधिकारी ॥
 नव सहस्र ऐरावत सम गज दइजा दीन्ह सुखारी ।
 अयुत धेनु त्रयशत दामी दियो नव लाख रथ पट धारी ॥
 अश्व कोटि नव पद्म अरु नर नग्न जिति हित थारी ।
 करि विवाह लेइ राममेरु सव गृह आये हरि लेइ नारी ॥४८८॥
 हरि सप्तम व्याह विचारी ।

फहु वेद पुरान पुकारी ॥टेका॥

कैकेयी देश प्रसिद्ध लोक त्रय नाम श्रुति नृप भारी ।
 कन्या तासु नाम वर भद्रा भयउ मिनाह मुखारी ॥
 अष्टम कृष्णवियाह कहत बुध त्रयपुर जन जुठु भारी ।
 भद्रा नाम नृपति उत्तम कुल कन्या नृपति दुलारी ॥

नाम लक्ष्मण नृप कन्या वर त्रिभुवन नहि अस नारो ।
 स्वयं नृप रचेउ महा सुख कृष्ण सकल भ्रम टारा ॥
 मीन घेधि जल निरखि चद्र रवि घाण अधो मुख धारी ।
 जीति स्वभवर लेइ लक्ष्मण हरि गृह आयो सुखारी ॥
 करेउ विवाह अष्ट महँ कोइ अस जस त्रिभुवन निस्तारी ।
 सकल लोक सुख लेउ परम हरि रामसेवक अब पारी ॥४८९॥
 हरि करत चरित सुखदाई ।
 सुर नर मुनि कहँ भल धाई ॥टेका॥
 पोइस सहस शाप मुनि लहु जोइ नारि रूप सोइ पाई ।
 कृष्ण शाप मोचन सुधि कार उर माया प्रबल बोलाई ॥
 भौमासुर कहँ प्रबल जानि हरि तेहि उर बेगि पठाई ।
 देश देश अष्टि जन्म नारि तन एक ठर सो नसाई ॥
 आत्म विवाह हेतु चहुँ दिशि सन शठ निज बल लइ आई ।
 पोइस सहस लेव एक छन महँ हम कहँ कहँ जाव धाई ॥
 भौमासुर कन्या नृप लेइ लेइ गृह जोरेसि प्रभुताई ।
 ममता अधिक भई उर अतर इन्द्र छत्र हरु जाई ॥
 धरुण को कान बुडल हरु प्रमुदित साज विवाह जुटाई ।
 ईश्वर करु सोइ रामसेवक फुर वेद सेस बुध गाई ॥४९०॥

राग टोडी

॥ हरि को चरित पुनि पुनि कहु गाई ।
 कल्प कल्प भेद मुनि गुनि सचुपाइ के ॥टेका॥
 अष्टा वक्र ध्यान करु हरि रूप उर धरु
 जल मध्य बैठि उर पुर पुलकाइ के ।
 अष्ट अप्तर आइ मुनि देखि पुलकाइ
 हरि पति घर मागि गई हरखाइ के ॥

रुद्रमिणी आदि आठ वर जोड श्रुति पाठ ।
 कृष्ण सो विवाह मुनिवर घर लाइ के ।
 भुवि अपसर आइ कृष्ण लहि सुख पाइ
 पुनि रह अत कृष्ण रूप मो समाइ के ॥
 पोडस सहस्र आइ अपसर पुनि धाइ,
 हरि पति मागु मुनि रूप मो लोभाइ के ।
 सुख देखि अनमोल मुनि को मृदुल बोल,
 बार बार सुर नारि कहु शिर नाइ के ॥
 जल सन तोर आइ अग सब दरसाइ,
 अष्ट परकार टेढ उर सकुचाइ के ।
 देखि बक सब गात हँसि हँसि बोलु यात
 मुनि शाप दीन्ह उर पुर स्व रिसाइ के ॥
 हरि पति मिलु तोहि शाप लेहु हँसु मोहि
 अत मो भलिष्ठ शुद्र लहु बहु धाइ के ।
 अप्सरा पराइ रामसेबक सु वर पाइ ।
 अष्टावक्र वाक्य फुर करु भुवि आइ के ॥४९१॥
 हरि को चरित सुख प्रद नर नारि के ।
 मुनिवर शाप वरदान करु वारि के ॥टेका॥
 अष्टावक्र वरदान कल्प एक मुनि कान
 हरि भुवि केलकरु नारि बहु कारि के ॥
 श्रुति विधिवरपाठरुम्भिणी मुआदि आठ ।
 करि को विवाह मुनि वचन दुलारि के ॥
 पोडस सहस्र आइ भुवि नर तन पाइ
 अष्टावक्र घर किमि रहु दिवि टारि के ।
 अप्सरा सकल आइ भुवि तल रहु धाइ
 इत उत चहुँ देश नारी तन धारि के ॥

हरि माया निज पेरी भौमासुर उर घेनी

। नारी सब लीन्ह हरि नृपन पद्धारि के ।

इत उत धाइ धाइ नारी सब हरि ल्याइ

॥ - पौडस सहस्र निज गृह बेठारि के ॥

करत विवाह चाह सग एक उल्लाह

। कुडल सुछत्र निज उरति प्रिचारि के ।

कुडल वरुण लीन्ह इद्र निज छत्र दीन्ह

॥ - त्रास वसुदेव सब रहु रिसि मारि के ॥

नारद तुरित आइ इन्द्र को पेरिन धाइ

। द्वारिका मो कृष्ण पाइ कहु दुख गारि के ।

कृष्ण मुनि कान रामसेवक को वरदान

। दीन्ह मुनि लीन्ह लखि चरित मुरारि के ॥४९२॥

राग कल्पान

जयति जयति जय कृपाल पालत जन लखि विहाल

। पाप ताप शाप हरत दुष्ट रिष्ट मार्ग ।

लीला तन अमित धारि पाप हारि जस मुनारि ।

। मारेउ गल भूरि धर्षि भार दूरि डारि ॥देका॥

भौमासुर प्रबल जानि इद्र वरुण शत्रु मानि

॥ कुडल शिर छत्र दीन्ह त्रास लहि दुग्यारी ।

नारद मुनिवर धान इद्र वरुण लखि मुजान

। द्वारिका को भेजु सरन भाखि वर मुरारी ॥

कृष्ण चद्र मुनत धाय नारद मुनि मुजस गाय

। गरुड रथ अनूप सत्य भामा मग वारी ।

शस्त्र चक्र गदा हाथ रथारूढ नारि साथ

। लज्जित रति काम कोटि धनुष वाण धारी ॥

रुकुमिणी आठि आठ वरु जोइ श्रुति पाठ । । ।
 कृष्ण सो विवाह मुनिवर घर लाइ के ।
 भुवि अपसर आइ कृष्ण लहि सुर पाइ
 पुनि रहु अत कृष्ण रूप मो समाइ के ॥
 पोडस सहस्र आइ अपसर पुनि धाइ
 हरि पति मागु मुनि रूप मो लोभाइ के ।
 मुग्र देखि अनमोल मुनि को मृदुल घोल ।
 धार धार सुर नारि कहु शिर नाइ के ॥
 जल सन तोर आइ अग सब दरसाइ ।
 अष्ट परकार टेढ उर सकुचाइ के ।
 देखि चक्र सत्र गात हँसि हँसि बोलु घात
 मुनि शाप दीन्ह उर पुर ख रिसाइ के ॥
 हरि पति मिलु तोहि शाप लेहु हँसु मोहि
 अत मो मलिच शुद्र लहु बहु घाइ के ।
 अपसरा पराइ रामसेवक सु वर पाइ
 अष्टावक्र वाक्य फुर करु भुवि आइ के ॥४९९॥
 हरि को चरित सुर प्रद नर नारि के ।
 मुनिवर शाप घरदान करु धारि के ॥टेका॥
 अष्टावक्र वरदान कल्प एक मुनि कान
 हरि भुवि केलकरु नारि बहु कारि के ॥
 श्रुति विधि वर पाठ रुक्मिणी सुआदि आठ ।
 करि को विवाह मुनि वचन दुलारि के ॥
 पोडम सहस्र आइ भुवि नर तन पाइ
 अष्टावक्र धर किमि रहु दिवि टारि के ।
 अपसरा सकल आइ भुवि तल रहु छाइ
 इत उत चहुँ देश नारी तन धारि के ॥

हरि माया निज पेरी भौमासुर उर पेरी ॥
 नारी सत्र लीन्ह हरि नृपन पछारि के ।
 इत उत धाइ धाइ नारी सब हरि ल्याइ ॥
 पोइस सहस्र निज गृह बैठारि के ॥
 करत विवाह चाह सग एक उत्साह
 कुडल सुद्रत्र निज उरसि विचारि के ।
 कुडल वरुण लान्ह इद्र निज छत्र दीन्ह ।
 त्रास वसुदेव सघ रह रिसि मारि के ॥
 नारद तुरित आइ इन्द्र को पेरित धाइ
 द्वारिका मो कृष्ण पाइ कहु दुख मारि के ।
 कृष्ण मुनि कान रामसेवक को घरदान
 दीन्ह मुनि लीन्ह लरि चरित मुरारि के ॥४९२॥

राग ऋषभान

जयति जयति जय कृपाल पालत जन लरि विहाल
 पाप ताप शाप हरत दुष्ट रिष्ट मारी ।
 लीला तन अमित धारि पाप हारि जस सुकारि
 मारेउ रत्न भूरि धरणि भार वृरि डारी ॥टेका॥
 भौमासुर प्रबल जानि इद्र वरुण शत्रु मानि
 कुटल शिर छत्र दीन्ह त्रास लहि दुखारी ।
 नारद मुनिवर धान इद्र वरुण लरि सुजान
 द्वारिका को भेजु सरन भाषि वर मुरारी ॥
 कृष्ण चद्र सुनत धाय नारद मुनि सुजस गाय
 गरुड रथ अनूप सत्य भामा सग वारी ।
 रास चक्र गदा हाथ रथारूढ नारि साथ
 लज्जित गनि काम कोटि धनुष वाण धारी ॥

प्राग जोतिष पुर भौम ग्राम अति बर
 जन्न चहुँ दिशा कीन्ह अग्नि पाश धारी ।
 परवत चहुँ ओर घोर अग्नि ज्वलित करत सोर
 नीर अति अथाह पास अगम हरि निहारी ॥
 पोइस सहस्र नारि भौमासुर राखु धारि
 करन द्वित विवाह आत्म जतन कीन्ह भारी ।
 जन्न प्रथम तोरि देव शत्रु मारि नारि लेव
 सुजस पाप हारि लोकनाथ उर निचारी ॥
 अभय दान देवन दीन्ह धरनि हरि भार लीन्ह
 मारि असुर स्वयस कीन्ह सत भव उतारी ।
 कृष्ण कृष्ण कृष्ण कहत पाप पुज धन स्वदहत
 चरित हरि उदार रामसेनक हितकारी ॥४९३॥
 राजितरथ गरुड कृष्ण मनहु धृत स्वरूप विष्णु
 शरव चक्र गदा धनुष बाण फर सोहाई ।
 सत्य मामा नारि वाम गौर तन अनूप श्याम
 शोभित गति फोटि काम छत्रि समूह छाई ॥टेका॥
 प्राग जोतिष पुर प्रवेश करत डरत सकल देश
 कृष्ण नगर घेरु सकल निरभय हरपाई ।
 शृष्टि बाण अति स्वकीन्ह पर्यत चहुँ तोरि दीन्ह
 गदा पाश फाटि चक्र अग्नि जल जराई ॥
 शरव धुनि अपार कीह शत्रुन फहँ शरस दीह
 भौमासुर लेइ त्रिशूल आउ बेगि धाई ।
 युद्धि भई अति फठोर बाण शूल शरव सोर
 पच शिरा वरज लात कृष्ण रिपु गमाई ॥
 नरकासुर गिरत माथ घरा शीघ्र जोरि हाथ
 अस्तुति महु कीह कृष्ण चरन शीरा नाई ।

कृष्ण अभय दान दीन्ह माया निज कर्पि लीन्ह
 गृह प्रवेश कीन्ह राज कन्यन हित लाई ॥
 पौड़स सहस्र नारि मन महँ हरि धरि भारि
 कृष्ण भटित लेइ सकल द्वारिका भो आई ।
 कीन्हैउ निगाह वारि बेद बिहित जन दुलारि
 देव दनुज मनुज नाग मगल जस गाई ॥
 पौड़स सहस्र नारि अधिक शत सुआठ वारि
 कृष्ण को विवाह गाइ चारिउ फल पाई ।
 द्वारिका को कृष्ण आय शोभा तिहुँ लोक धाय
 रामसेवक श्याम रूप निरस्यत समुदाई ॥४९४॥

राग धनाश्री

हरि चरित विशद सुख दाई ।
 त्रय पुर जस मगल छाई ॥टेक॥
 पौड़स सहस्र अधिक शत बसु वर नारि बेद बुध गाई ।
 करि विवाह गृह अमित रचित मणि अति चित्रित दरसाई ॥
 पारिजात हरि लीन्ह इद्र कर द्वार द्वार गृह लाई ।
 पुष्प वाटिका वापि कूप वर गृह प्रति गृह करवाई ॥
 केदली आदि मेवा सब द्वारे ऋतु बसत रहु आई ।
 तुलसी श्याम मजरि अति राजित पूजत प्रेम बढ़ाई ॥
 मणि दीपक गृह मध्य ज्वलित अति द्रव्य सुगंध सिचाई ।
 गवाक्षन वर रध पवन जुत गंध सितल चहुँ जाई ॥
 सजा पलग सुगंध रचित बहु चदवाक अधिक लोनाई ।
 काम निरस्य गृह शोभा सकुचत रामसेवक सुख पाई ॥४९५॥
 हरि चरित करत भुवि आई ।
 ब्रह्म अशिल नर रूप धारि वर मोहत लोग लोगाई ॥टेक॥

नारि अमित गृह करि शोभा वर रूप विशद दरसाई ।
 भोग विलास कहत कनि सकुचत देखत मैन लजाई ॥
 हँसौवा एक वार कीन्ह हरि रन्मिणि सन मुसुकाई ।
 राज जोग्य तव रूप विशद अति मम दिग रहे न भलाई ॥
 शिशुपाल जर जोग्य नृपति तोहिं देत रुक्म तत्र भाई ।
 अब तुम जाहु नृपति को भजन कोइ जो नृप तोहिं सोहाई ॥
 सत्य मानि हरि वचन रुन्मिणी भुवि गिरु देहँ गँवाई ।
 कृष्ण मूर्ति लखि विकल धरणि सन निज कर गहि वैठाई ॥
 हँसी कीन्ह नहि मत्य प्रिया कहु हँसौवा सुखदाई ।
 रन्मिणी कहु तोहिं मम न कोइ नृप रामसेवक शिर नाई ॥४९६॥
 हरि भोग विलास सवारी । -

नर इव हिलि मिलि नारी ॥टिका॥

एकक नारि कहँ दशदश सुत भयो कृष्ण सरिस तन धारी ।
 सकल सुतन कहँ सुत दशदश पुनि कहत सेस श्रुति चारी ॥
 वश वृद्धि हरि कीन्ह अधिऊ भुवि केवल नर अनुहारी ।
 छन महँ जोइ त्रयलाक रचेउ हरि माया गुण विस्तारी ॥
 नर तन धरि मोइ धम वृद्धि करु एह न कोइ अधिकारी ।
 रुक्म को पुत्री पोत्री भइ जत भेद न कर श्रुति भारी ॥
 रन्मिणि पुत्र पौत्र न लखि वर कर निनाह सुख मारी ।
 रन्मिणि छोह मोह वश आतुर लोक वेद मत टारी ॥
 हरि को बैर तिसारि सुभग लखि कन्यन करत सुखारी ।
 चाहत रामसेवक निमि वासर केवल सरन मुरारी ॥४९७॥
 हरि चरित न लग्यु कोउ भारी ।

साथ भ्रातृ रहु नारि सकल सुत पुरिजन पितु महँतारी ॥टिका॥

एक दिवस भोज कट पुर हरि निज माया वर त्रिनारी ।
 इत उत माया प्रसिसि सफल वर हरि अज्ञा अनुसारी ॥

कोइ घर पुत्र पौत्र निराहे कहु एह बुध श्रुति चारी ।
 प्रद्युम्नग ।दसाँव बस सुत पुरिजन सुत आयो भारी ॥
 कलिआदि नृप सुत खेलन कहु हँसि कर धरि हलधारी ।
 पामा खेलत हँसत अनृत कहि जीति लीन्ह बहु वारी ॥
 हँसि हँसि अज्ञ सुत महँ कहु गहु रम्म गर्व उर भारी ।
 लखि गजदोद हँसि रिसि धरि उर हलधर मारु पछारी ॥
 रम्मिणि सुनि नहिं कहेउ कनहिं कछु जेहिं रहु प्रीति मुरारी ।
 प्रमुदित रहु सन रामसंनक जन हरि घर बदन निहारी ॥४९८॥

राग टोढी

कृष्ण को चरित लोक वेद रहु छाइ के ।

कहत सुनत नर नारी मन लाइ के ॥टेका॥

करयप हरि राय सुत प्रहाद मजबूत

नर हरि रूप जेहि दिग धरु आइ के ।

प्रहलाद सुत जानु जेहि सन देव मानु

॥ नाम वैरोचन निगम कहु गाइ के ॥

दान निज सन दीन्ह द्विज मानि देव लीन्ह

। हरि गति दीन्ह बरदानि ठहराइ के ।

बलि सुत तामु घर हरि रहु जासु घर

। वामन सरूप चहुँ युग दरसाइ के ॥

बलि सुत घर जेष्ट वाणा सुर घर

। जान हित माया हरि परु हरसाइ के ।

उर्या वाणासुर कन्या त्रय पुर एकधन्या

॥ स्वप्न महँ अनरुद्ध लहि पुलकाइके ॥

कर सन कर धरि गलमहँ गल करि

। भोग सु विलास करु अग लपटाइ के ॥

जाप्रति न देखु फोड़ मोहयम बटुरोड़
 वहाँ गयो फात अस सुख उपजाइ के ।
 पद नय भुवि लाइ रोदु मन चहुँ धाइ
 सिर भुवि नाइ पैठु तन मुरुम्राइ के ॥
 देखु अस हाल रामसेवक विगत जाल
 चित्रलेखा प्रभ करु हँसि सकुचाइ के ॥४९९॥
 हरि जस विशद सुखद नर नारि के ।
 फटु सैस वेद बुध जन सु पुकारि के ॥टेक॥
 उखा को त्रियाह सार चरित न कहि पार
 स्वप्न रति कीन्ह अनरुद्ध पतिगारि के ।
 जाप्रती न लहु म्यामी इत उत मन गामी
 बैठी स्य उदास चित श्याम पति धारि के ॥
 घाणासुर मत्री जोइ कूम्माड नाम सोइ
 चित्रलेखा सुता चित्र गुण जित्र म्मारि के ।
 उखा सन प्रभकीन्ह पति उखा कहि दीन्ह
 चित्रकारी करु चित्रलेखा सु विचारि के ॥
 दनुज मनुज नाग देव पितृ करि भाग
 मुनिन को रूप छन एक मो उतारि के ।
 वृष्णि बरा चित्र कारी वसुदेव रूप वारी
 कृष्ण बलदेव जस तस करु सारि के ॥
 देखत प्रद्युम्न रूप लज्जा धारि रहु चुप
 रूप अनरुद्ध पति लखु दुख टारि के ।
 चित्रलेखा पहिचानो उखापति रति दानी
 द्वारिका मो आइ बश देखेउ मुरारि के ॥
 सोबत उठाइ लीन्ह रथ पवँदाइ दीन्ह
 गगन सु मार्ग भट आइ बैठारि के ।

उखा को देखाइ रामसेवक को सुख दाइ

उखा उर राखु अनरुद्ध को दुलारि के ॥५००॥

उखा को विहार कवि किमि कहु गाइ के ।

यिनु रे निवाह पति पाइ हरखाई के ॥टेका॥

अनरुद्ध पति पाइ स्वप्ना मो जोइ गाइ

अतर भवन बहु राखत छपाई के ।

हरख बिलास जोग रात्रि दिन करु भोग

अग प्रति अग लाइ रहु लपटाई के ॥

खेल खेलु अचमाल बिते एहि फछु काल

बाणासुर सुताहाल सुनि आयो धाई के ।

चौपरी खेलत साथ कन्या वर धरि हाथ

अनरुद्ध रूप देखि रहेउ लोभाई के ॥

कन्या को दुख न जानी भल कहँ मद मानी

मारु मारु कहु अनरुद्ध दिग जाई के ।

युद्धि घनघोर कीन्ह घेरि शठ बाधि दीन्ह

गृह पुनि गयो बहु जतन कराई के ॥

उखा दुख बहु पाइ पतिहाल लखि गाइ

हाइ हाइ भाखि रहु उर सकुचाई के ।

द्वारिका मो सोर घोर अनरुद्ध कत भोर

पितु मातु वधु गृह रहु पछताई के ॥

वर्ष एक मास चारी बिते नारद पुकारी

द्वारिका मो जाइ कहु सकल बुभाई के ।

सुनि सत्य बात रामसेवक पुलक गात

कृष्ण सब जानु सभा उठी पुलकाई के ॥५०१॥

कृष्ण को चरित सुख देत नर नारि के ।

चहुँ जुग चहुँ श्रुति विदित पुरारि के ॥टेका॥

नारद वचन सुनि' उर हलधर गुनि ।
 कृष्ण पुरिजन मिलि चलु ललकारि के ।
 शोणित पुरी सु भारी घाणासुर अचकारी ।
 बाँधि अनरुद्ध गृह राखु शठ डारि के ॥
 भुजा सु सत्स पाइ महादेव सेवा लाइ
 छेदन परव गर्भ तोरि भुज भारि के ।
 द्वादश चोहिणि दल लेइ घेरु मुर खल ।
 याणासुर हितशिर आये परचारि के ॥
 शिव भक्त पत्त धरु स्वामी ते त्रिरोध करु
 वृष्ण हर जुद्धि कर इत उत टारि के ।
 गुह परदुम्न युद्धि कर गत भेद युद्धि
 कूपकर्ण कूमाड हलधर वारि के ॥
 चलदेव घाणासुर लडत डरत कुर ।
 । अपर गिरत भुवि एकक पडारि के ।
 शाय कृष्ण पुत्र धीर याणा सुर सुत वीर
 । करत लडाइ सर बुद शिर मारि के ॥
 सननन चलु वान गननन करु गान ।
 । पननन प्रायशत त्रौण वीर मारि के ।
 युद्धि घन घोर रामसेनक करत सोर
 । हरि हर बोल तिहुँपुर सुख सारि के ॥१०२॥

राग कल्याण गति ध्रुपद

राजित हर समाज श्याम गवर सन सु राज ।
 शोभा सत कोटि अग अगन परवारी ।
 इत उत दल करत मान शूल चत्र गदावान ।
 हरि हर जै जीति हेतु राडत न विचारी ॥टेका॥

सर्प बाण शंभु चलत पक्ति जोरि सोर करत
 गरुड बाण कृष्ण छाडि मारत हहकारी ।

अग्निबाण शंभु तजत जल को बाण निरखि भजत
 त्रिज्वर ज्वर शंभु छाडु शीत हरि पछारी ॥

अस्तुति ज्वर शंभु कीन्ह कृष्ण ताहि बर सु दीन्ह
 सुमिरत सबाद मोर तोर नर सुखारी ।

शंभु को गिराइ दीन्ह शूल कर ख छीन लीन्ह
 वाणासुर भुजा तिघ्र काडु सर मुरारी ॥

हलधर कूपकर्ण मारु कुप्पाड गहि पछारु
 मुशल हल धारि हाथ बीर अमित मारी ।

शंभु सुतहि भुवि पछारि रुक्मिणी सुत अपर मारि
 शाव बाण पुत्र मारि घोख करत भारी ॥

शकर हरि विजय जानि बाणहि निज भक्त मानि
 कृष्ण चरन धारि शोश अस्तुति अनुसारी ।

अभय दान कृष्ण दीन्ह भुजा चारि शुभग कीन्ह
 बाण सुर तोख कारि शंभु को दुलारी ॥

कन्या धरदान दीन्ह बाण सुर सुजस लीन्ह
 शकर हरि प्रीति रीति एक तत्व धारी ।

कीन्हेउ विवाह बारि उखा अनरुद्ध धारि
 रामसेवक द्वारिका अनदित नर नारी ॥५०३॥

कृष्ण को विचित्र चरित कहत श्रुति पुकारी ।
 शाप ताप पाप हरत करत जन सुखारी ॥टेका॥

शाव आदि कृष्ण तनय मूढ़ कवि जो पार गनय
 सृष्टि हरि अनत अत पार को विचारी ।

सपयन महँ जाइ जाइ कीड़ा करु घाइ घाइ
 लगी बर पियास कूप निरखत सुत मारी ॥

जन्न सकलतनय कीन्ह निवसतनेहि अभय दीन्ह ।
 कृकला बर रूप भूप श्रमित जन निहारी ।
 कीन्हेउ अस्मर न कृष्ण आयो हरि छाडि धिष्ण ॥
 वाम कर उठाय लीन्ह कृकला अति भारी ॥
 कृकला तन त्याग कीन्ह कृष्ण चरन परसकीन्ह
 । राजा नृग सूर्य वश अस्तुति अनुसारी ।
 एक शौकी लाख देत विप्र नाहि सापि लेत
 । दीन्हेउ मोहि शाप विप्र वचन कौ न टारी ॥
 सिकता धन बुद्ध जाल सकै गनित रग माल
 । दान मम अपार गनत थाह न मुरारी ।
 कीन्ह न गोहारि दान विप्र शाप अति प्रधान
 । शुनद एक कीन्ह गर्व उरसि को उपारी ॥
 अस्तुति नृग नृपति कीन्ह कृष्ण भक्ति ज्ञात दीन्ह
 । षड्वि विमान म्वर्ग गयो मुजा चारि धारी ।
 शाव आदि मुनत कान चक्रित होय लहत ज्ञान
 । रामसेवक सरन कृष्ण भव समुद्र वारी ॥५०४॥

राग टोडो

। । ।
 कृष्ण निज मुतन ते फहत बुझाइ के ।
 । विप्र बश देखि पद माथ घरु घाइ के ॥टेका॥
 हरि चक्र जग मूल इद्र वस शिव शूल । ।
 यम दड घोर शब्द रहू जग छाडि के ।
 इन्हके मारे न मरु विप्र क्रोध बेगि जरु
 । । शाप द्विज अग्नि जल जारु जाइ के ॥
 अद्रि फोरु द्विज शाप वृत्त लेता गर्व क्षाप
 । नृग नृप दानी अम रूप परु छाडि के ।

विनु अपरात्र भूप कृबला को घारु रूप ।
 । दान न सदाई कर रहु पछताइ के ॥
 द्विज सत्वा हरु कोइ आत्म हीन्द् पर जोइ ।
 । यरप 'हमार माठि कम बिटखाइ के ।
 थीर होइ मिष्टा रहु पुनि यम दंड सहु
 । ॥ द्विज सत्वा अम भूप रहत डेराइ के ॥
 द्विज शाप गारी वेइ लात भारी सहि लेइ ।
 । सोइ खत्री तिहुँलोक रहु मुख पाइ के ।
 शाव आदि मुनि कान कृष्ण सुत घटावान
 ॥ ॥ त्रिप पद शिर नाय रहत फठाइ के ॥
 भावी हित कृष्ण बहु होनहार पर बहु
 । शाम द्विज हासि कर बचन 'गवाँइ के ।
 कृष्ण इच्छा जोड गमसेवक के उर सोइ ।
 । ॥ यमि करु कार हरि पद शिर नाइ के ॥१०५॥
 आयो बल देव हल मुराल सुधारि के ।
 । ॥ भज जन लहु सुख दुख रज दारि के ॥टेक॥
 गोपीगन धाइ घाइ पद परु आइ आइ ।
 । कृष्ण की विरह अग्रि सकल निहारि के ।
 हेरि को कुराल मुनि गोपी गन मन गुनि
 ॥ ॥ करत बिहार सुख सदश मुरारि के ॥
 मधु माधो वर मास हलधर करु खास
 । ॥ ऋतु नो घसत रज सुख प्रद नारि के ।
 हिलि मिलि बेल कर गोपी हँसि कर धर
 ॥ ॥ जल क्रीड़ा हेतु आनु यमुना निहारि के ॥
 बलदेव अहा हीन्द् यमुना न कान कीन्द्
 । ॥ ॥ कोप धन घोर करि कर्पु सरि धारि के ।

प्रास लहि आइ धाइ विनय सुनाइ गाइ -

वध जनि करु नाथ सुता हौं तमारि के ॥

जीव दान ताहि दीन्ह मगल करारि लीन्ह

अभय परम कीन्ह सरिता विचारि के ।

जल क्रीड़ा बहु कीन्ह गोपिन को सुख दीन्ह

बलदेव तेज बल लखु सुख सारि के ॥

भोग सु विलास करु उर लाइ गल धरु

तज तन छन राखु बहुत दुलारि के ।

बलदेव धीर रामसेवक अचल धीर

गोपीगन राखु हरि नाम को पुकारि के ॥५०६॥

बसुदेव क्रीड़ा करु गोकुल मो छाइ के ।

गोपीगन मिलि सुख रस उपजाइ के ॥टेका॥

मदिरा जो मई रेखा सत्री करु सब सेवा

नारी भोग सग रण मध्य धरवाइ के ।

भोग शौख्य प्रद जानी रण उन मत मानी

मदिरा इव नृप रहु हरखाइ के ॥

बलदेव पान करी मदिरा स्वपुर धरी

गोपी सग रहु रात्रि दिव उर लाइ के ।

षानर द्विविद नाम रहा जोइ सग राम

भ्राता जो मैन्त्र मंत्री घर कपिराइ के ॥

नर्कासुर सरा जानु कृष्ण कहँ रिपु मानु

खोजत फिरत घन रहत छपाइ के ।

मुनि थल भ्रष्ट कारी मूत्र स्वपुरिष धारी

वृत्त उत्पाटि गृह पावक लगाइ के ॥

बलदेव दिग आइ देखु नारि लपटाइ

प्रास बहु दीन्ह गुद लिंग दरसाइ के ।

गोपीगन त्रास पाइ बलदेव लखि धाइ
 मदिरा सुपात्र कोस फोर दरवाइ के ॥
 मूशल सुधारि मारी कीश कहँ दीन्ह तारी
 जस बलदेव तिहुँ पुर रहु छाइ के ।
 सुख बर देइ रामसेवक सुजस लेइ
 द्वारिकामो आउ गोपीगन को बुझाइ के ॥५०७॥

हरि करु खरित अवनि कज टारि के ।
 लखत न कोइ जोग माया धिम्तारि के ॥टेका॥
 बलदेव गोकुल मो वास दुइ मास करु
 कृष्ण रहि द्वारिका खचरित निचारि के ।
 करुपा पुरी को राजा हरि सम करु साजा
 भूपन बसन बर भुजा धारि धारि के ॥
 शर चक्र गदा धारी कर-कज कंज धारी
 मिथ्या बासुदेव साच कहत पुकारि के ।
 नृप को पौँड्र नाम दूत भेजु हरि धाम
 बासुदेव नाम निज किमि कहु धारि के ॥
 युद्धि करु आइ प्राम छाडु मिथ्या मम नाम
 अस दूत वाक्य सुनु अपर मुरारि के ।
 उपसेनि आदि सभा हँसि कीन्ह कहि प्रभा
 कृष्ण बोलु युद्धि हित दूत स्वदुलारि के ॥
 सुनि को पौँड्र हाल लखु नहिं निज काल
 काशीराज साथ लेइ आयो धनु धारि के ।
 चौहिणि सतीनिउँ काटी पौँड्रक को मारु डौँटी
 काशीपति शिर राज द्वार दीन्ह धारि के ।
 काशीराज पुत्र जोइ किया पितु करु सोइ
 बुडल सहित शिर अपि बुड जाइ के ॥

कृष्ण जस गाइ राममेवक सरन पाइ
 काम क्रोध लोभ मोह मत्सर मारि के ॥५०८॥
 कृष्ण को चरित जन सुख लहु गाइ के ।
 सुनत गुनत उर मन ठहराइ के ॥टेक॥ ।
 कहत सुदक्षिणा को नाम नहिं काम को
 काशी राज पुत्र रहु धैर दढाइ के ।
 कृष्ण सन रहु वाम शिख सेइ ताहु काम
 बुत्तित जज्ञ फल बुत्तित पाइ के ॥
 खोजत फिरत दाव पायो माया मन भाव
 अग्नि ज्वलित मुख चहुँ दिशि धाइ के ।
 द्वारिका पुरी निहारी चहुँ दिशि अग्नि जारी
 नाहि नाहि कहु जन कृष्ण ढिग आइ के ॥
 कृष्ण चक्र लेइ धाइ माया अग्नि जारि लाइ
 काशी भस्म कीन्ह चक्र राज गृह जाइ के ।
 कृष्ण ढिग चक्र आइ रिपु दल मारि धाइ
 चरित विशद तिहुँपुर जस छाड के ॥
 कलि काल अघकारी काशी रत्न जानि जारी
 कृष्ण चक्र शिखजन सकल बसाइ के ।
 द्वारिका को नर नारी सुख लहु अधिकारी
 कृष्ण को सरूप देगि मन चितलाइ के ॥
 बलदेव गृह आइ गोपिन को सुगन छाड
 हिलि मिलि सुख लहु जस प्रगटाइ के ।
 करत कलोल राम रामसप्रक मृदुल बोल
 हरि हलधर पद जन शिर नाइ के ॥५०९॥
 कृष्ण चरित मुनि कहत निधारि के ।
 सुख प्रद तिहुँ लोक गति नर नारि के ॥टेक॥

लक्ष्मण सुफन्या दुर्योधन की अति धन्या
 करत विवाह सु स्वयं घर सवारि के ।
 नृप बहु धोली लीन्ह मभा करवाइ दीन्ह ।
 कृष्ण सुत शाघ नारि धदन निहारि के ॥
 कन्या हरि लीन्ह सोइ नहिं जयमाल कोइ
 रथ चढि चढु बृक सरिस विडारि के ।
 यश कौरव कोप कीन्ह भट रथ गहि लीन्ह
 युद्धि घन घोर करि बाँधु देइ गारि के ॥
 द्वारिका भो कहि जाय नारद सकल लगाय
 उपसेनि सुनि चढु दल हहकारि के ।
 बलदेव शपति करु कलाह न उर धरु
 उद्वव सग लेइ चढु मुशाल सुधारि के ॥
 हस्तीना पुर आये सुनि अध सुत धाये
 बलदेव हित पुरी जन गन मारि के ।
 भिष्म द्रोणचार्य आइ आयो बान्हिक धाइ
 करु पूजा अध-सुत आरती उतारि के ॥
 बलदेव हेतु प्रीति भीलनी कहत रीति
 मानी दुरयोधन बोलत रीति टारि के ।
 कृष्ण निंदा सुनि रामसेवक हृदय गुनि
 बलदेव गति मति चरित मुरारि के ॥५१०॥

राग श्री

बलदेव मुशाल हलधारी ।
 जीव शांति रुचति नहिं मारी ॥टेका॥
 दुर्योधन उर गर्व अधिक लखि कीन्ह क्रोध अति भारी ।
 केमि दुर्योधन कहत दचन कटु गम कुल यहँ देइ गारी ॥

मम पद की पनहीं सब टारत यदुकुल भयो अधिकारी ।
 उमसेनि किमि युद्धि करहिं मोहिं द्वारपाल समचारी ॥
 भोजन सग कराइ बढावल किमि करु मोर मुरारी ।
 दुर्योधन अस यहि गृह गो जय हलधर गर्व निहारी ॥
 जाकी उर प्रय लोक्य डरत उर कृपालहे थिर धारी ।
 निदा ताकी करत महा शठ देव दड मद टारी ॥
 लगल कोपि नम करपन करु कपित भयो नर नारी ।
 हलधर सरन आइ पद सिर धरु रामसेवक जन जारी ॥५११॥
 हलधर उर शाति सोहाई ।
 पालत लोग लोगाई ॥टेका॥
 प्रादि प्रादि दुर्योधन कहु बहु शीश कमल पद नाई ।
 हलधर कीन्ह दया तहि ऊपर अभय दीन्ह समुदाई ॥
 दुर्योधन अपराध छमा हित कन्यादान ठहराई ।
 शाव लक्ष्मणा लखि जोरी वर नृत्तगान करवाई ॥
 अति उत्साह करत विभो घर धाजन विविध थजाई ।
 विधिवत कीन्ह विवाह मुदित मन विप्र स्वस्ति धुनि लाई ॥
 द्वाण न शाठी सहस बारह गज दाइज दीन्ह बढाई ।
 द्वादश नियुत तुरग रथ धर धन शाठि सहस्र देखाई ॥
 दासी सहस दीन्ह कन्या जुत हलधर गृह लेइ आई ।
 गगा कर्पन कीन्ह जबहिं तव रामसेवक सुख छाई ॥५१२॥
 हरि करत चरित सुख सारी ।
 हरत भार भुवि भारी ॥टेका॥
 शाव विवाह कीन्ह हस्तिनापुर अपर जहाँ तहँ वारी ।
 पुत्र पौत्र विवाह सोहावन पावन जस रिस्तारी ॥
 अति आनद कद पुर वादत उमगत सुख रसवारी ।
 हर्ष सरीत चहँ दिशि आवत जनु धरपा अधिकारी ॥

देवकी रोहिणी उर उदधि कोटि सम नहि अघात धिर धारी ।
 अति उत्सव नभ न होइ कोइ कृष्ण अमित तन धारी ॥
 वर दुलहिनि अधिकार कहाँ अस मगल निधि दुख टारी ।
 लीला तन पुरुपोत्म उत्तम कहत सत श्रुति धारी ॥
 द्वारावति करि पुरिय चरित करु सुख लहु पुर नर नारी ।
 त्रयपुर सुख लहु रामसेनक धुन गहि वर सरन मुरारी ॥५१३॥
 कोइ सुर गुनि लखि नहि पाई ।
 हरि माया की अधिकारी ॥टेका॥

नरकासुर धध कीन्ह कृष्ण जव नारि सकल गृह ल्याई ।
 पौडस सहस्र अधिक सत बसु त्रिय गृह गृह बजत बधाई ॥
 देव सकल अचरज उर लहु बहु कृष्ण एक ठहराई ।
 नारि अमित किमि तोप भोग करु कहि विवि प्रीति बढाई ॥
 हेतु परिचा नारदमुनि कहँ सुर हरि भवन पठाई ।
 आइ प्रथम गृह देखु कृष्ण कहँ उत्सव अति सुख दाई ॥
 कोइ गृह पासा खेलत नारि सन कोइ गृह सिसन खेली ।
 जज्ञा दान कोइ गृह अति उसव सजत त्रिवाह सहारी ॥
 करव जनेव अरेटक चलु कोइ कूप धापि दरसारी ।
 जत गृह तत कृत कृष्ण करत लखु नारद उर सकुचारी ॥
 पुष्य बाटिका आदि केल लखि मुनि हरि पद शिरनारी ।
 लज्जित मुनि कहँ देखि प्रथम हरि कुशल पूछु मुसुकारी ॥
 महिमा लखि न कहत कछु नारद जनु उर बुद्धि गवारी ।
 कृष्ण रूप उर धारि श्याम वर त्रिधि गृह मुनिवर जाई ॥
 अति बिहल मुनि प्रेम भक्ति रस करु हरि अमित बढाई ।
 ब्रह्मादिक सुख रामसेनक लहि हिलि मिलि हरि जस गाई ॥५१४॥
 हरि चरित कहत श्रुति धारी ।
 कलि कन्मप भव रुज हारी ॥टेका॥

वंश वृद्धि नर इव जग सुक करु असुर वश खल मारी ।
 सुर नर मुनि कहँ देत त्रिविध सुख अवनि भार वर टारी ॥
 मत्त कत्त सूँर नर हरि तन वामन द्विज तन धारी ।
 कला अरा विभूति अमित तन अवतार सुमुरारी ॥
 हरत पाप सुख देत जनन कहँ चरित सकल सुख कारी ।
 सब अवतार सत्य बुध श्रुति कहु राम कृष्ण अवतारी ॥
 जुग विशेष दोड चरित अगम करु सय पालत नर नारी ।
 तहि महँ कृष्ण चरित अद्भुत करु जेहि भ्रम लहु सुर मारी ॥
 कीन्ह पुरी निर्माण उदधि महँ तेहि जन राखु सुपारी ।
 अलौकिक बहु चरित कृष्ण करु रामसेवक सुख सारी ॥५१५॥
 हरि तन धरि करु प्रमु तार्ई ।

सोइ वेद सेस बुध गाई ॥टेक॥

द्वारावती पुरी अति पावन देसत जन समुदाई ।
 वैठि कृष्ण माया निज परत इत उत जग भरमाई ॥
 साधु असाधु रंक राजा उर देव दनुज प्रगटाई ।
 निज कृत करन हेतु सोइ माया दृढ जन मनसि बसाई ॥
 अजै अरु विजय कीशाप दीन्ह मुनि तौनि जन्म गति पाई ।
 वश कौरवा वैर बढन हित जेहि भुवि भार गवाई ॥
 ज्वरासध की मृत्यु भीम कर तेहि बल गर्व बढाई ।
 नृपन जीति खल निज गृह राखेउ एह हरि माया बढाई ॥
 राजसूय मत्त युधीष्टिर मन हरि माया ठहराई ।
 कार्य सिद्धि लेहि रामसेवक हरि शिशु पालादिक आई ॥५१६॥

दोहा

अमित कार्य एक ठौर करि हरि हरु वर भुवि भार ।
 कइत सुनव सोइ नारि नर बेगि होत भव पार ॥ १ ॥

राजसूय घर जज्ञ महँ सकल नृपति जुहु आय ।
 शिशुपाल बध होय ध्रुव द्विज घर शाप मेटाय ॥ २ ॥
 ज्वरासध बध व्याज सोइ छूटे वदि भूपाल ।
 अध सुत ते पाहु ते जेहि होय बैर निशाल ॥ ३ ॥
 वीर भार जेहि जाइ ध्रुव धरणी लहु निशाम ।
 समते विपम जनाइ हरि करत सकल जग काम ॥ ४ ॥
 युधिष्ठिर मन थीर करु राजसूय घर जाग ।
 हरि माया इत उत करत रुचि पति उर धरि ताग ॥ ५ ॥

राग धनाश्री

एक द्वारिका मो द्विज घर आये ।

दिलि मिलि जहु नृपन पठाये ॥टेका॥

कृष्ण कीन्ह सनमान विप्र कर मया मध्य सुद्ध छाये ।
 कुशज छेम कहि दीन्ह पत्रिका नृपन की सुधि दरमाये ॥
 ज्वरासध दुरत दीन्ह नृपति कहँ पद शृखल पहिराये ।
 बंदो भोचि बध करहु नाथ खल नाना दुख सब पाये ॥
 त्राहि त्राहि सरनागत तत्र हरि कहत चरन शिर नाये ।
 राजसूय की हाल सोइ छन युधिष्ठिर मुख गाये ॥
 कृष्ण मूक होय नर इव सोइ छन बेगि उद्धो के बोलाये ।
 सुनत कृष्ण की हाल गुनत पय शीघ्र उद्धव आयो धाये ॥
 दूत सग नृप हाल कृष्ण कहि पत्री खोलि बँचाये ।
 कृष्ण अभीष्ट स्व रामसेवक गुनि उद्धव सोइ बनाये ॥५१७॥
 हरि उद्धो बचन घर मानी ।

लखि मत्रिन बुद्धि सयानी ॥टेका॥

मम अभीष्ट सोइ कहु उद्धव फुग भक्त शिरोमणि ज्ञानी ।
 उद्धव की घर बुद्धि कृष्ण निज मन घर बहुत बखाना ॥

राजसूय मरु प्रथम देखव ह्म हित अनहित पहिचानी ।
 नृपन की घदी छुड़ाइय तज द्विज परि रिपु की तन हानी ॥
 जाइ विप्र अथ कहहु नृपन सन निकट मोहिं अत्र जानी ।
 निर्भय रहु दिन रयन चयन करु तजि उर शोच गलानी ॥
 जग्य पूर करु जत्र रिपु मारत सुनि हरि की घर घानी ।
 विप्र जाइ कहु सकल नृपति सन श्रान करहिं हरि श्रानी ॥
 सुनि द्विज वचन सकल नृपपुलकित जनु सूखत तरु पानी ।
 कृष्ण सरिस नहिं रामसेनक कोइ दीन वधु दिन दानी ॥५१८॥

राग कल्याण गति चंचरीक

राजित श्रीकृष्ण चद हरन सकल मोह फद
 रथारूढ जन समूह मनहु नखत म्कारी ।
 याजत मृदग ढोल अपर वाद्य मधुर बोल
 शर अथिक करत सोर दुदुभि धुनि भारी ॥टेका॥
 हलधर नहिं कीन्ह गवन कृष्ण राखि दीन्ह भवन
 रक्षा करु नृपति शत्रु आउ ताहि मारी ।
 पाण्डवन की हाल गाय राजसूय मरु लखाय
 नारद पथ कर अकाश गजन करु सुखारी ॥
 सैन्य अमित चलत साथ रथग आदि अत्र हाथ
 गज रथयहु अश्व उष्ट्र आदि पशु सवारी ।
 शकट चलत रव अपार रेणु उड़त जल सुधार
 होत गगन तुमुल नाद धरणि भार टारी ॥
 शिविका धन शुभ्र राज रत्न जडित मणि सुभ्राज
 रुक्मिणी देइ आदि कृष्ण चढी सकल नारी ।
 पुत्र सकल कृष्ण साथ विप्र चरन नाय माथ
 बाजी रथ चलत नाग सैन्य निज दुलारी ।

सकल देश भ्राम तजत कुरुक्षेत्र आड भजत
 घहुरि देश भ्राम तजत आयो सुखसारी ॥
 हस्तीनापुर निकट आय स्वस्ति सकल द्विजन गाय
 बाजन सत्र वजत नाद शप्पन अधिकारी ।
 जयति जयति होत सोर मगल चहुँ थोर रोर
 इत उत उर चाह दरम परस धर मुरारी ॥
 बाढत आनद कद देखव कन कृष्ण चद
 रामसेवक सकल जनन कृष्ण भव उतारी ॥५१९॥
 राजित श्री कृष्ण श्याम शोभा शत कोटि काम
 मनहुँ मणि समूह मध्य नील मणि सोहाई ।
 बाजन बहु करत सोर गज रथ नहिँ तुरंग थोर
 जन समूह नारि पुत्र बृद्ध रहु लोभाई ॥टिका॥
 पाँण्डु वश सुात धाम कृष्ण आयोनिकट भ्राम
 पूजा निधि भ्रूटित लीन्ह बाजन घजवाई ।
 स्वस्ति स्वस्ति विप्र पठत सुनत पाप पुज कटत
 आगे करि सगुन पाँडु वश चलेउ धाई ॥
 प्राण गये प्राण पाय हर्ष यथा तथा धाय
 हिलि मिलि जस जोग भाव समुक्ति शीश नाई ।
 नेत्रन जल चलत धार सींचत अग अग अगार
 प्रेम विवश कुशल छेम पूँढत सकुचाई ॥
 चले गृह लेनाय जबहिँ बाजन पुनि बाजु तनहिँ
 मगल सब द्रव्य थार कलश शिर धराई ।
 गान होन लागु विप्र स्वस्ति पठत चलत विप्र
 ध्वज पताक तोरण गृह गृहे द्वार धाई ॥
 कलसा केदली अपार दीप माल सकल द्वार
 पुगी फल पान फूल लाजा दरसाई ।

नृत्त गान वार मुग्धी करत देखि कृष्ण सुखी
माँगत अरु बढी सूत कृष्ण सुजस गाई ॥
धूप दीप द्वार द्वार करत नारि वार वार
निरस्त वर वर्ण श्याम आरती देखाई ।
दान मान तोष करत मगन कहँ सुख स्वभरत
रामसेवक धर्मराज रत्न बहु लुटाई ॥५२०॥

रागिनी धनाश्री

हरि युधिष्ठिर गृह आई ।

तिहुँ पुर शोभा रहु छाई ॥टेका॥

अति उत्सव करु मुदित युधिष्ठिर बहु विधि रत्न लुटाई ।
हरि पत्नीन सन मिलि सन नारी शुभ आसन बैठाई ॥
पुर नारी हरि रूप विलोकत गृह कृत तजि बहु धाई ।
भीमार्जुन सहदेव नकुल मिलि प्रेम नीर ढरकाई ॥
शुभ थल वास देइ प्रति दिन हरि भोजन विविध कराई ।
अति आनद नेहँ निति वाढत निरस्त नहिँ अघाई ॥
तिर्पित करु खाडव अर्जुन जुत अग्नि चहँ दिशि लाई ।
सभा बैठु अर्जुन सग खेलत अखेटक समुदाई ॥
युधिष्ठिर की प्रीति परम लखि मास कठुक रहु छाई ।
कार्य 'सकल हरि हाथ विलोकत रामसेवक सुख पाई ॥५२१॥
कृष्ण सुनदन निहारी ।

बैठु सभासद भारी ॥टेका॥

ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य महाजन आचार्य सुख कारी ।
प्रल्ल युधिष्ठिर कीन्ह सभा महँ सुनत सकल मुरारी ॥
क्रतुराज गोविंद श्रवन करु राजसूय अति भारी ।
चक्रवती लायक मरु बर दीजै यिभौ मोहि एहि वारी ॥

अज्ञा कृष्ण दीन्ह बर क्रतु कहि उद्धव कहनी विचारी ।
 नृपन जीति एह जज्ञ करा बर धातन कहु भट बारी ॥
 दक्षिण दिशि महदेव गजन करु उत्तर पार्थ धनु धारी ।
 प्रतीची दिशि नकुल वीर बर प्राची भीम सुग्य मारी ॥
 नृपन जीति बहु धन लेइ आयेउ दुष्ट अमित रत्न मारी ।
 जज्ञ हेतु धन रामसेवक लहि नृप भयो परम सुग्यारी ॥५२२॥

राग कल्याण गति चंचरीक

राजित तन घन सुश्याम सभा मध्य छवि ललाम
 कोटिन शन काम अग अगन पर वारी ।
 चहुँ दिशि नृप बर समाज मध्य कृष्ण चद्र भ्राज
 नयन पुट पान करत प्रमुदित नर नारी ॥टेका॥
 अर्जुन सहदेव भ्राज नकुल भीम अति विराज
 जीति नृपन दिशा चारि दुष्ट रीष्ट मारी ।
 राजसूय मरु अनूप आय जुरे अमित भूप
 यज्ञ करन हेतु धन समूह भवन डारी ॥
 जरासध नृपति मानि भीम हाथ मृत्यु जानि
 घघ उपाय आय उद्धव वचन को विचारी ।
 सग भीम सेनि लीह अर्जुन कर साथ कीन्ह
 जरासध भवन चले रूप द्विज सुधारी ॥
 ब्राह्मण बर करि अचार गयो जरामध द्वार
 भोजन बर काल देवदत्त कहि पुकारी ।
 आये बहु दूरि धाय कार्य मिद्धि करहु राय
 नहि अदेय तोहि नृपति देहु अन्न दुलारी ॥
 शरीर नष्ट होय कोइ धन समूह जाय सोइ
 एह विचारि नृपति द्विजन करत नाहिं द्वारी ।

रतिदेव शिवि कृपाल राजा बलि अति दयाल
तन धन एन्ह दीन्ह नाहिं विप्र वचन टारी ॥
राजा हारिचंद्र दीन्ह प्रजन सहित स्वर्ग लीन्ह
कृष्ण बहु सराहि जरासध को निहारी ।
जरासध दोन्ह दान वचन सुनत विप्र कान
रामसेवक सकल कार्य सिद्धि करु मुरारी ॥५२३॥
राजित नृप द्वार कृष्ण सकल लोक एक धिष्ण
महिमा अपार विप्र वेप वर बनाई ।
सुर नर मुनि करत कार हरत सकल धरणि भार
चहुँ जुग श्रुति चारि करत चरित की बड़ाई ॥टेका॥
छल बल सुर हेतु करत सकल लोक शोक हरत
ब्रह्म अज अनादि रूप राखु भुवि छपाई ।
छल करि द्विज रूप धारि दान लीन्ह बलि दुलारी
इद्रहिं सोइ दीन्ह राज सुजस जगत छाई ।
जरासध द्वार आय द्विज सरूप वर देखाय
मागत वरदान नृपति भाव बहु देखाई ॥
जरासध जानि विप्र मृदुल बोल बोलुछिप्र
भावे मन माँगु सोइ देव शिर गँवाई ।
बोलेउ श्रीकृष्ण तोहि मागत सोइ देहु मोहिं
द्वंद्व युद्धि काम नाहिं अपर धन सोहाई ॥
क्षत्रियन कहँ युद्धि काम आयों सुनि प्रनल नाम
देहु हर्षि युद्धि दान मोदक ठहराई ।
अर्जुन एह भीम जानु मो कहँ श्रीकृष्ण मानु
शत्रु तव पुरान तोहि दीन्ह नृप बतलाई ॥
सुनत जरासध हँसा उघधर कारि खँसा
मद बुद्धि युद्धि गाय दानी दरसाई ।

मथुरा सुपुरी त्यागु ह्रीव त्रसित रणं ते भागु ।
गयो उदधि सरण नाहि युद्धि तोहि भलाई ।
अर्जुन नहि रणो धीर भीम मोहि समाज धीर
कृष्ण उरसि भाव सोढ रामसेवक गाई ॥५२२॥
गदा युद्ध करत घोर होत तिहूँ तोक सोर
भीमसेन जगसध इत उत परचारी ।
चट पट भट वजत ताल गर्जत जनु मेघकात
त्रसित तोक शोक प्रसित ताडत हृष्टकारी ॥टेका॥
गदा गदा टारि देत इत उत पुनि कपि तोत
चट पट चट चट पटात गदि गदि शिर मारी ।
बाहुर पुर लडत जाय उठत गिरत चरात भाय
परत जनुवष पात धार धार टारी ॥
युद्धि अगना घनाय मडती विधिग राय
दक्षिण दृग्य धाम फिरत गया कर सुभारी ।
शोभित दोड धीर धीर निर्भय रण रात धीर
नट इय बहु कटा कटाप ताडत रुग्ण राधारी ॥
मनहु गजराज ताडत दंत टाय रंत भरत
शोभा करि कर उठाय देद सुभि विमारी ।
बाहु युद्धि करत घोर तिहूँ पुर अति शश्व राद
तड तड तड वजत तारा अरत लोक भारी ॥
उरमो उर टाय रोत इत उत पुनि भद्रपि देत
मनहु वषपात अदि उरत भाति मारी ।
जानुनि मो जातु लाग धर पे कर गगन भाग
इत उत बहु गिरत गिरत एकज एक पधारी ॥
द्वद्ध युद्ध घोर करत नेक नादि अरि अरत
ताडत राति दिवस एक एक फो मुनी ।

देखत सुर रण बिहार धोलत नहिं कोइ प्रकार
 रामसेवक कृष्ण पार्थ ओट होय निहारी ॥५२३॥
 राजित रणधीर धीर गदा युद्ध करत धीर
 भीम जरासध एक एकन परधारी ।
 दृढ़ युद्ध होत घोर गदा शब्द करत सोर
 निरखत प्रयलोक्य धरणि डरत पुरुष नारी ॥६॥
 गदा गदा गदा मारि कर पसारि मुजा भारि
 कटि पद सब सधि धारि धीर रस पुकारी ।
 चूर्ण पाद कटि को कथा द्विरत क्रोध अर्क यथा
 चरुज तुर्जि गर्जि लडत धीर रस दुलारी ॥
 हाथ पाव सधि धसत अद्रि वेधि जयहिं खँसत
 सप्त बीस दिवस युद्धि करत दोष सुखारी ।
 भीम हृदय हारि गयो बिह्वल तन छिन भयो
 त्राहि त्राहि भाखु प्राण राखु अब मुरारी ॥
 जरा देवी नाम जोइ जन्म काल जोरु सोइ
 जरासध नाम ताहि कहत पुरुष नारी ।
 कृष्ण सोइ लखाय दीन्ह बिटप फारि बिलग कीन्ह
 भीम बेगि करो अर्द्ध अग खल विदारी ॥
 एक पाद पद दधाय दूसर पद कर उठाय
 गुद मुख समान भीम दीन्ह बेगि फारी ।
 हर्षित तिहुँ लोक भयो अबनि भार सकल गयो
 अर्जुन श्रीकृष्ण मिल्यो भीम मुजा धारी ॥
 मागध कै राज दीन्ह जरासध तनय लीन्ह
 रामसेवक कृष्ण अति दयाल को बिसारी ॥५२४॥
 राजित अति तन ललाम लाजित लरि कोटि काम
 शोभा शत छवि शृंगार देखि रहु लजाई ।

स्निग्ध नील मणि सुभ्राज नील कमल महल राज
मेघ नील शत गँभीर श्याम तन सोहाई ॥टेक॥
भूपन सप्त प्रग राज पीत वसन तद्वित भ्राज
दृशान चमक भाल तिलक छवि अनूप पाई ।
कुचित कच केश माल मनहु मधुप लटक व्याल
नासिका शुक्र तुहन पज पकज वर लोनाई ॥
चिबुक अधर कल कपोल श्रवण कुडल मधुर बोल
शोभा तिहुँ लोक आइ वदन रहू समाई ।
पीत दरस मान भ्राज उदर त्रिवली विराज
शोभित धनमाल कध वृषभ लहि बडाई ॥
सोहत उरु भृगु मुलात रचित मनहु मणि सुनात
केहरि कटि गति मराल पृष्टि भाग छाई ।
भुजा वर विशाल भ्राज करी कर समान राज
अँगुनी कर कञ्ज भानु कोटि नख देखाई ॥
जघन शुभ्र पाद पृष्टि देखत मुनि भ्यान दृष्टि
अकुश ध्वज चिन्ह कुलिश कज तल ललाई ।
मणिगन रवि शशि समाज नर की जोति मोति भ्राज
गगा जेहि निश्रित ताप शाप अघ नशाई ॥
राजसूय भर कराय हस्तिनापुर सुख लयाय
देव दनुज मनुज रूप देखत समुदाई ।
निरखि निरखि पाण्डु वश रामसेवक ब्रह्म अश
रात्रि दिवस सहित शक्ति मुदित पञ्च भाई ॥५२५॥

-राग विहाग

कहत बहू सुदामा वर नारी ।

अति पतिव्रत न कोइ पटतर त्रिय पति अज्ञा अनुसारी ॥टेक॥

हाथ जोरि शीश मोरि विनय जुत अज्ञा करत दुलारी ।
 एक दिवस फर जोरि नाहँ सन कहत प्रेम जल डारी ॥
 श्रीपति जगपति नाथ सकल सुर साइ तुम मित्र मुरारी ।
 हरि नारायण देव श्रुति बुध कहु पालत द्विज कुल भारी ॥
 सोइ हरि अत्र द्वारागति पुरि बसि राज करत वनगारी ।
 दान देत फरि यज्ञ त्रिविध त्रिधि दीनन अधिक पुकारी ॥
 पीडित सब परिवार अन्न त्रिनु सरना नाथ दनुजारी ।
 जाइ लेइ वन आउ अभित गृह कर परिवार मुगारी ॥
 सुनत सुदामा नारि वचन प्रिय धन रचि उर पुर टारी ।
 दरम हेतु रचि रामसेवक बटु हरि इच्छा उर धारी ॥५०६॥

कहत पुनि सुदामा द्विज वारी ।

हरि दरसन हित तालच बाढत विनय सुनत बहु नारी ॥टेका॥
 ऊपायन त्रिनु किमि चलु हरि ढिग राज द्वार त्रिय भारी ।
 मूष्टि चारि पृथक तदुत वर दीन्ह पाचि बहु द्वारी ॥
 भतिन बख अति फाट पोढ नहिं प्रथि दीह सुविचारी ।
 चरोत सुदामा हरि सनमुख जत्र प्रेम नयन जल डारी ॥
 धन हित प्रेम न नेक करत उर दरस हेतु अधिकारी ।
 मागत नहिं धन लहय महत सुख हरि वर बदन निहारी ॥
 राज द्वार अति भीर महाजत्र मम किमि होय पठारी ।
 दूरि दूरि मोहि कहहिं भूरि जन फिरौं न तत्र देहि गारी ॥
 कुचिट बख तन मलिन रक लखि द्वार पाल मोहि भारी ।
 किमि कहु राम सेवक गति द्विजवर जानत सकत मुरारी ॥५२७॥

चलत पथ सुदामा पढ़ताई ।

हरि दरसन हित लालच बाढत चलत कटुक दूरि धाई ॥टेका॥
 दरस हेत चलु अत्र धाय बहु फिरत रक कदराई ।

। भ्रमर नीर इव इत उत चल द्विज प्रेम अत्र अधिकाई ॥१

कृष्ण द्वार अति भीरु डरित चलु देखत लोग लोगार्ई ।
 तेज सुदामा तनहि प्रिराजत रवि शशि शत द्विपि जाई ॥
 राह बतावत सकल मुदित जन कृपा कृष्ण रहु छाई ।
 ड्योढी तीनि डाकि चौथे चलु कृष्ण देखि हरग्याई ॥
 सभ्रम उठि पद शीश नाथ मिलि खिन सकल विहाई ।
 नयन नीर अन्हवाइ धारि कर लेइ पलग बइठाई ॥
 पाव घोइ जल लाइ नयन शिर गृह सीचेउ समुदाई ।
 पथ भ्रम हरि हरि दीन्ह विविध सुरज करि द्विज अमित बढाई ॥
 भाग्य अपानि सराहि गृही वनि द्विज पद प्रीति बढाई ।
 मैं नहि मिलन हेतु तत्र गृह गयो दीन्ह दरस तुम आई ॥
 जस ब्रह्मग्य नेव तस करु हरि द्विज पद शिर बहु नाई ।
 द्विज पत्नी रुचि रामसेवक करु हरि द्विज लहि सुरज पाई ॥२८॥

राग श्री

श्री कृष्ण भक्त सुरदाई ।

शुभ चरित लोक तिहुं छाई ॥ टेक ॥

सूदामहि द्विज पाइ भवन निज हिलि मिलि कुशल सुनाई ।
 गुरुकुल की सब हाल कहेउ हरि प्रिया जहाँ दोउ पाई ॥
 पत्नी सुदामा की भाग्य सराहत प्राकृत इव निज गाई ।
 मम हित तोहिका दीन्ह नारि तत्र जो पतिवर्त्त मोहाई ॥
 अति सयानि मोहि पर दाया करु लरि देवर भडजाई ।
 भक्ति सहित मोहि देइ फूल दल किंचित पाइ अघाई ॥
 सनुचि सुदामा पृथुक ग्रन्थिवर गहि कर कारु चौराई ।
 हरि हंसि पांचि मूष्ट एक तन्दुल बहु सराहि सोइ ग्याई ॥
 दूसरी मृष्टि लेत रुन्मिणी कर गहि पति स्व बुझाई ।
 दीन्ह निभव सुरज राम सेवक हरि भक्ति अचल प्रगटाई ॥२९॥

हरि चरित मनो मल हारी ॥

सूदामहि दियो अचल भक्ति धन दुख दरिद्र को टारी ॥टेका॥
 सूदामा वसि रात्रि चयन कार हरि अज्ञा सिर धारी ।
 भवन गवन करु हरि सन हिलि मिलि भक्ति भाव अनुसारी ॥
 उर पड़तात चलत पथ द्विज नहिं सयानि मम नारी ।
 धन हित कृष्ण भवन मोहिं भेजेसि कछु नहिं दीन्ह मुरारी ॥
 पथ भक्तन हित नहिं दुइ दाना निज गृह बहुत दुलारी ।
 पुनि निज मन गुनि कहत सुदामा धन लहि बहु अधिकारी ॥
 भक्ति न रहु उर होइ अधिक मद हरि नहिं दीन्ह विचारी ।
 करत अनुमह अधिक दासपर मोहि कियो अधिक सुसारी ॥
 हरि ब्रह्मण्य देव हितकारी आदर सुजस सवारी ।
 मुदित सुदामा आये ग्राम दिग रामसेवक बलिहारो ॥५३०॥

राग विहाग

निरस्तु गृह सुदामा पुर द्वारी ।

दूरिही ते लखु अमित ध्वजा गृह कनक कलश ओजियारी ॥टेका॥
 तारण मालरि मोती लगी बहु कनक मई चहुँ वारी ।
 अति चित्रित पुर धवल घामवर कनक खभ अधिकारी ॥
 मणि गन भूरि दूरि सन धमकत चित्रित सकल अटारो ।
 जनु द्वारानति पुरिय विराजत शोभा चहुँ गच टारी ॥
 कुलिश कपाट गवाच ललित चहुँ जनु विधि स्व करहिं सवारी ।
 गज रथ तुरग अपार भूरि भट अश्व शस्त्र कर धारी ॥
 चक्रित विलोकत पर्यं कुटी कहा कहवा गई मम नारी ।
 पहवा के भूप तुरत अस रचि गृह यह सका उर भारी ॥
 चक्रित चहुँ दिशि नगर विलोकत गहि त्रिय घर बैठारी ।
 सकल सुकृत फल रामसेवक लहु गहु गहि चरन मुरारी ॥५३१॥

सुदामा देखत भवन डरे ।

कवन नृपति मम टारि कुटीवर लीन्हेसि नारि हरे ॥टेका॥
 सुदामा पत्नी पति देखत चहुँ दिशि नगर घरे ।
 दासी साजि सग आरति घर गहि पति चरन परे ॥
 इत उत किमि भरमत बहु स्वामी चलु अब बेगि घरे ।
 एह तव भवन गवन करु स्वामी कहि अस हाथ धरे ॥
 दीनबन्धु श्रीपति जगपति जोइ सोइ हरि कृपा करे ।
 गृह परवेश सुदामा करु निज भक्ति न हरि की टरे ॥
 विभव विलास सकल गृह पूरित माणिक दीप बरे ।
 दास कोटिन दासी गृह प्रविशत हरि दारिद्र हरे ॥
 कृपा परम हरि जानु सुदामा पट रिपु आपु मरे ।
 विभव अधिक सुख रामसेवक लहु भक्ति न उर विसरे ॥५३२॥

दोहा

दीन दयाल न कृष्ण सम, सुर नर मुनि महुँ कोय ।
 जासे कहुँ मैं दीन होइ, दीन नाथ दिग सोइ ॥१॥
 हरि दरवार मो रहत सब, जाचन हित जब जोग ।
 अर्थ धर्म रुचि कामना, मोक्ष मागु सुख भोग ॥२॥
 केहि केहि हाथ पसारउ, त्यागि जगत त्रय नाथ ।
 भक्ति ज्ञान अब देहु मोहिं, मागत पद धरि हाथ ॥३॥
 सुदामा धन अचल लहि, ववन सरिस करु त्याग ।
 भक्ति ज्ञान रस अधिक सुख, जानि करत जप जाग ॥४॥

सोरठा

कृष्ण चरन घरु भाय, रामसेवक कल्याण तव ।
 सकल जगत एक नाथ, भवनिधि ते करु पार ध्रुव ॥५॥

राग वसन्त गति होरी

द्वारावति वसि केत करत सुग्य सोरी ।

हलधर कृष्ण रूप जि देखत श्याम गौर शुभ जोरी ॥टेका॥
 नारि पुत्र परिवार पुरी जन करत कलोल घनोरी ।
 रात्रि दिवस वाजन बहु राजत नृत्य होत सत्र खोरी ॥
 वापी धूप तडाग उदधि जत वन उपवन चहुँ ओरी ।
 शीतल मद् सुगध पवन चलु सुग्य वरनत त्रिवुधोरी ॥
 वारह मास सोहावन अति पुर फाल्गुन रग रचोरी ।
 केशर अत्रि गुलाल कुकुमा दधि घृत रस बहु घोरी ॥
 छिरकत एक सो एक उडावत चलु पिचुकारि करोरी ।
 वाजत ढोल मृदग म्हाल डफ गोंमुग्य शर्य घनोरी ॥
 हरि हलधर पुर नारि सकत नर हिलि मिलि रग मलोरी ।
 ज्ञान भक्ति रस रग चहुँ चलु रामसत्रक अस होरी ॥५३३॥

राग श्री

हरि चरित कहों किमि गाई ।

अति अद्भुत कहु निगम अगम बुध मो मति नाहिं समाई ॥टेका॥
 जो अज अखिल अलख अविनासी पूरण त्रय पुर छाई ।
 एक ब्रह्म अद्वैत सनातन निर्गुण गुण न जनाई ॥
 सोइ भक्ति हित अमित धारि तन हरत भार भुवि आई ।
 अति लीला ब्रज वासिन हित करि गोपिन रूप लोभाई ॥
 कसादिक शिशुपाल शाल्व वधि राज रूप करवाई ।
 दुर्योधन युधिष्ठिर नृप सन उर पुर वैर बढाई ॥
 वीर वधन हित मच्यो महारण अर्जुन ज्ञान सिखाई ।
 भारत धर करवाइ मारि भट पाण्डव सुतन वचाई ॥

वीर भार निज वश को देखत चाहत वेगि मिटाई ।
 एह कौतुक लखि गमसेवक उर हरि पद गह मुख पाई ॥५३४॥
 हरि निज मन माहँ विचारी ।

सोइ सकल्प को टारी ॥ टेक ॥

मम अवतार न रहई भार भुवि जौर भार अत्र भारी ।
 अपर खलन वय कौन्ह यथोचित सकल भार भुवि हारी ॥
 मम परिवार अपार भार बहु एक एक धनुवारी ।
 अखिल लोक मिलि वश सुरासुर मम परिवार न मारी ॥
 विप्र शाप सन मरहिँ वेगि यह तत्र भुवि होय सुपारी ।
 अनोन्य करि कलह मरहि रण अस मम कुल अधिकारी ॥
 माया हरि निज इत चालत सुजस अठात बिस्तारी ।
 मुनिन वृन्द हरि रूप की लालच शिशुन अज्ञता डारी ॥
 हरि इच्छा नहिँ टारि सकत कोइ सुर नर मुनि जन भारी ।
 प्रय पुर सुख लहु रामसेवक बहु गहि उर सरन मुरारी ॥५३५॥

राग कल्याण गति ध्रुपद

देखत श्री कृष्ण चन्द हरत सकल मोह फन्द
 यदुकुल समुदाय लडन सिंधु तट पुनारी ।
 विप्र शाप अचल पाय माया हरि बरसि द्वाय
 मदिरा करि पान मित्र शत्रुवर निहारी ॥टेक॥
 सननन सन चलत धान गनन पथ करन गान
 मननन मन लडत वीर थीर हीय धारी ।
 भिडिपाल चलत जात तोमर अक्षि वग कराल
 परसु घन कठोर शूल तीक्ष्ण सर डारी ॥
 अस्त्र शस्त्र बहु प्रचार गनत नहिँ लहत पार
 लडत बन्धु सकल एक एक सन परचारी ।

जरासध मम हित बध करु हरि शिशुपालहिं रिपु भारो ॥
 भारत में रथ हाकि जतन करु अस हरि मम उपकारी ।
 तेहि त्रिनु किमि अब रहु धरणी तल अस उपकार निसारी ॥
 त्रिदुर सग धृतराष्ट्र प्रथम गयो तप करि मिलेउ सुरारी ।
 परिचित कहँ राज्य दीन्ह सुख रामसेनक भो सुखारी ॥५३९॥

राग केदारा

सुर मुनि करत भक्त बखान ।

सेस वेद बुध कहत सारद धार धार पुरान ॥टेक॥
 भक्त का महिमा अगम सुनि नेक नहिं पुलकान ।
 तासु हृदय बखान कहु सुर अज्ञ कुटिल मलान ॥
 सकल ब्रज जन हस्तिनापुर द्वारका परधान ।
 विरह बश हरि धाम लहु सत्र जाइ कृष्ण समान ॥
 श्रवण करि नहिं करत रति जोइ अज्ञ गति सोइ खान ।
 शास्त्र पठि नहिं प्रीति हरि पद कहत देव अपान ॥
 शास्त्र पढ नहिं भक्ति करु हरि कहत ताहि मुजान ।
 भक्ति करि हरि लहत निज तीत्र सोइ बर ज्ञान ॥
 भक्ति त्रिन सतोष नहिं उर फिरत जग धौरान ।
 मागु हरि सन रामसेवक भक्तिवर वरदान ॥५४०॥

सब जग कृष्ण एक अधार ।

करत सार असार ॥ टेक ॥

'मणि गन सम'सत्र जीव त्रय पुर कृष्ण कर वरतार ।
 राखि उर इत उत नचावत जगत रुचि व्यवहार ॥
 पाप पुण्य दोउ बीज रोपत जगत तरु हितकार ।
 स्वर्ग नरु सुख दुख फलोदय होत वारहिं धार ॥
 धरतभगवत धर्म जोइ नर रहत एक अचार ।

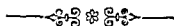
लहत मोक्ष नहि किरत जग सोइ कृष्ण तासु अगार ॥
कृष्ण उद्भव करत पालन जन्म लेत हजार ।
कर्म करि वधि असुर गण बहु हरत धरणी भार ॥
रूप कृष्ण अनूप श्रुति कहु कोटि शत वरमार ।
ध्यान उर करि राम सेवक होहु भव निधि पार ॥५४१॥

दोहा

कृष्ण सच्चिदानन्द घन, पूर्ण एक सब काल ।
भक्त हतु लीला अगम, तन धरि करत कृपाल ॥



स्थायी ग्राहको के लिये नियम ।



- १—आठ आने प्रवेश फीस देकर प्रत्येक मज्जन “सरस्वती-साहित्य-सदन” के स्थायी ग्राहक बन सकते हैं। यह आठ आना न तो कभी वापस दिया जाता है, और न किसी हिमाज में मुजरा दिया जाता है।
- २—स्थायी ग्राहको को ग्रन्थमाला के कुल ग्रन्थ पूर्व प्रकाशित और आगे प्रकाशित होने वाले—पौनी कीमत में दिये जाते हैं।
- ३—किसी उचित कारण के बिना यदि किसी ग्रन्थ का वी० पी० वापस आता है तो ग्राहक का नाम ग्राहक श्रेणी से अलग कर दिया जाता है।
- ४—“प्रवेश फीस” के आठ आने में आ० से पेशगी भेजना चाहिये। किसी ग्रन्थ के वी० पी० में भी प्रवेश फीस जोड़ ली जा सकती है।
- ५—स्थायी ग्राहक केवल एक ही प्रति पौनी कीमत में पा सकते हैं। हाँ, अधिक प्रतियाँ लेना चाहे तो ॥) प्रति पुस्तक के हिसाब से प्रवेश फीस जमा कर चाहे जितनी प्रतियाँ ले सकते हैं।

